

॥ श्रीमद्ब्रह्माधीश्वरा विजयन्तान्तमाम् ॥
 नगत्ता तारुण्यार नगद्गुरु श्रीमद्ब्रह्माचार्यलता
 विप्रधर्मद्वय महान् आदर्शाना प्रचार कृतार
 स चित्र भासि क.

शुद्धाद्वैत-सुक्तिमार्तक.

देवदीपोत्सवांक



वर्ष ६ :

ॐ

आश्विन

सं. १६७७

अंक ६-७

ॐ

दातिक

सं. १६८८

नगद्गुरु श्रीमद्ब्रह्माचार्यलता.

लेखी अने प्रकाशक :

वसंतराम हरिकृष्ण शास्त्री.

१७४८, राजा महतानी पोला : अमदावाद.

शुद्धाद्वैत-सूक्तिभाष्यम् ३.

व५० ६.]

आश्विन, श्रीवद्वत्सा ४५३.

[अ५३ ७.]

सर्वोत्तमहेतुनिरूपणम् ॥

श्रीकृष्णाय नमः । आत्यरूपेणानन्द । परमानन्द । आत्यस्य कृष्णरूपत्वेन यहिरूपत्वेनो
 भयत्पवात । कथमुभयरूपम् १ श्रीकृष्णस्यमिति । ईदृशस्य कथं प्राकृत्यं २ कृपानिधिरिति । किमर्थं ३
 दैवोद्धारप्रयत्नामेनि । अदर्शनदशायामुद्धारार्थं स्मृतिमात्रेति । न प्रयत्नं २ श्रीभागवतेति ।
 क्रो-गृहार्थं २ साकुरेति । तस्यैव वेदार्थत्वाय वेदपारगेति । मतातरसत्तया सशयनिराकरणाय
 मायावादेति । अतिरिक्तमतवृत्तसंशयाभावाय सर्वेति । साकाररूपप्राप्त्युपायनिरूपणे भक्तिमार्गेति ।
 मार्गाधिक्यमोषाद्यस्तीति । भगवतो ब्राह्मणाप्रियत्वाद् उद्धारभावमाशङ्क्य अगीकृत्यैवेति ॥ अंगी
 कृति समार्गा । अथवा मार्गत्रयेर्यमतः अंगीकृताविति । अगीकृते मार्ग वसंपादनेन महाकारुणिक
 इति । करुणासार्थकत्वाय विमुक्तिरिति । भगवतोधिकसामर्थ्यवत्त्वाय अदेयेति ॥ अदेयं भगवतोऽलौकिक-
 सामर्थ्यं, दक्षता, तथोपाय इति । स्वसर्वस्वदातृत्वमोषाद्यस्त्वादेयदातृत्वमोषाद्य वा महोदारेति ।
 इदंशेऽपि सर्वप्रवृत्त्यभावाय प्राकृतेति । स्वीयजनमोहाभावाय वैश्वानरेति । सुखसेव्यत्वाय चक्षुमेति ।
 विषयत्वेनापि प्रियतायै सद्रूपेति । धर्मतोपि प्रियतायै हितकृदिति । न चाङ्गमत्रैणैव किंतु कृत्वा हित
 कृत्वबोधनाय जनेति । फलदानपर्यंतं तथात्वमोषार्थं निखिन्नेति । स्वतः स्वस्वरूपसिद्ध्यापि तथानाया
 सर्वति । भक्तिशिक्षकत्वेन तथाचमुक्तं, ज्ञानदानेनापि तथात्वमोषाय श्रीकृष्णज्ञानद इति । वाचापि
 तथात्वबोधाय गुरुरिति । एतेन सर्वथा तथेत्मुक्तं, देयसंपत्तिं स्वानन्देति । वृषादत्ताय पश्येति । हर्षान्त-
 दातृत्वाय कृपेति ॥ प्रियत्वदानोत्तरमपि न दत्तमिति प्रतीत्या आत्यस्यकृत्वाय पतिः । प्रतिग्रह
 निराकृत्यै रोपदृक् इति । भक्तेषु तदभावाय भक्तेति । सेनाया सुकरत्वाय सुखेति । पूजाविषय
 त्वाभावाय दुराराप्येति ॥ सेवाया माहात्म्यज्ञानसिद्ध्यर्थं दुर्लभेति । सर्वेषां स्वरूपाज्ञानात् सूर्य-
 स्त्वेव उग्रेति । स्वीयाना बोधकत्वाय वागिति । स्वपुरुषातिशयाय श्रीभागवतेति । स्वस्यैव तदप्रवृत्त-
 योग्यतायै तत्सारेति । अन्येषु दानमिति सानिच्येति । देयस्यासाधारणत्वाय विमुक्तिद इति ॥
 किंपदार्थमाहुः रासलीलेति । योग्यतया दानमाहु वृषयेति । परमफलदातृत्वमाहुः विरेहेति ।
 तत् पूर्व स्थितिरेतुमाहु. भक्त्येति । वेदसार्थकत्वाय कर्ममार्गेति । तदगित्वेनेत्यर्थः । तथापि-
 मार्गांतरनिरूपणाय यागादिति । निःसाधनफलदानाय पूर्णानन्द इति ॥ तथापि स्वस्य पूर्णानन्द-
 त्वाय पूर्णकाम इति । फलरूपत्वाय वाक्पतिरिति । असाधारणेश्वरत्वाय विषुषेश्वर इति ॥ असा-

धनसाधनबोधनाय कृष्णनामेति । स्वमात्रकृतित्वाय भक्तपरायण इति ॥ विश्वासोत्पादनाय भक्त्याचरेति । सर्वथा निरपेक्षत्वाय स्वार्थेति ॥ तादृक्प्रियत्वाय तादशेति ॥ परमकृपालुत्वाय स्वदासेति । समर्थकृपालुत्वाय सर्वशक्तिश्रुति । परोक्षेपि तथात्वाय भुवीति । सर्वथा पालकत्वाय पितृति । स्नेहेन स्वधर्मस्थापनाय स्ववशेति ॥ असाधारणधर्मवैलक्षण्येन गर्वाभावाय स्मयेति ॥ भगवत्त्वाय पतित्रतेति । सर्वथोपास्यत्वाय पारलौकिकेति । गूढाशयत्वेनापि भगवत्त्वाय निगूढेति । अंगीकृतेषु ज्ञापनेनापि तथात्वाय अनन्येति । मोहनिवारकत्वेनापि तथात्वाय उपासनादीति भगवत्त्वेपि पुष्टिपुरुषोत्तमत्वाय भक्तिमार्ग इति । भक्तिमार्गस्थित्ययोग्येपि फलदानाय पृथगिति सर्वधर्मानितिवस्तुर्द्वादज्ञानाय श्रीकृष्णेति । उत्तरलीलारसानुभावकत्वाय प्रतिक्षणेति । बाहिःस्फूर्तिं दशमाहुः तत्कथेति । कथानिरोधार्थं तद्विस्मृतेति । स्वामिनीवद्वज्रमात्रप्रियत्वाय व्रजेति । अन्यः गत्यभावाय प्रियेति । भावात्मकस्य लीलारसानुभावाय । पुष्टीति । तदनुभवयोग्यतायै रह प्रिय इति एतादृशेपि भक्तनिकटस्थितिसपादकत्वाय भक्तेति । आंतरत्वेनाविदितचेष्टत्वाय सर्वेति । कदाचिप्रतीतावपि मोहनमोहनतथात्वाय अतिमोहन इति । एकप्रयोजनत्वाय भक्तेति । असाधारणप्रयोजनार्थं पतितपावन इति । तत्प्रकारार्थं स्वयं इति । रसांतरनिवर्तनाय यश इति । शुच्यर्थं पर इति परं दृष्ट्वा निवर्तत इति लीलासहितस्वस्थितिज्ञापनाय लीलेति । जीजामात्रपरत्वाय गोवर्द्धनेति । तन्मयत्वाय तल्लीलेति । हृदये स्वस्थितभगवद्भोगाय यज्ञभोक्तेति । स्वाविष्टत्वेनैव तथात्वज्ञापनाय यज्ञकर्तृति । तेनैव चतुर्विधभक्तिमार्गीयतत्साधकत्वाय चतुर्वर्गेति । अंगीकृत्यन्यथाकृत्यभावात् सत्येति । गुणक्षोभनिवर्त्तकत्वाय त्रिगुणातीत इति । मर्यादया बाहिर्मुख्याभावाय नयेति । सर्वथा दोषाभावोपायाय स्वकीर्तीति । तद्वर्द्धनप्रकारनिरूपणार्थं तत्त्वेति । मायेति । ब्रह्मेति । स्वरूपोत्कर्षणापि तद्वर्द्धनाय अप्राकृतेति । एतादृशेऽप्यनुसरणीयत्वाय सहजेति । लौकिकोत्कर्षणापि तथात्वाय त्रिलोकीति । भूमौ निरोपतस्तथात्माय भूमीति । विषयप्रकारेणापि तथात्वाय सहजेति । तादृशे कर्तव्य बोधनाय अशेषेति । इति श्रीहरिरायजीविरचित सर्वोत्तमहेतुनिरूपणं सम्पूर्णम् ॥

[आ प्रदीर्घ लेख डभोईवाळा भगवदीय गोविंदभाल छगनलाल परीखे प्राचीन प्रथमरथी लशोने प्रकट करवा मोकलेखो, पण ते अशुद्ध जणायायी व्रण वर्षधी प्रस्ट करी छटाव्यो नहिं. सोदाज समथ यहेलं तेनी एक शुद्ध प्रति प्राप्त थतां वा अंकमा सुदित थयो छे. संव्री.]

पार्श्वान कीर्तन.

राग मल्हार ॥—लाळ माइ सोगत हें रंगभीने ॥ सीस सोहे कमरी खोही लाळ लज्ज
र सीने ॥१॥ बुंदन कीच घाटवनळें मोहन चकित चहुंदिस हेरे ॥ कबहु दिस भ्रम होत विकट
रावे रावे श्रीमुख टेरे ॥२॥ तिदिं छिन तडित उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोखे ॥ रसिक
प्रीतम पण धरत उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोखे ॥ ३॥

राग केदारो ॥—कौन लई कौन दर्ई हँदुरियाँ गोपाल मेरी, ग्वाल बाल सखनमौंज तुमही हँसत हो. पाय गहि सखी रहो कौन लई कासो कहो ? लेत कौन देख्यो सखी कहा बास बसत हो ? लेखो दुराय धरि दोसमें कहा चोर परत ? हँसो जाय ऐसी होय हमपर कहा हँसत हो । नददास बसत बास तजमें गिरिराज पास टेडो फेंटा आइवद कौनये कसत हो ?

राग गोरी ॥—सुनहु सखा मनभांते हो, रसिक रसीली बात, एक समय निस नवनिजुजमें बैठे प्यारी सग, भई बात बे-रतिरसकी हों कहा दुराज अंग ? प्रगट चिन्ह एक देख्यो उरमें अद्भुतही सोभा देत । तिउ प्रसून राजत है कुचविच मेरो मन हरि छेत हो ॥२॥ कमलबीच रुबयो मधुकर सुत तहा ते उटयो न जाय । सोभा अधिक देखि मेरे द्रग तहा रहे अरझाय हो ॥३॥ तब में हास्य कीयो प्यारीसों तर्क वितर्ककी बातें, प्यावत हो अतिरस तुम इनकों सदा रहत मदमाते ॥४॥ प्यारी कहै तुम सुनों प्राण प्रति मुरलीकी रस देत, बचरसुधा सर्वसु जु हमारी तोहि क्षण हरि छेत हो ॥५॥ तब एक वचन क्यो उन हमसों सुनों स्याम चित लय, रतिसप्राम गुप्त जे बातें कहत सखनसों जाय ॥६॥ उनसों कहा दुराज प्यारी बेहे हमारे सग, निसवासर बे रहत हृदयमें बसत दाहिने अंग ॥७॥ बांये अंग तुम रहत हो निसादिन इतनो अतर जान, इत उत मध्य वेद्यो यह मधुकर उनसों कहा रहे अंगहो ॥८॥ यह रस उनसों कहा दुरत है तुम हम तरु बे वेडि, जेसैं अष्ट सखी तुम प्रिय अति तैसैं हम सग खेहो ॥ ९ ॥ तब हँसि मुसकि विसाखा बोली ललनके द्विग आय, वा दिनकी बात सन भूी खायी बाक बिनाय हो ॥१०॥ नदी सरु द्विग नवनिजुजमें पूरणमासी गेह, प्रथम सनेह भयोही ता दिन हम जानत सग नेह ॥११॥ तब गल्लाह छाडि मोर मुख चितयो नयननकोर । मांनों चटनमुधारससयुत मेरे नैनचकोर ॥१२॥ मुसकि सजुचि गये नवनिजुजमें ललितारों दै सैन, हमहु तब ऊनही द्विग आये अंग सग भेद्यो मैनहो ॥१३॥ यह सन बात कहत हे ता दिन सुनो सखा रस रन्ध्याल, बुभनदास आस इतनीही श्रीगोवरधनधर लाउ हो ॥ १४ ॥

[प्राचीन ग्रन्थसू संगृहीत.]

राग भैरव ॥—तू दयाल दीन हों तू दानी हों भिखारी ॥ हों प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुज हारी ॥ १ ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मौसो ? मौसमान आरत नही आरतहर तोसों ॥ २ ॥ ब्रह्म तू जीव हों तू ठाकुर हों चेरो, तात मात गुरु सखा तू सग विप्र हित मेरो ॥ ३ ॥ तोहि मोहि नातो अनेक मानीये जो भावे ॥ ज्यो त्यो तुलसी कृपाकृ, चरन सरन पावे ॥ ४ ॥ पद

पूतना विप्र दै अमृत पायो ॥ जो कञ्जु दैन्यन सो फल पैयत नाहक वेदने गायो ॥ १ ॥ सतयज्ञ राजा बलि कीनो बाध पाताळ पठायो ॥ लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ २ ॥ रक्त जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम बनायो ॥ सरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कहि गायो ॥ ३ ॥

राग रेखतो ॥—मै तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ पावन पतित हो तो पातक हरोईंगे ॥ मै तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जियमे धरोईंगे ॥ मै तो हुँ गरीब आप तारक गरीबनके, तारक गरीब होतो निरुद्ध बरोईंगे ॥ मेरी करनीपे कछु सुनर न कीजे पान्द करुनानिधान हो तो करुना करोईंगे ॥

राग भैरव ॥—कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें ॥ ताके पद पकजकी रेनुकी बलिमें ॥१॥ सोई सुकृत सोई पुनित सोई कुलवता ॥ जाको निसनासर रहे कृष्णनाम चिंता ॥२॥ योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्णनाम माही ॥ बिना कृष्णनाम कलि ऊद्वार ओर नाही ॥३॥ सब सुखको सार कृष्ण कन्ह न निसरीये ॥ कृष्णनाम ले ले भवसागरको तरिये ॥४॥ श्रीगोवर्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी ॥ ऊधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५ ॥

तुलसी या जग आयेके पांच रत्न हे सार ॥ सत मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार

(सप्ताहक-अधिकारीजी देवहरामभार्त शीणाभार्त)

अष्टसिद्धिनिरूपनको पद.

राग यथाहाचे ॥—श्री यमुना को नमन करीए, हरसि सकल सिद्धि अष्टही पैये ॥ लौकिक देह यही सेवाको, एक अलौकिक रूपही पैये. ॥१॥ लीलादर्शन दूसरी सिद्धि कालिंदी रतिवर्धनी कहीए, सो रस अनुभवरूप तीसरी, भुवनपावनी तातें कहीए. ॥२॥ सर्वाभवासिद्धि हैं चौथी, अन्तगुणभूषण पैये, सो सेवा आधीन प्रानपति, मनमें सुखभावन करी लैये. ॥३॥ आदिपदतें चरणपद्मजा, मुररिपुकी प्रियभाउरु कहीए, निप्रयोगमें अंतर प्रागटय, कृष्ण-भावन सिद्धि पंचमी कहीए. ॥४॥ सिद्धि छट्ठी हे लीलादर्शन, अंतरदृष्टि करी पैये, गमन करतही सदा यमुनाको, गोपिकावत् प्रियही पैये. ॥५॥ सिद्धि सातमी भावरूप करि रस अनुभवही पैये, सानिध्य तिहारे स्तुतिको गान करी, भाव दृढ करि लैये. ॥६॥ सिद्धि अष्टमी प्रागटय हरिको, अंतर अनुभव करिये, हरि सेवा फिर अनुभव करिकें, मोक्ष लें सर्व सुख पैये. वही कथा श्रीयमुनाकी सकल गोपिका संगम कहीये, मदनश्रमजलकनन करिके, सकल अंग रस पैये. ॥८॥ यह अष्टक हरिरूप कथनमें, सेवाफललें पैये, मुररिपु प्रसन्न बड़े हैं, स्वभाव जय कर लैये. ॥ ९ ॥ भावहीन प्रभु बिरह देकें करे हैं यमुना, स्वामिरमरुन तें, श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल सुरतरु ममसंबध करावन तें. ॥१०॥ कही कथा यह श्रीहरिरायही, श्रीमुखमल मकरंद तें, सोही जश मकरंदको ले जीवें मधुप रस गुनगान तें. ॥११॥

अथ श्रीदेवकीनन्दनकुमारचरणैकशरण-सोभाचन्द्रकृत-

भक्तिविधान ॥

[संशोधक.—श्रीयुक्त शास्त्री काशीराम करशानजी मांगरोल.

[भागवतीय पाद्यश्लाघना अथ परथी आभाना दुहा २१ थी १४ श्रुती अथे उनारी गन दीपात्सर्वाङ्गमां छपाया हना. तेन अथपरथी शास्त्रीछ काशीरामभाष्ये गेक प्रति उनारी अभने भोक्षी छे ते अदी प्रष्ट हरीअ छीअ.]

मगन रहत मन रातदिन, जानत भोर न सोझ. ॥७॥ बन्दो श्रीव्रजभूमिरज व्रजवासिनजे चरन, अरु व्रजके तरु तृण लता, शोभा तिनके शरन. ॥८॥ शोभा मन बच कर्म करी, इनहीकी गति आही, इन बिनु ओर न इष्ट मम, इहे जान मनमाहे. ॥९॥ श्री स्वामिनी गिरिधरन बिनु मोरे गति नहि आन, श्रीदेवकीनन्दनजीकी कृपा, करहु भक्तिविधान. ॥१०॥ देवकीनन्दनकी कृपा, मइ मोहि जिहि मांत, अरु प्रभुकी चरावलि, कहुं जगत विल्यात. ॥११॥ दाक्षिण देश तिलंगमे, श्रीलक्ष्मण द्विजराज, ताके गृह प्रकटे अग्नि, सन जीवन हितकाज. ॥१२॥ अति वल्लभ गिरिधरनके, तातें वल्लभ नाम, छांडि देश व्रज आयके, बसे श्रीगोकुल गाम. ॥१३॥ पारंगत आगम निगम, सबे शान्त व्याकरण, मायावाद निराकरण, मय विधि संशय हरन. ॥१४॥ .१५...१६...१७...१८...१९...२०—२१....२२...अति पंडित अरु अति चतुर, भक्तनको सुख देत. ॥२३॥ अति पंडित तातें अनुज श्रीमद् गोविन्दराय, सेवत विट्ठलायको दिन प्रति अति चित लय. ॥२४॥ श्रीबालकृष्ण तातें अनुज सेवत निल....२५....२६....तातें अनुज प्रवीन अति करुना निधि रघुनाथ, सेवा गोकुलचन्दरति, परम सुखद प्रभु हाथ ॥२७॥ महाराज यदुनाथजी, तातें अनुज मुशीठ, सेवा गोपीनाथरति, दस उपारे भील ॥ तातें अनुज दयाल अति, सुन्दर श्रीघनस्याम. ॥२९॥....३०

[दूहा ११ सू. ६४ तक गत दीपोत्सर्वाङ्गमें छप गये हैं.]

नाम पाय गुरु भेट नही, द्वे न भक्त को संग । न्यान नही गुरु ग्रन्थमें, चित न भिगावत रग ॥६५॥ तिनके हितसों भाषा करि, दोहा करे रसाळ । सब संसे चितमें मिटे, उपजे प्रीत गोपाल ॥६६॥ जो सन्देहमें प्रश्न कीय, भेटयो सो प्रभु आपु । तेई सब मैं कहत हों, जो भेटे संतापु ॥६७॥

अथ प्रश्न—सन जीवनको कोन प्रभु, जीव लहे मुख कीय । लाह बडो काहा निहर को, कहो बिलछन सोब ॥६८॥

अथ उत्तर—प्रभुसो जाकी सृष्टि सब मुन ताहीके सेव । त्याहो बडो ताकी भगत निहर सरन तिहि देव ॥६९॥

अथ प्रश्न—सो प्रभु कोन कोन हे, ताको कैसो रूप ? नाम कहो क्यो पाट्ये, ताकि भगत अनुष ॥७०॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, मच्छ कच्छ वाराह । नरहर वामन राम हे बुद्ध कल्की ताह ॥७१॥ प्रभुके रूप अनेक हे, कला अश गुणभेद । अशी पुरुषोत्तम रहे, नेति कहत निहि वेद ॥७२॥

अथ प्रश्न—कला अश आवेश गुण, ताके रूप हे कोन ? सो मोहे कहो बिल्डकें उत्तम अधम गौन ॥७३॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, ते तीनों गुण रूप । रज सत्त्व तम प्रकृति, कारण सष्ट अनूप ॥७४॥

रजगुण ब्रह्मा सृष्टि कर, सत्त्व विष्णु प्रतिपाल । तमोविष्ट सब सृष्टिको काल होत शशि भाल ॥७५॥ नरहरि वामन राम हे यहै अश अवतार । आवेश—अवतार श्रीफरशराम मुनि सार ॥७६॥ मच्छ कच्छ वाराह पुनि, बुद्ध कल्की—अवतार । अरु चोदह अवतार भये, कला पाच हरिसार ॥७७॥ वेदमर्यादाके लिये, अरु भगतन—मुख—हेत । कला अशी प्रकट युटुमि (?) नाम रूप चित चेत ॥७८॥ वेद कहे ताही बतें, अनंत रूप अरु नाम । तन तव रूप धर्यो हरि जब जब भक्तही काम ॥७९॥ अदसुत क—आदि देव करी, आत्मके त्रेख्य । ए श्रीहरि कौने तबही, गीता क्यो अनूप ॥८०॥ सकल भूत क्षर रूप हे, अक्षर व्यापक पाव । अक्षरें जो अधिक हे, सो पुरुषोत्तमराय ॥८१॥ सत् ओ चेतनता अरु, अरु आनन्द निधान । यह वृत्तयो जाहा व्याकृत हे, पुरुषोत्तम भगवान ॥८२॥ क्षरें सत् प्रकट हे, अक्षर सत्—चैतन्य । पुरुषोत्तममे सब प्रकट, यहै भजन अति घ य ॥८३॥ सो पुरुषोत्तम भक्तहित, श्रीस्वामिनी—अनुराग । श्रीवज्रमें प्रगटे प्रगट, नदयशोदा भाग ॥८४॥ ओर सकल अवतार जे, कल अश गुण पाये । पूरन पुरुषोत्तम प्रगटे, प्रगटे सो वन आये ॥८५॥ कृष्णचंद्रको रूप गुण, जान्यो निधे जौं ब । रहे तब शुद्धदेवजी, कहे परीक्षित सोम ॥८६॥ यहै बात गीता विषे, पारथ सो कही आपु । विश्वरूप दिवाय के, मेख्यो सब सत्तापु ॥ ८७ ॥ यह बात जयदेवजी कहीं गीतसे गाए । दश भक्त वृत्त कृष्णजी, कौं प्रनाम कर पाय ॥ ८८ ॥ ताते सब परिहार कर, सबके प्रभु गोपाल । उगही की सेवा सुखद, ओर सबें जजाल ॥ ८९ ॥ घडो लाम हरिनी भगत, अति दुर्लभ सो आय (हिं) । जाको हे हरिकी कृपा, सोहै पावे ताय (हिं) ॥९०॥ जहा जायहे टर तहा, गडे कह न काल । निधेके नर जानियो, निना सरन गोपाल ॥९१॥ सुरा नाहि तिहु लोकमें, मये काल बस जाहि । विना श्रीगिरिधर दु सहन, ओर न दूजो आहि ॥९२॥ श्रुति आगम इतिहास स्मृति सोधे सबे पुराण । श्रीपुरुषोत्तमभजन त्रिनु, जीयही सुख न बिदान ॥९३॥ कोउ कहे जला बडो, कोउ सूर मदेश । कोउ गणेश देवी कहत, तिनको ज्ञान न लेश ॥९४॥ या विधि कहत ते नारनी, श्रुतिमार्गमृगबधिक । हरिसम कोऊ नाहिन, कोउ न इनसो अधिक ॥९५॥ शिखा पिपको तन भई, जब सेये हरिचरन । ब्रह्मा ह भग्यो नालमें, सुख पाय्यो धहीं

रसन ॥९६॥ पचवन्न पाचो मुखन, कहत हो जानत नाहि । सो हरि पूरन प्रकट, रत सदा वजमाहि ॥९७॥ चतुरानन चहों वेद करि, फिर फिर कहत हे नेत । सो हरि प्रगट भक्तहित, अङ्ग यशोदा लेत ॥९८॥ व्यास कही जाने गुनन, शेषहि कहत अजन्त । सहस्र जीम नित नये गुनन, तिनहु न पायो अन्त ॥९९॥ वेदहु करि नहि पाइयो, नहीं यज्ञ नहि दान । नहि ज्ञान पैउये न कन, पईये भक्तविधान ॥१००॥ भक्तहेत विषयान किय, भक्तहेत सकटार । भक्तहेत तृणान्त हयो, बधवाए करि आर (?) ॥१०१॥

द्वीशतक.

दामोदरलीला—धन्याश्री राग ॥ तुम तो अतिनिदुर नन्दरानी ॥ चोद लोककी स्वामी ताकी कलुक न राखी कानी ॥१॥ तनरु दधिफे कारन हरिको ऊजल बधन कीनी ॥ अतिहि विस्थानो दोय रोसत असुवन वागो भीन्थो ॥२॥ बडी वेष्टें लालन पायो वजकी जीवन प्रान ॥ दर्दादास प्रभु भक्तके वर हे ताकी यह पहेचान ॥३॥

उराहनेके पद—राग धनाश्री यशुमति केसी सुत तैं जायो ॥ चोरी करतो फिरे लगवा दूढे भवन परायो ॥ धीकेपर दधि धर्या अछूतो माट फोरके सामो ॥ परमें बदर बहोन घुसाये माखन सबे छुटायो ॥२॥ तु वरजत नहीं अपनो बालक कैसे सहे निन हान ॥ हनि बोले यह ग्वालन झुठी बाको वल्लो न मान ॥३॥ मोय पकर ले गई घर अपने तुमपें होत अयान ॥ दपनी मन मुसकाय रहे तत्र दर्दादासके प्रान ॥४॥

घर भोजनके पद—राग धनाश्री जेमत श्याम राम एक साथ ॥ खात खवावत करि परस्पर ले छे अपने हाथ ॥१॥ व्यजन भीठे खाटे खारे सीखरन मेवा मात ॥ रोटी पुरी लीटी लुचड जेवत मनन अघात ॥२॥ दु मिरचको मुखमें आयो नेनन जलभर जात ॥ भीठो दूध छे मात पिवावत हँसके कठ लगात ॥३॥ यह मुख देखत नद सुदित मन कहि न जात कलु बात ॥ दवादास आस झुठनकी दीजे गोकुलनाथ ॥४॥

छानके पद—राग सारंग ॥ गहवर वन छाक आई चद्रमगा सखी लाई पठइ जसोदा मात प्रेमसों सँवारी ॥ देख श्याम गये दोर नेहसो करी निहोर रुखतर घयां डला कहत लाज वारी ॥१॥ सखाको बुलाय पास सवन सों करत हास आन सब लेहो ठाक परम रुचिकारी ॥ बाटत हरि अपने हाथ मुखकी कलु कहि न जात दर्दादास झुठन पाय जाय बलिहारी ॥२॥

राग मलार ॥ वजपर श्याम घटा जुरि आई ॥ छक पठाई जसोदा मैया लेहो कुवर कन्हाई ॥१॥ ग्वाठ मडलीं कर तहा बैठे अतिही सघन वर द्वाही ॥ बाटत श्याम सनको हितसों जेवत रुचि उपनार्इ ॥ न्हेनी न्हेनी वृदन बरखन छाग्यो पवन चलत मुखदाई ॥ गाय बुलाय कीनी इक ठोरी दर्दादास मन आई ॥३॥

अचचन बीरीके पद—राग धनाश्री ॥ भोजन कीनो श्रीगोपाल ॥ यमुना जलसो
अचचन कीनो बीरी देत व्रजवाल ॥१॥ करत आरती जसोदा मैया वारत मुक्तामाल ॥ दर्दादास
गिरिधरको श्रीमुख देखत भयो निहाल ॥२॥

राग सारंग ॥ भोजन कर उठे व्रज नाथ ॥ अचचनको यमुनाजल लीनो श्याम पगबारे
हाथ ॥१॥ व्रजनारी बीरी ले आई फूली अंग न मात ॥ हरि बांटत सब ग्वाळ बालको आपही खात
अघात ॥२॥ मात गेहिणी आरती वारत होत प्रफुल्लित गात ॥ दर्दादास यह रोमा निरखत
नक्षण भयो सनाथ ॥३॥ पद ॥ गिरिधर वनमें करत विहार ॥ छाक आरोगे अचचन कीनो बीरी
आई व्रजनार ॥१॥ पके पान सुपारी काथो लेंग और घनसार ॥ बांट खात लाल अपने कर
दर्दादास बरिहार ॥२॥

पनघटके पद—राग धनाश्री ॥ पनघट ठाडो हे नदलाल ॥ कोन जतन कर भरें मथ
निया सग लायो व्रजवाल ॥१॥ माल तोरत बांह मरोरत और वजावे गाल ॥ भार लुटुटिया
गागर फोरत करी देत बेहाल ॥२॥ एक गामको वास समीरी करिये कोन उपाय ॥ दर्दादास
यह बात वृक्षिये देउ उराहनो माय ॥३॥

हिलगके पद—राग आसावरी ॥ जा दिनतें यह बोटो निरख्यो तयतें फलु न सुहायरी ॥
चित्त चोर्थो घर काज न भावे देखन जिय अकुलायरी ॥१॥ भई बामरी गुरुजन टोकरत ओर
सत्तावे मायरी ॥ लोकर खज कुल कान ठोडके मिलुं श्यामकुं धायरी ॥२॥ अब तो जिय एसी
यनि आई सीस रहेके जायरी ॥ दर्दादासके स्वामी मिलें तें तनके ताप नसायरी ॥३॥

अनुभवमञ्जरी.

[भक्तवत्सलकवि श्रीदयारामभारद्वज.]

(जन वर्षना नरमा अंकना १४ २४८ थी.)

इकदा श्रीनवनीताप्रियाजी मो उर लपटाने, शांली भोजन करत दह करुना रस साने
॥१॥ इकदा श्रीवल्लभाधीश महाप्रभु करुना कर, मोको दीनो दरस सरस तन में माय्यो वर
॥२॥ नाथ यसो मो हृदय निरतर अपनो जानो, तब अपनो पदपत्र सय मो उर परसानो
॥३॥ श्रीमुख बोले बसे सदा हम तेरे हियमें, मेरो हे तू सतत धरे चित्त जिन जियमें ॥४॥
मेरे सब उल्लको उद्धार सु हमहि करेंगे, अब तोको नहि जन्म बहुरि सब दुःख हरेगें ॥५॥
श्रीगोस्वामी विठ्ठलेश मोहि दरसन दीनो, दूर करि माया जाल पैंच अपने दिग लीनो ॥६॥
श्रीजी सहित दह शांली मोय बहुरि गुसाई, मेरी पक्ष करि प्राननाथपे रूपा कराई ॥७॥ एक
बेर मो संग चले हरि मित्रकी नौई, अंगसों अंग लुवाय परस्पर दें गट्यांही ॥८॥ दयो दयाको
रूप कोड कीर्तन अस गायो, सुनि कटि गोकुलनाथ न नायक समझन पायो ॥९॥ दयो कृपाको

रूप आहि यों श्रीमुख बोले, को जाने को कारन सो यह वायक खोले ॥५०॥ इकदा श्रीक-सों
 मोकर गहि कमलनयन हरि, मो सह बैठे सयन मोहि बूझी समझ न पारि ॥५१॥ यह काको
 अधिकार होइ तब में कहि जानी, भयो परम आनंद आप करुना सब मानी ॥५२॥ कछु
 दूरहीतें पद माग्यो में देन वधार्यो, इकदा मेरी पीठ थापि कहि जा भव तार्यो ॥५३॥ इकदा
 कहि रघुनाथ सु हम तू आहि नरमदा, इकदा भेटि कछो जाय मन नयन करमदा ॥५४॥
 इकदा मो उरपर बैठे महाप्रभु करुना कर, सबे हमारो कियो होत कहि तू दुःख मन धर ॥५५॥
 तिलक अपने भालहि तें छे भाल मोय दिय, बहु हित करि अपनाय रीति पद परस सिखे पिय
 ॥५६॥ इकदा श्रीगोवर्धनधर मोपें पय माग्यो, कनक कटोरा भर प्यायो में अति अनुराग्यो
 ॥५७॥ इकदा श्रीप्रभु रसिकराय रसना मोय दाखी, एक बेर श्रीकृष्णताप कर यों मोय भाखी
 ॥५८॥ इकदा श्रीरणछोडराय मंजुल दे झांखी, मोसुं करि करपल्लवी प्रमन मित्रता दाखी ॥५९॥
 कहत कहत अमि वचन पधारे मो दिंग म्यामी, आवो नंदनंदनकी स्त्री कहि अंतर्दामी ॥६०॥
 इकदा श्रीगिरिधरन चरन मोपें परसाये, करि करुना निज जानि, नाथ मम कनियां आये ॥६१॥
 लपटे दे गल बांही प्यार प्रीतम मोय कीनो, अब तुम बहुत भये चोगे श्रीमुख बर दीनो ॥६२॥
 इकदा श्रीराधा चंद्रावली पोटे पेखे, चरन जुगल चंपत में श्रीजीको देखे ॥६३॥ अपने ओर
 प्रिया जुग पद संग संग मिलाये, अति हित उपज्यो मेरे हें कहि वदन लुवाये ॥६४॥ एसी महा
 स्वरूप झांखी मोको प्रभु दीनी, सो सब श्रीगुरुदेव आपको सेवक चीनी ॥६५॥ इकदा
 श्रीवल्लभनंदन मम ऊर पद थायो, जुगल पाय परसाये प्रिय वच प्रिया अलाय्यो ॥६६॥ इकदा
 दरसन दिये कृपा करि श्रीवल्लभवर, अति हित करि कहि सदा मुखी रहे पीठ थापि कर ॥६७॥
 एक समे श्रीगोपीनाथ प्रभु दरस दिखायो, अति शृद्ध अरन चरन पावन हों परसन पायो
 ॥६८॥ ओर पुरुष यों कही तुमारे गुरु ए आही, तामें कहि हां हां यागें कछु संसय नाही
 ॥६९॥ हें गुरु तप हम भेट वचाइ आप यों बोले, में कहि कैतक कौन वचाये अंतक गोले
 ॥७०॥ आप कहें तुव भाग्य कही में यों क्यों कहिये ? सबे राबरी कृपा जीय बल कछुहु न
 छहिये ॥७१॥ में कही मो बलसैं भलो सबबल तुम जानूं, यह करुना मोहि करो कृतियल
 कचहु न मानूं ॥७२॥ तब प्रसन्न हंसि कही आप भल रहस्य जानी, बहुत कृपा फिर करी हरि
 कही मनहर यानी ॥७३॥ इकदा श्रीगुरु लाल मंत्र उपदेसही कीनो, अथाक्षर फरभूत होयगो यह
 बर दीनो ॥७४॥ इकदा श्रीरनछोडराय मोय दरसन दाखे, हियकर धरि तू मेरो द्वे श्रीमुख यों
 भाखे ॥७५॥ इकदा श्रीजी अति सुंदर मोय दरसन दीने, सिंहासन तें मो सन्मुख अति हितभांनि
 ॥७६॥ निजपद नूपुर निकसि गयो प्रभु मो कर दीनो, दे पहिराय दइ आय समें समझ थीनी
 ॥७७॥ गायो कछु इक ख्याल आप अस्ताद मुनाइ, बहुर कही मोय वृज में तुक नद बनाइ
 ॥७८॥ प्यारसु प्यारे लालजु मेरी कनियां आये, हंसि हंसि बातें करी नाथ में कंठ लगाये

॥७९॥ जलपात्र सहित भोजनकों हरि में पधराये, श्रीअंग परसत भये सुख सो जाय न गायें
 ॥८०॥ इकदा संकट जानि लालजी दरस दिखाये, कनियां आये गल लपटाये पद परसाये
 ॥८१॥ इकदा श्रीशेषाया प्रभु दरसन दीने. मेरी सन्मुख देख्यो अति कर्नारस भीने ॥८२॥
 जय जय करि हू समीप गयो श्रीकर सिर धार्यो, तू हे हमारो श्रीमुख कहि यो ताप निवार्यो
 ॥८३॥ दीनो वर हम अति प्रसन्न श्रीमुख भाख हैं, अब तू देखि समयपर पर चोकस दाखत हैं ॥८४॥

[आनन्द अथनी ओं ११७ प्रति ओं ११७ आनन्द अथनी ओं ११७ आनन्द अथनी ओं ११७ आनन्द अथनी ओं ११७
 पद्य आपी, तेभा ४० मे ७६ आ प्रभावे वधारे छे.—नददावहो नाम तिहारो यों धासुख बोले, एही
 नाम द्वे चार भगवदावो हे सोले ॥४०॥ वगी ४७ भी ६३ वधारे छे:—इकदा श्रीमहाप्रभुजी
 निजान छहे दिखे दरसन, हितसों लियो ल्हाय हूद मोनो ब्हे परसन ॥४७॥]



उत्तमोत्तम साधन.

[वक्ता—आयुष्मान् गा. श्रीदीक्षित भगवान् मुंबाइ.]

श्रीमदाचार्यचरणसरोरुहाश्रयी भागवान् वैष्णवचन्द्र ।

आज में आप लोगोंके समक्ष पूज्य पितृचरणोंके पादपद्मोंमें प्रणाम करके “ भगवत्प्रार्थिम्
 उत्तमोत्तम साधनभक्ति है ” इस विषयपर कुछ कहना चाहता हूं । श्रीमदभागवत एकादश-
 स्कंधमें लिखा है कि:—

न साधयति मा योगो न साख्यं धर्म उद्धव । न स्वाध्यायस्तपस्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥

भक्त्याहमेकया ब्राह्मः श्रद्धया मा प्रियः सताम् । भक्तिः पुनाति मणिष्ठान्धपाकानपि सम्भवात् ॥

अर्थात्—हे उद्धव ! मुझे योग भी साध्य नहीं कर सका; और न साख्य, और न
 धर्म, और स्वाध्याय भी नहीं, न तप, न त्याग, किन्तु मेरी अतितीव्र भक्ति जिस रीतसे मुझे
 साध्य कर सकी है.

सत्पुरुषों का प्रिय आमा ऐसा में एक भक्तिसँही प्राप्त होता हूं । और मेरेमें दे निष्ठा,
 जाकी वैसी जो भक्ति हे सो भक्ति अपचको भी जन्मत पवित्र कर सकती है, अर्थात् भगवन्निष्ठा
 भक्ति जन्मतः चाण्डालकोभी पवित्र कर सकती है ।

श्रीअम्बरिष के यहां एक दिन दुर्वास ऋषि आये । तब राजाने ऋषिको आदरसंकार
 करके भोजनके लिये निमन्त्रण दीया । द्वादशीका दिन था । आपका नियम है कि एकादशीका
 व्रत करके द्वादशीके दिन जो पारणा न करे तो व्रत निष्फट हो जाय । द्वादशीकी सवादी
 पड़ी मासही अवशिष्ट थी, राजा बड़े विचारमें पड़ गये । बहुत विचार करते करते उनके मनमें
 यह आई कि केवल जलसे ही पारणा कर दू, क्यों जो ब्राह्मणोंने जलका पान अनशनके बरोबर
 माना है । इस लिये जलके भक्षणमें कुछ दोष नहीं । यह बात जब निश्चय हुई तब राजाने
 तुलसी चरणामृत लेकर पारणा किया । राजा दुर्वास आपमें —————

तो वे ऋषिही ठहरें। उनको रस्तामें ही सनर पड़ गई। अत्यंत ही क्रोधान्वित हो करके राजाके पास गये। लोग भी कहते हैं कि इनका क्रोध क्या है जाने दुर्वासा? जो कोई बहुत क्रोधी उसको सब लोग मरुतीमें दुर्वासा कहके ही बुलाते हैं। तो यह तो साक्षात् दुर्वासा ठहरे। एकदम क्रोधित होकर अपनी शिखासे वृत्तिका नामकी शक्ति निरालके भक्त राजर्षि श्रीअम्बरीष पर फेंकी। इधर वृत्तिकाको फेंकी और उसी वरत श्रीसुदर्शन चक्रने आ कर वृत्तिकाको भस्म कर दी, और दुर्वासा ऋषिके पीछे जाने लगे। ब्राह्मणदेव पचराये कि यह आपत्ति क्या गले लग्यी? दुर्वासा ऋषि भी दोड़े और सुदर्शनजी भी दोड़े। ऋषि दोटते दोड़ते ब्रह्माजीके पास गये, और हाथ जोड़ कर कहने लगे कि, महाराज! इस आपत्तिसे तो आप मुझे मुक्त करो! ब्रह्माजीने कहा कि भाई, इस आपत्तिसे बचानेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है। वहासे भगके महादेवजी के पास गये, ब्रह्माजीका उत्तर था वही महादेवजीका उत्तर मिला। अब तो श्रीकृष्ण के पास दुर्वासा गये। श्रीकृष्णने भी यही उत्तर दीया। वह यह है। यद्यपि उसके बहुत स्नेह है, परन्तु उसमें "भगवत्-प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है" इस विषयका एक श्लोक है सो यह है कि—

मयि निर्वद्धहृदया. साधनं समदर्शिनं । वरीकुर्वन्ति मा भक्त्या सत् स्त्रिय सत्पति यथा ॥

अर्थात्—मुझमें जिसका हृदय पृष्ठ गया है ऐसे जो समदर्शी सपुरुष, भक्तिसे मुझे बरा कर लेते हैं जैसे भली खी भली पतिको बरामें कर लेती है, तब फिर भगवानने आज्ञा की कि, तुमने जिसका अपराध किया है, उसीसे क्षमा मागो। तब दुर्वासाने अम्बरीषके पास जाकर पांव पकड़ लिये, तब राजाने भी सुदर्शन की स्तुति करके ब्राह्मणका चक्रसे छूटकारा करवाया।

वैष्णव वृन्द! इस श्लोकसे भी आप लोगोंको मालूम हुआ होगा कि भगवत्प्राप्तिमें भक्ति ही उत्तमोत्तम और एकदम सरल साधन है। भागवत सप्तमस्कंधमें भक्ताग्रणी प्रह्लादजीने भी दैव्य पुरोंको उपदेश दिया है कि—

नालं द्विजव देवत्वं ऋषिर्न वा सुरामजाः । प्रीणनाय मुकुन्दस्य न वृत्त न वृजता ॥

न दानं न तपो नेत्या न शौचं न व्रतानि च । प्रीयतेऽमलया भक्त्या हारिण्याद्विदम्बनम् ॥

अर्थात्—हे दैव्यपुत्रों, श्रीमुकुन्द भगवानको प्रमत्त करनेमें ब्राह्मणत्व नहीं चाहिये, देव व नहीं चाहिये, ऋषिव नहीं चाहिये, चारित्र्य नहीं चाहिये और कोई महामहोपाध्याय हो, उसकी बहुजनासे प्रभु प्रसन्न हो यह भी नहीं। और अमुक कुल्के हो उमापि श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं यह भी नहीं, और यह कहते हो कि इनने हजारों वरस तपस्या की है इनके उपर भगवान प्रसन्न होंगे यह भी नहीं, ये सब व्रत करते हैं, भाई! बड़े धर्मात्मा हैं, इनके उपर, तो भगवान कहते हैं यह भी नहीं, अब कहते हैं कि, शुद्ध भक्ति है उसीसे भगवान प्रसन्न होते हैं और सब तो फर्जता केवल विदम्बन मात्र है।

वैष्णववृन्द ! इन श्लोकोंमें माध्यम हुआ होगा कि 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम सरल ! तथा अच्छा साधन जो हो तो भक्ति ही है ।'

द्वैत कण्ठकवनचन्दनद्रुम परमभक्ताप्रगी श्रीप्रह्लादजीने भी स्तुतिमें कहा है कि "मैं मानता हूँ कि परम पुरुषोत्तम भगवानको धन, अभिजन, नाम, सत्कुलरूप, तप, शास्त्रका श्रवण वर्चस तेज प्रताप सामर्थ्य शौर्य पुंस्त्व ज्ञान, योग यह समग्र मित्रके श्रीपुरुषोत्तमको प्रसन्न नहीं कर सकते । दृष्टान्तमें जैसे गजेन्द्रको सिर्फ भक्तिसे खुरा हुए ।

वैष्णववृन्द ! इस लिये भगवान् भक्तिद्वाराही प्रसन्न होते हैं अन्य साधनोंसे नहीं । इस लिये 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम और सरल साधन भक्ति है' ।

परम भक्त उद्धवको उपदेश देते हुए एकादश स्कन्धमें भगवानने कहा है कि भेरे कहे हुए भक्तियोगसे मेरा नित्य जो भजन करा करे तो उसके सब काम नष्ट हो जाय । क्योंकि मैं उसके हृदयमें आया हूँ इस लिये । इस श्लोकका जो यदि तात्पर्य विचारे तो 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है' यही तात्पर्य निकलेगा । इस जगह एक शंका होती है कि एकादश स्कन्धमें भगवानने आज्ञा की है कि "योगाख्यो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधिस्तथा ।" अर्थात्—मनुष्योंके श्रेयके लिये मेने कर्म, ज्ञान और भक्ति ये तीन मार्ग प्रकट किये हैं तो अब तो तुम एक भक्तिहीन भगवत्प्राप्तिमें साधन बताते हो उसका उत्तर यही है कि अपन जो यदि कर्मका विचार करे तो कर्मके द्य अंग है देव, काल, द्रव्य, कर्त्ता, मंत्र और कर्मका प्रकार, वह शुद्ध होना चाहिये, अब पहले देवकाही विचार करे तो क्या बंध हो रहे है, ऐसा देश है । काल तो कल है उसकी तो बलिहारी ही है । द्रव्य में तो बेजीटैबल घा आ रहा है, कर्त्ताका तो पूछो ही क्या ! बहुत थोड़ेही मन्त्रकों स्वरसहित जानते हैं और यज्ञका प्रकार जानते होंगे के नहि यही मुझे शंका है । अब कर्मकी बात हो गई अब लो ज्ञान । ज्ञानमें तो पहलेही ब्रह्मचर्य चाहिये, एक कविका श्लोक है कि जो लोग खाली वायु और पानीही पीकर रहते थे ऐसे जो विधामित्र और पराशर वे भी खीका मुख देखके मोहित हो गये तो जो लोग दाढभात और घेहु, इत्यादि रसोद्योंको खाते हैं उनसे जो इन्द्रियनिग्रह हुआ तो विन्ध्याचल पर्वत समुद्रको तर जायगा, इस प्रकारका पाखंड जगतमें फैल रहा है । तब ज्ञान कर्म बटा ही मुश्कील है । भक्तिके लिये तो प्रभुही श्रीमुखसे आज्ञा करते हैं कि चाहे जैसा भी क्यों न दुराचारी हो वह यदि सब दुराचाओंको छोड़के यदि मेरा अनन्य भजन करे तो वह सपुरुषही मीना जाय, इस लिये भक्तियोगका दरवाजा तो सदा सर्वदा खुलाही है । यह भक्ति शुद्ध अनन्य अन्याशयरहित होनी चाहिये, मनमें तो रुद्धा फिरार आ रहे हो क्या दस तेजी के दस मन्दी, और हाथमे मीसुखी । तो कैसे भगवत्प्राप्ति होगी ! यदि श्रद्धा भक्ति होगी तो जरूर भगवत्प्राप्ति निश्चयान्मक

अर्थात्—निष्काम होके अथवा सर्व कामना रखके अथवा मोक्षकी कामना रखके जो पर पुरुष है उसका तीव्र भक्तियोगसे यजन करे. इस जगह जो यदि भक्तियोगसे भगवत्प्राप्ति न होती तो—'तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ।' यह अक्षर न कहते. इस लिये कलियुगमें कर्म और ज्ञान दुर्लभ है, इससे भगवत्प्राप्तिमें केवल भक्तिही सरल तथा निष्कण्टक उपाय है ।

सब प्रमाणान्तरसे यह निश्चय किया कि—'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम तथा सरल साधन जो कोई हो तो भक्ति ही है. '

अब मैं अपने विषयको ज्यादा न बढ़ाके गीताके चार, पांच श्लोक और श्रीमद्भगवत्के एक, दो श्लोक देके इस विषयको सम्पूर्ण कर दूंगा. गीताके एकादशाध्यायमें अर्जुन प्रति भगवानने कहा है कि:—

अर्थात्—हे अर्जुन ! जिस रीतसे तुमने मुझे देखा उस रीतसे मैं न वेदसे न तपस्यासे न दानसे न यज्ञयागादिकसे किन्तु केवल अनन्य भक्तिसे ही मुझे जान सकता है, और मुझे देख सकता है । और मुझमें प्रवेश कर सकता है । इस श्लोकसे आप लोगोंको बराबर माझम हुवा होगा कि जो कोई भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन जगतमें हो तो भक्ति ही है ।

नाहं वेदेन तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥

भक्त्या बन्धन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ॥

श्रीमद्भगवद्गीताके अठारह अध्यायमें भगवद्वाक्य है कि:—

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यथास्मि तत्त्वतः । ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

अर्थात्—हे अर्जुन ! मैं जो हूँ मैं जितना हूँ वह भक्तिसँ यथार्थ रीतसे जानके फिर मेरेमें प्रवेश करता है । वैष्णवगग ! इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है भक्ति बिना प्रवेशामनुक्ति नहि मिलती । श्रीभगवद्गीताके चौदहमें अध्यायमें लिखा है कि:—

अर्थात्—जो मनुष्य अव्यभिचार-अनन्य भक्तियोगमें मेरी एकेलेकी ही सेवा करता है वह गुणोको तेरके मुझमें ही प्राप्त होता है, अर्थात्-ब्रह्मरूप होनेके योग्य है । वैष्णववृन्द ! इस श्लोकका भी तात्पर्य देखेंगे तो यही नीकलेगा. श्रीमद्भगवद्गीताके अठारहमें अध्यायमें कहा है कि—यह परम गुण मेरे भक्तोंमें जो कोई कहेगा वह मेरी उत्तम भक्ति करके निश्चय मुझे प्राप्त करेगा । यह श्लोककी ध्वनि यह ही नीकलती है । भक्तशिरोमणि श्रीनारदजीने भी सप्तमस्कन्धमें कहा है कि—उस समय मनुष्य सब बन्धनोसे मुक्त हो जाता है; और उस भावकी भावनासे आशयकी और आकृतिकी अनुकृति करने लगता है । महान् भक्ति योगसे हृदयके बीज दग्ध हो जाता है और अधोक्षज भगवान्की अच्छी तरह प्राप्त होता है । इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है कि यदि 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन हो तो भक्ति ही है' श्रीकपिलदेवजीने भी अपनी माता देवहूतिसे कहा है कि—वह ही आत्यन्तिक भक्तियोग मैंने कहा है जिससे तीनो गुणोको तेरके

मुक्ते प्राप्त करते हैं इस श्लोकका भी आशय यही है, प्रिय वेणुवमाण ! श्रीभागवतके एकादश अध्यायमें जनकप्रति नमयोगेश्वरने कहा है कि—हे राजन् । जो लोग गुणग्राही हैं और सारभागी हैं वे मुनय कलिकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि जिसमें कीर्तन भक्तिसँग ही सब काम सिद्ध होता है । नैगवद् ! कीर्तन भी एक प्रकारकी भक्ति है । नवधाभक्तिमें इसकी गणना भी की है इस लिये कलिमें तो भगवत्प्राप्तिके लिये निष्कण्ठक उत्तमोत्तम तथा सरत् जो कोई मार्ग है, केवल भक्तिमार्ग ही है।

पागल.

(लेखक—श्रीशुत प. रत्नलाल शर्मा इन्तजाला, नावटारा.)

(१)

अर्धनिशाकी निस्तब्धताको तोड़ता हुआ यह अपूर्व श्रुत शब्द कहासे गणगोचर हुआ ? अहा ! इस वेणुनादने तो हृदयतन्त्रीको भी निनादित कर दिया । आह ! ये नूपुरोंकी ध्वनि स्वयं मिश्रित हो दिगन्तको कहाँसे व्याप कर रही है ? यहाँ पर कोई धृष्टिगोचर तो होता नहीं है, फिर ये मनोहारिणी मधुर संगीतलहरी कौन कहाँसे कर रहा है ? कहीं मैं सोया तो नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, ये देखो, दोनों हथियापोलके हाथी भेरे सामने हैं, ये कमन्चोकका स्फटिकनिर्मित कमल भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है । सामने सैमेटी हुई ध्वजा—अपने आधार दण्डसे लिपटी हुई है । ये भरे दोनों हाथ स्वयं की राफाको दूर करनेको शून्यमें संचार कर ही रहे हैं । यह तो निश्चय है कि मैं न तो स्वप्नावस्थामें हूँ, और न सुषुप्तिमें । मैं प्रयत्न अपने विस्तरपर बेठा हुआ हूँ । अरे, यह क्या ? क्या गया वह संगीतालम्ब ? फिर गई वह सुरलीली मधुरध्वनि ? निश्चय ही यह कोतुक उसी रसरान, श्यामसुन्दर, नटनागरका है ! अरे ! वो गया ? जाता कहा है ? मर ? ठहर ! मैं आता हूँ ।

(२)

बिहारी बीस बाबीस वर्षका बलिष्ठ युवा है । अपने कुलधर्मानुसार वह पूर्ण धर्मज्ञ और कर्मशील है । उसे न किसीसे रागद्वेष है और न किसीसे विस्मय प्रेम । वह प्रेम करता है तो प्राणी मात्रसे, और उदासीन है तो अपने कुटुम्बियों तक से । वह डरता है तो सिर्फ एक सर्वश से और किसीका उसको तानिक भी भय नहीं है । अहर्निश उसके होठ हिलते हैं रहते हैं, पर किसी से बिना कारण बोलता नहीं । उसकी उदासीनता और मोननो देखकर जन साधारण उसे अर्धविक्षिप्त कहते हैं, पर उसमें कोई स्पष्ट चित्तभ्रम के चिह्न नहीं दीखते । उसे जो काम दिया जाता है उसे वह पूर्णतया प्रवीणतापूर्वक पूरा करता है ।

(३)

एक दिन सन्ध्यामें जहाँ वार्ता हो रही थी, बिहारी भी हमेशाके नियमानुसार वहाँ जा पहुँचा । एक पण्डितजीका प्रवचन पुढिमार्गके ऊपर हो रहा था । पण्डितजीने रोद प्रकट करने

हुवे कटा कि यदि कही भाडोका तमाशा हो, या बेध्याका गाना हो, तो लोग उसमें इतने शरीर होते हैं कि बैठनोको जगह नहीं मिलती, पर जहा धर्म के विषयमें कही विचार होता है तो वहा कोइ नहीं जाता । खास कर हमारे पुष्टिमार्गीय भाई और आचार्यतक इधरसे उदासीन हैं । तब ही तो विधवीयोंको हमारे अति उत्तम और सर्वश्रेष्ठ संप्रदायको मौज शोम्बका धर्म व इन्ट्रियोंकी लुत्तिसे अनाचार बदनेवाला मार्ग कह कर हमारी हँसी करनेका अवसर मिलता है । हमारा धर्म हमे दूसरोंके धर्मोंके बिद्रान्वेषण करनेका उपदेश नहीं देता और न में किसी के धर्मपर आयात करना चाहता हूँ । वैसे तो क्या ? हमारे ऐसे उत्तम मार्ग के सभी अनुयायी मार्गके सिद्धान्तानुसार चलनेवाले हैं ? । कभी नहीं, हमारे वैष्णव समाजमें ही ऐसी कई व्यक्ति हैं कि जिनके आचरण शुद्ध नहीं हैं और वह अनाचार करते हैं फिर भी वगुलामक्त बने फिरते हैं । ऐसे ही कतिपय व्यक्तियोंको देखकर लोगोंको हमारे ऊपर लान्छन लगानेका साहस होता है । जिसने निर्गुण भक्तिका रहस्य हृदयगम कर लिया है वह तो अपनेको सबसे बचाता ही है, क्योंकि यदि वह अपनेको सर्व साधारणके सपर्यसे न बचावे तो उसे अपने साधनमें व्यापात सहना पड़े और देवयोगसे उसकी कही प्रसिद्धि हो जाय तो वह अवश्य प्रपचमें पड़े वगेर नहीं रह सकता । जहा प्रपचमें साधक पडा कि उसको प्रभुका जो अनुग्रह प्राप्त हो रहा है वह प्राप्त होना बंद हो जाता है । ऐसे साधक अपने उत्कर्षके मार्गसे गिरकर पतनके मार्गपर लग जाता है । इसीसे जो सबे वैष्णव है वो कभी अपनेको प्रकट नहीं होने देते । जो दम्भी है वही लोगोंको छानेके लिये वगुलामक्त बने फिरते हैं । वे अपना तो (यह लोक भले न गिगड़े) परलोक अवश्य विगाडते ही हैं और साथही इस मार्गको भी उदनाम करनेके साधन हो जाते हैं । निर्गुण भक्तिकी व्याख्या करना सहज नहीं है, और न वह सरज साध्यही है । यह जगही सिद्ध होती है कि जब उस सत्चित्त आनन्दधनका अनुग्रह हो । वह सच्चिदानन्द पूर्ण दयालु है और अपने जनोंपर दया करनेके लिये हमेशा उद्यत है, पर होना चाहिये पात्र । वगेर पात्रकी पूर्ण परीक्षा किये वह कभी वचित नहीं होता । उसकी परीक्षाके साधन भी घटे कडे हैं । काम, क्रोध, लोभ, मोहादि अनेक गड़ियाँ हैं, इनमें तपनेके बाद जो पात्र पास होता है उसीमें उस धनकी अनुग्रहविन्दु गिरती है । जो यह अलभ्य अमृत उस पात्रमें पडता है तो उसमें उद करनेके लिये अनेक सिद्धियाँ उकता उठती हैं, और जेसे बनता है वैसे वह सिद्धियाँ उस पात्रमें प्राप्त अमृतकी जगह ग्रहणकर उसको उस अमृतसे वचित रखना चाहती हैं । यही समय उस पात्रके लिये पूर्ण परीक्षाका है । यदि इस समय पात्र पडा रहा तो वेडा पार है । वगना फिर उसकी उसी अन्धवाली हालत होती है कि जो द्वारसे निकलनेके लिये हाथोंसे दिवालको तोडता चला जानेपर जब द्वार निकटमें आने तक देह खुजलाने लगा और द्वारसे आगे चलकर फिर दिवालपर हाथ मारे । सस्ते उत्तम और स्वल्प साथ सरल मार्ग श्रीमदाचार्यमहाप्रभुजीने बनाया है । यदि दृष्ट निश्चय रखकर जीव इस मार्गसे चला जाय

और चलित न हो तो बेड़ा पार है । अहर्निश प्रभुका ध्यान रखते हुवे बिना आसक्ति ससारका कार्य करना, हरेक कार्य कृष्णार्पण ही करना । अपने लिये हुवे कार्यही बन्धनके कार होते हैं । इस लिये जो भी कुछ किया जाय वह कृष्णार्पण ही । किसी वस्तुमें ममत्व नहीं रखना आदि सिद्धान्तोंपर ही यह मार्ग स्थित है ।

जिस व्यक्तिको आप लोग पागल समझते हैं, मेरी समझमें वही इन सिद्धान्तोंपर चढ़ने वाला महात्मा है । यह कहकर उन्होंने विहारी की तरफ सकेत कर दिया ।

(४)

चहु ओर आज यहीं चर्चा हो रही है कि विहारी आज पूर्ण पागल हो गया है । व. भूवारीके नीचे पड़ा हुआ है और भूवारोके सामनेही टिकटिकी लगा रहा है । उससे चाहे कोई भी कुछ कहेपर जवाब नहीं देता । खाना पीना कुछ भी मुहाता नहीं है । वह सिर्फ रोताही रहता है ।

प्राचीन कीर्तन.

(१)

भ्यासे हुमादे नयना, दरस गिन भ्यासे हुमादे नयना (१)

ज दिन ते मोहन गये भथुरा, ता दिनते नहि सेना-दरस.

वृंदावनकी कुंज गलनमें, राधेसों कर रडे सेना-दरस. (२)

दिन दिन प्रति खोजन नहि लावत

निंद गिन भीती रण देना-दरस. (३)

जमुनाके नीर तीर घेतु अरावे, मोहन गजवत भीना-दरस. (४)

सूरदास प्रभु आन भिदावे, शरद देना सुषा देना-दरस. (५)

(२)

आंणडी कामलुगारी डो पहाला तारी आंणडी कामलुगारी.

जे आंणडीजे सर्व मर मोक्षुं, मोही सकल मर नारी—डो. (१)

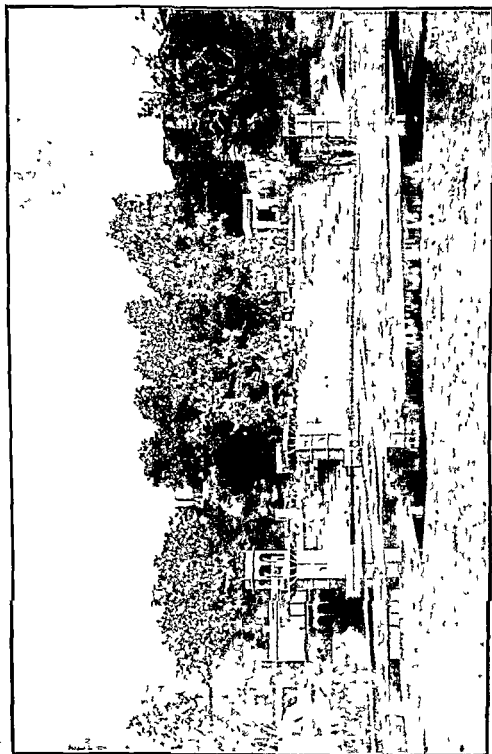
भोर सुकुट भीतांअर सोडीजे, कुंडली छणी न्यारी—डो. (२)

जमुनाके नीर तीर घेतु अरावे, जरी गजवे रंग न्यारी—डो. (३)

सोल सहस गोपीजीमां जेकजेक कानो तोजे कडेवाया प्रसचारी—डो. (४)

युरुषोत्तम प्रभुकी छणी निरणत, अरबुकमल गलिडारी—डो. (५)

(संग्रहकर्ता-शा. दादासाहब क्षीरालास, पीथुर.)



શ્રીગોકુલેશવચનસુધા.

૧. એક વૈષ્ણવને ત્યાં સંન્યાસી આવ્યો. વૈષ્ણવે ભોગ સરસી સંન્યાસીને કહ્યું કે, “ભિક્ષા દો.” ત્યારે સંન્યાસી બોલ્યો, કે હું બ્રાહ્મણ છું, તારા ધરમાં અહીરનો છાકરો ખાતો હતો, તે ભિક્ષા હું બ્રાહ્મણ નહિ લઉં.

(ભાવ) અતૈકિકમાં લૌકિક શુદ્ધિ યાચ તો તે દુઃસ્વી દૂર કરે. ભાગ્યમાં ખામી હોય તો પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને પણ સમજ ન થકે. સર્વ કોષને દેહઅભિમાન, જાતિઅભિમાન પ્રગલ્ભ હોવાથી અતૈકિકમાં સમજ બની શકેજ નહિ. અમૃતવસ્તુ અધુતીજ છે જ્યાં જ્યાં અમૃતનો આવિર્ભાવ હોય, ત્યાં ત્યાંનો સમજ હોવાતો નથી, જેમકે મધપુડો કોઈ હલકી જાતિના માણસ લાવે છે પણ તેને ગ્રહણ કરવા સર્વ કોષ બાધ ગણતા નથી. વળી સંન્યાસીનો અર્થ એ કે, સં-નિ-અસ. આવાં ત્રણ પદ નિઃસરે છે. ભગવત્સમજ્ઞ સિવાયનું બધું જેના હૃદયમાંથી જતું રહ્યું છે, તેજ સાચો સંન્યાસી, કે જેને પ્રતુસ્વરૂપમાંજ સ્નેહ હોય, આહિરનો છાકરો તો સાક્ષાદ્ બ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ છે, તેમાં આહીરનો ભાવ એ આસુર ભાવ ગણાય.

૨. એક ગામમાં ભવેયો આવ્યો, ને વૈષ્ણવનો વેશ કાઢીને પરમાનંદાસનું પદ ગણું. “એ જેરો મન હરિને બોલે એરો સખન સો તોયો.” એ રીતે ચાર વખત ગાવાથી દેહ પડી ગઈ.

(ભાવ) શરણ આવેલો વૈષ્ણવ ભલે સેવા સ્મરણ ન કરી શકતો હોય તો પણ પ્રભુ દેહ આપવા વિચારે તો એક દાણમા આપી દે છે. વેશધારીને પરમાનંદાસનની વાણી પ્રત્યક્ષ દેહ આપનારી નીવડી, તો અદર્શિય તે વાણીનું સ્મરણ કેટલે દરજ્જે ફરજિયાત થાય? પરંતુ તે વાણીનું સ્વરૂપ જાણવું જોઈએ. પ્રભુ તો પોતાના ખ્યાલ વૈષ્ણવના વેશથી કેમ ન રીઝે?

૩. એક દિવસે કહ્યું કે ભગવદીપતે હરીને ભગવદીપ કહીએ, ઘી ભરી કસોડી ઘીની કહી જાય, પણ ધાતુની ન કહી જાય. જલનો ધડો જલનો કહ્યો જાય, માટીનો ન કહ્યો જાય. તાલુ વસ્તુ ભરી હોય તાજી પ્રગલ્ભ નહિ, મૂલ વસ્તુકો નામ કોષ નહી લેય.

(ભાવ) વસ્તુની કૌમન છે પાત્રની કૌમન નથી. વસ્તુમયી પાત્રની કૌમન છે. તેમ વૈષ્ણવમા જો ભગવદ્ભાવરૂપી ઘી (સ્નેહ) ન હોય તો વૈષ્ણવના કોરીજ ગણાય. સ્નેહ હોય તો બધી અપ્રાપ્ત વસ્તુ પણ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. સ્નેહ પરાધીન કરવાનું સાધન છે. સ્નેહમા વળી અવર સ્નેહ મળીને કાર્ય થાય તો તો અતૈકિક ક્ષણસમજ્ઞ તુરંત પ્રાપ્ત થાય છે. સ્વતઃ સ્નેહ જરા ભયવાળો રહે છે. તે જ શુદ્ધ ભક્તિમાર્ગની સૂક્ષ્મતા છે.

૪. યદ્ ભાગ્યે કાયર અપ્રયોજક હે. દો ભાઈ પેડે જાત હને. વાકુ વાધ મિત્યો. તજ એક ભાઈને હાથ સાહે. દુઝાને કુદાડીસો વાકે પગ કાપવેકી કહી, પરંતુ હાથ ફૂળે! તેને કહી કે વાકે હાથ તો એરે હાથ મેં હે તાસુ કપાય નહીં.

(ભાવ) હૌમત વગેરે એકે કામ થઈ શક શકેજ નહિ. પોતાને મારવાનો ભય તો હતો નહિ, કેમકે જે હાથથી મારે તે તો તેણે જાણી રાખ્યા હતા, ને ભય ઉત્પન્ન થયો તે શા માટે? આ ભાગ્યમાં ભયવાળા વસ્તુ ધનપ્રદાદિક તો પ્રજ્ઞને અર્પણ કરી દીધું છે, છતાં તે વાન પર ધ્યાન ન આપે તો મિત્તારૂપ દુઃખ પ્રાપ્ત થાય છે. પણ સર્વસ્વ શ્રીકૃષ્ણને સમર્પાના અનુ-સંધાન સાથે નિવેશ કરતોજ રહે તો તો તેને કષ્ટાની મિત્તાજ ન રહે.

૫. રાજા પૃથ્વીએ નવાણું યતુ કયો ને સોમો ન કયો, જો સોમો કરે તો છંદાસન લેવું પડે. છતે સામધ્યે છંદાસન ન લીધું. ને ધણું પ્રસન્ન થયા.

(ભાવ) ગમે તેટલું અતૈકિક કાર્ય ભાવનાથી કર્યું હોય પરંતુ અધિકાર (યોગ્યતા) ના વિચારે પોતાનું હિનપણજ રાખે. છંદાસન ગ્રહણ કરે તો પાણુ પડવું પડે. જેથી અધિકાર

અથવા અહંભાવ છેવટને પગથીએથી પણ નીચે પારે છે. હાથી મોટા છતાં રાજ તરફથી મળતો ઉચ્ચો ખેરાક ખાતાં મોઢું મરડે, ને જાણે જે આપણે તો જંગલનાં ગાડ પાલાના ખાનાર છીએ, તેથી શ્રીમદ્વાપ્તુજી આગા કરે છે કે પ્રાપ્ત સેવેત નિર્મળ. ! અગવદ્ધમ્જીએ પ્રાપ્ત થાય તે મમતારહિત ભોગવવી.

૬. એક જણે દેવીની માનતા કરી કે મારે ત્યાં દીકરો આવે તો તને જીમતું પકવાન જમાડું. દેવીએ જાણ્યું કે બીજાં બધા પકવાન તો ખાધાં છે પણ જીમતું પકવાન કોઈ વાર ખાવામાં આવ્યું નથી. પછી ખેટા આવ્યો ને કહ્યું કે પકવાન લાવ, ત્યારે તેણે જીમતી કહેવા માંડ્યું કે લીધો લાડુ, લીધો જલેબી, લીધો ઘેજર. બધાં મેં જીમતી બનાવેલાં છે માટે ખાઓ એમ કહી સુપડી વગાડી.

(ભાવ) આપણે પ્રભુને શરણે ગયા ને આપણો ઉદ્ધાર પણ કર્યો, પણ પેલાની પેઠે જીમતું જ મમત્વ. આ ઘર, દારા, પુત્ર, કુટુંબ, પૈસો, આ લોક પરલોક બધું જીમતીજી નિવેદન કર્યું તેમ પાણું મમત્વથી કરવામાય મીસરીનો દુંક સરખોએ ન સમરપીયે તો જીમનાં ભોજન જરાબરજ કહેવાય.

૭ એકવાર આપ પાલખીમાં બિરાજી પર્વત પર પધારતા હતા ત્યારે પયોલીએ પુછ્યું જે રાજ, વૈષ્ણવને સાધન તે શું ને ફલ તે શું ? ત્યારે આગા કરી કે સાક્ષાત્ સમ્યક તે ફલ. ને તે વિનાનાં બધા સાધન.

(ભાવ) સાક્ષાત્ સમ્યક તો શ્રીવજ્રમુદ્રીને થયો હતો. તેનેજ ફલ કહ્યું છે પણ તે ભાવથી. પણ જે કોઈ તે ફળ પ્રાપ્ત કરવા ધારે તો તેના ભાવનો પણ પ્રભુ સાક્ષાત્ અંગીકાર કરી સંગ ફળ પ્રાપ્ત કરાવે, આ દશાતું દાન જ્યાં સુધી જીવને પ્રાપ્ત ન થયું હોય ત્યાં સુધી સાધનમાં મથ્યાજ રહેતું, છોડતું નહિ.

૮. એક સને સારંગી વાજતી હતી તે વારે ઐર હાથમું તાલી દીધી, ત્યારે પંચોલીએ પુછ્યું જે રાજ, કોઈ રાગ નથી જાણતા તેને શો દંડ ? ત્યારે શ્રીજીએ કહ્યું કે જેઓ નથી જાણતા એજ દંડ, એણે પ્રકારે વરતુમાત્રું જણાવ્યું જે સદવરતુને ન જાણે તેને તેજ દંડ.

(ભાવ) હંમેશાં ઉત્તમ પદાર્થ પરજ પ્રસન્નતા હોય. રામની સાથેજ તાલનો સમ્યક હોય ત્યા રાગ નથી ત્યા તાલેય નથી તાલ આનંદનું સ્વરૂપ છે. આનંદ, આનંદરૂપ પદાર્થથીજ રીતે, આનંદ વર્ષા સિવાય આનંદરૂપ કેમ થાય ? તેથીજ આ માર્ગમાં અહમસમ્યક હેતુ છે, આનંદરૂપ પ્રતુથી કોઈ જીવ અજાણો રહે તે દંડ કઈ જોછો ન મર્યાદ. છે તો એજ દંડ.

૯. એક વાર એક નામ પાછવેંકું આઈ તજ ખેર ખેર કહે ? જે હું રાંક છું હું રાંક છું. તે વારે શ્રીમુખે કહ્યું કે, કહો ! લટત તો નહિ.

(ભાવ) જીવ શરણ આવે ત્યારે વિવાહિત જેટલો આનંદ થવો જોઈએ, લૌકિક વિવાહે પણ રાજ રાજ રહે છે. તો પ્રભુશરણપ્રાપ્તિ વખતેજ પ્રથમજ દીનતા ન ભાખવી જોઈએ પણ શરણ થઈ બધા પ્રકારની સેવા કરતાં છતાંય એમ વિચારે જે હે પ્રભુ ! હું સેવા શું કરી જાણું ? હું તો આપને શ્રમ દઉં છું આ પ્રકારની દીનતાજ ફરજ છે.

૧૦. એક કે ઘરમેં વરસ દિન કો અનાજ હતો. તામે અધિક માસ આપો તજ ધનીને કહી કે એક માસ લંધન કરીએ, સ્ત્રી કહે લંધન કરી જાત હૈ, ના, ખાવ જે મરીએ, પહેલે લંધન કાએકુ કરીએ, પીછે કોન ખાય ?

(ભાવ) પ્રાપ્ત થાય તે મમતા રહિત ભોગવવું. લોભ પાપનું મૂળ છે. આગળ પાછળ માટે પ્રભુજી વિચારી રાખે છે. જીવનું વિચાર્યું કર્યું ચતુ નથી નેથી આપેલ પદાર્થનો વિનિયોગ ન લઈ પ્રભુને સમર્પાને રહે નિતીદ શા માટે કરવો ? તેમાં વિસજી કરે એજ બૂલ. અજ્ઞાપ.

વિશ્વધર્મ ભક્તિમાર્ગ.

(ઉપદેશ—ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવલ્લભલાલજી બાવાસાહેબ, પોરબંદર.)

મહામહોત્સવપ્રસંગ—શ્રીવલ્લભભાગ્યાર્થમહાપ્રભુચરણકમલમધુપાપમાન પરમ ભાગ્યવાન વૈષ્ણવ ઇંદ્ર ! આજે આપણે કુતીયાના એક મોટામાં મોટા તત્ત્વવેતા જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભભાગ્યાર્થશ્રીને પ્રાકટ્યમહોત્સવ ઉજવવા અને શ્રીમદનગોદનકાલજના સાનિધ્યમાં એકત્ર થયા છીએ. તે પ્રસંગે તેઓશ્રીની જીવનકીર્તિનું આયોજન થાય, તેઓશ્રીએ પ્રકટ કરેલા વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો વિચાર કરાય, તેમજ તેઓશ્રીએ ઉપદેશોમાં બોધવચનો પોતાના જીવનમાં ઉતારી પોતાના કલ્યાણનો માર્ગ ધડાય તે બાબત દરેક વૈષ્ણવની અભિલાષા હોય એ સ્વાભાવિક છે. આ બધામાથી આજે અમે 'ભગવત્સેવા' એ વિષય ઉપર કે જે વિષય દૈવ જીવને ઉપદેશ કરવા માટેજ આજના જન્યન્તીનાયકનું પ્રાકટ્ય થયું હતું. તે ઉપર કંઈક કહેવા ઇચ્છીએ છીએ.

ઉદ્ધારાર્થ ત્રણ માર્ગો—દેવી જીવોના કલ્યાણ માટે શ્રુતિ સ્મૃતિ, પુરાણ આદિ શાસ્ત્રો ભગવાને તેમજ ભગવદ્ગ્રંથોથી ઋષિ મહર્ષિઓએ પ્રકટ કરેલાં છે. તેમાં કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ અને ભક્તિમાર્ગ એમ ત્રણ માર્ગો ઉદ્ધારને માટે વર્ણન કરવામાં આવેલા છે. તે બાબત શ્રીમદ્-ભાગવતના એકાદશ સ્કંધમાં ઉદ્ભવજના પ્રતિ શ્રીમુખેથી આગા કરેલી છે કે "યોગાશ્રયો મયા પ્રોક્તા નૃણાં શ્રેયોવિધિતસ્યા ॥ જ્ઞાનં કર્મં ચ ભક્તિરય નોપાયો-યોરિત કઠિરિચિત્ " હે ઉદ્ભવ ! મનુષ્યોને પોતાનું શ્રેય સાધવા માટે મેં ત્રણ ઉપાયો શાસ્ત્રોમાં કહેલા છે અને તે જ્ઞાન, કર્મ અને ભક્તિ છે. આ સિવાય અન્ય કોઈ ઉપાય શ્રેય સાધવા માટે નથી

ઉદ્ધાર કયા માર્ગથી ?—પરંતુ આ ત્રણ માર્ગમાંથી પણ " ભક્ત્યાદમૈકયા પ્રાણ્યઃ અદમેવ વિધોર્જન ! જેવું તે મારા સ્વરૂપનું દર્શન કર્યું તેવું તો માત્ર એક ભક્તિથીજ મારા સ્વરૂપનું દર્શન યથ શકે છે. આ ગીતાવાક્યમાંજ ભક્તિથીજ જીવને ભગવતપ્રાપ્તિ યથ શકે છે એમ ધીકૃષ્ણચન્દ્રે અર્જુનના પ્રતિ આગા કરેલી છે. તેમજ "નાયમાત્મા પ્રવચનેન લબ્યો ન શેધયા ન બદ્ધતા શ્રુતેન । યમેવૈય વૃણુને તેન લભ્યઃ તરયૈય આત્મા વિવૃણુતે તદ્ સ્વાત્મ " આ પ્રભુ પ્રવચન કરવાથી, શુદ્ધિથી અથવા બહુ શ્રવણ કરવાથી મળતા નથી, પરંતુ જેનું વરણ કરે છે, તેજ જીવને તેની પ્રાપ્તિ થાય છે. ગીતામાં પણ "નાદં વેદેર્નં તપમા ન દાનેન ચૈશ્વયથા " હે અર્જુન, વેદથી તપથી દાનથી કિંવા યજ્ઞથી મારી પ્રાપ્તિ યથ શકતી નથી. " તેમજ ભાગવતમાં પણ " ન શેધયતિ માં યોગો ન સાખ્યં ધર્મ ઉદ્ભવ ! યોગ, સાંખ્ય આદિ કોઈ પણ મને વશ કરી શકતું નથી પણ માત્ર ભક્તિથીજ વશ થાઉં છું. ઇલાદિ વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્-ભાગવતનાં વચનોમાં હે ઉદ્ભવ ! વેદાધ્યયન, બલ, દાનાદિ, તથા શુદ્ધિજન, તપો, બધામાંથી કોઈથી પણ ' રસો વૈ મઃ ' ઇલાદિશ્રુતિપ્રતિપાદિત રસસ્વરૂપ પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ યથ શકતી નથી, પણ કેવળ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિથીજ તેની પ્રાપ્તિ યથ શકે છે એમ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. પ્રેમ લક્ષણા ભક્તિજ ભગવતપ્રાપ્તિનું સાધન છે એ વાત ઉપર બાર મુકતાં શ્રીમદ્ભાગ્યાર્થચરણ તત્ત્વાર્થ દીપના સર્વનિષ્કૃષ્ટ પ્રકરણમાં આગા કરે છે કે એવો કોઈ જીવ જોયો નથી તેમ સાંભળવામાંજ આવ્યો નથી કે જે જીવ ચુકાતીત ક્રીડાશુનું સેવન કરતો મર્વયા મુક્તિને પ્રાપ્ત ન થયો હોય; કારણ કે, સાક્ષાત ભગવાન ભાગવતમાં આગા કરે છે કે " બ્રહ્મ માં પરમં પ્રાપ્તઃ " અર્થાત ગોપી, ગાય, પક્ષી સુદાં પણ પરબ્રહ્મ એવા મને પ્રાપ્ત થયાં. આદ્રશ સંદર્ભ ઉપરથી સિદ્ધ થાય

છે કે આ કલિયુગમાં શ્રવમાત્રને પછી તે સ્ત્રી હોય, શ્વર હોય કે ગમે તે હોય, દરેકને પોતાના ઉદ્ધારનું એક માત્ર સાધન ભગવત્સેવાજ છે.

વિશ્વોદ્ધારક જગદ્ગુરુ—આવો વિશ્વોદ્ધારક માગ પ્રવર્તીવવા માટેજ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરનું પ્રાકટ્ય આજથી સાઠચારસો વર્ષ પૂર્વે રાણપુર પાસેના ચંપારણ્યમાં થયું હતું. તેથીજ મહાનુભાવોએ પણ ગાન કર્યું છે કે ‘પ્રકટ બહે માર્ગ રીતિ ખતાઇ, સેવારીત પ્રીત મજબની, જનહિત જગ પ્રકટાઇ’ એ શબ્દથી આ માર્ગ અમુક જનો માટેજ હોય એમ નથી, પણ આખી માત્રના ઉદ્ધારને માટે આ માર્ગ છે, માટેજ તે પદમાં ‘જન’ એવો સામાન્ય શબ્દ મૂક્યો. બે આચાર્યશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ થયો ન હતો તો વેદમાં જેનો અધિકાર નથી, એવાં સ્ત્રીશ્વરને કલ્યાણનો માર્ગ કોણ ખતાવત ? તેથી કરીને આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રીશ્વરો માટેજ છે એમ સમજવાનું નથી. કારણ કે “સ્ત્રીઓ વૈશ્યારતયા શ્વરાસ્તેપિ યાંતિ પરાં ગતિમ્ ! કિં પુનઃ પ્રાણશ્ચાઃ પુણ્ય ભક્તતા રાજર્ષયસ્તથા” હે અર્જુન, સ્ત્રીઓ, વૈશ્યો અને શ્વર પણ માર્ગે સારણ સ્વીકારીને પરાગતિને પ્રાપ્ત થાય છે તો પવિત્ર બ્રાહ્મણો અને રાજર્ષિઓ મારી શરણાગતિનું અવલંબન કરીને પરાગતિને પ્રાપ્ત થાય તેમાં તો કહેલુંજ થું ? આથી સિદ્ધ થાય છે કે આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રીશ્વરાદિક માટેજ નથી, પણ સ્ત્રીશ્વરાદિક જેવા વેદાનધિકારી જીવોનો પણ આ માર્ગમા ઉદ્ધાર સમાયેલો છે, એટલે કે અન્ય માર્ગો કરતાં આમાં સ્ત્રીશ્વરાદિકનો પણ ઉદ્ધાર કરવાની વિશિષ્ટતા સમાયેલી છે. શ્રીચંપાઇજીએ પણ ‘સ્તુરકૃષ્ણપ્રેમામૃત’માં આગા કરી છે કે “રાધાવલ્લભસેવયા તદુચિતપ્રેમ્ણાપરેશૈરપિ શ્રીમદ્વલ્લભનામધેયસદૃશો ભાષી ન ભૂતોઽસ્ત્યપિ ॥” રાધાવલ્લભ શ્રીકૃષ્ણની સેવા શી રીતે કરવી એ ઉપદેશ કરીને તેમજ શ્રીકૃષ્ણને વિરે પ્રેમ કેમ સાધવો, તે વિષયના ઉપદેશો આપીને તો આપશીએ દલજ કરી છે. તેથી એમ સ્હેજજે બોલાઈ જવાય છે કે “આ ભૂતલ ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભનામ સમાન કોઇ થયો નથી તેમ થશે નહીં, ખરેખર સુદાસજીએ પણ ઉચિતજ ગાન કર્યું છે કે ‘શ્રીવલ્લભનમચન્દ્ર છટા ખિન સખ ભુગમેભુ અધિરા.’” અરણ.

નિઃસાધનોદ્ધાર—જ્યારે જ્યારે જગત્ નિઃસાધન અને છે એટલે કે કાલના બંધે કરીને સાધનો પોતાના ફલે સાધવાને શક્તિમાન રહેતા નથી, ત્યારે ત્યારે સાધનોના શાસ્ત્રોદ્ધાર ઉપદેશકની પ્રભુ પોતેજ જગત ઉપર પ્રકટ થાય છે. જેને ખીજ શબ્દમાં કહી શકીએ કે અવતાર ધરે છે, અને પોતાના સ્વરૂપખલથી જીવોનો ઉદ્ધાર કરે છે. જેમકે સારસ્વત કલ્યાણ કર્યું હતું. તે વખતે પણ “અહનયાપૃત” નિશિ શયાનમતિશ્રમેણ લોકે વિદુઃકુમુપનેખતિ ગોકુલંરમ ॥” ઇલાદિ વાક્યોમાં વર્ણવ્યા પ્રમાણે આખું મજ પણ નિઃસાધન હતું. એટલે પ્રભુએ તેવા નિઃસાધન મજનો ઉદ્ધાર કરવા પોતેજ પ્રાકટ્ય લીધું હતું અને તમામ મજનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો. તેજ પ્રમાણે આચાર્યશ્રી પ્રકટ થયા તે પહેલાની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ પણ ક્ષતિહાસ જેતાં માલુમ પડે છે, કે ધણીજ અરિથર બની ગઇ હતી અને લોકો પોતાનું કલ્યાણ સાધવા માટે કયા માર્ગનું અવલંબન કરવું તે વિષયમાં ઘણા ઉચાટવાળા રહેતા હતા. તે બાબત શ્રીમદાપ્રભુજીએ પણ તે સમયના ધાર્મિક વાતાવરણનો ઉલ્લેખ કરતાં પોતાનાં ‘કૃષ્ણાશ્રવ’ મંથમાં આગા કરેલી છે. “સર્વમાર્ગેષુ નરેપુ કલૌ ચ ખલધર્મિણી, પાપણ્યપ્રચુરે લોકે કૃષ્ણ એવ જતિર્મમ.” અર્થાત ખલધર્મમાં કલિકાલને લઇને ઈનીયા પાપકાંડમાંજ કુબી ગયેલી છે અને કર્મ, જ્ઞાન આદિ માર્ગો પોતાનાં ફલસાધક રહ્યા નથી, તેવા સમયમાં જીવે પોતાના ઉદ્ધારનો આધાર કૃષ્ણના આશ્રય ઉપરજ રાખવો જોઈએ, અને તેથીજ આપશીએ પણ આખા જગતને ભગવદ્શરણાગતિ જેવા, જેમાં સર્વથા પાતલાય નથી તેવા માર્ગનો બોધ આપ્યો. માટેજ આ માર્ગમા પ્રવેશ કરતાં જીવને પ્રથમ ભગવતશરણા-

ગતિનોજ બોધ આપવામા આવે છે. જેમ ભગવાને સારસ્વત કલ્પમાં દિગદિક્ષની પૂજા વગેરેથી અન્યાયથી બનેલ યજ્ઞને શ્રીગોવર્ધનને ધારણ કરીને સમગ્રગ્રંથ કે તમે એક મારા ઉપરજ વિશ્વાસ રાખો. મને તેમ કર્યું તો તે ઉદ્ધારને પ્રાપ્ત થયું. તેજ પ્રમાણે આ સ્વેતચારાદ કલ્પમા જ્યારે જગત્ નિ.સાધન બન્યું હતું તેવા સમયમા પુષ્ટિ જીવો પણ મર્યાદા અને પ્રવાદના જીવો સાથે અચાતા હતા. શ્રીમદાપ્રભુજીએ પ્રાકટ્ય લઇને જગતને વિદિત કર્યું કે જો તમે મારે માર્ગ ચાલ્યા આવશો તો હું આ જગતમાંજ અને આ જીવનમાંજ નમેને પ્રભુપ્રાપ્તિ કરાવી આપીશ એટલુંજ નહીં પણ પોતાને માર્ગ ચાલનાર ૮૪ વૈષ્ણુઓને આ જીવનમાંજ પ્રભુ પ્રાપ્તિ કરાવી આપી છે.

પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીમદાપ્રભુજી—આહું કહીને તે પ્રમાણે કરી બનાવવાની તાકાત નૈકિક પુરુષમાં હોઇ પણ પ્રકારે ધરી શક્તી નથી. તેથી આપણને માનવાને કારણ છે કે શ્રીવલ્લભમહા-પ્રભુજીનું પ્રાકટ્ય એ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમનુંજ પ્રાકટ્ય છે, એટલુંજ નહીં પણ ભક્તરાજ કૃષ્ણદાસ આદિને એ વાતનો સાક્ષાત્ અનુભવ થયેલો છે, અને અત્યારે પણ તેનોજ અન-વાચ્ય રાખનારને યદ્ય શકે છે. કૃષ્ણદાસ મેઘન અનન્ય યદ્યને શ્રીમદાપ્રભુજીની સેવા બહુ પ્રેમપૂર્વક કરતા હતા. તેથી આપથી તેના ઉપર પ્રસન્ન થયા અને દાષક મામલાનું કહ્યું ત્યારે તેણે ત્રય ઝીળે માંગી. (૧) સંપૂર્ણ પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતોનું જ્ઞાન થાય. (૨) મારામાથી સુખરતાનો દોષ નાશ. (૩) આપની શરણે આવના પહેલાં જેણે મને વૈષ્ણવ મંત્ર આપ્યો હતો તે ચરુને ઘેર આપ પધારો. શ્રીમદાપ્રભુજીએ ત્રણે વરદાન આપ્યા. બાદ શ્રીમદાપ્રભુજી તેમના ચરુને ઘેર પધારે તે પહેલાં એક દિવસ કૃષ્ણદાસ પોતાના ચરુને ઘેર ગયા ત્યારે ચરુએ પુછ્યું કે મને છોડીને બીજા ચરુ શા માટે કર્યા ? કૃષ્ણદાસે જવાબ આપ્યો કે મેં બીજા ચરુ કર્યા નથી, ચરુની કૃપાથી પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય છે. તે નિયમ મુજબ આપની કૃપાથી મને શ્રીપુરુષોત્તમનીજ પ્રાપ્તિ થઇ છે. શ્રીમદાપ્રભુજી છે તે પુરુષોત્તમ છે. ત્યારે તેના ચરુએ કૃષ્ણદાસને પુછ્યું કે શ્રીમદાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તેમાં પ્રમાણ શું ? આ સાલજતાંજ કૃષ્ણદાસ સજગતા અંગારા પોતાના હાથમા લઇને બોલ્યા કે શ્રીમદાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ હોય તો આ અગ્નિ મને ના બાળે અને ન હોય તો બાળે. આમ બોલીને એક મુર્તિ સુધી અગ્નિના સજગતા અંગારા પોતાના હાથમાં રાખ્યા પણ દાઝ્યા નહિ. આ ઉપરથી તેમના ચરુએ તે વાન સાચી માની હતી. તાત્પર્ય એ કે શ્રીમદાપ્રભુજી સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તે વાતનો અનુભવ કૃષ્ણદાસ મહાતુલાવાને થયો હતો એટલે કે આપથીનું પુરુષોત્તમત્વ નિર્સાદ્ય છે. તેમજ નિ સાધન જગતનો ઉદ્ધાર કરાવું સામર્થ્ય પૂર્ણ પુરુષોત્તમ સિવાય અન્યમા ધરી શકે નહીં અને આપથીએ નિ સાધન જગતનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો તેથી પણ આપનું પૂર્ણ પુરુષોત્તમત્વ શુદ્ધ બને છે. અને શ્રીસાક્ષીજીએ પણ 'વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ' ઇત્યાદિ વાક્યથી તેજ આજ્ઞા કરી અને તેઓ ઓએ ઉપદેશ કરેલી ભગવતોવાથીજ જીવને ભગ-વતપ્રાપ્તિ થઇ શકે છે તેમા અમે દશાત આપીશુ.

શાહુકારના છ પુત્રો !

એક શાહુકારના છ પુત્ર હતા. તેમનો એક દીકરો બાપનું ધન મેળવવા માટે પોતાની કાયાને કષ્ટ આપતો હતો અને માનતો હતો કે જો હું મારી સ્થિતિ હુબ્બી બનાવું તો માન પિતા દયા બાળને મને ધન આપે, બીજો પુત્ર બાપની દોષન સેવા માટે તેનું ધ્યાન ધરતો હતો. ત્રીજો બાપની વસ્તુને તુચ્છ કરીને માનતો હતો. ચોથો માનતો હતો કે 'આત્મા વે પુત્રનામાસિ' એ વાક્ય અનુસાર હજુ બાપ છું.' પાંચમો ધનને માટે પિતાના ધન વર્ણવતો હતો, અને છઠ્ઠો પિતાની સેવા કરવી એ પોતાનો ધર્મ સમજી પિતાની સેવા કરતો હતો. આ

છોકરાઓમાંથી બાપની પ્રસન્નતા ઠેના ઉપર ઉતરી આવે એ આપણે સમજી શકીએ એમ છીએ. ધર્મ સમજી સેવા કરનાર પુત્ર ઉપરજ, કારણ કે સેવા કરનાર સિવાયના પાંચે છોકરાઓ તો માત્ર સ્વાર્થનાજ સજા ગણાય. નિરુવાચ 'પ્રેમ તો ધર્મ' સમજીને સેવા કરનારનોજ કહી શકાય. તો તેવા પુત્રને પિતા પણ પ્રાણ ચક્રી ખોલે ગણે અને તેની પિતૃભક્તિને વશ થઈને રહે તો તેમા કંઈ આશ્ચર્ય નજ ગણાય. અરેખર એ રીતેજ ભગવાનને પ્રસન્ન કરવાના ભગવત્સેવા સિવાયમા સાધનો વિષે પણ સમજવું, એટલે કે પોતાની સેવા કરનારનેજ ભગવાનરૂપ નિષ્કીર્તિ પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે; અને તેવા પ્રેમપૂર્વક સેવા કરનાર ઉપર ભગવાન પ્રસન્ન પણ થાય છે એટલુંજ નહિ પણ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિરૂપી સૂત્રમાં બદ્ધ થઈને ગોપીઓની માફક તેમના વશમા પણ રહે છે.

એવના છ અભિલાષીઓ !

તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની તથા મયોદા ભક્ત આ પાચને દર્શાંતમા બતાવેલાં નેવા કરનાર સિવાયના પાચ પુત્રોની સમાન ગણવા નોંધ્યે. એટલે કે તપસ્વી યોગી, આ બધાનું આધન કરી શકાય છે. તેથી આ બધામાંથી કોઈને પણ ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકતી નથી. જેમ કે તપસ્વી તપસ્વર્થ કરે છે અને કાયાને કષ્ટ આપે છે. તે માત્ર રાજ્ય સુખને માટે અથવા તો પોતાનો મોક્ષ થાય એટલા માટે, પણ તેમા પ્રભુના સુખનો વિચાર નથી; તો ભગવાન પણ તેને રાજ્ય અથવા મોક્ષ આપી પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ યોગી પણ પોતાના મોક્ષની ઇચ્છા રાખી ભગવાનનું ધ્યાન કરે છે. પણ ભગવાનનું સુખ કંઈ વિચારતો નથી તેથી તેને પણ અશ્વિમા મહિમા આદિ સિદ્ધિઓ આપીને અથરા તેને પોતાના સ્વરૂપમાં અવસ્થિતિ થવારૂપ મોક્ષ આપી તેને પણ પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ વૈરાગ્યવાન પણ ભગવાને ઉત્પન્ન કરેલી વસ્તુઓને છુટ્છ ગણીને મોક્ષની ઇચ્છા ગણે છે એટલે તેને પણ ભગવાનના સુખનો તો વિચાર નથીજ, તેમ જ્ઞાની તો જેમ દર્શાંતમા એક છોકરો પોતાનેજ આપ સ્વરૂપ માને છે તેમ પોતાનેજ ભગવાન માને છે એટલે તેને તો સેવ્ય કોણ ? અને સેવક કોણ ? એટલે એને તો ભગવાનના સ્નાય સ્વરૂપનીયે ખબર નથી. તો પછી તેને ભગવાનની પ્રાપ્તિશી રીતે થાય ? પાચમો મયોદા ભક્ત ભગવાનની રત્નિ કરે છે. એટલે કે ભગવાનનું યજ્ઞગાન કરે છે પણ પ્રેમપૂર્વક સેવા કરતો નથી માટે તેને પણ ભગવાન હાડકાનો હરામ કરીને માને છે, અને કદાચિત મયોદાભક્ત સેવા કરે તો તે પણ પોતાને મોક્ષ મળે તેટલા સારજ કરે છે. માટે તે પણ સ્વાર્થી કહેવાય. આ પ્રકારે તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની, મયોદાભક્ત એ પાચે જણ કોઈને કોઈ ગીતે જો કે ભગવદ્ગ્રાધના કરે છે પણ સ્વાર્થને માટે.

ઉત્તમેશ્વર માર્ગ—ઉપરનાં સર્વ કારણો ધ્યાનમાં લઈને જગદ્ગુરુ ભગવાન વલ્લભાચાર્યશ્રીએ આજ દિવસ સુધી જગત ઉપર પ્રકટ થયેલા કર્મજાનાદિ માર્ગોથી એકદમ વિવક્ષણ એવો પુષ્ટિમાર્ગ પ્રવર્તીવ્યો અને તેમાં બતાવ્યું કે ભક્તિની નેમ પોતાના મોક્ષ માટે ન હોવી નોંધ્યે એ તો એક અવશ્ય થનારી બાબત છે. પણ જીવમાત્રોના ધર્મજ છે કે તેણે દેહ ધરીને ભગવત્સેવા કરવીજ નોંધ્યે. આ બાબત આપશ્રીએ 'ભગવત્સુખસેવાયે તત્સૃષ્ટિર્નિન્યયા ભવેત્' આ વચનામૃતદારા ઉપદેશેલી છે, અને સાથે સાથે વેદ, ગીતા, ભાગવત આદિમાં રૂપી રીતે રહેલો એવો એ સિદ્ધાંત પણ પ્રકાશિત કરી બતાવ્યો કે સેવા કરવી એટલુંજ નહિ પણ માત્ર ક્રિયાઓનું પર્વવસાન ભગવાનમોજ હોવું નોંધ્યે. બીજા માર્ગો કરતાં પુષ્ટિમાર્ગની એજ વિવક્ષણતા છે કે આ માર્ગમા માત્ર પ્રભુનુંજ સુખ વિચારાય છે અને તે સિવાયની બાબતોને ગોણ માનવામાં આવે છે અને આજ સિદ્ધાંત વેદમાં પણ કહેલો છે કે 'આત્મનસ્તુ કામાય સર્વ

પ્રિય ભવતિ" એટલે કે પરમાત્માને માટેજ આ અર્ધ હોવાથી તેને લક્ષ્મીજ અર્ધ પ્રિય હોવું જોઈએ. જ્યારે કે ખીલ માર્ગોમાં પોતાનો ઉદ્ધાર આગળ મુકવામાં આવે છે અને તેના સાધન તરીકે જ્ઞાન ઉપાસના આદિ કરવામાં આવે છે, આવી અન્ય માર્ગ અને પુષ્ટિમાર્ગ વચ્ચેના સૂક્ષ્મભેદ વૈષ્ણવોએ જૂઠાવા ન જોઈએ. અને એવ શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુએ પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ બતાવતાં આજ્ઞા કરી છે કે 'સાપેક્ષતા સ્વામિસુખે પુષ્ટિમાર્ગઃ સ કથ્યતે!' અર્થાત જે માર્ગમાં માત્ર સ્વામીનુંજ—પ્રભુનુંજ સુખ વિચારાતું હોય તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ છે એટલુંજ નહિ પણ શાસ્ત્રોમાં જેને નિષ્કામ ભક્તિયોગ તથા નિર્ગુણ ભક્તિયોગ કહેવામાં આવે છે તે પણ ખરી રીતે પુષ્ટિભક્તિનેજ લાગુ પડે છે, માટે વૈષ્ણવો! હું ભગવાનનો અંશ છું અને મારો મુખ્ય ધર્મ મારા અંશી શ્રીહરિજીની સેવા કરવી એજ છે એમ સમજીને દરેક ભગવત્સેવામાં પ્રવૃત્ત થવું જોઈએ.

એકમય જીવનની આવશ્યકતા.

આચાર્યચરણ 'ગૃહે સ્થિત્વા સ્વધર્મતઃ અભ્યાસતે ભજેતુ કૃષ્ણમ્." આ પ્રકારે ભક્તિવર્ધિનીમાં આજ્ઞા કરે છે તદનુસાર આ માર્ગ સાધુ કે વિરાગી યત્નાનો ઉપદેશ આપતો નથી. આમાં તો જીવને સદા સૌભાગ્યયુક્ત રહેવાના ઉપદેશ આપે છે. આચાર્યચરણોએ પોને તમને પુરોહિતમાં સાથે સંબંધ કરાવી આપ્યો છે તો પછી તમારે ચિંતા કરવાની કરી જરૂર નથી. તમારે તો કાવધી પણ જરાએ કરવાનું નથી. કારણ કે તમે જે પ્રભુની સેવા કરો છો, તે પ્રભુ કાલથી પણ પર છે એટલુંજ નહિ પણ કાલ, કર્મ અને સ્વભાવ એ ત્રણેને નિયમમાં રાખનારા છે કે જે ત્રણ આખી કુતીયાને વશમાં રાખે છે. તેના પણ આપ નિવામક છે. માટે તમારે તો આચાર્યચરણોએ આજ્ઞાઆગ્રહણીયા કરતી સમયે પણ કાશીમાં હતુમાન ઘાટ ઉપર આજ્ઞા કરી કે—સેઅરસ એવ જોપીશઃ અર્થાત આપણે તો તે ગોપીજનવક્ત્રસતું સેવનજ કરવાનું છે અને તેજ આપણા માટે જે કંઈ પણ કરવાનું છે તે અર્ધુય કરી લેશે. આ મૌલિક આજ્ઞા કરેલી છે તે મુજબ ભગવત્સેવા કરવી તેથીજ તમોને ભગવત્પ્રાપ્તિ થશે. અને છેવટમાં અમો બ્યાખ્યાનનો ઉપસંહાર કરતાં જણાવીશું કે સાંનિધ્યમાં ભગવત્સેવા અને વિશેષમાં ભગવત્કથા તમો જ્યાં ક્યેં જાઓ અને તેમ કરતાં ગમે તેવાં દુષ્કાર આવે તે તેને સહન કરો. કારણ કે 'ત્રિદુઃખસહન' ધૈર્ય એ આજ્ઞા પ્રમાણે ધૈર્ય પણ રક્ષણીય છે. આ પ્રકારે જીવન પર્વત અવિચ્છિન્નપણે સેવા અને કથાનો પ્રવાહ ચાલુ રાખી શ્રીમદાચાર્યોક્ત્યનુસાર શ્રીમદાપ્રભુજીની દૃષ્ટાથી તમને અલૌકિક સામર્થ્યદિમાંથી યથાધિકાર રૂપ મળશે એ અચિત્તજ છે.

સર્વાત્મભાવનાં વધામણાં.

(લેખકઃ—ભગવદ્દીપ મીસ્ટ્રી વેલજી નયુલાલ, રાજકોટ,)

(રાગ લાવણી.)

નિજ આત્માના સર્વ લાવ, સર્વ ભવનમાં દહી દેવા,
સ્થાયીપણું જો પ્રભુ વિષે થઈ, આત્મ વિષે એ લહી લેવા. ૧
સર્વ પદેથી એક સમાસે, કામ લાવમાં એ જાણો;
અનેક ઈન્દ્રિય અનેક રૂપમાં, દાતા લોકતા મન આણો. ૨
નિત્ય નવીને સર્વ ભાવમય, ભક્તોના એ છે સ્વામી;
અનિત્યને જન અન્ય ગણીને, તજતાં નવ દાવે આમી. ૩

અલૌકિકતા . દેહાદિકમાં, શૃંગાર રસ આધારે એ;	
આધારે આધેય રહે એ, વિકલ્પતા નિવારે એ,	૪
કામથી પૂરણ કામ થાય તે, લોક મતિએ જાણે એહ;	
નિષ્કામીથી કામ થાય તે, એ વિલક્ષણતા માની લેહ.	૫
કામ સમ્બધે કામી થાએ, નિષ્કામે નિષ્કામી થાય;	
સર્વ ભાવ પરિપૂરણ ભક્તો, નિષ્કામે વિરામી જાય.	૬
રસાત્મા એ, ફલાત્મા એ, ભાવાત્મા રસરૂપે એ;	
અતિ આનંદે એજ આત્મા, અંદભુત રૂપ અનૂપે એ.	૭
કામ ભાવની મતિએ ભજતાં, પ્રાકૃત કામો નાસે છે;	
નિષ્કામીમાં નિષ્કામે ધર્મ, વિચરતાં નહિ ત્રાસે એ.	૮
સર્વ શૃંગારો પ્રભુપણમાં, પતિ ભાવ સમ્બોધે જે;	
શૃંગાર રસની ભાવે ભક્તિ, પતિમત પ્રેમે શોધે એ.	૯
દોષનિવૃત્તિ જ્ઞાન ભક્તિથી, જરૂર જોતાં જાએ એ,	
આ નિષ્કામી કમનીય માર્ગે, જગત કામની સૂઝ જાએ.	૧૦
ઉત્તમ ભાવે ભાવન કરતાં, સ્વરૂપ સંગમવાળો થાય;	
લોક વિષય નહિ રસપણા એ, રસાભાસ કારણ કહેવાય;	૧૧
જેમ રસ આગમ રસનું સ્મરણ, તદ્વત કારણ આને જાણ;	
દિવ્ય શૃંગારના દિવ્ય રસગાને, સુક્ત થયાનું મનમાં આણ;	૧૨
ભજનાનંદ રસ રસિક પુણે, દેવ શિરોમણિ એ સંજોગી;	
સ્વરૂપાનંદના આનંદ માંહે, મસ્ત રહે છે એ લોગી.	૧૩
દિવ્ય સામગ્રી રસ પરિપૂરણ, એ લોકતા પણ દિવ્યજ હોય;	
અપ્રાકૃત એ વશીકરણત્વ, સ્થાયીપણું ન અવેરે કોય.	૧૪
અણ જીવોમાં અબુદ્ધ મતિએ, રસ લેવાને દોડે એ;	
એ રસ તો છે 'રસો વૈ સઃ' માં, નાહક મનકા જોડે એ.	૧૫
એ રસ લોગી એ સંજોગી, અંગે અંગી જો હોએ;	
પ્રવાહ પંથે પામે ન પ્રાપ્તિ, પ્રીતમ પ્રીતું હોયે જો.	૧૬
ઉત્તમ જનની ઉત્તમ કૃતિઓ, સર્વ ભાવ માંહે ભાવી;	
પ્રતિજન્ધ ના હોએ તેને, મહત્કૃપાએ જો પામી.	૧૭
પૂર્ણાનંદની પ્રાપ્તિ અર્થે, રસાત્માને રસ તરફ;	
મર્યાદાના જ્ઞાન અભાવે, અનુરાગમાં નર્થ ગણવું;	૧૮
પ્રણવ ઉચ્ચારો નથી પુષ્ટિમાં, નાથ, નાથ, હે દરિ;	
લેહક વચનો ભરી ભાવથી, એજ જાએ તરી તરી.	૧૯
મતુ મતિ તો મંદ ઘણી છે, નહિ અધિકારી એકે અંગ;	
શ્રીદ્વારિકેશની પરમ કૃપાનું, કારણ મતિએ આદ્યું સંગ.	૨૦

શ્રીવાક્યપતિપાદા વિજયન્તાન્તમામ્ ॥

શુદ્ધાદેવ-સહિત માર્તંડ.

વર્ષ ૬.]

કાર્તિક, શ્રીવલ્લભાબ્દ ૪૫૩.

[અંક ૮.

શ્રીકૃષ્ણઃ ।

“નૂતન-આશા.”

અભિનન્દન અર્પીતી, અરુણાંબરધારિણી, વિશ્વને નવલા વર્ષે દોડીલી નવલી ઉવા. ૧
 છે માવમાં મધુર અદ્ભુત ભરેલી, ને પ્રેમમાં મૃદુલ કન્દલતા દિસંતી;
 શાસ્ત્રાત્વ છે પ્રણયમાં શુચિ-સ્નેહમાં તેા, શોભી રહી સ્મિત પલ્લવતા અહોહો ! ૨
 રાગએ કલિકા રૂપે જનુરાગ પ્રસન્નને, ફળતા વ્યસને આવા માવામક સેરા છે. ૩
 એ ભાવના-પ્રચુરને ઉર-મધ્ય પૂરી, બહાલા ! વિતાડ નવ-વર્ષ સુખે નિરોગી,
 શ્રીકૃષ્ણની ચરણ-પંક્તિ-રેણુ, પામ, ર્યામેન્દુનાં “શરણ દુર્ગ” મહી પ્રભોદ. ૪
 (ગા. શ્રીમજનાથલાલઅહોદયપ્રણીત.)

फलं वेदान्तानां भवति परमेष्ठित्सुखमयं विनिर्णीतं गीताशुक्लवचनसारोऽपि तदिदम् ॥
 इदं जीवातुः श्रीमज्जवरत्नधृतां गिरिधर त्वदीयं लावण्यं नयनयुगले मे विलसतु ॥

નવલી-પ્રભાત.

નવલી પ્રભાત આજે આનન્દ પૂર્ણ કરજે, ચારિત્ર્ય બુદ્ધિ-અગ્નને, વિકસાવનો રહેજે.
 અર્પુ સખે ! હૃદયનાં, “પ્રેમામિનન્દનો” ને, આ ધન્ય નવ્ય દિવસે તેન્હો સ્વીકાર કરજે.
 સેવા સ્વધર્મની ને બહાલા સ્વરાષ્ટ્રની એ, કરજે સમાજની એ આ પુણ્ય નવ્ય-વર્ષે.
 મિત્રત્વ-ભાવનાને સુદૃઢ પ્રવૃદ્ધ કરજે, સત્યાગ્રહી બનીને નવ-વર્ષને દીપવરે.

ગિરિધરલાલ જ. શાહ.

અભિનંદન.

સવૈયા છંદ.

અભિ-નંદન હો ઇષ્ટ-મિત્રને, નવલવર્ષને વ્હાણે આજ,
 આપ આમસહ ઇચ્છિત વરણે, આઠ્ઠાદક ટાણે આ આજ;
 વિશુદ્ધિ વાસિત સંકટપોથી, લાખ ગણી સોહાવળે લાજ,
 પ્રસન્ન હોજો પૂર્ણ તમે પર, વિશ્વવિહારી શ્રી વ્રજરાજ. ૧

પણ પળમાંથી પ્રહર જની જ્યમ, પ્રહરે. પ્રગટાય,
 દિવસોથી મહિના, મહિનાથી, સંવત્સરનાં સ્વરૂપ ઘડાય;
 એ રીતે ક્રમવાર કદમથી, ધર્મ તરફ હુરમેશાં ધાવ,
 નવલવર્ષનાં નવનીત પ્રાશી, અજરામર તરવે ઉભરાવ. ૨

પડરિપુષ્પોનો સાથ તણને, પ્રભુના ઉપર પ્રીતિ ધરે,
 દ્વયાત્મક હરિતો દ્વર રાખી, જ્ઞાનસુધારસ પાન કરે;
 ક્ષમા-શાંતિ-શીળ-સદ્વર્ત્તનથી, કાયાના કોઠાર ભરે,
 અનુશવસિદ્ધિ અહર્નિશ વરતા, વૃધ્ણા વ્હેણુ તમામ તરે. ૩

વિકસિત પદ્મ સમા વદનેથી, કલ્યાણપ્રદ કલરવ થાવ,
 વૃત્તિ વૃત્તમાં વૈદિક ધ્યેયે, અદ્ભુત સુંદરતા ઉભરાવ;
 શાસ્ત્રપ્રતિપાદિત શ્રેણી પર, થનગનતા મનમંત્ર સુહાવ,
 સચરાચર વ્યાપકને શરણે, પ્રભુતાઓ પ્રત્યેક કમાવ. ૪

જીવંતી સાથ જકડના રે'જો, પૂર્વજની પદ્ધતિના પાસ,
 વર્ણુચ્છેદક વલણુ ઝહીને, રખે થતા દાનવના દાસ;
 પ્રમુદિત દગથી પોખ્યા જાળે, કુલાચારન કોમળ અંગ,
 પુણ્યોદક વ્હેતી પ્રગટાવો, સ્થળે સ્થળે ગોમતી ને ગંગ. ૫

પ્રથા પ્રતિષ્ઠિત પ્રેર્યા જાળે, સંતતિમાં સંસ્કારે । શાષ્ટ,
 સમયરંગી ક્ષેણે વણુ વણુશ્યા, બધી રીતેથી હજો બલિષ્ઠ;
 ભગવદ્ પ્રતિ યાચે ને ઉચરે, ભાઈશંકરજી બન્ધ બલાષ્ટ,
 સંવત્ જોગણીસે ઇંકયાત્રી, સો જનને નિવડો સુખદાષ્ટ. ૬

કવિ ભાષ્યશંકરજી વિધારામ પંડિત.

અભિનંદનો—નવીનવર્ષના સુમંગલદિનોમાં જે જે ભગવદીયોએ અમારા ઉપર
 પોતાની શુભ હાર્દ:લાગણી બતાવનારા પત્રો લખ્યા છે, તેને માટે અમે તેમનો
 અંતઃકરણપૂર્વક ઉપકાર માનીએ છીએ:—૧ ભગવત્સેવાપરાયણ પરમ ભગવદીય
 રાયજહાદુર શેઠ હરિશંકરજી આનરજિ મેજસ્ટ્રેટ, હરદા, ૨. શ્રીયુત શેઠ ધરમસી
 માધવજી ઠાકરશી, ૩. શેઠ લક્ષ્મીદાસ લીમજી મટાણી, ૪. રા. રા. નારાયણદાસ
 પરમાનંદદાસ ડોલોઈવાલા. ૫. પટેલ મનજી દેવજી, ૬. બક્ષીજી મગનદા । હવિલાલ,

૭. શ્રીયુત ક્ષેત્રપાલ શર્મા, માલીક મુખમંચારક કું. મયુરા, ૮. રા. રા. છોટાલાલ મન્.મુખલાલ શાહ તલાલી, ૯. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ. પરમ ભગવદીય શેઠ રણુ છોડદાસ વરજીવનદાસ પેટલાદીએ તો શ્રોત્રની પ્રસાદી તુલસી કવરમાં મોકલી તેને માટે તો અમે જેટલો ઉપદાર માનીએ તેટલો થોડો છે. પણ તેજ કવરમાં સુદર્શનજી અને સ્તોત્ર મઝ્યાં. આમાં “અન્યાશ્રય નજ થાય” એકું જે શેઠજીએ છપાવ્યું છે તે તો સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતથી તદ્દન વિરુદ્ધજ છે. વૈષ્ણવો કહી ગમે તેવી સ્થિતિમાં પણ પોતાના પ્રાણપ્રેષ્ટ વિના અન્યને! આશ્રય ન જ કરે તો શ્રીસુદર્ગનજીની વાત જ ક્યાં રહી ? અહીં તો શ્રોત્રોપાલોપાસના પણ ગોણુ છે ત્યાં શ્રીસુદર્શનજીનાં સ્તોત્રનું સ્થાન જ શું હોય ? શ્રીજીના મંદિરના શિખર પરના સુદર્શનજીને ભાવ જ અલગ છે એટલે ત્યાં અન્યાશ્રય નથી. બાકી શેઠજીએ મોકલેલા સ્તોત્રથી સ્પષ્ટ અન્યાશ્રય થાય જ. પ્રેમમય મરજતી ગેઠજીને આ વર્ષે આ લખ કોણે વળગાડી ?

પંદર તિથિ.

(લે:—શ્રીશુકદેવ.)

- ૧) સખી મડયે પૂરણુ પ્રીત, બાધી નાથેરે, અલભેલે રમવા રાસ, રાખી સાથેરે. (૧)
- ૨) મખી બીજે બાળક રૂપ મનડું મોહુંરે; રસથેલો રમાડે રાસ, ચિતડું મોહુંરે. (૨)
- ૩) મખી ત્રીજે ત્રિભુવનનાથ, આવી ઉભારે, ગઈતી જળ ભરવા કાજ, રસ્તે થોડ્યારે. (૩)
- ૪) સખી ચોથે અંચળ ચિત્ત, લાગ્યું ભમવારે; રામજીયો પકડી હાથ, લાગ્યા રમવારે. (૪)
- ૫) સખી પાંચમે પૂર્ણાનંદ, પ્રેમે બાંધીરે; જળકીડા કરી ગયા નાથ, મનોરથ સાધીરે. (૫)
- ૬) સખી છઠ્ઠે છળીસો પ્રાણ, હરી ગયા મારારે; મને થેલી બનાવી નાથ, પોતે ન્યારારે. (૬)
- ૭) સખી સાતમે શ્રીધનસ્થામ, રૂપ નિહાળ્યુંરે; નિરખી મંદ હાસ્ય સુકુંદ, વિશ્વરૂપ ભાળ્યું. (૭)
- ૮) સખી આઠમે આનંદકુંદ, બંસી બળવેરે; જડચેતન સૌને પ્રાણ, અર્પી સુણાવેરે. (૮)
- ૯) સખી નવમીએ નંદ કિશોર, ગયાતા મેલીરે; સૌ સખીયો શોધે નાથ, હતી રસથેલીરે. (૯)
- ૧૦) સખી દશમે દ્વારિકાધીશ, મહેલમાં મોહુંરે, રુકિમણી સત્યભામા સાથ ઉભય કર તાણુંરે. (૧૦)
- ૧૧) સખી એકાદશી અપવાસ, આવ્યો ભારીરે; સૌ સખીયો હળી મળી સાથ, ભળ્યા મુરારીરે. (૧૧)
- ૧૨) સખી બારશે બળભદ્રસાથ, રમતા ભાળ્યારે; શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર ગોપ સાથ, પ્રેમે નિહાળ્યારે. (૧૨)
- ૧૩) સખી તેરશે તારણહાર, કંસને મારીરે; છોડ્યા બંધન પિતુગાત, તણાં મુરારીરે. (૧૩)
- ૧૪) સખી ચૌદશે ચતુર્જીવ રૂપ, દર્શન દીધારે; કૃતાર્થ કરી સૌ સાથ, પાવન કીધારે. (૧૪)
- ૧૫) સખી પૂનમે પ્રાણુ છંવન, પ્રીતમ પામ્યારે, મળીયા શ્રીનંદ કુમાર, હુઝાં વામ્યારે. (૧૫)
- ૧૬) પંદર તિથિ પૂર્ણાનંદ તણી, કોઈ ગણેરે; તે કુકુંબ કળીલા સાથ, પાવન થાણેરે. (૧૬)
- ૧૭) શુકદેવ જે એ નાથ, શ્રીકૃષ્ણ મુરારિરે; યાચું દીનતાથી એક, દૈન્ય વિહારીરે. (૧૭)

તવતવડી.

તવતવડી સખિયોને સાથે લઈ, રમવા નિસર્યા રાધા મજની માંદાજો,
 જતાં જતાં નંદ કુંવર સ્હામા મળ્યા, પાસે આવી ઝેટપટ ઝાલી ણાંદાજો.—તવતવડી ૧.
 મલકાતે સુખડે મોહનને રાધા કહે, આ તે કેવી લાલ તમારી રીતજો;
 આ સખિયો સહુ કહેશે જઈને માતને, શાને રાજો અમ શું આવડી પ્રીતજો.—તવતવડી ૨.
 કૃષ્ણ કહે સુણ રાધા કહું છું કાનમાં, તરવ એક પણ જુજવા બેના દેહજો;
 ગોલોકેથી કીડા કરવા ઉતર્યા. સુખ્ય સ્વરૂપને લઈને છે આ સ્નેહજો.—તવતવડી ૩.
 સુણતાં રાધા સમજ્યા એકજ સાનમાં, રાધા માધવ કહેવાના બે નામજો;
 મનમોહન માધવ છે રાધા રૂપને, રાધા જીતે છે છે સુંદર શ્યામજો.—તવતવડી ૪.
 જે સખિયોએ “ગોષ્ઠમગોષ્ઠી” સાંભળી, તે સખિયો થઈ રાધા માધવ રૂપજો;
 રાધાવલ્લભ રસિક શિરોમણિ શ્રીહરિ, વિઠ્ઠલ તેને નમતાં રહે છે ચૂપજો.—તવતવડી. ૫

વિઠ્ઠલદાસ લાલકાસ રોહાવાળા.

શ્રીકૃષ્ણનામપ્રભાવ.

(માદની ધૂનમાં.)

રૂડું પતિતપાવન, અધમ ઉદ્ધારણુ, લવજલ તારણુહાર શ્રીકૃષ્ણનું છે નામ;
 સહુ પાપવિનાશક, સંપતિદાયક શ્યામ. (૧)

ભાવ ધરી જે જન શુદ્ધ મનથી કરશે હરિનું સ્મરણ;
 દુઃખ ટળે સુખ સર્વ મળે વળી ટળશે જન્મ ને મરણ. (૨)

મનહર મોહનની મૂરતિ, નીરખી નેત્ર ઠરે જોઈ સ્વરૂપ;
 યમ કૃતાર્થ તે પ્રભુદર્શનથી, પટે નહી લવકૂપ. (૩)

પરમકૃપાળુ વાક્ય શ્રીહરિનાં, લગ્ને લગ્નવે શ્રીશ્યામ;
 નામસ્મરણની ગંગા વહે તેમાં વાક્યો પામે છે વિરામ. (૪)

નામ તણા મહિમા છે મોટો, સુખે કહ્યો નવ લય;
 બ્રહ્મા નારદ શારદ જેના, શુણ અહર્નિશ ગાય. (૫)

તો પણ તેનો પાર ન પામે, ત્યાં હું શું કહું મતિમંદ;
 લક્ષ્મી કૃપા અને શુરુકૃપાથી, શુણ વર્ણવું ગોવિંદ. (૬)

સેવા સ્મરણ ને કૃષ્ણ શ્રીર્તનમાં, માનો અતિ આનંદ;
 ‘ગિરિધર’ કેરી વાકિત કરીને, ટાળો લવનો દંદ. (૭)

(પ્રયોજક:—ગિરિધરદાસ જ. શાહ.)

શ્રીલાલવાવા શ્રીગોવિન્દરાયજીનાં મંગલમય પ્રાકટ્યનો ગરવો.

રાગ—(પુનમ ચાંદનીનો,)

આને વૈષ્ણવ જનનો ભોગ્યભાતુ નહ શોભતો રે, ભૂમિ મજમંડળની મંગલમય દેખાય.
શ્રીયમુનાજી સુંદર તરંગથી આજી રહ્યાં રે, શોભે રોમાંચિત હરિદાસ વર્ષ ગિરિરાજ,
પ્રાકટ્ય લાલ કૃપાલ શ્રીવલ્લભવરને બારણે રે. ૧.

સાખી—શ્રીગોકુલના ચન્દ્રમા, શ્રીગોકુલના રાજ, પ્રસન્ન મુખ દર્શાવતાં વિરાજતા મજરાજ,
ધારી કુલહ ચન્દ્રિકા સાથ દિવ્ય શૃંગારનેરે નિરખે પૂર્ણ નયનથી શોભા મજની આજ,
ગોકુલપતિની ચૃષ્ટિ અમૃત વૃષ્ટિ અતુલવેરે, દૈવીજનના મનને અપૂર્વ આનંદ થાય. ૨.

સાખી—શ્રીગિરિવર પૂજન તણા મુખર કાર્તિક માસ,

ધન્ય સુદી તેરસદીને પૂરી નિજજન આસ,

સોહો ધન્ય વાર ગુરુનો દૈવી શુભ યોગ છે રે શોભે ધરતી ઘટિકા સર્વ રીત કટ્યાણ,
દેવો પુષ્પ તણી વૃષ્ટિ કરતા આકાશથીરે, ગાતા શુણીજન ઉભા મંગલજયને દ્વાર. ૩.

સાખી—દેવ હુંદલિ વાજતાં, ગગન મંડલે નાહ,

નૃત્ય કરે ત્યાં અચ્ચરા મનધારી આર્જુન,

ત્યાં તો જ્ઞાન કરે છે ગન્ધર્વ અતિ હર્ષથી રે, ઋષિવર મુનિવર આશિષ દે છે વારંવાર,
વિપ્રો વેદ મંત્ર ઉચ્ચારે અતિ આનંદમાંરે, કરતા મજવાસી સૌ મંગલ જયજયકાર ૪.

સાખી—ઘર ઘર આનંદ ઉલટયો તોરણ બાંધ્યાં દ્વાર,

વૈષ્ણવ મન અતિ મોહમાં હર્ષ ભર્યા નરનાર,

ગોકુલની ગલિયોમાં માનવ સાગર ઉલટયોરે, ઉગ્યો ગોકુલેશ સ્ત્રીને પૂરણ ચન્દ્ર,
હરખે ગાન દાન ને માન ભર્યા સૌ માનવીરે, આલ્યા ચંદ બાવાને દ્વાર ભર્યા આનંદ. ૫.]

સાખી—મજ વનિતા સિરપર ધરી મંગલ કલશો આજ,

કર શ્રીકૃષ્ણ કુંકુમ અને દૂર્વા મંગલ સાજ,

આવ્યાં હર્ષ ઉમંગે વલ્લભવરને આંગણેરે, દેતાં દિવ્ય વધાઇ શ્રીમાજી મહારાજ,
ગાતાં મંગલ ગીતો જન્મ વધાઇ લાલનીરે, છાયો ભૂમંડળમાં સુવર્ણનો રવિ આજ. ૬.

સાખી—અતુર્થ પંચમ પીઠના વૈષ્ણવ બહુ હરખાય,

અમૃતવાણી સાંભળી દર્શન કરવા બાય,

ઉલટયો આનંદ ઉદધિ શ્રીગોકુલના બારણેરે, જેની દિવ્ય લહરીયો કામવને ઉભરાય,
શોભે આનંદાગ્રિ સત્ય નામ આને કરીરે, આણું મજમંડલ આ આનંદે મલકાય. ૭.

સાખી—વેદ મંત્રને પ્રાણણો, મંગલગીતો નાર,

યશ ગાતા શુણીજન ઘણા, વૈષ્ણવ જયજયકાર,

ગાયો મંગલ શબ્દે હર્ષ નાદને આદરેરે. શોભે વન્ધ અને ગાગારેલા ગોવાળરે,

દિવ્યા પરિત્યાગિની !

(૧)

તે એક સુગંધા હતી.

તેનામાં અપૂર્વ સૌંદર્ય હતું. તેના કોમળ પ્રત્યક્ષમાં મૃણાલનું માર્દવ હતું. કિંતુ તેના પતિ અતિદુર્વ્યસની હોઈ, સર્વસંશુભાલકૃત આ નાધ્વી પત્નીને ત્યાગ કરી, આજે કેટલાએ દિવસોથી અદૃશ્ય થઈ ગયો હતો. ત્હારથી એ સુગંધા લૌકિક કુટુંબીજન્મજને પરિત્યજી કાલિદીનાં પ્રભુસેવામય ત્યાગિણીવન વિતાડતી હતી.

એ પ્રભુપ્રેમ-ઉન્મત્તો ત્યાગ-અવસ્થામાંએ દિવ્ય ષોડશ શૃંગાર રચની નવનગં વસનો પરિધાન કરતી. નિતમ્બ-સ્પર્શી સ્વકીય કેશાવલિમાં ઝમ્કલ માલતીનાં મુરલિત સુમનો યોસતી ! હોયે એ સંન્યાસિની હતી !

એના ત્યાગનું અન્ય ત્યાગોથી આ જ વૈચર્ય હતું. એનો ત્યાગ પ્રાકૃત સાધુ સંન્યાસીઓથી અનેકો હતો. અપ્રાકૃત હતો. યદ્યપિ એણે લૌકિક સર્વસ્વનો ત્યાગ કર્યો હતો, હોયે તેની ત્યાગબુદ્ધિમાં ભગવતપ્રાપ્તિનું ક્ષણ નહોતું પરંતુ ભગવદ્-ભક્તશિલ્પે ત્યાગ હતો એ સેધાવતી બાળાએ આત્માનોએ પરિત્યાગ કર્યો હતો ! ક્ષ્મારે ક્ષ્મારે કેલિસાલલાનાં શ્યામલામન્દ વહન્તા નીરને એકી દૃષ્ટિએ નિરખી રહેતી, તેમાં તેને ધનશ્યામનાં દર્શન ધનાં. સહસા એ પ્રેમવિર્જિત થઈ જઈ કોમળ પુલિન્દ ઉપરજ મૃષ્ટિત થઈ ઢળી પડતી આત્માનુસંધાનજ વિસરી જતી.

શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શનની એને આર્તિ હતી. એ સ્વરૂપસેવા કરતી કરતી આનન્દ કન્દના વિપ્રયોગનો અનુભવ અનુભવતી આના માટેજ એણે ત્યાગની આની અલૌકિક સાધના સાધી હતી સ યોગમાંએ વિપ્રયોગ પ્રાપ્ત કરવો એ જ એને અભીષ્ટ હતું. શાસ્ત્રકારોએ સ યોગશૃંગારથી વિપ્રલમ્બને શ્રેષ્ઠ માન્યો છે અત એવ એ તરણીએ રસશાસ્ત્ર તરણીએ વિપ્રયોગશૃંગારસ્વરૂપ શ્રીવૃષભાનુભ-કાન્તાને આરાધ્યા હતા.

જ્ઞાપરે એ શ્રીકૃષ્ણનો સાક્ષાત્કાર અનુભવતી ત્હારે એના હૃદયમાં નવોદ્દાસનાં તરંગો ઉછળવા લાગતા. મગ્નમે ભાવભર્યા શૃંગારોથી સર્વાંગ અલકૃત કરતી અને શરદોદ્ગુહિત ચન્દ્ર-ચામિનીમાં એ કરમાં વળિા બહોઈ શ્રીકૃષ્ણની અલૌકિક લીલાનાં રસ માધુર્ય-નિર્ઝરતા પદો આલાપતી કિન્તુ પુનઃ પ્રભુપરોક્ષમાં શ્રીકૃષ્ણની અમિલનદશામાં સર્વ શૃંગાર-પરિધાનોનો ત્યાગ કરી પરમ સંન્યાસિની થઈ જતી.

(૨)

એનું આત્મામાં પ્રિયત્વ કેવળ પ્રભુપ્રીત્યર્થજ હતું.

પ્રભુચરણે એણે સર્વસ્વનાં સમર્પણ કર્યા હતાંઃ ગૃહસ્થિન આત્મજન્મધુજનથી નિવૃત્ત થવા એણે કાષાય-વસનની કપના કરી હતી. શ્રીમહાપ્રભુની આજ્ઞાનું એને સંપૂર્ણ ભાન હતું. એણે શ્રીમદ્ભક્તચાર્યચરણનાં ગ્રંથોમાં અવગાહન કર્યું હતું. અતઃ દિશ્વ-વિભ્રમણ કરતા જ્ઞાનમાર્ગીય શુદ્ધ ત્યાગીએને સંન્યાસીએને

પોતાના કાપાય વસ્ત્રનું તેમનાં ભગવાં વસ્ત્રોથી પાર્થક્ય સગર્વ દર્શાવતી શ્રીમહા પ્રભુની નિમ્ન આજ્ઞા ઉચારતી કે:—

સ્વીયવન્ધનિવૃત્ત્યર્થે વેપઃ સોઽત્ર ન ચાન્યથા ।

કોઈ મુદ્દ એ આદર્શ સંન્યાસિનીને પ્રશ્ન કરતો કે તમારા ત્યાગનો ઉદ્દેશ શો ! ત્હારે એ શાંત મૃદુ-વચનોથી એટલુંજ કહી દેતી કે:—

વિરહાનુભવાર્થે તુ પરિત્યાગઃ સુસ્વાવહઃ ।

એને મુખરતા દોષની મહાશંકા રહેતી, અતઃએવ એકાંત કાલિંદીનું નિર્જન તટ તેણે પ્રભુ-ધ્યાન, સ્મરણ સેવા માટે શોધ્યું હતું, તે અદ્વૈતપ્રહર પ્રભુવિયોગની આર્તિ અનુભવતી હતી.

એનો ત્યાગ શાસ્ત્રાજ્ઞાથી પર હતો. એના ત્યાગમાં કાપાય વસ્ત્રનું શાસ્ત્રીયત્વે વિધાન નહોતું ! એના ત્યાગની અસ્થિતા અનિર્ધા હતી.

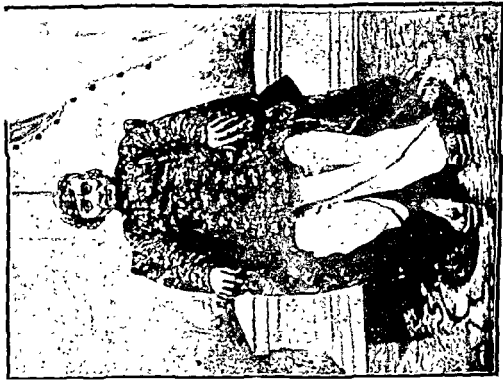
ખચિતજ એ લલના પૂર્ણ પુરુષોત્તમના પ્રેમની ઉત્પાદિની હતી.

(૩)

એને વ્યસનના ચરમફલ-સ્વરૂપે શૃંગારકલ્પદુઃખમરસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની અપ્રા-કૃત નિત્ય-લીલાએના અનુભવો પ્રાપ્ત થયા હતા. ત્હારે એ આવા અકથની સૌંદર્યપૂર્ણ અનુભવો અનુભવતી ત્હારે તેનું શરીર નિર્લવસમ બની જતું. દેહજ ભૂમિએ પડી રહેતો અને એનો આત્મા શ્રીકૃષ્ણની લીલામાં વિચરવા લાગતો. એ રમણીનો પરિત્યાગ આત્મ અગમ્ય કૃપા પ્રાપ્ત કરવા અને વિશુ-વિરહને અનુ-ભવવા જ હતો.

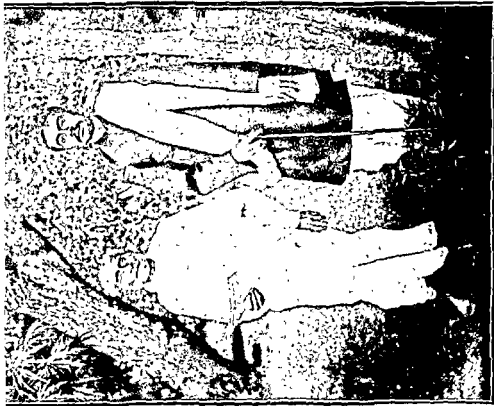
લૌકિકવિષય-વિકારવિહીના બાલામાં પ્રભુ-પ્રસાદનું અનિર્વચનીય પાવિત્ર્ય હતું. એની કુટી પાસે કોઈ પણ વિષયાકાન્ત દેહ આવીજ નહોતો શકતો. હુંપટો એની દૃષ્ટિથીજ થર થર કંપતા. કિંતુ બાળામાં કોધનો સર્વથા અભાવજ હતો. પ્રાણી માત્રને ત શ્રદ્ધાથીજ જોતી. પોતાના પ્રાણ-ધનશ્રીકૃષ્ણમય એ વિશ્વને નિરખતી. અતઃ એને વિશ્વના કોઈ પણ પદાર્થ તરફ ધૃણા નહોતી. ત્હારે પર-પ્રજ્ઞ મધુર સૌંદર્યપૂર્ણ અને અલૌકિક આકારવાન છે ત્હારે તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલી સૃષ્ટિમાં માધુર્ય સૌંદર્ય અલૌકિકતા કેમ ન સંભવે ? એનું વેદાન્ત આલુંજ અદ્વૈત, શુદ્ધ અદ્વૈતનું હતું. પ્રજ્ઞની નિરાકારતા એને ખુંચતી, એ નિર્ગુણ આનન્દ-મગ્ન સાકાર પ્રભુની ઉપાસિકા હતી. તેમજ વિરહથી આર્તી હતી. તોએ તેનું સ્વરૂપ ગંભીર હતું. અફલુત હતું. ખરેખર એ દિવ્ય પરિત્યાગિની હતી. આનન્દકન્દનાં તીવ્રતર વિરહની વિરહિણી હતી. એ વિરહદશામાં પ્રભુશુભાનુવાદનુંજ અવલંબન કરતી હતી. અન્યથા એનું જીવન અસ્તિત્વ અશક્ય હતું. અતઃ એના ત્યાગ-સંગીતમાં વિયોગવ્યાધિવિદીર્જ્યુદ્ધયનાં આકંઠ સંભગતાં ! તે અપૂર્વ (પુષ્ટિ) પરિત્યાગિની હતી. દુર્લભોય પરિત્યાગઃ પ્રેમ્યા સિચ્યતિ નાન્યથા ॥

“પરાગ”



नि. ली. श्रीगोपबन्धुमल्लजी
प्रधानमन्त्र

नित्यलीलास्य गोस्वामी
श्रीनिधिरत्नाकरजी प्रधानमन्त्र.



શ્રીસુવોધિનીજી.

(લેખાડક ૧ લો.)

(લેખક:—૨૧. ૨૧. હરિશંકર આંકારજી શાસ્ત્રી, મીમાંસાયાત્રી, વેદાન્તવિચારક, M. R. A. S.

પુરાણશબ્દનો અર્થ.

યો वै मूसा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग્યશ્રુતિ: ।)

સમ્પૂર્ણ સંસ્કૃત વાદ્યમયમાં શ્રીમદ્ભાગવત અદ્વિતીય ગ્રન્થરત્ન છે. શ્રીમદ્-ભાગવતની પુરાણમાં ગણના થાય છે. સામાન્ય રીતે પુરાણશબ્દ ઉપરથી સૃષ્ટિકર્મ, મન્વરન્તરકથા, વંશવર્ણન, ભગવ્યરિતો વગેરેથી યુક્ત ગ્રન્થનોજ બોધ થાય છે. વાસ્તવિક રીતે પુરાણશબ્દ આવા સંકુચિત અર્થવાળો નથી. ઇતિહાસપુરાણાભ્યાં વેદં સમુપદ્વંહેત્ । વિમેલ્યન્યશ્રુતાદ્વેલો મામયં પ્રહરિમ્યતિ ઇત્યાદિ વાક્યોથી વેદાર્થનું ઉપખંડણ (વિસ્તાર) કરવા માટે જ પુરાણો છે. વેદાર્થનો વિસ્તાર આ એક જ પ્રયોજન હોવાથી પુરાણોની મહત્તા વેદાર્થને સમજાવવામાં જ છે. પ્રાચીન સભ્યતા અને રાજ્યો તથા ભક્તોના ચરિત્રનું વર્ણન કરનારા પુરાણો છે, આટલું જ ને લોકો માને છે, તેઓ મોટી ભૂલ કરે છે.

પુરાણો શાસ્ત્ર છે.

શ્રીમદ્ભાગવતુ તત્ત્વાર્થદીપનિગન્ધના શાસ્ત્રાર્થપ્રકરણની સમાપ્તિમાં આજ્ઞા કરે છે કે:—

अर्धोऽयमेव निखिलैरपि वेदनाम्नै रामायणैः साहित्यभारतपञ्चरात्रैः ।

अन्यैश्च शास्त्रवचनैः सह तत्त्वसूत्रैर्निर्णीयते सहृदयं हरिणा सदैव ॥

આ સ્થળે અન્યૈશ્ચ શાસ્ત્રવચનૈઃ શબ્દોનો અર્થ. પુરાણ કરવામાં આવ્યો છે. શાસ્ત્ર એટલે ધર્મનું શાસન કરનાર, અર્થાત્ ધર્માધર્મનો વિવેક કરનાર. વેદનો અર્થ અત્યન્ત ગમ્ભીર હોવાથી વેદાર્થ કેવલશબ્દોની ખેંચતાણથી થઇ શકતો નથી. નિરુક્ત, કલ્પસૂત્રો, યોગશલક્ષણી (પૂર્વોત્તરમીમાંસા) ભગવદ્ગીતા અને વ્યસમાધિભાષાને અનુસરતોજ વેદાર્થ કરવાનો છે. વેદનો પૂર્વકાણ્ડ અને ઉત્તરકાણ્ડ ધર્મ અને જ્ઞાનનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે, તેથી વેદનો સ્વતંત્ર અર્થ કરીને કાલનિર્ણય, ઇતિહાસ કે સભ્યતાના સમ્બન્ધમાં વેદની શ્રુતિઓ ટાંકવામાં આવે છે, તે સર્વથા અયોગ્ય છે, એટલુંજ નહિ, પણ વેદનું પ્રયોજન અને ભર્મ સમજ્યા વિનાજ

૧. અન્યાનિ શાસ્ત્રાણિ પુરાણરૂપાણિ ન પ્રકાશ. ૨. આપણા સમપ્રદાયમા પૂર્વોત્તરમીમાંસાનું એકશાસ્ત્ર સ્વીકાર્યું નથી, અન્યથા વ્યાસસૂત્રાવિરોધેનૈવ તદદગ્ધીકરણમ્ ઇત્યાદિ પંક્તિઓની વેપ-
ત્યાપત્તિ પ્રાપ્ત થાય. યોગશલક્ષણી શબ્દ આ સ્થળે શાસ્ત્રદ્વયના અર્થમાંજ લેવો. ૩. સમાધિભાષા
શબ્દ પુરાણાન્તરનુએ ઉપલક્ષણ છે. અન્યથા અન્યૈશ્ચ શાસ્ત્રવચનૈઃ ઇત્યાદિ વાક્યો અર્થ થાય.
૪. સંબંધ, વિષય, અધિકારી અને પ્રયોજન એ ચારે સમજવા.

અકાષ્ટતાકૃત જેવું છે. વેદનો અર્થ શાણ્દક મારામારીને લીધે અન્યથા ન થાય તે માટેજ ભગવાન વેદવ્યાસે વેદનો વ્યાસ, તદુપખુંડણાદિ પુરાણો અને તત્ત્વસૂત્રોની રચના કરી અને સ્વશિષ્ય જૈમિનિદ્વારા ધર્મસૂત્રો રચાવ્યાં. વેદનો અર્થ કરતાં પહેલાં જો આટલું ધ્યાનમાં હોય તોજ પુરાણોના સમ્બન્ધમાં અત્યારે જે અત્યંત ગદ્દર્ષ કટપનાઓ કરવામાં આવે છે, તેની અયોગ્યતા ધરાવે સમજી શકાય સર્વજ્ઞ પુરાણો પ્રભુના તે તે સ્વરૂપનું વર્ણન કરે છે. જેમ જ્ઞાનના અંગરૂપે સૂર્યાદિરૂપને ધારણ કરનારા પ્રભુનું વર્ણન ઉપનિષદોમાં મળે છે, તેમજ પ્રભુના જુદાં જુદાં સ્વરૂપોનું વર્ણન જુદાં જુદાં પુરાણો કરે છે. પુરાણેષ્વપિ સર્વેષુ તત્ત્વદ્રૂપો હસ્તિસ્થા એમ શ્રીમહાપ્રભુજી પણ આજ્ઞા કરે છે. સર્વજ્ઞ પુરાણો પ્રભુના માહાત્મ્યનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે. અને દુર્ગા, ગણપતિ પ્રભૃતિનું મહત્ત્વ જણાવતાં પુરાણો પણ આવરણદેવતા-રૂપે હોવાથી વિશિષ્ટ (શ્રીકૃષ્ણ) ના શેષત્વે (અંગત્વે) છે. અથવા સર્વજ્ઞ રૂપો પ્રભુનાંજ સ્વરૂપો છે. સાધનરૂપે અને ફળરૂપે પ્રભુ પોતેજ છે. આ રીતે પુરાણો દેવલ ધર્મધર્મનોજ નિર્ણય વેદને અનુસરીને કરતા હોવાથી શાસ્ત્રોજ છે.

શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ.

જ્ઞાન (સુ) ધાતુ ઉપરથી શાસ્ત્રશબ્દ સિદ્ધ થાય છે. આ ધાતુનો અર્થ અનુશિષ્ટિ થાય છે અનુશિષ્ટિ આજ્ઞા. અર્થાત્ ધર્માધર્મનું શિશણ આપે તે શાસ્ત્ર શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં તત્માચ્છાજ્ઞં પ્રમાણં તે વાર્યાકાર્યવ્યવસ્થિતૌ (૧૬-૨૪) કર્તવ્યાકર્તવ્યની વ્યવસ્થા સમજાવનારું સાધન શાસ્ત્રશબ્દથી વ્યવહૃત થયું છે. સર્વ વિદ્વાનો “શાસ્ત્ર” શબ્દનો અર્થ અને વેદ તદુપજીવી સ્મૃતિ પુરાણાદિ કરે છે. જ્યારે કેટલાક પાશ્ચાત્ય મતને અનુસરનારા શાસ્ત્રશબ્દની શક્તિને સંકુચિત કરીને Systematics cience વ્યવસ્થિત વિજ્ઞાન, વ્યવસ્થિતકલા કે વ્યવસ્થિત વિદ્યા ઇત્યાદિ અર્થ કરે છે. આ પ્રકારનો અર્થ અત્યંત સંકુચિત થઈ જાય છે. વાસ્તવિક રીતે તો Scriptures ગ્રંથથીજ શાસ્ત્રો ઝોળખાય છે. પરંતુ તેમાંથી કેવલ ધર્મશ્રન્ધોનોજ જોધ થતો હોવાથી વિવેકનો સમાવેશ થતો નથી તેથી કર્તવ્યાકર્તવ્યવિવેકજ્ઞાનજ શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ થઈ શકે.

યદ્યપિ, આ સિવાય શાસ્ત્રશબ્દ, આજ્ઞા {મ. ભા. ૫-૧૪૮-૨૦}, જ્ઞાન (શિશુ. ૫-૪૭), વિદ્યાની શાખા (રઘુ. ૧-૧૯) ઇત્યાદિ અર્થમાં પણ વપરાય છે.

૧. શાસ્ત્રોનો ઉડો અભ્યાસ કરનારા વિદ્વાનો સારી પેઠે જાણે છે, કે આજ્ઞાકાત વેદ અને પુરાણોના સમ્બન્ધમાં જે શંકાઓ આસ્તિક જનતાની લાગણીને દુષ્પ દેવા માટે કરવામા આવે છે, તે સર્વજ્ઞ શંકાઓનું સમાધાન હજારો વર્ષ પૂર્વે જૈમિન્યાદિ મુદ્ધિઓએ સજરાદિ ન્યાયાયોએ અને અન્યાન્ય શાસ્ત્રધારોએ કરેલું છે. અત્યારે તો તેની તેજ (જેમનું સમાધાન થઈ ચુક્યું છે) શંકાઓ આગળ ધરીને કેવલ જગમ-ચનજ કરવામા આવે છે. ઉડો અભ્યાસ કર્યાનો કેવલ દમ્ભજ છે. જો શાસ્ત્રોનો ઉડો અભ્યાસજ આ લોકોએ કર્યો હોય તો સમાહિત શંકાઓજ સામે ન ધરે. અષ્ટાદિત અને શાસ્ત્રોના પ્રયોજનને અનુસરતીજ શંકાઓ થાય. કિન્તુ તેમ થતું નથી.

તથાપિ, સુખ્ય અર્થ તો અનુશિષ્ટિજ છે. અને તેની પરિભાષા ગીતામાં જણાવ્યા સુજબ કાર્યાકાર્યની વ્યવસ્થાનું સાધન શાસ્ત્રશબ્દવાચ્ય છે, એમજ સ્વીકારવી. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે, કે 'શાસ્ત્ર રાજાની જેઠે આજ્ઞા કરે છે. તેથી જો તેનો (શાસ્ત્રનો) વિરોધ પ્રાપ્ત થતો હોય તો અપરાધ પણ બોધિત થાય છે.

રાજાશામટે પણ વિચારવાનું હોય છે જ. રાજા પણ અયોગ્ય આજ્ઞા કરે તો તેને પણ બાધપ્રસક્તિ થાય છે, એમ શાસ્ત્રોનો ઉદ્દેશ છે. અર્થાત્ જ વિવેક પુરઃસરજ રાજાના પણ હોવી જ જોઈએ. અન્યથા જવળકાનું દળદળનું રાજા દળદળોએ વાળ્યદળદળનું ઇત્યાદિ વાક્યો વ્યર્થ થાય. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શાસ્ત્રને રાજાનાવત્ કહે છે, તેનું તાત્પર્ય તેના પાલનમાં આવશ્યકત્વનો બોધ કરાવવામાં છે, નહિ કે તદ્વિપર્યયક વિચારની અકર્તવ્યતામાં. જેમ રાજાનું પાલન ન થાય તો દંડ થવાનો ભય રહે, તેમજ શાસ્ત્રાજ્ઞાનું જે પાલન ન થાય તો પ્રત્યવાયનો ભય રાખવો. આ રીતે વિચારી જોતાં શાસ્ત્રશબ્દ વિવેકપુરઃસર ધર્માધર્મનું શિક્ષણ આપવાના અર્થમાં છે. પુરાણો પણ તાદશ્ય વિવેક કરે છે, તેથી તે પણ શાસ્ત્ર-શબ્દવાચ્ય હોઈ શકે.

પુરાણોનું પ્રામાણ્ય.

શ્રીમદ્દામણજી પ્રજ્ઞપ્રકરણને પણ પુરાણમૂલક કહે છે. તત્ત્વાર્થદીપનિબંધના સર્વનિર્ણય પ્રકરણમાં આજ્ઞા કરે છે કે—'પુરાણમૂલક ચાપિ દ્વાયમાચારતોદિતમ્ । અને 'પુરાણં 'વેદવર્ણસિદ્ધં સર્વોપયોગિ તત્ । સર્વોપકરણાનીવ ધર્મસ્ય નરોદ્ધયોઃ ॥ તદ્ગ્રાને સર્વમૌર્ધ્વં તેન તદ્દૃષ્ટવ્ય સ્મૃતમ્ । ભાવયુક્તસ્ય ધર્મસ્ય પ્રમિતૌ તત્પ્રયુગ્યતે ॥ આ રીતે પુરાણોનું પ્રામાણ્ય સિદ્ધ થતું હોવાથી લોકવ્યવહાર પણ ધર્મને ઉપકારક કેમ થાય, એ બહુવા માટે પુરાણ જ સાધનરૂપ છે, પ્રમાણરૂપ છે તેથી કહેવામાં આવ્યું છે કે—શ્રુતિસ્મૃતી ઝમે નેત્ર પુરાણ દ્વય સ્મૃતમ્ પ્રભુના નેત્રો દ્યુતિ અને અમૃતિ છે. પુરાણ હૃદય છે. જેમ વ્યાસજીએ વેદનો વ્યાસ કર્યો તેમ કટપલેહે પુરાણોનોયે વિભાગ કર્યો છે. તેમાં કેટલાક સાત્ત્વિક, કેટલાક રાજસ અને તામસ છે. વિશેષ વિસ્તાર સર્વનિર્ણયપ્રકરણના આવરણસંગમાં આપ્યો છે, તેથી અહિંયાં તેનો વિચાર કર્યો નથી. પુરાણોમાં નાના પ્રકારની સૃષ્ટિના લોકો, વિવિધ પ્રકારના ધર્મો કહેલા છે. છતાં તે તે સ્વરૂપે સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણજી વર્ણવાય છે.

૧. શાસ્તીતિ, રાજવદાક્ષાયતિ । एतेन तद्विरोधेऽपराधोऽपि बोधितः । बाध्यप्रकाश. ૨. અક્ષપ્રકરણ પણ પુરાણમૂલક છે, અને આશ્રમાચાર વડે કહેલું છે ૩. જેમ વેદ પૂર્વસિદ્ધ છે, નિત્ય છે, પૂર્વકસ્થાપિત વેદનું દર્શન કરીને તે તે ઋષિઓએ વેદ કહ્યો તેથી ઋષિ મન્ત્રદાતા છે. તેમજ પુરાણ પણ પૂર્વસિદ્ધ જ છે. પુરાણકારે તેનું દર્શન કરીને પુનરુદ્ધાર જ કર્યો છે. જુઓ જુદાદારણ્યકની કલ્પ નિશ્ચિતમેતદ્દેવેરો ઇત્યાદિ શ્રુતિ તે પુરાણ સર્વોપયોગિ છે. ઐત અને સ્માર્તનું ઉપકરણ છે. પુરાણનું જ્ઞાન ન હોય તો મૂઢતા આવે. તેથી પુરાણ પ્રશ્નનું હૃદય છે. ભાવયુક્ત ધર્મના જ્ઞાનમાં તેનો ઉપયોગ છે.

૪. આ લેખમાયામા ક્રમશઃ શ્રીસુગોપિનીજીના ત્રયોવયા વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવશે. "શ્રીસુગોવિનીમયમાલા"મા સંપૂર્ણ સુગોપિની પ્રકટ થાય છે. નામ નોધવો.

યોજના.

પ્રજુના કૃપાપાત્ર દાનવીર વૈષ્ણવો તરફથી મળેલી મદદ માટે નિયમો.

શ્રીવલ્લભચરણાનુરાગી, ભગવદ્ભૂષણપરાયણુ

આપે “શ્રીમુગોધિની ગ્રન્થમાલા” ની યોજના વાંચીને ઉદારતાપૂર્વક મોકલાવેલી મદદ અને નીચે જણાવેલી શરતો મુજબ સહૃદય આભાર સાથે સ્વીકારીશું.

(૧) શ્રીમુગોધિનીગ્રન્થમાલાકાર્યાલયમાં સંપૂર્ણ (યાવત્પ્રાપ્ય) શ્રીમુગોધિનીજીનું ગુજરાતી ભાષાન્તર પ્રકટ કરવામાં આવશે. યોગ્ય મદદ મળેથી હિન્દીમાં પણ પ્રકટ કરી શકાશે.

(૨) જે કોઈ ઉદાર વૈષ્ણવ શ્રીમુગોધિનીજી માટે મદદ આપીને સામ્પ્રદાયિક અન્ય (સંસ્કૃત, ગુજરાતી કે હિન્દી) ગ્રન્થોનું મુદ્રણ કરાવવા ઇચ્છા ધરાવશે, તે તેમની ઇચ્છા મુજબ આ કાર્યાલયમાંથી પ્રત્યક્ષમાં કે પત્રદ્વારા નક્કી થયેલી શરત મુજબ તે કાર્ય પણ પૂર્ણ કરવા આ કાર્યાલય યોજના કરશે. તેના બદલામાં શાસ્ત્રીજીને કે આ કાર્યાલયના કોઈ પણ કાર્યકરને પારિતોષિક કે મહેનતાણું આપવાનું નથી. છપાવવા પુસ્તકની નક્કી થયેલી પ્રતો આપવી પડશે.

(૩) શ્રીમુગોધિનીજીનું ભાષાન્તર અમારા તરફથી પ્રકટ થયેલી યોજનામાં જે નમુનો આપ્યો છે, તે મુજબ છપાશે. તેમાં કોઈ પણ વ્યક્તિની ભલામણથી ફેરફાર થશે નહિ પરંતુ જે કોઈ વિદ્વાન, પ્રામાણિક બૂલ બતાવશે, તે તેનો સુધારો કરીને સૂચના કરનાર વ્યક્તિનો આભાર માનીશું.

(૪) આ કાર્યાલયમાં કાર્ય કરનાર વ્યક્તિઓને કોઈ પણ જાતનું પારિતોષિક વેતન આપવામાં આવતું નથી. આવશ્યકતાનુસાર એક પગારદાર મહેતાજીને “ ” શકાશે. પરંતુ, તે નક્કો થયેલા કાર્યકરો પૈકી ન હોવો જોઈએ.

(૫) કાર્યાલયના નિયમ મુજબ નક્કી કરેલી પ્રતોજ પૂર્ણ શ્રીગોસ્વામી બાલકોને, યોગ્ય વલ્લભોને તથા કાર્યકરોને દરેક પુસ્તક લેટ તરીકે મોકલી આપવામાં આવશે. નક્કી કરેલી પ્રતો ઉપરાંત જે કાર્યકરો એકમતથી કરાવ કરશે તેા વિકેય પુસ્તકોમાંથી પણ લેટ આપી શકાશે.

(૬) આ કાર્યાલયને આર્થિક મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને કાર્યાલયના લગભગ મધ્ય પુસ્તકો તેમજ આપેલી મદદ લક્ષમાં રાખીને લેટ આપવામાં આવશે.

(૭) મદદ કરનાર વ્યક્તિની ઇચ્છા હશે, તેા તેમજ કરેલી મદદના જેટલાં પુસ્તકો થતાં હશે તેટલાં પુસ્તકો તેમને પહોંચાડવામાં આવશે. પુસ્તકનું ન્યોછાવર ૧૫ ટકા વળતર દાખીને ગણવામાં આવશે. (તેમને ઘેર પુસ્તકો પહોંચાડવાનું ખર્ચા તેમને શિર રહેશે.)

(૮) આર્થિક મદદ કરનાર વ્યક્તિનો, જે પુસ્તક માટે મદદ કરી હશે, તે પુસ્તકના ઉપોદ્ઘાતમાં સાક્ષાર સ્વીકારવામાં આવશે.

(૯) જો મદદ કરનાર વ્યક્તિને, પોતાનું કે જેના સ્મારક માટે મદદ કરી છે, તેનું ચિત્ર મૂકવાની ઇચ્છા હશે, તો તેમના ખર્ચ મૂકી શકાશે. તેમજ જો સમ્પૂર્ણ ભાગ માટે મદદ કરશે તો મુખપૃષ્ઠ ઉપર પણ તેમનું નામ છાપી શકાશે.

(૧૦) દરેક મદદ કરનાર વ્યક્તિને દર વર્ષે હિસાબ છપાવીને મોકલી અપાશે.

(૧૧) મળેલી મદદના નાણાં ઉપર દેખરેખ કરવા માટે વૈષ્ણવોની કમીટી નીમી છે.

(૧૨) નાણાં, નડિયાદ અને જામનગરમાં કમીટીના વિશ્વાસપાત્ર વૈષ્ણવોની પેટીમાં કે બેંકમાં રાખવામાં આવે છે.

(૧૩) પ્રત્યેક વૈષ્ણવ આ કાર્યમાં ખનતી મદદ કરી શકે, તે માટે જોછામાં જોછી કેટલી મદદ સ્વીકારવી તે નક્કી કર્યું નથી. પ્રભુની નામમેવાનો લાભ પ્રત્યેક વૈષ્ણવ લઈ શકે છે.

(૧૪) જો નાણાં પાછા લેવાની શરતે કોઈ સાધારણ સ્થિતિના વૈષ્ણવને મદદ કરવાની ઇચ્છા થાય તો પત્રવ્યવહારથી કે પ્રત્યક્ષમાં ખુલાસો કરી શકાશે.

(૧૫) મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને તેની સાથે નક્કી થયેલી ગરતોની કોપી માથે પાકી પહોંચ આપવામાં આવશે.

નડિયાદ, મોટું મંદિર.

જામનગર.

વૈષ્ણવોનો દાસાનુકૂળ,
હરિશંકર શાસ્ત્રી,
વ્યવસ્થાપક.

॥ શ્રીચણ્ડમો જયતિ ॥

વિદ્વત્કેસરી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી મી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજશ્રીનું

આજ્ઞાપત્ર.

॥ શ્રીમદનમોહનો જયતિ ॥

॥ શ્રીવાલકૃષ્ણો જયતિ ॥

પુષ્ટિમાર્ગીય વિદ્વન્મંડલીમાં ઉચ્ચતા પ્રાપ્ત કરનાર; વિદ્યા માટે અનન્યજન સાધારણ સ્વાર્થ ત્યાગ કરનાર, અત્યંત ઉત્સાહી અને દૃઢનિશ્ચયી તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, શ્રીમદ્વલ્લભચરણકમલના અનન્ય સેવક, ભગવત્સાસનિષ્ઠાત શાસ્ત્રી હરિશંકર જોશીજી (શ્રીમાંસાશાસ્ત્રી, વેદાન્તવિશારદ M. R. A. S.) એ શ્રીસુબોધિનીજીનું અત્યંત શુદ્ધ અને સરલ ભાષાન્તર કર્યું છે. અમે ભાષાન્તર વાંચ્યું છે. આ ભાષાન્તર ધર્ણજી શુદ્ધ અને સર્વજનોપયોગિ છે. ભાષા અત્યંત સરલ છે, જેથી સ્ત્રીઓ અને બાલકો પણ સમજી શકે. વિવેચન અને કુટુંબોદ્ધારા ઉચ્ચ કક્ષાના પંડિતો પ્રભુ આનન્દ મેળવી શકે પડિત અને અદ્યપણ એ ઉભયને જો સમાન રીતે

કોઈ ભાષાન્તર ઉપયોગી હોય તો તે માત્ર આ એક જ છે. આ ભાષાન્તરજ શાસ્ત્રીજીના પાંડિત્યની કસોટી છે. શ્રીમુખોધિની અથમાસામાં સંપૂર્ણ મુખોધિનીજીનું ભાષાન્તર (દશમસ્કંધ) પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે.

આ કાર્ય શાસ્ત્રીજીના ઉત્સાહમાત્રથી શરૂ થાય છે. શાસ્ત્રીજીનું દ્રવ્ય પુસ્તક સંગ્રહમાંજ ઘસઘાંધ જતું હોવાથી, તેઓ આ મહાકાર્યને પહોંચી શકે તેવી ધનસંપત્તિવાળા નથી માટે અમારી સર્વ વૈષ્ણવોને ખાસ સૂચના છે, કે પ્રત્યેક વૈષ્ણવે આહુક થઇને તેમજ ધનિકોએ છપાવવામાં ધનની મદદ કરીને પ્રભુની આ નામસેવામાં પાણુ દ્રવ્યનો વિનિયોગ કરવો. નામસેવાની આવી સુંદર તક વારંવાર મલતી નથી. એજ માર્ગશીર્ષ સુદી ૭ ને શુક્રવાર; સં. ૧૯૮૭.

જગત્ તે મિથ્યા હોય ?

(લેખક:—શાહ હાંમિતલાલ લોગીલાલ મુ. સાવલી,)

સુંદર શ્રીયમુનાતટ—કૃષ્ણપુર ગામની પૂર્વ દિશાએ અધીં માઇલ દૂર શ્રીયમુનાજીનું રયામ-સંલિલ, સુંદર નાહ કરતું, વિરહની ભિંમિએ ઉત્પન્ન કરતું, ગંભીર શાન્તિ બતાવતું, મંદમંદ વહન કરી રહેલું છે. તે વહન ગતિમાં ઉઠતા તરંગરૂપી પોતાના શ્રીહસ્તકમળ જોયા કરી, નિજભક્તોને પ્રભુસંયોગ કરાવી આપવાનું અભય જાણે ન આપતાં હોય ! આવાં અનેક આનંદમય વિચારો ભક્તના હૃદયમાં દર્શનમાત્રથી ઉત્પન્ન થતા હતા. તેમ તીર પ્રાન્તમાં ખીછાવેથી મંદમંદ ચળકતી રત્નમય કોમળ વાણુકા શ્રીમહારાણીજીના રયામસ્વરૂપમાં અલૌકિકતાની વૃદ્ધિ કરી ભક્તના હૃદય હરણ કરી તેમાં લોટવાની ભક્તના હૃદયમાં ભાવના ઉદ્ભવ પમાડતી હતી. તેમાં વળી જન્મે બાળુના સામસામા તટો ઉપર સુંદર ઘટાદાર કદમ્બના વૃક્ષો, બોરસલી, આમ્રવૃક્ષ, આસોપાલવ તેમ છતર અનેક પ્રકારના નાના નાણુક સુંદર નવપલ્લવિત વૃક્ષો પોતાની લતાઓથી ઝુમી રૂલાં હતાં. તેમ ગ્રહાબ, મોગરો, રાયચંપો, બટમોગરા, જીર્ણકેવડો તથા શ્રીયમુનાજીના જળમાં ખીલી રહેલાં અનેક પ્રકારના કુમુદ વગેરે વનપુલો મંદમંદ દહન-ચલનયુક્ત પવનની લહેરો સાથે પોતાનો પરિમલ પ્રસરાવીને આનંદ વધારતા હતા. સામાન્યે ગૌમાતાઓ, વાછરડાં કુણાં કૃષ્ણ લીલાં નાણુક કુપેરો આનંદથી ચરતા માલુમ પડતાં હતા. નજીક હરણોનાં બચ્ચાની કુદાકુદ તથા આરસ, મયૂર, શુક્ર, મેના, ક્રમલ વગેરે પક્ષીઓ પોતાનાં મુંદર, રવરોના આલાપ કાઢી વ્યાં ત્યાં કસોલ કરી રહેલા નજરે પડતાં હતા. આવી શ્રીયમુનાજીના તટની લીધી હરીમાળા રસસામગ્રી-યુક્ત મજબૂમિ જોતા પ્રભુની લીલાનો સાક્ષાત્કાર ફરેકના હૃદયમાં સ્વાભાવિક જ થતો હતો. સદર શ્રીયમુનાતટ ઉપર શ્રીમહાપ્રભુજીની નિધિસ્વરૂપ બેઠક હતી. તેમાં વૈષ્ણવવ્રન્દ ઉત્પાપન સમયનાં દર્શન કરી ઉચ્ચકમળ હોવાથી જ્યાં ત્યાં વિચરતા હતા. ઉક્તવ્રન્દ પૈકી બે મુવકો યાટના એક છેડે શાન્તિથી કંઈ ગહન વિચારમાં બેઠેલા જણુતા હતા. તે બંને મુવકોનાં નામો કૃષ્ણદાસ અને હરિપ્રસાદ હતાં. કૃષ્ણદાસ આ પ્રજ્ઞલીલારૂપ સુંદર વાટિકા જોવામાં તદ્દપ બનેલો હતો. એના હૃદયરૂપ સમુદમાં કંઈ અવનવા આનંદતરંગો ઊઠી રહેલા હતા. અહો પ્રભુ ! તારી આ લીલા જોતાં આ હૃદય પુલકિત બની જાય છે. પ્રભુ શ્રીબાલકૃષ્ણે કદમ્બ ઉપર બેસી સ્નાન કરતાં મજબૂકોને નવ સ્નાન નહિ કરવા આરાં આપવી; મજબૂકો સાથે શ્રીયમુનાજીના પરિમલયુક્ત

જલમાં જલકીડા કરવી, "કમલન માર મચાઈ." આ અણસખાનો કીર્તનમાં રહેલી ભાવના અનુભવતા રસેત પ્રભુ કૃષ્ણના રાસદર્શનની ઉત્કંઠા, ભક્તાધીન થઈ મજબૂતો હશે તે કાર્ય કરીને ભક્તની ઇચ્છા પૂરી કરવી, યમુનાતટ ઉપર ગોચારજીવીલા તે વખતનું ઘણિનનિભંગી સ્વરૂપ, દર્શનના વચ્ચે આવતાં હૃદયની વિહ્વલતા, પશુપક્ષીઓની ખોલીના સામા ટટુકા પાડવા, કાનમાં સંભળાતા અનુભવ સુરો, આવા અનેક પ્રકારના પ્રભુસંબંધી ખાલકીલાના વિવિધ વિચારમાં કૃષ્ણદાસ પોતાના હૃદયમાં કંઈ અનેશ આનંદ અનુભવી રહેતો હતો, અને તે લીલા-રસ આનંદમાં ધીબર આ સૃષ્ટિનું જ્ઞાન જૂલો તેનું હૃદય તન્મય લીન હતું, અને નયનમાં આનંદઅશ્રુ વહેતાં હતાં. ખરે, "સર્વના અંતરમાં રહેલો આ શુભ આનંદ તેજ સંબંધી પર છે" અને તે રસાનંદમાં કૃષ્ણદાસ તદ્વત્તા અનુભવી રહેલો હતો, સારે હરિપ્રસાદ આ પ્રભુની સૃષ્ટિલીલાને માયાખંડર સમજીને તે સંબંધી પોતાના મગજમાં વિચાર અનુભવતો હતો.

હરિપ્રસાદ—કૃષ્ણદાસ ! શા વિચારમાં ગરકાવ મચા છે ? અરે ભાઈ, આપની આંખોમાં આજે અશ્રુ ક્યાંથી ? કંઈ ગૃહસંસારનો કલેશ સાંભળી આવ્યો કે શું ?

કૃષ્ણદાસ—ક્ષણમાં સાવચેત થયો, પોતાના હૃદયનો રસાભાસ થઈ જતો જોઈ પગમાં ઘૂરત જવાળ દીધો—“નારે, મારા મિત્ર ! એવું કંઈ નથી. આ તો સ્વાભાવિક પ્રત્યક્ષીલા હું જોઈ રહ્યો હતો. આ રમણીય સ્થળ જોતાં તમને કંઈ ઊંડું રહસ્ય સમજાય છે ?”

હરિપ્રસાદ—હા, આ માયાના ખંડરથી બગીચો જોતાં હું પણ ક્યારેના વિચાર કરતો હતો કે અહા ! માયાએ આ કેવી રચના કરી છે ? આ દેખાતું જગત્ જ્યારે ત્યારે નાશવંતજ છે; છતાં કેવો ભાવ ધરે છે ?

કૃષ્ણદાસ—અરે ભાઈ ! તમે આ શું જોલો છો ? આ તમે જો જોલો છો તે માયાવાદનોજ પ્રતાપ છે. બાકી તમારા પિતાશ્રી તો ધણી ભગવદીય છે. તેઓના યજ્ઞ તમારામાં કેમ ન આવ્યા ? તે વિચારવા જેવું છે. ખરે, નાની વયમાં પોતાના સ્વમાર્ગીય કર્મનું જ્ઞાન બાલકોને આપવાની માયાપની નિષ્કાળજીથી છેવટે આપું પરિણામ આવે છે. મેં તમને પહેલાં ધણી વિષય સ્વમાર્ગીય સંબંધી સમજાવ્યા હતા, પણ તમે હજી કંઈ રહસ્ય સમજતા જ નથી. હું આજે તમારા માટે ઘણો જ દીલગીર થયો છું.

હરિપ્રસાદ—તમે મને સેવા, પ્રેમભક્તિ સંબંધી ધણું રહસ્ય સમજાવ્યું છે. પણ આ સંબંધી મને કંઈ સમજાવ્યું નથી. હા, પ્રભુ એ આપણા સ્વામી ખરે, પણ આ જગત માયાકૃત છે, એમ હું માતું છું, તે સંબંધી મને સમજાવી મારી શંકા નિર્મૂળ કરશો.

કૃષ્ણદાસ—ભાઈ, તમને આ પ્રત્યક્ષ લીલાનો કંઈ ખ્યાલેય આવતો નથી ? આ જગતરૂપી બગીચાને તમે માયાકૃત કહો છો તેમાં તમે ભૂલો છો. જગતની ઠાંધ પણ વસ્તુ-માયાકૃત નથી અને તે કાર્ય કરવા-માયા સ્વતંત્ર નથી. માયા શું કરી શકે ? જગતને બનાવનાર ભુલો છે. અને આ સર્વ દેખાય છે તે એ પ્રભુની લીલા છે.

હરિપ્રસાદ—જગત્ માયામય હોઈ મિથ્યા છે. કારણ આપણે આપણી આંખોએ વસ્તુ દેખાય છતાં તેની નાશ થતો જોઈએ છીએ. તેનું કેમ ? જેમ મહારી અનેક રંભેરંગી વસ્તુ બતાવે છે, તે આંખો વાલી તે ઉપર ફેરી દેખાડે છે. તે જેમ દેખ્યા છતાં અંતે નાશ પામે છે, અને નજરે જોયલું જોડું પડે છે, તેમ આ દેખાતું સર્વ નાશવંત હોઈ માયામય છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે ઠીક પ્રશ્ન કર્યો, પણ સમજમાં ફેર છે. જે વસ્તુઓ આપણા જોવામાં આવે છે તે વસ્તુ (આંખો) જોતી નથી. આપણી દષ્ટિમાં જ કૃત દોષ છે. જે વસ્તુ જોતી હોય

તો પછી ખરી માનવા આપણું મન શાથી દોડે છે ? તે વિચારો. જે વસ્તુ મદારી બતાવે છે, તે ખરી છે. વસ્તુ માયાવી નથી, કારણ આંખા જેવી વસ્તુ જગતમાં છેજ. અને તે આંખાને પ્રથમ જેએલો હોવાથી તેને આંખા તરીકે ઓળખી તે ખરો કહો છો કે ખીજું ? વસ્તુ તો ખરી છે પણ તે સમજવામાં આપણી ભૂલ થાય છે. મદારી પોતાની હાથચાલાકી કરી વસ્તુ હોવા છતાં નહીં હોવાનો અને વસ્તુ નહિ હોવા છતાં પોતાની પાસે હોવાના ખરાપણાનો ભાસ કરાવે છે, તે ભાસજ મામારૂં છે. વસ્તુતઃ વસ્તુ મિથ્યા હોતી નથી, પણ તે ખરી છે. અને ચાલાકી તે મદારીની શક્તિરૂપ છે. તે મદારીને આધીન છે. - તેવીજ રીતે પ્રભુ પોતાની ઇચ્છા થતાં પોતાની સ્વશક્તિથી આ જગતને રચે છે ને તે સ્વશક્તિરૂપી માયા પ્રભુને આધીન હોઇ પોતે કંઈ કરવા સ્વતંત્ર નથી. એટલે આપ માયાએ રચેલું કહો છો તે ખોટું છે પણ આ સર્વજગતનો કર્તા પ્રભુ છે ને તે સત્ય છે.

હુરિપ્રસાદ—જ્યારે નજરે જેએલું ખોટું પડે છે, તો આને ખરૂં શી રીતે કહી શકાય ? એ મારો બ્રમ દૂર થતોજ નથી. જેની રીતે છીપમા ચાંદી, દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે. પણ વસ્તુને ખરા રૂપમા જોતા ભ્રાન્તિથી ખોટો યતો ભાસ ચાનથી નાશ પામે છે, ને ભ્રાન્તિ દૂર થતા દેખેથી વસ્તુનો નાશ થઈ ફક્ત જ્ઞાન અવશેષ રહે છે, તેવીજ રીતે સર્વ વસ્તુ નાશવંત છે. ફક્ત જ્ઞાન એજ ખરૂં છે. જેમ રજ્જુ, છીપ, સિવાય ખીજું મિથ્યા છે. એવીજ રીતે બ્રહ્મા અવિદ્યાના બ્રમને લીધે આ જગત દેખાય છે, ખરી રીતે તે સર્વ મિથ્યા છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે છીપ, ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ વિષે કહો છો તે અહીં ઘટે તેમ નથી. કારણ છીપમા ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે તે ભાસ થતી વસ્તુ પ્રથમ, તમે જોયલી હોવી જોઈએ, નહિ તો જે વસ્તુ જોઈ નથી તેની ભ્રાન્તિ ચર્ચા ન જોઈએ તમે જોલો છો સીધું ને રસ્તો વાંકો તેવી તમારી પ્રતિભા છે. કારણ તમે કહ્યું કે જ્ઞાન થતા બ્રમનો નાશ થાય છે, પણ જે વસ્તુજ ખોટી હોય તો પછી ખોટી વસ્તુનું જ્ઞાન હોય નહિ. પછી જ્ઞાન રહ્યું ક્યાં ? વસ્તુ ખોટી હોવા છતાં ખરાપણાનું જે જ્ઞાન થાય છે, એજ સંસાર, માયા, અવિદ્યા. જેમ મૃગજળ ખોટું હોવા છતાં પાણી શોધનારને દૂરથી ખરૂં માલમ પડે છે. વસ્તુતઃ જે જળ હોવાનો બ્રમ થાય છે તેવું જળ પ્રથમ તેણે પૂર્વે દેખેલું હોવાથીજ તે દેખાતા મૃગજળને ખરૂં માની તે તરફ જાય છે, અને પાસે જઈ જોતાં પોતાના પ્રાણ આપવા જેવું થાય છે. એટલે મૃગજળ ખોટું હોવા છતાં જે ખરા જળનો ભાસ થાય છે તે પોતાની નજરનોજ પૂર સંસ્કારનો દોષ છે, તેથી કરી તેને પૂર્વે જેએલા ખરા જળની સત્યતામાં ખાધ આવતો નથી. આવો થતો આભાસ તે સ્વપ્ન અવસ્થામા પોતાનું માથું નહિ કપાયા છતાં કપાઈ ગયાનો ભાસ થાય છે ને જગત અવસ્થામા તે ભ્રાન્તિ દૂર થાય છે, આને માયા કહી શકાય. આનું નામ વ્યાગ્રોહિકા અવિદ્યા છે. જે ખોટું હોવા છતાં ખરાપણાનો ભાસ થાય તેજ માયાજન્ય સૃષ્ટિ છે. જગત અવસ્થામા બ્રમ થાય છે, તે પ્રભુની આજ્ઞાદિકશક્તિ છે, ને સ્વપ્નમાં જે ભ્રાન્તિ થાય છે તે વ્યાગ્રોહિકા શક્તિ અને ખોટી ભ્રાન્તિ દૂર થતા જે ખરાપણાનું જ્ઞાન થાય તે વિદ્યાશક્તિ છે. આ પ્રમાણે પ્રભુની વિદ્યા, અવિદ્યા બે શક્તિ છે, અવિદ્યાના બે જોડ છે. આજ્ઞાદિકા અને વ્યાગ્રોહિકા. આ પ્રભુની શક્તિ છે અને આને બ્રહ્મની સર્વભવનશક્તિ કહેવાય છે તેનું નામ માયા છે. તે માયા બ્રહ્મઆધીન છે. એટલે તમે જગતને માયામય કહો છો પણ તે તેનું કાર્ય નથી. તે માયાજન્ય સૃષ્ટિ હિપર પ્રમાણે અવગ્રહ હોઈ તે પ્રભુઆધીન રહી પોતે કાર્ય કરે છે. બ્રહ્મમા અવિદ્યાને લીધે તેમાં જગતનો ભાસ થાય એમ કહો છો તે ખોટું છે.

આચાર્યોએ ભગીરથ પ્રયત્નો કર્યા છે, તેની અંદર સંપૂર્ણપણે ફરતે પામનાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્-વલ્લભાચાર્યજી છે, અને તેથીજ વિદાનો એકે અવાળે પોકાર કરે છે કે શ્રીમદ્વલ્લભનામધેય-ચરિત્રો માવી ન મૂલોસ્તયમિ । આપશ્રીના પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૭૫ ના ચૈત્ર વદ ૧૧ ને દિવસે અંધ-ગૃયમાં થયો હતો. આપના પિતાશ્રીનું નામ શ્રીવલ્લભજીભટ્ટજી અને માતૃશ્રીનું નામ કલ્યાણી ગારુજી. ઉપનયન સરકાર પછી આપશ્રીએ થોડા વખતમા વેદ, ઉપનિષદ્, દર્શન, શાસ્ત્ર વગેરેનો અભ્યાસ કરી પંડિત વર્ગને આપનું ઐશ્વર્યપણું બતાવી દીધું. વિદ્યાર્થીયો કયો પછી આપશ્રી દુનિયાની ધાર્મિક સ્થિતિ જોવા નિકળ્યા. રામાનુજ, માધ્વ, નિમ્બાર્ક વગેરે મતોનું નિરીક્ષણ કરવાને દક્ષિણ તરફ પ્રયાણ કર્યું દક્ષિણ તરફ જતા માણમ પડ્યું કે વિદ્યાનગરના કૃષ્ણદેવ રામજી વિદ્યતપરિપક્વ બોલાવી છે અને સર્વવાદમા શ્રેષ્ઠ વાદ કયો તેની ચર્ચા ચાલે છે ત્યારે આપશ્રી ત્યાં પધાયા અને માથાવાદી પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરી શુદ્ધાદૈત બ્રહ્મવાદની શ્રેષ્ઠતા સામીત કરી

આપશ્રી એક વખત વ્રજમા ચાતુર્માસ માળતા હતા ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને પ્રગટ થઈ દેવી જીવોને બ્રહ્મસંબંધ આપી શરણે લેવાની આજ્ઞા કરી, આપશ્રી તેનું વર્ણન પણ સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથમા આપે છે.

ત્યારપછી આપશ્રીએ દેવી જીવોને શરણે લેવાનું કાર્ય હાથ ધરી લીધું (જે કાર્ય આપના વલ્લભે દ્વારા હજી ચાલુ છે.) આપશ્રીએ દક્ષિણમાં કન્યાકુમારીથી ઉત્તરમાં દિમાલય સુધી અને પૂર્વમાં જગન્નાથથી પશ્ચિમમાં દ્વારકા સુધી ગયું વખત પરિક્રમા કરી, અનેક વેદવિરુદ્ધ મતવાદીઓને હરાવી શુદ્ધાદૈત બ્રહ્મવાદના વજ્રમય પામા જગદ્ગુરુકાર્ય ઠેકાણે ઠેકાણે રચાપી દીધા. પરિક્રમા કરતા આપશ્રીને જણાયું કે દુનિયાની અંદર દૂષિત વાતાવરણ ફેલાય ગયું છે. દાહિક શોકોએ પોતાથી બને તેટલી જાગ ફેલાવી દુનીયાને અર્ધજીવ કરી મૂકી છે, વેદધર્મવિરુદ્ધ અનેક મતપંથો ફેલાયાથી મનુષ્યો જડચુદિના ચક્ર ગયા છે. ઉપર્યુક્ત વાતાવરણ આપને દુરાહ લાગ્યું અને તેથીજ વેદાર્થદર્શી સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ રચાવવાની જરૂર જણાય અને તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ. ન્યાયના નિષ્પક્ષપાત ચક્ષુ પહેરી જોનારને આ માર્ગની ઉત્તમતા જણાયા વગર નહિ રહે. પુષ્ટિમાર્ગ શેના ઉપર રચાયેલો છે? શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ વેદા ધીરુજ્જવાલ્યાનિ એ શ્લોકથી તેનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે.

પુષ્ટિમાર્ગને અવૈદિક કહેનારાઓ ઉપર્યુક્ત એકજ શ્લોકથી સમજી શકશે કે પુષ્ટિમાર્ગ એ કોઈ મનસ્વી કલ્પેલો માર્ગ નથી પણ વેદ, ગીતાજી, ભક્તસૂત્ર અને સમાધિભાષાના પ્રબળ આધાર ઉપર રચાયેલો છે અને વેદધર્મનું સંપૂર્ણપણે રક્ષણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગજી છે. બાવન વર્ષોના ઉંમરે આપશ્રીએ ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો અને કાશીપુરી પધાયા ત્યાં એક માસ સુધી ઉપવાસ અને આઠ દિવસ મૌનવ્રત ધારણ કરી ૧૫૮૭ ના આષાઢ સુદિ ૨ ને દિવસે આસુરબ્યામોદવીલા કરી આપશ્રીએ આ પ્રમાણે મુખ્ય ગ્રંથો બનાવ્યા છે પૂર્વમીમાંસાભાષ્ય, બ્રહ્મસૂત્રભાષ્ય, તત્ત્વદીપનિબંધ, શ્રીમદ્ભાગવત ઉપર સૂક્ષ્મ ટીકા અને સુમોહિની ટીકા અને પોડશમ્બંધ વગેરે, પણ આપણા દુર્ભાગ્યની વાત છે કે ઉપર્યુક્ત સાહિત્યમાનું કેટલુંક સાહિત્ય પૂર્ણ સ્થિતિમા તેમજ મુદ્રણ જરૂર નથી

આપશ્રીના સ્થિતિશાલ અલૌકિક, આકર્ષક, બોધપ્રદ, આશ્ચર્યજનક વગેરે અનેકવિધ ધર્મનાઓથી ભરપૂર છે આપશ્રીના અદ્વિતીય જીવનની સમાલોચના કરવા ખેતીએ તો તેનું સંપૂર્ણ વર્ણન કરવા ખેસતા અસંક્યતા સ્વીકારવી પડશે. માત્ર તેની આખીજ પ્રતીત થાય. આપનું પવિત્ર માનસ, દૈવીકાર્યો, ભક્તિભગ, પ્રેમભય તથા ઉપદેશભય જીવન, ભગવદ્ભક્તોને ઝેરી વાતાવરણમાંથી

દૂર રાખવાને તથા કૃષ્ણચંદ્ર પરમાત્માના ચુલ્કાગ્રની અભિવૃદ્ધિ કરવાને વૈશ્ણવરરૂપે પ્રાગઠ્ય શ્રીમદ્ભાગવતના હાર્દ રફાટન માટે શ્રીસુમેધિનીશ્રુતું દાન વગેરે મહાન્ શુભો તથા કાર્યોનું દિગ્દર્શન આપની કૃપા વિના કિંચિત્ માત્ર થઇ શકે નહિ. આપશ્રીએ બતાવી આપ્યું કે પ્રુષ્ટિ-માર્ગ એ સંકુચિત દૃષ્ટિથી રચાયેલો નથી, તેનાં આદર્શો વિદ્યાળ છે. તેની જાતનાઓ બહુ હ્રસ્વ છે. તેના આશ્રય હેઠળ પ્રાણી માત્રને આવવાની છટ છે વેદાધ્યયનનો અધિકાર માત્ર ત્રિવર્ણનેજ છે. ત્યારે જી અને ચંદ્ર માટે કાર્ધ ખરૂં મહાપ્રભુજીએ એવો રસ્તો શોધી કાઢ્યો કે જેથી વૈદિક ધર્મનું રખવન ન થાય અને વૈદિક મનોદાઓ સંપૂર્ણપણે જળનાપ. આ મહાન્ જગદગુરુના મહાન્ ઉપકારોનો બહુલો જ્યારે તેમના કથિત માર્ગે સમસ્ત જગત દોરાશે, તેમના આદર્શો જ્યારે સંપૂર્ણપણે સમજશે, અને જ્યારે શ્રીકૃષ્ણભક્તિનો ઠેકાણો ઠેકાણો પ્રચાર થશે ત્યારેજ વાળી શકશે.

બાલપાઠમાલા.

(લેખક—રા. રા. ભદ્રશંકર જયશંકર શાસ્ત્રી.)

પાઠ ૧૩—વિદ્યા.

ઉપરના સર્વ પાઠોમા આપણે નિત્યના કરવાના ખાસ કર્યો કેમ કરવા, તથા તેમા ભગવદ્-ભાવ શી રીતે પોજવો ! એજ જણાવી ગયા, ભોજનથી પરવારિને યાજ્ઞામા અભ્યાસ કરવા જરૂં એકાએ, તેમ કરે તોજ વિદ્યા આવડે. વિદ્—જણ્યું તે ઉપરથી વિદ્યા શબ્દ થયો, એટલે જણી શકાય તેવું જ્ઞાન મેળવું એ વિદ્યા. આ દુનિયામા જણવાનું શુ શુ નથી હોતું ! તે મેળવે નહિ તે પશુસમાન છે. માટે માણસાઇ મેળવવાને પશુ જણવાની જરૂર છે. આખી છાંદગી બંધ્યા કરો, તોપશુ જણવાનો—વિદ્યાનો પાગ તો આવેજ નહિ, એટલે પોતાની શક્તિ પ્રમાણે જણવાની ઇચ્છા માણસીએ તો અવશ્ય કરવી રહી. વિદ્યામા અનેક શુભો છે.

માતા સમી સરલ રક્ષણ એ કરે છે તે તાત દુષ્ટ દિનકારક બોધ દે છે.

કાન્તા સમાન રસપૂર્ણ વિનોદ આપે ને મિત્ર દુષ્ટ રહિ પાસ વિપત્તિ કાપે.

માતા સમાન રક્ષણ કરનારી પિતા સમાન હિત કરનારી, કાન્તા સમાન વિનોદ આપનારી અને મિત્ર સમાન વિપત્તિઓ—કષ્ટોને દૂર કરનારી વિદ્યાજ છે. નીતિશતકમાં બર્તીદરિ રાખે કહે છે કે—

વિદ્યા નામ નરસ્ય રૂપમાધિકં મન્થનમુત્તં ધનં

વિદ્યા ભોગકરી યશઃસુલકરી વિદ્યા ગુરુણાં ગુરુઃ ।

વિદ્યા વન્નુજનો વિદેશગમને વિદ્યા પરા દેવતા

વિદ્યા રાજસુ પૂજિતા ન તુ ધનં વિદ્યાવિદીનઃ પથુઃ ॥૬॥

વિદ્યા એ મનુષ્યનું અત્યંત રૂપ છે, સારી રીતે છાતું રાખેલું યશ ધન છે. વિદ્યા ભોગ આપનારી, યશ અને સુખ અર્પણ કરનારી છે. વિદ્યા ગુરુઓની પશુ ગુરુ છે, વિદ્યા વિદેશ જતી વખતે જાણુ સમાન છે; વિદ્યા એ ગોટી દેવતા છે; તેમ વિદ્યા ગર્ભઓમાં પૂજાય છે; ધન નહિ, માટે વિદ્યા વિનાનો મનુષ્ય પથુ છે.

આ વિદ્યાના લૌકિક શુભો દર્શાવ્યા બીજા તેવા અલૌકિક શુભો પણ તેમાજ રહેલા છે. પ્રમુખ જ્ઞાન આપનાર પણ વિદ્યાજ, એ મેળવવાથી પ્રહુસંજાથી જ્ઞાન થાય. એટલે તેમના

તરફ આપણો પ્રેમ પ્રકટે. વેદ, સામ, પુરાણો વિગેરે આપણે વિદ્યા મેળવીએ તોજ જાણી શકીએ. તે બધી વિદ્યા સંસ્કૃત ભાષામાં છે. તેથી દરેક હિંદુએ અને તેમાં ખાસ ઉચ્ચ વર્ણોએ સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવું અતિ જરૂરનું છે. કેટલાક હાલના આપણા યુવકો સંસ્કૃત ભાષાથી ખૂબ કંટાળી ગયા છે. સરકારે આપણને રાજકીય ભાષા સાથે સંસ્કૃત ભાષા મેળવવાની ખાસ મુશ્કેલી કરી આપી હતી આપણા ઉચ્ચ કોમના વિદ્યાર્થીઓ પશ્ચ સંસ્કૃત ભાષા શીખવામાં ગમ-રાય એ કંઈ આપણા માટે ઓછું ચારમાવા જેવું છે ? જે સંસ્કૃત ભાષા સર્વ દેશોની ભાષાના મૂલ્ય છે, જેમાં ધણું ઉંડું રહસ્ય સમાયેલું છે, જે ભાષાને જાણવા વિદેશી વિદ્વાનો પશ્ચ કલ્યાય છે તે ભાષા આપણે ન જાણીએ એ કેવું ? આપણા દેશની મોટા ભાગની ભાષાઓ તો સંસ્કૃત ભાષામાંથી ઉપજેલી છે એટલે સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવાથી સર્વ ભાષાઓ સરળ બની ગયા છે. તો તેથી આપણી પોતાની મૂલ્ય ભાષાને કેમ વિસારીએ !

વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ તો પ્રભુપ્રાપ્તિમાં કરવાનો છે. જેણે વિદ્યા મેળવી હોય અને પ્રભુ તરફ આરથા ન હોય તો તે વિદ્યાજ ન મળ્યાય. આત્મા શું ? પરમાત્મા શું ? આપણું કર્તવ્ય શું ? હયાદિ જ્ઞાન વિદ્યાથી ન થાય તો તે અવિદ્યા-અજ્ઞાન છે. મોટા મોટા મોપડાઓ ઉપલાવી નાંખવા એનાથી કંઈ વિદ્યાની સમાપ્તિ થતી નથી, એ તો વૃથા બાર ઉચકવા જેવું છે. સાકરની ચણને વડન કરનાર ગણેડો સાકરના સ્વાદને નથી જાણતો તેમ બહુ બણેડો છતાં તેનું પરિણામ પ્રભુ પ્રેમ-ભગવત્જ્ઞાન ન થાય તો તે મિથ્યા છે. વિદ્યાનો ઉપયોગ માત્ર ધન મેળવવું એમ પશ્ચ ન હોવું જોઈએ. જગતમાં ધણાએ વિદ્યાનો ધન વિનાના ઘટ ગયા છે. માટે વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ ધન નહિ; પશ્ચ જ્ઞાન મેળવવું. પ્રભુનું સ્વરૂપ સમજવું, પોતાના સ્વરૂપને જાણી કર્તવ્યની દિશા તરફ વળવું એ છે. આજકાલ અપાતી વિદ્યા એ તો વિદ્યાજ નથી એમ કહીએ તોપણ ચાલે. કારણ કે ધણું ખરું તેનું પરિણામ અવિદ્યામાંજ આવેલું જોવામાં આવે છે. ધન મેળવવા માટે અનેક પ્રયત્નો, એકમેકનું નુકસાન કરવા તરફ વૃત્તિ, છેતરપંડી. લાંચો, ફરજતો વગેરે શું વિદ્યાનું પરિણામ હોય !! મોટા મોટા વિદ્વાન ગણાતા અધિકારીઓ, પંડિતો, ગૃહસ્થો વગેરેમાં શું શું જોવામાં આવે છે ? ત્યાં પ્રયત્નો છે, લાંચો છે. એ વિદ્યા નથી પરંતુ ખરું જોતાં અવિદ્યાજ છે. વિદ્યાવાન એટલે - “ભાતમલ્લ સર્વમૂલેષુ યો જાતામિ ચ યચ્છિત્ત” પ્રાણી માનને આત્મવલ્લ સમજી દરેકનાં હિતમાં સર્વનાં સુખમાં જે પ્રયત્ન કર્યા કરે. પ્રભુનો પ્રેમ મેળવે, નિરંતર સર્વ ભાવથી પ્રભુનું-પરમાત્માનું ભજન-સેવન કર્યા કરે તે જ પંડિત, તે વિદ્વાન અને તેનીજ વિદ્યા સાદૈય ઘટ એમ ગણાય.

શુદ્ધિમાને વિચાર કરીને કહ્યું કે, આ આખો ને આખો તથાઈ જાય છે એ તો સર્વનાશ થયો કહેવાય. માટે શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે કે “સર્વનાશો યમુત્તમૈર્ ગર્થ લયજિતે પન્નિતઃ” એવા સર્વનાશ થતો હોય ત્યાં બચાવી શકાય તો અર્ધને બચાવી અર્ધને જતું કરવું જોઈએ. તો આ બધોએ તથાઈ જાય છે એ તો ઠીક થતું નથી, આ વાત સાલળાને એમાંના એક દોડીને પેલા તથાતાની ચોટલી પકડીને તેનું માથું તરવારથી કાપી નાખ્યું. એટલે અર્ધને જતું કર્યું અને અર્ધને પોતે લીધું. બોલો: આ શુદ્ધિબલ કેવું! આમ અર્ધનો અનર્થ કરવામાં કેવું પરિણામ આવે!! આનું નામ “ભવ્યા પથુ ગવ્યા નદિ” કહેવાય. માટે ભણીને બાળુવું-સમજવું. એટલા ભવ્યા-થીજ કંઈ વિદ્યાવાન કહેવાય નહિ. માટે શુદ્ધિને ઉપયોગ કરતાયે શીખવું જોઈએ. નીકર અર્ધનો અનર્થ યદ્દ જાય; ઉધું ઠોકી બેસાડે. જેથી અવિદ્યાનો નાશ કરનારી, લૌકિક અને અલૌકિક (પ્રજ્ઞાસંબંધી કાર્ય) ને સુધારનારી, પ્રજ્ઞ તરફ પ્રેમ કરાવનારી શુભ વિદ્યા મેળવાનો નિરંતર પ્રયાન કરવો એ સર્વ વિદ્યાર્થીઓનું મુખ્ય કર્તવ્ય છે.

પાઠ—૧૪ બ્રહ્મચર્ય.

વિદ્યાર્થીઓને બાળવામાં, શુદ્ધિ ખીલવવામાં અને મગજ શક્તિને તીવ્ર બનાવવામાં વધારે ઉપયોગી બ્રહ્મચર્ય છે. શરીરરૂપી મોટી ઇમારતનો મૂળ પાયો બ્રહ્મચર્ય છે. તે બરાબર ન હોય તો ઇમારત-શરીર ટકી શકે નહિ. બ્રહ્મચર્ય એટલે વીપનું સારી રીતે રક્ષણ કરવું, બદલીયું ચવું, તે. પ્રથમનાં ઋષિમુનિઓનાં સંતાનો જનોષ પહેરીને બાર વર્ષ પર્વન્ત વનમાં મુનિના આશ્રમમાં અભ્યાસ કરવા માટે બ્રહ્મચર્ય અવસ્થામાં રહેતા, ગુરુની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તતા, તેમની સેવા કરવાં હતા. મોટા મોટા મહારાજાઓનાં બાળકો અને શ્રીકૃષ્ણ જેવા પશુ વિદ્યાભ્યાસ કરવાને વનમાં ગુરુના આશ્રમમાં નિવાસ કરીને, બ્રહ્મચર્ય પાળીને, સામાન્ય વિદ્યાર્થી તરીકે રહ્યા હતા. તો ખીલજો રહે તેમાં તો આશ્ચર્ય જ શું? પણ હાલમાં તો એમાંનું કંઈજ નથી. સંસારી ભાવનાઓમાં બાળવાનું, તેવા ને તેવા વાતાવરણમાં-વાસનાઓમાં ઉછરવાનું હોવાથી બ્રહ્મચર્ય પાળવું એ તો હાલના સમયમાં ઘણુંજ દુષ્ટ યદ્દ પડ્યું છે. બાળકોને તેનું તો સંસ્પર્શ હોતું નથી. દસ દસ વરસનાં નાનાં બાળકોમાં પણ કુસંસ્કાર પડી જાય એ બારત વર્ષનું કેવું બપુંકર બાવી!! બાળકોને બાલઅવસ્થાને લીધે તેનું જ્ઞાન નથી હોતું. પરંતુ કુસંસ્કારોને લીધે કુટેવો પડતા રોગના ભોગ થવાથી પાછળથી બહુજ પરતાવો થાય છે. પણ પડેલી રોગ છૂટતી નથી. લગભગ આખા હિન્દુસ્થાનમાં તેમાંએ વિશેષ કરીને ગુજરાતમાં તો તેવી દહ યદ્દ ગદ્દ છે. લોકોના મન એવાં તો ચંચળ યદ્દ ગયા છે કે જરાએ સંયમ જળવી શકતા નથી, દુરાચાર વધતો જાય છે. એનું કારણ માત્ર બ્રહ્મચર્યનો અભાવ છે. બરમુવાવરચામાં પણ વૃદ્ધવરચાનું પ્રદર્શન કરતાં સેંકડો મુસ્લો આપણા ગુજરાતમાં જોવામાં આવે છે એ બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ. રૂપોકપણું, મનની નિર્જળતા, નાભર્ષપણું, ઈર્ષ્યા, દ્રેષ, કુસંપ, એ સડો આપણને બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ લાગે છે. બ્રહ્મચર્યવાન પરાક્રમી બને છે. તે પોતાના પરાક્રમ ઉપરજ નબી શકે છે. એટલે તેને રાગ, દ્રેષ, ઈર્ષ્યા, ભય-વજેર કાંઈ પણ હોતું નથી. જ્યારે આપણે બ્રહ્મચર્ય એ અમૂલ્ય રત્ન છે, પાછું નહિ મળી શકે તેવું અમૂલ્ય ધન છે, એમ સમજીયું. ત્યારેજ તેને સાચવી રાખીયું નીકર નહિજ. બલનો-પરાક્રમનો મુખ્ય આધાર બ્રહ્મચર્ય છે. એમ નિશ્ચય થતાં રત્નમાં વીપ જશે તેવો પણ તમને ખેદ થશે. બાલબ્રહ્મચારી હવેમાન મોટા સમુદ્રને કૂદી ગયા હતા. એ પ્રતાપ

લક્ષા મુવાનોને યકાવતા હતા? અને મુવાનની પેઠે વૃમ્તા હતા એ પ્રતાપ કેનો? અક્ષયનોજ. અક્ષયનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિ વધે, બલ વધે, સૌખ્ય આવે, વીર્યવાન, ધૈર્યવાન બને. પરંતુ તમે બાળકો એ અક્ષયનું બૂલી ગયા છો. એમા તમારો પણ દોષ છે, અને શિક્ષણનો પણ મોટો દોષ છે. તમે પોતે તે માટે બહુજ બેદરકાર બન્યા છો. આ શું સ્થિતિ સુધારવા જેવી નથી? એનું પરિણામ કયા સુધી આવશે, એનો વિચાર કરત પણ કંપારી છૂટી આવે છે. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવાને જો બહુએ છાતીને એક અક્ષયનું ઉપરજ ઉતરી પડીએ તોજ બહુ છે. અક્ષયનું પ્રભાવથી શું શું ન થાય? જો અક્ષયનું સેવન તેણે તો આખા જગતને પણ વશ કરી લીધું. તે સદાએ સ્વતંત્રજ છે. અને ક્રાંતી પણ અપેક્ષા રહેતી નથી તેના તેજસ્વિનમાં સર્વનો લય થઈ જાય છે. જ્યાં સુધી બાળકો અક્ષયનું પાળતા થયા નથી ત્યાં સુધી ભારત સ્વતંત્ર નહિ બને. ત્યાં સુધી પરતંત્રતાની બેડીઓ તૂટવાની નથી, ત્યાં સુધી ભારત-સંતાનોને પારકાના આપેલા ટૂંકડાપરજ નીલવુ રહ્યું બાળકનો પણ મુખ્ય કારણ છે. બાળકને લીધે આપણને બહુ મોટી હાનિ થઈ છે. પરંતુ એ બાળકને કરતા પણ આપણી ભાવનાઓ, આપણા વિચારો ખરાબ રસ્તે દોરાઈ ગયા છે, એ વિશેષ હાનિકારક છે. ધણી ન્યાયોમા કન્યાના અભાવે નાનપણમાં લગ્ન થતા નથી, અને કેટલાક સુધારકો પણ મોટી જીમ્મરે પુત્ર અને પુત્રી-ઓના લગ્ન કરે છે. પરંતુ તેનું પરિણામ અક્ષયનું આપણું હોય એમ માની શકાતું નથી. હિન્દુસ્થાનમા ધણીએ કુંવારાઓ ૨૫-૩૦ વરસના હોય છે. તે કંઈ ૬૬ વા અઘસંપત્તિ જોવામા નથી આવતા. અર્થાત્ જેવી રીતે અક્ષયનું રક્ષણ થવું જોઈએ તેવી રીતે ચતું નથી, મનની દુબળતાને લીધે અનેક રીતે વીર્યનો ક્ષય થાય છે. કુટુંબ પડે છે. તેના કરતા તો હજાર દરજ્જે બાળકને સારા. આથી કંઈ બાળકને યોગ્ય છે એમ કહેવા નથી માગતો; પરંતુ બાળકને રીવાજ નાશ કરતા પહેલાં ભાવનાઓ અને વિચારો સુધારવાની તથા શી રીતે બાળકને અક્ષયનું પાળવાનો શોખ થાય એવી ભાવના ઉત્પન્ન કરવાની ખાસ જરૂર છે. એટલે આપોઆપ લાળલગ્ન બંધ થઈ જશે. ગાયકવાડ મહારાજને બાળકપ્રતિષ્ઠા કાપડો ધડો છે, તેથી કંઈ લોકને કાપડો ચણે ચણે હોય એમ નથીજ કેમકે લોકોની ભાવનાજ તે તરફ નથી એટલે બધા પ્રયત્નો નિષ્ફળ નીવડવાના. માટે તેમની ભાવનાઓ બદલાય અને અક્ષયનું પોતાનો મુખ્ય શોખ માને સારેજ કંઈ બની શકે.

વેદકાળમા જનોઈ દેતી વખતે અક્ષયનીક્ષા આપતા તે સમયે ગુરુ બાળકને પૂછે કે, "મમ્મવર્ચમાગમ્" તું અક્ષયનું પાળીશ? ત્યારે બાળક બોલે ઉપાખ્યાય! મમ્મવર્ચમાગમિ હું અક્ષયનું પાળીશ. જુઓ વેદકાળની ભાવના કેવી છે? જનોઈ વખતે હાલ પણ આજ બોલાવાય છે ખરું, પણ માત્ર તે બોલવામાંજ હોય છે. કૃતિમા નથી હોતું. પૂર્વે શિષ્ય પોતેજ અક્ષયનું મહત્ત્વ સમજતો. નાનપણથી ઘરનું શિક્ષણ તેવું મળતું એટલે તેને પોતાનેજ અક્ષયનું શોખ થતો. હાલ તેમ નથી. હાલ નાનપણમા ન પરણાય તેની લગ્ન છે.

વિદ્યાર્થીઓએ અક્ષયનું તરફ પોતાનો પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવો. મનની ભાવનાઓને ઘ્રુષ્ઠ વિધેમા નહિ દોરતા વિદ્યા તરફ, પ્રભુ તરફ દોરવી. વિધેયોનો પ્રેમ-અક્ષયનું અભાવ એ ક્ષણિક સુખ છે. માટે અનંત સુખની ઈચ્છા કરનારાઓએ પોતાના વિચારો પ્રભુ તરફ પ્રેરીને ઈત્તમ વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવાનો પ્રયત્ન કરવો. આરંભમા જેમા સુખ છે, તે પરિણામે દુખ આપનાર થાય છે. અને આરંભમા જેમા દુખ દેખાય છે, એ પરિણામે બહુજ આનંદ આપે છે. માટે જેનો પરિણામ આનંદમય છે એનેજ સુખ મનુષ્યો ઈત્તમ માને છે. જેના મૂળમા જળ વિના

મુકાઈ મયાં છે એવું ઝાઝ પડી જાય તેમ વીર્યની રક્ષા કર્યા વિનાનું શરીર નિસ્તેજ બની પડી જાય છે. ગુજરાતના આવ ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતા ગાય છે કે, “વાચ કાઇ મન નિર્મળા રાખે ધન્ય ધન્ય તેની જનનીરે” જે સોકો વાણીને નિયમમા રાખે છે, સત્ય બોલે છે, અદ્વય અને મધુર બાવણુ કરે છે, તથા કાછ-લંગોટ રાખે છે. અર્થાત્ બ્રહ્મચર્ય પાળે છે—પરસ્ત્રીનું સેવન કદાપિ કરતા નથી અને મનને નિયમમાં રાખે છે. તે યોદ્ધાને ધન્ય છે તેમને જન્મ આપનાર માતાઓને પણ ધન્ય છે. બ્રહ્મચર્યના અભાવથી મનુષ્યનું અધઃપતન થાય છે. માટે અભ્યાસી વિદ્યાર્થીઓએ શરીરનો પૂર્ણ વિકાસ થતાં સુધી બ્રહ્મચર્યનું સેવન કરવામાં અભિમાન માનવું જોઈએ તોજ આત્માની ઉન્નતિ થઈ શકે.

શરણસિદ્ધિ.

(લેખક:—વેલજીભાઈ.)

ગો. લલદાસ—ભાઈ મથુરાદાસ, આજે શી પ્રવૃત્તિમાં છે ?

મથુરાદાસ—આજે તો સંસારની પ્રવૃત્તિમાં છું, કેમ ભાઈ ? કાંઈ કામ છે ?

ગોકુલદાસ—નારે, અમરતો પુછતો હોઈય ? હું તો ત્યારે જોઉં છું ત્યારે તમારી ચિત્ત-વૃત્તિ ને દર્દિ સંસાર તરફ ખેંચાયા કરે છે એ શું શરણસ્થનું કાર્ય ગણે છે ? વગી તમે તો ભગવદીય કહેવાઓ છો. શ્રીકોકોરજીની સેવાએ કરતા જણાવો છો. તમે કાંઈ માયાના વર્ષા છવ તો નથી, છતાં તમારું અંતઃકરણ માયા તરફ વળે છે, તેના કારણે તમે પોતે ન સમજી શકો ! પોતાનું મુખ કાંઈ પોતે ન જોઈ શકે, પણ સામેજ જોઈ શકે. આપણા માર્ગમા રાત્રે ભગવદ્વાર્તાઓ થાય છે. ત્યાં શિક્ષાપત્ર વગેરે વાર્તાઓ વંચાય છે તે સાંભળવાનો હેતુ—માત્ર માર્ગમા આપણા મનનો નિરોધ થાય તેજ છે, તે છતાં મનનો નિરોધ નથી થતો તેનું કારણ રુચિપૂર્વક શ્રવણ મનન નથી થવું, એટલું કરતાં છતાં એ મનની વિદ્યુત્તા ને પ્રભુના દર્શન વખતે પણ મન તથા એમની નેત્રની સ્થિરતા ન હોય ત્યાં પ્રભુમા મન ક્યાંથીજ જોગાય ?

મથુરાદાસ—અમારે તો સેવાએ કરવી ને સંસારની ખટપટ પણ પૂરેપૂરી કરવી જોઈએ. અમે કાંઈ વિરક્ત થયા નથી. અમારે બધુય કરવું જોઈએ. તમારી પોંઠે આખો દિવસ પુનઃકોજ વાંચ્યા કરવા ને ઉપદેશ દેવો તેવું અમારે પંડિત થઈ જવું નથી. ઝાઝા પુસ્તકો ને માસિકો વાંચવાથી, પ્રભુની સેવાને જાણે નહિ તો રૂગાર વગેરે ત્યાં ક્યાંથીજ આવડે ? ને સામગ્રી કરવાની શી ખચર પડે ?

ગોકુલદાસ—હા ભાઈ, તે તો સાચું. હું તમેને પ્રશ્ન પુછ કે ઉત્થાપન એટલે શું ? તેનો ભાવ કહેશે ? તેના જવાબમા તમે ઉત્થાપનના દર્શન એટલુંજ કહેશે. કારણ તમેને અંધતો અભ્યાસ નથી. જ્યાં અંધ ઉપર અરુચિ ત્યાં એવાના ભાવને ને માર્ગના સંતિસદાતને શું સમજી શકવાના દતા ? સેવા કરતાં ભાવનાના દર્શન તો નજ થાય. પણ સંસારી નરંગો આવે, સેવા તો ચિત્તનું પ્રવણ થવું એ કહેવાય ને પ્રવણ માટે ભાવને જાણવા અંધની જરૂર છે. નહિ તો “મુખમે” રામ, જગલમે” છુરી ” જેવું થાય, ભાઈ ખરી સેવા તો એજ કે પ્રથમ વિશ્વપ્રેમ જોઈએ. સર્વથા પ્રભુની લીલા દેખાય. જરા કાર્યમા દરિદ્રજાજ મનાય. હું તો ખરી સેવા એનેજ માનું છું. પણ જ્યાં શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના અધ્યામાજ અરુચિ, તે માર્ગના સિદ્ધાંતને ક્યાંથી જાણવાના ? કદી તમેને ભગવદ્વાદા થઈ હોય કે તમારે કદિ સંપ્રદાયિ અધ્યા વાંચવા નહિ તો ખેર, તમે બલે અંધોને રવનમાએ દાસ ન લગાડના, પણ તમે તમારા

સંતાનોને પણ અંધા વાચવાની ના કહીને, તેમને તમારા જેવા જ્ઞા સ્વા માટે બનાવે છે ? વૈષ્ણવતાનો ડોળ જે રાખતા હોઈએ તો માત્ર નામનીજ વૈષ્ણવતા છે. અમે તો આપણે એમ નહીંએ છીએ કે આજ સુધી પુણિમાર્ગના અંધરનો તદ્દન પેરી-પટારાઓમાજ ભરો રહેતા લગભગ દસ આર વરસમા જ કાંઈ અંધપ્રચાર ચલે છે તેનો લાભ બાંચવાન વૈષ્ણવોએજ પ્રાપ્ત કર્યો છે. આપણે અંધપ્રકાશક વૈષ્ણવમંડળનું સ્મરણ કરીએ તોપણ કૃતાયૈ યદ્યપે. પ્રથમ પ્રચાર શ્રીનૃસિંહલાલ પ્રજા, ત્યાર પછી પંડિત ગદુવાલાજી, ત્યાર પછી રા. રા. મગનલાલ સાચીજી ત્યાર પછી તેલાવાળા, રાવળહાદુર લક્ષ્મીભાઈ, પરમ વૈષ્ણવ હરિદાસ ઝવેરદાસ, તે અરસામા જોસ્વામી શ્રીવિક્રમેશ્વરાયજી અમરેલીવાળા તથા દયાળજી સેક તથા વૈષ્ણવ ધીરજભાઈ સાંકળીયા, તથા પટવારીજી રણેઝદાસભાઈ, જેમણે પણ ઘણે શ્રમ ઉઠાવ્યો છે. તથા સાચીજી વસંતરામ-ભાઈ તથા રા. રા. જેઠાલાલભાઈએ પણ શ્રીમદ્દાપ્રજ્ઞજીની કૃપાનું પાન સફળ સારું કર્યું. ભાઈ દીનકેંકર જેમણે બાલશિક્ષાના બાળ પ બહાર પાડ્યા તથા રસિકવિલાસ તથા શ્રીગોકુલનાયજીના હારી વચનામૃતોનો અપૂર્વ લાભ વૈષ્ણવોને આપ્યો છે. તથા હાલ ચાલતું શુદ્ધાદિત માસિક પણ કોઈ અનેરી છાયા પાડે છે. જગા વૈષ્ણવો તેને નબાવી શકતા નથી. તે બદ્ધ ખેદની વાત છે. આખા માર્ગમાં માત્ર એકજ માસિક છે. તે બારતમાની સેવા કરી રહ્યું તેને સ્થાયી રાખવા મુદ્દરથ વૈષ્ણવોએ લક્ષ્ય બેંચી સેવા બળવવા વિનંતિ કરી વિરુદ્ધ હું.

આપણો ઉદ્યમ.

(લેખક—સુધાર પ્રાગજી નાનજી, ધોરાજી, કાઠીયાવાડ.)

પ્રિય વાચકો, દરેક મનુષ્યને ભગવદ્ધર્મને અનુસરીને ઉદ્યમ કરવાનો હોય છે, કારણ જીવનના અંશ છે ને ભગવાન અંશી છે. જેમ સેવકની ફરજ સ્વામીની સેવા બળવવાની છે તેમ અંશી અંશીની સેવા કરવાની ફરજ છે, સેવકે સ્વામીની આશાને અનુસરીનેજ વર્તન રાખવાની જરૂર છે. ભગવાન ગીતાજીમા અનુન પ્રતિ કહે છે કે “તું જે ખાત્ર છે, તું જે પીએ છે, હુંકોમા તું જે કરે છે તે અને અર્પણ કર, એ ભગવદ્વાક્ય મુજબ આપણે દરેક ઉદ્યમ ભગવતસેવાનિમિત્તેજ કરવા જેમણે છતા આપણી રિયલિટી વાદી (મદારી) નો કંડીઓ કાપતા હોઈએ નેવી છે. દષ્ટાત કે કોઈ એક હોઈ બોરાકની શોધના ઉદ્યમ માટે નીકળ્યો તેને કોઈ વાદી (મદારી) નો કંડીઓ દષ્ટિગોચર થતા તેમા કંઈ બોરાક હશે તેમ સમજી તેને કાપવા માંડ્યો. કંડીઓ કાપતા દરમ્યાન પોતેજ તેમા રહેલ કળરૂપ સર્પના બોરાક રૂપ થયે. પ્રિય વાચકો—આપણી પણ એજ રિયલિટી છે. આપણે લૌકિક કાર્યોમાં એવા તો સ્વાપચર્યા રહીએ છીએ કે અનેક જન્મોમા ભટકતાં ભટકતા મહામુશીબોને ભગવતકૃપાથી પ્રાપ્ત થયેલ દુર્લભ એવા મનુષ્યદેહ યમાની કાળના બક્ષણરૂપ બનીએ છીએ જેથી કાળના મુખમાંથી બચવા દરેક પોતાની ફરજ સમજી ભગવતસુખ વિચારી દરેક કાર્યો ભગવદ્ધર્મજ કરવા જેમણે. પરમભક્ત ગોપાળદાસજી વસંતરાખ્યાનમા ગાય છે કે—

ગિરિરાજને આશ્વાસ દીધો ધરી કામલ ચરણ, હરખે તે સામા આવીયા, શ્રીગોવર્ધન ઉદ્ધરણ;

પ્રિય વાચકો, શ્રીગિરિરાજજીની ઉપર સાક્ષાત પ્રજા ગિરાજતા હતા છતાં એમને એવું શુ દુઃખ દણ કે શ્રીમદ્દાપ્રજ્ઞજી પધારી સાંત્વના કરી ? જવાબમાં કહેવાનું એટલુંજ કે—શ્રીગિરિરાજ ઉપર સાક્ષાત પ્રજા ગિરાજતા હતા છતાં અસંખ્ય ગિરાજતા હોઈ શ્રીગિરિરાજજીને એ મહાદુઃખ હતું જે દુઃખ શ્રીમદ્દાપ્રજ્ઞજી પધારી સેવાપ્રકાર બાંધી નિવૃત્ત કર્યું. જેથી શ્રીગિરિરાજને શાંતિ

યર્ષા આ પ્રકારે ભગવત્સુખ વિચારણું એ પણ દરેક ભગવદીયોની ફરજ છે છતાં એ ફરજ ખળવવા માટે કેટલા બેદરકાર રહીએ છીએ ? આપણા પર જે ફરજ પડેલી છે તે તુરતજ ખળવવાનો અમથ થવો જોઈએ એક ભગવદીય કહી ગયા છે કે—

કાલ કરે સો આજ કર, આજ કરે સો અખ; અવસર ખીત્યો જાત હે ફેર કરેગો કય ?

આ વાતને આપણે શુધ્ધવી તો નજ જોઈએ. લૌકિક વૈદિક કાર્યો બધાને કરવાના હોય છે. પણ શ્રીમદ્દાપ્તજીની આરા મુજબ કાપટયશુદ્ધિથીજ કરવાનાં હોય છે. દયારામભાઈ પણ બક્તિપોષણમાં કહે છે કે—

જગત જાણે છે જાનણી રાખ હટે ત્રીકમ શું તાણી,

તેમજ ગીતાજીના ધોળમાં પણ કહ્યું છે કે—

સંસારમા સરસો રહે, જેતું મન મારી પાસ; સંસારમા લોપે નહી તેને જાણું મારો દાસ-અર્ચુન સુજો.

એવાં વાક્યો મુજબ ભગવદીયોએ સંસારમાં જળકમળજન કહેવું જોઈએ અને આખા દિવસમાં અમુક સમય તો ભગવદ્ધર્મમાંજ વીતાવવો જોઈએ. જેટલો સમય ભગવદ્ધર્મમાં વીતે એટલો વખતજ જીવ્યા સમજવું. આ વાત ચોરાશી વૈષ્ણવોની વાર્તાઓ પૈકી મે.દનદાસ તથા વલ્લભદાસની વાર્તા વાંચવાથી સ્પષ્ટ સમજારો, છેવટે—

આજ કામ કાલ કામ પરસું કામ કરનો, પહેલે દિન બહોત કામ કામકે પીઠે મરનો;

જગત કામ સોવત કામ બહિર્મુખ હોય ચલનો, છોડ કામ સમર રાખ સૂર પકડ શ-નો.

આ મહાનુભાવી સૂરદાસજીના પદને સમજી છેલ્લી લીંડી મુજબ દડ રાજ્ય પકડી સદા શ્રીમદ્ધર્મધીરાણું રમરણુ બજન કરવા પ્રતિ પ્રિય વાચકો લક્ષ આપશે એમ ધન્યું છું.

સ્વદેશી.

(લેખક:—શ્રીપરાગ.)

ગાંધીના સ્વાતંત્ર્યના આરોહનથી દેશકજ ભારતીય અસ્તાત હશે. દેશના ખૂલે ખૂલે અમલ-યોગની અવગ ધ્રસરતી જણાય છે. પરદેશીઓની અન્યાયી સત્તાનતનો નાશ કરવા અને માતૃ-ભૂમિના પરતંત્રતાના બંધનોને છિન્ન બિન્ન કરવા સંપ્રતિ બહિષ્કારની પ્રવ્રત્તિ પણ પ્રગતિને પંથે દ્રુત ગતિથી પ્રધાવન કરી રહી છે. જે દેશમાં મહારાજા પ્રતાપ, જનપતિ શિવાજી મહારાજ સમા નર-શાહોતું રામરાજ્ય પ્રવર્તતું હતું અને તે વખતની ભારતીય પ્રજા પણ ધીર, વીર, તેમજ ડહાપણમાં અત્યેક કહેવાતી હતી તેવી ગર્વીલી પ્રજાની આધુનિક દયનીય દશા નિદાણી કયા હૃદયને આઘાત નહિ પહોંચતો હોય વાર ? ખરેખર ! હવે ભારતીયોનાં અક્ષુઓ ઉન્મીલિત થઈ ગયા છે. પોતાના પિતામહ, પ્રપિતામહના સમયનું આદર્શ શાસન સ્મૃતિ વડે તરવરવા લાગ્યું છે. હવે પુનઃ તેવું શાસન અસ્થાપિત કરવા અને દેશની ગમેલી સમૃદ્ધિનો પુનઃ સંચય કરવા ભારતીયોએ કાયરતા મૂકી અહિંસાના ખ્યેયથી સામ્રાજ્યવાદની સાથે સ્વાતંત્ર્યનું યુદ્ધ ંડી દીધું છે. એનું નિરીક્ષણ કરી ભારતભાતા પોતાની શરવીર પ્રજાને હૃષીક્રુઆથી આજે વધાવી રહી છે. નિદાણો ! નિદાણો !

આપણો પ્રાચીન રાષ્ટ્ર એક વખત અદ્વિતીય હતો. પ્રાચ્ય ભારતની શુશ્રુષિમાં અને ઔશ્વ્યસમૃદ્ધિના વર્ણન, આયોર્વર્તના પ્રાચ્ય કવિશ્રેષ્ઠોની કૃતિઓમાં અદ્વાવધિ ઝગમગી રહ્યા છે. કવિકુવચર કાલીદાસ, ભવભૂતિ સમા કવીન્દ્રોએ પોતાના કાવ્યોમાં તથા નાટકોમાં તાકાલીન

ભારતવર્ષના સૌંદર્યનું તેમજ પાવિત્ર્યનું ચિત્ર આજેય દોરેલું આપણે અવલોકી શકીએ છીએ. ગુર્જર કવિવરોએ પણ ભારતની અંશિક અને વિભળ સમૃદ્ધિમાં દિવ્યતા પ્રાપ્ત નગરીનું વર્ણન કરતાં કહ્યું છે કે:—

‘કનેક કોટ અળકારા કરે, મણિમય રત્ન જડમાં ત્યાં કાંગરે.’

મોગલ સલ્તનતમાં પણ આપણા ભારતવર્ષની આઝાદી ટકી રહી હતી. પ્રખ્યાત ઇતિહાસકાર થોર્નટન પ્રાચ્ય ભારત વિષે પોતાના એક ગ્રંથમાં ઉલ્લેખ કરે છે કે—

“યુરોપીય સમ્યતાના ઉત્પાદક યુનાન અને ઇટાલી બ્યારે જગતી અવરમામાં પડ્યાં હતાં તે સમયે ભારતવર્ષ વૈભવ અને સમૃદ્ધિનો કેન્દ્ર બની રહ્યો હતો. ભારતમાં ચારે બાજુએ મોટા મોટા ઉદ્યોગો પ્રચલિત હોવાતા હતા. ભારતીય પ્રજા અદ્વિતિય કાર્યવ્યવસ્થા બજાવી હતી. અવનિ પથ ઉર્વરા હતી. અત્યેવ ત્યાં પાક સારો પાકતો હતો. ખેડૂતોને પણ તેનો લાભ સારોજ મળતો હતો. ધનધાન્યથી પરિપુષ્ટ વસતા હતા. તે સમયે ભારતમાં ધણાજ બાહોશ કલાકારો રહેતા હતા. તેઓ ભારતના કાચા માલથી એવા નકાશરક અને આકર્ષક માલ તૈયાર કરતા હતા કે તેવા માલની માગણી આખું વિશ્વ કરતું હતું. કેટલાયે પાશ્ચાત્ય અને પૌર્વાસ રાષ્ટ્રો તે માલને ધણાજ આદરથી ખરીદતા હતા. ભારતનું સૂતર અને વસ્ત્ર એટલાં કામળ અને સૌંદર્યવાન થતાં હતાં કે તેની પુલના ચરી અશક્યજ છે.”

ઉક્ત પ્રકારે એક નિષ્પક્ષ આંશ ઇતિહાસજે ભારતની વિપુલ સમૃદ્ધિની શુકત કંઈ પ્રશંસા કરી છે એટલુંજ નહિ પણ તે સમયના ભારતની આઝાદીનું નમ ચિત્ર દર્શાવે છે. યદિ આપણેજ ભારતને પ્રશંસીએ તો આપણા ઉપર કદાચ પક્ષપાતનો આરોપ આવવાનો સંભવ રહે પણ એક પાશ્ચાત્ય ઇતિહાસજ લેખકનું ઉક્ત કથન ઘણું પણ રીતે પક્ષપાતિ નજ કહી શકાય. પ્રાચ્ય કાળમાં અનેક વિદેશી યાત્રીઓ ભારત જમણ કરવા આવેલા તે બધાઓએ પોતપોતાના મંથોમાં રચે રચે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ ગણે છે. મેગસ્ટનીજ ને અહોં વિક્રમથી ૨૫૩ વર્ષ પૂરે આવેલા, તેણે પણ ભારતના મરોગાન લક્ષ્યાર્થી છે. અત્યારનો સામ્રાજ્યવાદ ખેડૂતો પાસેથી અને અન્ય પ્રજાઓ પાસેથી કરો ઉઘરાવવા ને ત્રાસ વર્તારે છે તેવું પ્રાચ્ય કાલના સાસનમાં નહોતુંજ. મેગસ્ટનીજ લખે છે કે—

“ભારતની પ્રજા સમૃદ્ધિવાળી હતી. કોઇ પણ પ્રકારનો કર તેમની પાસેથી લેવામાં આવતો નહોતો. કર્મચારીઓ તરફથી પણ કશીયે દબલગીરી કરવામાં નહોતી આવતી. જેઓ જમીન ખેડતા હતા તેઓને પોતાના લાભનો નહોતો અંશ રાજ્યને આપવો પડતો હતો. રાજ્યો કોઇને પણ ચારીરિક દંડ નહોતા આપતા.”

આવી સ્વર્ણમયી ભારતશ્રુતિનું અધ પતન ઈશ્ટ ઈડીઆ કંપનીના આગમનથી પ્રારંભાયું. કંપનીએજ આપણા ભારતમાંથી ધનધાન્યસમૃદ્ધિનું અપહરણ કરી ભારતને કંગાલ બનાવી દીધો. વ્યાપારી વેશે ભારતમાં આવી પોતાની અર્થલોહુપ રાક્ષસી મહરવાકાંક્ષાને વસ થઇ કંપનીએ ભારતના સર્વ પ્રકારનો શોષણનો ધોગણેય આદર્યો. કંપનીના બૂલો કંવા કંવા અત્યાચારો કરી ભારતની સમૃદ્ધિને હરતા હતા તેવું વર્ણન કરતાં સર જોન બેન્સ ૨૬-૩-૧૭૯૨માં પત્રમાં ઉલ્લેખે છે કે—

“કંપનીના બૂલો પોતાને સમર્થ અને ધણાજ શક્તિશાલી સમજે છે. કંપનીના માટે કોઇ પણ વસ્તુ ખરીદવી હોય યા વેચવી હોય તો ગામડે ગામડે જઈ ત્યાંના વતનીઓની વિરક્ત માલ ખરીદવા અને વેચવા તેઓને વિવશ કરે છે. કોઇ ગામડીઓ તેની આગાને માન્ય નથી

કરતો તો તેને સોટીઓથી સારી રીતે માર મારી જેલમાં ઠોસી દેવામાં આવે છે એટલુંજ નહિ તેઓ ઉપર અસહ્ય અત્યાચારો વર્ષોની પાશ્વત્યો સિવાય અન્ય કોઈને પણ માલ ન વેચવા તથા અન્ય કોઈની પાસેથી માલ ન ખરીદવાની ફરજ પાડે છે. આથી આંતરિક કંપનીના ભૂતો જેઓ પોતાને માટે વેપાર કરવા અત્યાચાર કરી માલ ખરીદે છે તેની પૂરેપૂરી કિંમત દેશના વ્યાપારીઓને આપતા નથી. ક્યારેક ક્યારેક તો એક અર્ધા આપવાનું પણ સૌજન્ય દર્શાવતા નથી. આ પ્રકારના રાક્ષસી અત્યાચારોના કારણે શનૈઃ શનૈઃ બાકરગંજનો તાલુકો જન-સમુદાયથી ખાલી થતો જાય છે. પાશ્વત્ય વ્યાપારીઓના ભૂતો સ્વચ્છંદતાથી ગરીબ લોકો ઉપર ધણો ત્રાસ વર્તાવે છે. યદિ કોઈ જગીરદાર તે લોકોની વહારે ધાય તો તેઓને પણ આક્રમણી ધમકી આપવામાં આવે છે. પ્રાચ્ય સમયમાં તો ન્યાયાલયોમાં ન્યાય થતા હતા પણ હવે તો પાશ્વત્યોના મહેતાઓજ ન્યાય કરે છે. પ્રત્યેક મહેતાના ઘેર ન્યાયાલય ખોલાય છે. મહેતાઓ પોતેજ ન્યાયાધીશ બની જમીનદારો વિરુદ્ધ દંડ દેવાના ફરમાનો કરતાયે અચકાતા નથી. જમીનદારોની નીતિ કુંપનીને તુકશાનકર્તા છે એવું બોલું બહાનું કરી તેઓ પામેથી અકારણે રૂપિયા વસુલ કરવામાં આવે છે. યદિ મહેતા વર્ગનાજ ભૂતો મહેતાઓની કોઈક વસ્તુની ચોરી કરે તો પણ જગીરદારના નોકરો પરજ એ ચોરીનો દરિપત આરોપ મુકી તે ચોરીની ક્ષતિ વસુલ કરી લેવાય છે.”

આવા અત્યાચારો માત્ર બાકરગંજમાંજ નહોતા થતા પણ આખા બંગાળમાં ચરે સમસ્ત રાષ્ટ્રમાં પોતાની પરિસ્થિતિએ પહોંચ્યા હતા.

આ ભારત કેવા હિસ્તાદ કલાકારોથી વિભૂષિત હતું તે હું એક આગ્રહ લેખકના શબ્દોમાં પૂર્વે કહે ચૂક્યો છું. શ્રીમદ્વલ્લભરાજકુમાર શ્રીમદ્વસુસાંહજીના વખતમાં પણ આપણા ભારત વર્ષોની કળા જળવાઈ રહી હતી. એક વૈષ્ણવે ૪૫-૫૦ વારનો મઝમઝનો બારીક તોફા શ્રીનાથજીના વસ્ત્રો માટે માત્ર કાઢી નલિકાદારા મોકલ્યા હતા. એટલુંજ નહિ પણ વર્તમાન સમયમાં જ્યાં જ્યાં શ્રીમહાપ્રભુજીના ખાસ ધરવાના પ્રાચીન ધોતી ઉપરણા બિરાજે છે તેના દર્શન કરતા આપણને જણાશે કે પૂર્વે આપણા રાષ્ટ્રમાં શુદ્ધ હાથવણાટ અને હાથકંતામણના બારીક વસ્ત્રો કેવાં અદિતીય થતાં હતાં ? આપણા રાષ્ટ્રના વસ્ત્રોની શુભતા અતુલનીમ હતી. વિશુદ્ધતમ હાથવણાટનાજ વસ્ત્રો આપણી પ્રત્યેક ધાર્મિક ક્રિયાઓમાં વપરાતાં હતાં. અંગ્રેજ અક્ષરશક્તિ રૂપ મુદ્રિકાનો કિંવા સુવર્ણ મુદ્રિકાનો પ્રભુસેવામાં રચનાં સુદાં થઈ શકતો નહતો. તે સમયે ભારતીયોમાં એટલું અધિક સ્વદેશાભિમાન હતું. આપણા પ્રાચીન કલાકારોના હાથે તૈયાર થયેલું સુક્ષ્મતમ વસ્ત્ર આજેય માન્ચેસ્ટર કિંવા તેના જેવા અન્ય વિદેશી મથકોમાં પણ તૈયાર નથી થઈ શકતું. ઈનસાઇકલોપીડીયા બ્રિટાનીયામાં લખ્યું છે કે “રૂઠાં સૌંદર્યસંપન્ન વસ્ત્રો ભારતમાં એવી દશાએ પહોંચ્યા હતા કે યુરોપની આધુનિક કલા બધી જનના અદ્ભુત મશીનોની મદદ હોવા છતાં પણ ભારતના રેડીયાથી બનેલા કાપડની જરાયે નકલ નથી કરી શકતી.”

આ પ્રમાણે ધણીયે પાશ્વત્ય વિદ્વાનોએ ભારતના કાપડની મુક્તકંઠે પ્રશંસા કરી છે. મા. બેને પોતાના ઇતિહાસમાં લખ્યું છે કે:—

“ભારતના આવા બારીક મઝમઝના કાપડ માટે યુરોપની કેટલીક વ્યક્તિઓના એવા વિચારો થઈ ગયા છે કે ભારતના કાપડની વણાટ મતુષ્યકૃત નથી કિન્તુ ઝીણી ઝીણી કોરી મંઝરીકૃત હોવી જોઈએ.”

કેવળ સુતરાઉ કાપડ તેવું નહોતું થતું પણ તે સમયે રેશમી, ગરમ, છીંટ વિ. બધા માલ ભારતનો અદિતીય જનતા હતા. અત્યારે જેવી ભારતીયોને વિદેશી માલની મોહિની લાગેલી છે

અને રથે રથે, વિદેશી માલથી ભારતીઓ પોતાના ઘરોને તથા શરીરોને શણગારે છે તેનાથી નેતાનંત પ્રતિકૂળ પરિસ્થિતિ ૧૯૫૬ માં યુરોપની યથા રહી હતી. ભારતીય મધ્યમો અને દેશી તૃપ્તિના લંડનમાં અને તેવા પાશ્ચાત્ય દેશોમાં વિપુલ પ્રચાર પ્રચલિત હતો. આવી યુરોપની પરિસ્થિતિ ૧૯૪૭-૧૯૭૮ માં ડેનીશ ડેફે, હુન્ન પ્રકટ કરતો પોતાના વર્તમાન પત્રમાં લખે છે કે—

“યુરોપના વતનીઓની પ્રશ્નિ, પૂર્વ તરફ વળી રહી છે. ભારતની છોટા અને હાથેશ ૧૫૬ જે પ્રથમ જાનિ ઉપર પાશ્વર્યમાં આવતા હતા, કિન્તુ હવે આપણી મહિલાઓ પણ એ હિરવા લાગી ગઈ છે. અન્યની તો વાતજ રી ? ખાસ લંડનની સામ્રાજી ચિનાઈ રીશ્ક અને ભારતીય છોટા પહેરવી પસંદ કરે છે. આ સમયે ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો દરિયાત મધ્યમાં છે. આપણા બેસવાના ઓરડાઓમાં, આપણી ચેમ્બરોમાં, આપણા મુદમાં લાગેલ પકાના મોઝાં, આપણે સુવાની પધારીમાં અને તકીઆમાં એટલુંજ નહિ પણ આપણી ઓઝો અને મકરાઓના વસ્ત્રોમાં કેવળ ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો નગરે પડે છે. પ્રાયઃ યુરોપમાં બહુ ૧૫૬ ભારતમાંથી આવે છે.”

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે એક સમયે લંડન ઇત્યાદિ પાશ્ચાત્ય દેશોના બજારો ભારતીય માલ માલથી ઉભારતા હતાં. ભારતીય માલના વ્યાપારમાં કેપની યુરોપમાં સેકેડે પચાસ ટકા ફો કમાતી હતી. તોયે ભારતીય માલ યુરોપમાં સરતોજ વેચાંતો રહ્યો. આનું વાતાવરણ યુરોપીઓની આંખમાં ખુશ્બી લાગ્યું તે સમયે યુરોપીઓ ભારતીય માલ પર એવા મુગ્ધ બન્યા હતા કે સામ્રાજ્યવંશ કોર કોર દોડી બરી બોલેના કપડો વેડીને પણ ભારતીય માલ વાપરવાની મોહિની રહેતો. આથી શકતા. આવી સ્થિતિ જોતાં આપણી સરકારે ભારતના તેવા વ્યક્તિક કલાકારોના તથા પંચનાં કાઠાઓ કાપી ભારતીય હુન્ન ઉલોગોના તેમજ પાવિત્ર્યનો વિનાશ કયો છે. એની વિત્તિકાસ આગે સાખ પૂરે છે.

પરદેશીઓના આગમન પૂર્વે, આપણે ભારત વર્ષ આઠમો બધો બ્રહ્મ નહોતો થયો, યજ્ઞે રથે દુવાઓ તથા તળાવો છઠ્ઠાતાં હતાં. વિજન વનોમાં પણ માનવજીઓની અતુલ્યતા માટે ધર્મપ્રાણુ ધનિકો દુવાઓ તથા તલાવો ખોદાવતા હતા. આને પરદેશીઓના રાજ્યકાળમાં આપણા પવિત્ર જલાશયો, આપણા ધાર્મિકોની ધાર્મિક લાગણી હુખાતી હોવા છતાં આ દેશમાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ આપણા સંનાતન સ્વતંત્ર સામાજિક રીતરિવાજોમાં પણ સરકાર હવે ડબલગીરી કરવા લાગી ગઈ છે. સરકાર વિદેશી બ્રહ્મ વસ્ત્રો તથા શિક્ષણોના પ્રચાર કરી ભારતને ઓછું અપવિત્ર થયેલું સમજી, આવા આવા અનેક કુસાધનો વડે આપણા દેશો ઉપર તરાપ મારી રહી છે. આપણને બ્રહ્મ કરી રહી છે, એટલુંજ નહિ પણ આપણને બલાકારે વિનાશને માંગે ધસદી રહી છે છતાંયે કેટલાક ભારતીયો સમ્યક્ પ્રકારે જનશ્રુત ન થતાં સંપ્રતિ દેશોદારના આદિલનમાં સહયોગ ન આપતાં તેને વખોડે છે. તેવાઓની મનોદશા ખરેખર દબનીબજ કહેવાય. હવે ઉધવાનો જમાનો જતો રહ્યો છે. કર્તવ્ય, કરવાનો સમય આવી પહોંચ્યો છે. દેશની છીનવાઈ અથેલી સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત કરવા આપણે હવે આ આરંભેલું મુદ્દ પ્રાણુના ભોજે ચાલુ રાખવું જોઈશે. કારણ કે સ્વરાજ્ય એ તો આપણો જન્મસિદ્ધ હક્ક છે. સરકારની દમનનીતિથી આપણને કરવાનું શોઈ પ્રયોજન નથી, બલેને સરકાર આપણી, છવિત તવ્યાઓ ઉખેડીને દેડે, બલેને આપણા ઉપર શિકારી શ્વેતોને છોટી મૂકે તો પણ અદિસાના પવિત્ર ખેતને મનખૂત વગળી રહી દેશોદારના મતમાં હસતે મુખડે પ્રાણુની અદ્યુતિ અપણ કરવાની આપણી દિવ્ય કરજ આવી પહોંચી છે.

બહેનોની વીરતા પણ કંઈ ઓછી સન્માનનીય નથી જે બહેનો માનુષ્યમિત્રા ઉદારના અર્થે બીજાણુ આત્માચારો સહ છે, તેઓને હજારો ધન્યવાદ છે. સરકારને આવી મદોન્મત કરવાનું ઉત્તરદાયિત્વ પણ આપણા ઉપરજ છે એ વિસરવાનું નથી. આપણે વિદેશી રંગીમરો ભરી ભરી માલો મંગાવીએ છીએ અને સરકારના ખીરસો ભરીએ છીએ તેથીજ તે આવી ઉદ્ધત બની ગઈ છે. ભારતને આઝાદ કરવા ખાતર વિદેશી માવનો બહિષ્કાર કરવા જોઈએ. એટલું કામ કરીને આપણને અટકવાનું નથી આપણને તો વિદેશી માલના બહિષ્કારના પ્રચાર સાથે સાથે રેંડીવાની પ્રવૃત્તિને પણ વ્યાપક કરવાની છે. ધારો કે અત્યારે આખો રાષ્ટ્ર ખાદી પહેરતો બની જાય તો શું આપણે તેટલી ખાદી પુરી પાડી શકીશું? નહિજ, કારણ કે આપણી પાસે તેટલી ખાદીની શિલ્પક નથી. અત્યેવ ખાદીના વિસ્તાર માટે ઘેર ઘેર રેંડીવાના મધુર નાદો ગર્જવા જોઈએ, તકલીઓ કંતાવી જોઈએ. વૈષ્ણુ બધુએને તો આ આદેશનથી કરવાની કિંવા મેકાચ કરવાની જરાયે આવરયક્તા નથી કારણ કે વૈષ્ણુ ધર્મના સ્વચ્છતા તથા શુદ્ધતાના આદર્શ સિદ્ધાન્તો રેંડીયા અને ખાદીથી અતિરિક્ત નજ જળવાઈ શકે. પ્રભુની સેવાનિધિમા સ્વચ્છતા અને શુદ્ધતા વિના લેશ પણ ચાલી નથી શકતું વિદેશી વસ્ત્રોમા તો ખુલ્લું બધું થવાનુંજ છે. એ બ્રહ્મામાંથી ખચવાના અહિંસાત્મક શસ્ત્રો માત્ર રેંડીઓ અને ખાદી છે. આ કથનમા હું આલ્પમાત્ર પણ અત્યુક્તિ નથી કરતો. મારે જાહેર કરવું જોઈએ કે વૈષ્ણુવ સમાજે આ રાષ્ટ્રીય આદેશનમા ઔદારસીન્ય ન સેવતા સક્રિય ભાગ લેવા જોઈએ. આપણા પૂર્વાચાર્યપ્રદાએ વિદેશી વસ્ત્રો નહોતા ધરતા કિન્તુ તેઓ સ્વદેશી વસ્ત્રો ધારણ કરતા હતા. પ્રભુની પવિત્રાદિ મેવાવિધિપ્રકારમા રેંડીયાદિ ફેરવતા હતા, એ નિવિર્વાદ છે કે ભારતની આઝાદી તેમજ શુભગરિમા માત્ર રેંડીયા અને ખાદીનેજ આભારી છે. પૂર્વે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ એજ રેંડિયા અને ખાદીએ જાગી રાખી હતી, એણેજ સમસ્ત યુરોપને ભારતવર્ષની સૈદ્ધર્મસુધાનુ પાન કરાવ્યું હતું અને એ બંનેના વિનાશથીજ અત્યારે આપણો રાષ્ટ્ર કંગાવ, દીન, દીન અને ગર્તગામી બની ગયો છે. આપણા રાષ્ટ્રના પુનરુદ્ધાર માટે એ પ્રાચ્ય હુન્નર ઉદ્યોગોને સજીવ કરવા પડશે. ઘેર ઘેર રેંડીયા શાળાઓ અને તકલી શાળાઓનું ઉદ્વિષ્ટન કરવું પડશે. ગયેલી સ્વતંત્રતા પુન આપણે સુતરના તાતણેજ મેળવવાની છે “રેંડીઓ અને ખાદી” એ ઉભય આયોર્વર્તના પ્રાણસમા છે. ભવતુ ! !”

આંતર-જીવનપર અભિપ્રાય.

જત ભાઈ દીનકિંકર મારશ્ત “ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઈનું આંતરજીવન અથવા દિવ્ય અક્ષરદેહ” નામનું પુસ્તક મળ્યું, તે વાંચી અત્યંત આનંદ થયો. ભક્તકવિ દયારામભાઈએ પુષ્ટિમાર્ગેય વૈષ્ણુવ જનતાપર જે ઉપકાર કર્યો છે તે અવર્ણનીય છે. પ્રભુ શુભગાનકારા ભક્તના હૃદયમાં પ્રવેશ કરે છે એ સત્ય મહાનુભાવીઓએ અનુભવ્યું છે, તેથીજ પોતે જે નામનૈકા વડે ભવસાગરને તરી ગયા તે નૈકા ચોતાની પાછળ બીજાને માટે મુદ્દી નિબંધામમા પંચાયો. આ ન્યાયે દયારામભાઈના પદ, ગરબીઓ, તથા વિવિધ પ્રકારના પદસાહિત્યથી લાખો અધિકારી હૃદયને પ્રેરણા મળીએ, જોઈનું શુભગાનનું સાધન પ્રાપ્ત થયું છે, અને દુઃખપ્રેમાત્મક ભકિતરસની ઉપલબ્ધિ પણ થઈ છે. એમના કાવ્યને પ્રસિદ્ધિમા લાવવાનો જે સ્વલ્પ પ્રયાસ તમે વર્ષો થયા આદરી રજા છો, તેને માટે તમને જેટલો ધન્યવાદ આપીએ એટલો ઓછો છે. અનેક વિદ્વા તથા મુન્દેલીઓ સામે અદ્ભુત ધૈર્ય રાખી એ કાર્ય પાછળ મંદી રજા છો તે જોતા પ્રભુએજ

કૃપા કરી એ કાર્ય માટે તમને નિર્મિત કરેલા છે, એવો મને તો નિશ્ચય થાય છે. હજી પણ એ દિશામાં કરવા જેવું બાકીનું કાર્ય પૂરું કરવા પ્રયત્ન તમને સામર્થ્ય બક્ષે એવી મારી તીવ્ર અભિલાષા છે.

કુનીઆ દોરંગી છે, અને અનેક પ્રકૃતિના તથા અનેક સંસ્કારવાળા પુરુષો હોવાથી સર્વની અભિરચિ જિન હોય છે; તેથી એક વસ્તુ પર સધળાનો આદર સરળો હોય એ અસંભવિતજ છે; છતાં બહુરતના વર્તુલમાં સત્યશીલ અને ઉચ્ચ સંસ્કારવાળા પરીક્ષકો પણ અસ્તિત્વ ધરાવે છે એમાં સંશય નથી. પાશ્ચાત્ય જગતના આક્રમણનું પરિણામ કેવું ગંભીર આવ્યું છે તે સંસ્કારી પુરુષોથી હવે અનુભવ્યું નથી. આર્થસંસ્કૃતિ ધીમે ધીમે હ્રાસ થતાં હવે એના નામના અસ્તિત્વ માટે પણ હલ્લમા શંકા થવા વિના રહેતી નથી. આવા કટોકટીના સમયમાં પણ ધીર પુરુષનું કર્તવ્ય તો, સમયના આક્રમણને વશ ન થતાં સત્યને વળગી રહેવાનું, તથા નીકર થઈને સત્યનું પ્રતિપાદન કરવાનુંજ છે, સદ્ભાગ્યે આવા પ્રયત્નને પરિણામે ભક્તકવિ દયારામભાઈના જીવન સંબંધમાં જે જે તર્કવિતર્કો કાળને પ્રભાવે ઉદ્ભવવા પામ્યા હતા, તેની નિષ્પક્ષપાત રહીને સમીક્ષા કરવાનું સજ્જનોને સાધન મળી ગયું છે, અને આ આન્તરજીવન એ કાર્યમાં ધણીજ કિંમતી મદદ આપ્યા વગર રહેશે નહિ એવું માઈ નમ્ર મન્તવ્ય છે. દયારામભાઈની કવિતા એમણે પોતે કેવા ઉદ્દેશથી, કેવા વિચારોથી, ને કેવી ભાવનાથી પ્રકટ કરી છે તે જાણવાની કાંઈની ખરી ઉત્કંઠા હશે તો તેને આ તમારું પુસ્તકે ખરેખર ગણું ઉપકારક ચંદ્ર પડશે. વિવિધ દૃષ્ટિબિંદુએ અપાએલા માર્ગો અને તટસ્થ વિદ્વાનોનાં ભાષણોનો એકત્રિત કરવામાં આવેલો સંગ્રહ પણ તેવાજ ઉપયોગી લેખાશે. વિશેષ શું લખું ? દયારામભાઈ ઉપરના તમારા પ્રેમને અંગે જે ઉચ્ચ પ્રકારની સેવા તમે કરી રહ્યા છો, તે સેવાકળ તરફ દૃષ્ટિપાત કર્યો વગર એ સેવાજ ફળરૂપ છે એમ દૃઢ માની એ સેવાનું કાર્ય સતત આજ રાખશો એવી અભિલાષા દર્શાવી વિરમીશ.

પંડોળની પોળ,

નાજીવટ-મુરેત.

તા. ૪-૫-૨૧.

લી. સ્નેહાધીન.

મનમોહનદાસ દલપતરામ

ના મગસમરણ.

[રા. રા. મનમોહનદાસભાઈ કેળવણી ખાતાના ડે. એ. ઇન્સ્પેક્ટર મોટા અમલદાર હતા, લાલમાં પેન્શન લઈ નિવૃત્ત થયા છે, બી. એ. થયલાઓમાં તેમના જેવા ભાનુક ભગવદીય સંપ્રદાયના અતિવિરલ છે. તેમનો અભિપ્રાય અમે ધણીજ કિંમતી માનીએ છીએ. પ્રકાશક.]

વિદ્વાનનાં સન્માન.

સં. ૧૯૮૭ના આશ્વિન કૃષ્ણ પ્રતિપદા મંગલવારે સાંજે પૂતાના શ્રીમદ્ભાજનના વાકામાં મુંબઈથી ખાસ પધારેલા શ્રીમાન ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજના પ્રમુખપણા નીચે પૂતાના સમસ્ત પ્રૃષ્ઠિમાર્ગીય વૈષ્ણવો તરફથી પ્રો. મમલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી એમ. એ.ને (જેઓ સર્વસિમાંથી રિટાયર્ડ થાય છે) માનપત્ર અર્પણ કરવાના પ્રસંગે પૂતાના દે. ભ. નરસિંહ ચિન્તામણુ કેળકર, પ્રો. અપડિયા, પ્રો. સાહે, પ્રો. બરી, પ્રો. ચાર્પેકર, પ્રો. અન્નાર પ્રો. કેળકર, વેદાન્તવાગીશ પાઠક શાસ્ત્રી, લેફ્ટ જજ વાસુદેવરાવ બાંકારકર, રા. બ. દળમંતરામ રામનાથ, રા. મ. ગ. હોનપં વઘીલ, રા. નારાયણ કેશવ રાજયુર વઘીલ, રા. બ. રામનારાયણ અમરચંદ, ઉપરાંત મુંબઈના દેવીદાસ માધવજી ઠાકરસી, રણુછોડદાસ જગજીવન કાપડિયા, નટવરલાલ ધીરજી-લાલ સાંકલિયા, લખમીદાસ જ્ઞાનવંદાસ, આદ્યમનનગરના ગાંધી વક્તવ્યદાસ ભગવાનદાસ, નેવાસકર ગોપાલદાસ દામોદરદાસ ધત્યાદિએ પણ હાજરી આપી શોભામાં વધારો કર્યો હતો.

પ્રારંભમાં કીર્તન થયા બાદ શ્રીમાન પ્રમુખને તિલક, માલા ઇત્યાદિ શેઠ હરિગોવિન્દદાસ ઉગરચન્દ, મગનલાલ સાંકળચન્દ, તથા ધનજીભાઈ હાથીભાઈ તરફથી અર્પણ કરવામાં આવ્યાં હતાં. ત્યારબાદ રા. બ. ચિમનલાલ કિસનદાસે આમંત્રણપત્રિકા વાંચી સંભળાવી. પછી રા. ગોકુલદાસ ટુલસીદાસે શ્રીમાન અનિરૂદ્ધલાલજી મહારાજને, રા. રણજીદાસ પેટલાદીને, અને ચોપડાવાળા મગનલાલ નગીનદાસને એવી રીતે તથા તાર, અને સાદરાવાળા આસિરજીત ઘોષિદિકેશ એજન્ટ હરિલાલ જ્યોતિર્સનદાસ કોઠારી બી. એ., પૂનાના પ્રો. શેખ, નગરના હરિદાસ ઉત્તમદાસ, સુંબર્ધના શેઠ જગમોહનદાસ રણજીદાસ બી. એ., સુમન્ધી કિસનદાસ પુરષોત્તમદાસ, ભરૂચના એડવોકેટ મણિલાલ ચોકસી અને જગનલાલ નાગેશ્વર, લાડવેશ શાસ્ત્રીજી, સંજેડના મોહનદાસ ગોવર્ધનદાસ, સુરતની મહાસભાના મંત્રી ચિમનલાલ શાસ્ત્રી ઇત્યાદિ ઇત્યાદિના કાગળો વાંચી સંભળાવ્યા હતા. તે પછી રા. બ. લત્તુભાઈ દાગોદરદાસે માનપત્ર વાંચી સંભળાવ્યું હતું. (આની એક નકલ આ સાથે બીડી છે.)

ત્યારબાદ શ્રીમાન પ્રમુખે સમયોચિત સુમધુર ઉપદેશ કર્યા પછી શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર સહર્ષ અર્પણ કર્યું હતું. તે પછી શાસ્ત્રીજીએ તેનો ભાવપૂર્ણ ઉત્તર આપ્યો હતો, અને વિશેષમાં જણાવ્યું હતું કે માર્કે ખર્ચે જીવન આજીવીજ શરૂ થાય છે અને સંપ્રદાયની આરાધી જે કાંઈ સેવા બનશે તે હું અવરણ કરીશ. સર્વનો ઉપકાર માની તેમણે પોતાનું ભાવજી સમાપ્ત કર્યું હતું. પછી શેઠ દામોદર ભૂખણદાસે પ્રમુખશ્રીને ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી જેને પ્રો. વર્માએ તેજદાર ભાષામાં અંગુગોદન આપ્યું હતું તેમજ શા. વલ્લભદાસ સુતીલાલે પણ અંગુગોદન આપી દૂકમાં ભાવજી કર્યું હતું. ત્યારબાદ ભરૂચવાલા દયરચલાલભાઈની બે કુમારિકાઓ બહેન કાન્તા તથા ગોતીએ અત્યંત મધુર વિદાયગિરીના ગાનથી સજાનું કાર્ય સમાપ્ત કર્યું હતું. આ સભામાં પૂનાની વૈષ્ણવ અને ધર્મર બહેનોએ પણ સારી સંખ્યામાં ભાગ લીધો હતો.

માનપત્ર.

વે. શા. સં. મમ્મલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી, એમ. એ.

ગ્રેડિસર, ડેક્કન કોલેજ, પુના.

પરમમાન્ય ભગવન્જીઅનિષ્ણાત શાસ્ત્રીજી,

આપ સરકારી નોકરીના નિમિત્તે અહિં વિ. સં. ૧૯૭૧માં આવ્યા અને સોલ વર્ષ રહી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થતાં પૂના છોટી જન્મભૂમિ તરફ જવાનો પ્રસંગ હાલમાં આવ્યો. સોલ વર્ષના આપના સમાગમથી અમને જેટલો આનન્દ થયો છે તેના કરતાં અધિક ખેદ આપના પૂના છોડવાથી આવે થાય છે. આ પ્રસંગે આપના પ્રતિ પ્રેમ આદર અને આભારની અમારી ભાવનાઓ આ માનપત્રોદ્ધાર અને દર્શાવીએ છીએ.

આપના આટલા વરોના સંતસંગથી અમને બહુ લાભ મળ્યો છે. આપનાં વ્યાખ્યાનો શ્રવણ કર્યા છે, આપની પાસેથી નિત્ય ચીસુગોધિનીજના કથારસનું પાન કર્યું છે, શુદ્ધપુષ્ટિમાર્ગનું યથાર્થ લોકવેદનિરોધક સ્વરૂપજ્ઞપણું છે, આપની જ્યેષ્ઠ પુત્રીના વિવાહોત્સવમાં અનન્યાશ્રયનો સાક્ષાત્કાર કર્યો છે જેટલુંજ નહિ પરન્તુ આપનેજ લીધે વૈષ્ણવપરિપક્વતા પંચમ ખેડક પૂનામાં ભરી શક્યા છીએ, અને આપની અત્ર સ્થિતિને લીધેજ પરમપૂજ્ય ગોરવામિ મહારાજનેનાં અધ્યયન દર્શનનો અને તેઓશ્રીનાં સુમધુર વચનામૃતના શ્રવણનો લાભ અમે પ્રાપ્ત કરી શક્યા છીએ. સામ્પ્રદાયિક વિદ્વાનોના અને અનન્ય ભક્તોના સમાગમ પણ અત્ર થયો જાય છે તે પણ આપની પૂનામાં સ્થિતિનેજ લીધે.

આપતા સહવાસથી જ્ઞાન ભક્તિ અને ચારિત્ર્યનો વિરલ પણ અસાધ્ય સુભગ સંયોગ અમે જોયો છે, ખાલકના જેવી સરલતા, સાધુજનની સાદાઈ, સત્સનિધિની સત્યપ્રિયતા અને

નિરપૃહતા આપનામા સદૃશ દરય થાય છે. આપની અનન્ય આચાર્યભક્તિ તો સમગ્ર સમ્પ્રદાયમાં સુપ્રસિદ્ધ છે.

શાસ્ત્રીજી, ગયા જે શતકનો આપણા સમ્પ્રદાયનો અગાનાન્ધકાર દૂર કરવામાં આપનો પરિશ્રમ અવર્ણનીય છે. આ શતકના પ્રારંભભાગ સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રસિદ્ધ કરવાની સત્પરિણિત આદરીને વિશ્વધર્મોમાં આપણા ધર્મનું ઉચ્ચતમ સ્થાન છે એ આપે સિદ્ધ કરી આપ્યું છે. મુંબઈ યુનિવર્સિટિમાં પણ એમ. એ. ના અભ્યાસક્રમમાં અણ્ણભાષ્યને સ્થાન અપાવવામાં આપનો સ્વલ્પ પ્રયાસ હતો. પૂનામાં રિથિતિ કરીને આપની પાસેથી અણ્ણભાષ્યાદિ સામ્પ્રદાયિક ગ્રંથોનું અધ્યયન કરીને શાસ્ત્રિપદને તેમજ પ્રોફેસરપદને અનેક વિદ્વાનો આજે અર્થકૃત કરી રહ્યા છે. આપનો વર્ણુ શ્રીગુણસાધજીનું અને આપની પ્રપત્તિ દામોદરદાસજીનું સ્મરણ કરાવે છે. સમ્પ્રદાયના હિતાર્થે આપે આપતું જીવનજી અર્પણ કર્યું છે એ કોને વિદિત નથી !

આપ પૂનામાં આવ્યા તે પહેલા ગાયત્રીભાષ્ય પ્રચારનારનાકર ઇત્યાદિ અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથોની પ્રસિદ્ધિ આપેજ કરીજ હતી, શ્રીસુમોધિનીજી માસિકના તો આપ આત્માજી હતા, પુષ્ટિભક્તિ-સુધા માસિકના પ્રેરક પણ આપ હતા, તથાપિ આપના અન અભ્યાસ પછીજ સમ્પ્રદાયની અરેખરી સેવા કરવાનો અવકાશ આપને પૂનામાં મળવાથી સમ્પ્રદાય અણ્ણભાષ્ય દશમસ્કન્ધ શ્રીસુમોધિનીજીનો અનેક પ્રકરણો ઇત્યાદિ ઇત્યાદિ મહાન ગ્રંથો પ્રસિદ્ધ કરીને આપણા સમ્પ્રદાયનું ગૌરવ આપ વધારી શક્યા હો. અમારૂં તો સાલાગ્ય એ છે કે અમારા પૂનાના શેઠ હકમચન્દ્ર ઇશ્વરદાસના તરફથી ફલપ્રકરણીય શ્રીસુમોધિનીજીનો અને શેઠ મગનલાલ સાંકલચન્દ તરફથી શ્રીપ્રભુચરણકૃત શ્રીટિપ્પણીજીનો પણ અનુવાદ સ્વલ્પ સમયમાં પ્રસિદ્ધ કરવાનું કશુનીને સામ્પ્રદાયિક નામમેવાનો સુંદર માર્ગ આપે અમને દર્શાવ્યો છે. અગ્રેનું શ્રીબાલકૃષ્ણ પુસ્તકાલય પણ આપની સંગતિનું ફલ છે.

સમ્પ્રદાયમાં હજી નામસેવા બહુજ કરવાની છે, અણ્ણભાષ્યનો તત્ત્વદીપનિર્ણયનો અને શ્રીસુમોધિનીજીનો માતૃભાષામાંજ નહિ પરન્તુ ઇતર પણ ભાષામાં અનુવાદ કર્તવ્ય છે, સામ્પ્રદાયિક પ્રાચીન અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથગ્રંથો સાહિત્ય સાથે પ્રસિદ્ધ કરવાના હજી બહુજ બાકી છે, જાત્રાને સ્વમાર્ગેય આકર ગ્રંથોનું પાંક્ત જ્ઞાન કરાવવાનું છે, પ્રાચીન શૌધ્યોજી કાર્યમાં તો આપણું કર્તવ્ય આથી પણ અધિક છે, નિજ વ્યયે પ્રતિસાદ આપ મુંબઈમાં શ્રીગીતાજીનું પ્રવચન અને શ્રીસુમોધિનીજીની સરસ કથા તો કરોજ હો તથાપિ અન્ય પ્રાંતો પણ તે અલભ્ય લાભ પ્રાપ્ત કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા રાખે છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી આપને સુચિત્ આયુષ્યનું દાન કરો અને આપ આ ઉત્તમોત્તમ સેવા કરીને કૃતાર્થ થાઓ એજ અમારી અન્તઃકરણપૂર્વક અભિલાષા છે. પૂના, આશ્વિનકૃષ્ણપ્રતિપદા.

અમે છીએ, આપના સુણાનુરાગી પ્રેમાકાંક્ષી-

શાહ હરગોવિન્દદાસ ઉગરચન્દ	શાહ કિસનદાસ મનમોહનદાસ	શાહ રામદાસ ગોવર્ધનદાસ
શાહ કૃષ્ણદાસ ગોવર્ધનદાસ	શાહ હરિદાસ વિઠ્ઠલદાસ	શાહ વલ્લભદાસ સુનીલાલ
શાહ માદીવાલા	શાહ પુરોષોત્તમદાસ ગોકુલદાસ	શાહ કેશવલાલ શુદ્ધાખીદાસ
શાહ લક્ષ્મીભાઈ દામોદરદાસ	શાહ શામદાસ લક્ષ્મણદાસ	શાહ ચિમનલાલ વિઠ્ઠલદાસ
શાહ ચીમનલાલ કિસનદાસ	શાહ કિસનદાસ ત્રિકમદાસ	શાહ હરિજીસ વલ્લભદાસ
શાહ મગનલાલ સાંકલચન્દ	શાહ પ્રદેશજી ગોવર્ધનદાસ	શાહ કનૈયાલાલ રામચન્દ્રદાસ
શાહ ધનજીભાઈ દાથીભાઈ	શાહ મગનલાલ સેવકરામ	પટેલ અંબાલાલ હેમાજી
શાહ દામોદરદાસ ભૂખણદાસ	શાહ મનમોહનદાસ સામલદાસ	દગુરામ શંકરલાલ
શાહ ગોકુલદાસ નારાયણદાસ	શાહ વિઠ્ઠલદાસ સાંકલચન્દ	પ્રોફેસર વર્મા
શાહ સાંકલચન્દ જગનલાલ	શાહ જીવજીદાસ મોહનદાસ	શાહ ગોકુલદાસ નુવરીદાસ
શાહ વિઠ્ઠલદાસ ભગવાનદાસ	શાહ માણેકલાલ શંકરલાલ	વગેરે વગેરે



श्रीयुक्त ममलाल गणपतिराम शास्त्री. M. A. S. T. C. D. M. E. A. S.
(हालमाज राजसेवामांयी निवृत्त थइने. वानप्रस्थत्व स्वीकारिने संप्रदायसेवा.)



શ્રીયુત્ત હરિશંકર ઑંકારજી શાહી
મીમાંસક, વેદાંત વિશારદ M.A.S
(મમદાયમાં સચ્ચુત માસિક પત્રના પ્રથમ સપાદક
અને શ્રીસુવોધિનીના સમર્થ અનુવાદક.)



મોવેમર શ્રીયુત્ત જીજીલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ, M.A
(‘શ્રીપુન્ડિતમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભા’ના નેતા તરીકે,
ગુજરાતમાં સાંપ્રદાયિક ચેતન લાવનારા અને અનેક
કવિન શુદ્ધાદિત પ્રયોના-સરલ અનુવાદ કરનારા
સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન.)

દીક્ષાવિચાર.

અહસંબંધ:—અહસંબંધ કરાવવા બાબતનાં શ્રીગોકુલનાથજી વગેરે શ્રીગો. ખાલકોનાં મૂલ વચનામૃતપર આપણે આગળ વિચાર કરીએ. અતુર્ય લાલજી શ્રીગોકુલનાથજી કહે છે કે. (૧) પ્રહર્ષવંધકરણ નામ ઇતન્માર્ગીસાચાર્યદ્વારા મળવન્નિવેદનમ્, અહસંબંધ કરવું એટલે ખાસ પુષ્ટિમાર્ગિયાચાર્યદ્વારા ભગવાનને નિવેદન એટલે સર્વાર્પણ-અર્હાં ઇતદ્ શબ્દ પુષ્ટિને માટે છે. વળી આગળ કહે છે કે-તેનૈવ સર્વેષાં દેહાનાં સર્વેષાં જીવાનાં ચ સેવાપ્રતિવંધકસર્વદોષનિવૃત્તિ-ર્ભવતિ ॥ આ પ્રમાણે પુષ્ટિમાર્ગિય આચાર્યોદ્વારાજ એટલે શ્રીગો. ખાલકોદ્વારાજ નિવેદન કરવાથી સર્વ દેહોના અને સર્વે જીવોનાં સેવામાં નડનારા સર્વ દોષો નાશ પામે છે. આ ઉપરના વાક્યનો અર્થ છે. પ્રથમજી શ્રીગોકુલેશ તેનૈવ શબ્દ મુકે છે. તેજ શબ્દ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગિય આચાર્યદ્વારા અને એજ શબ્દ નિશ્ચયાત્મક છે. મતલબ કે શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા અહસંબંધ સિવાય બીજી રીતે પાખંડમતની પેઠે કાન કુંઠવાથી દોષની નિવૃત્તિ થતી નથી. જેઓ શ્રીકાકેરજી અને શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુણજી વળી શ્રીગોકુલનાથજી વગેરેનાં વચનામૃતને અથવા હૃદયના હાર્દને સમજે નહિ ને તે પ્રમાણે વર્તે નહિ, અહસંબંધ લે નહિ, તેમને પુષ્ટિમાર્ગમાં ગણવા એ અત્યજને નાગરમાં ધુસારવા જેવી વાત કહેવાય. જેવી રીતે ધર્મના અસર્વકારીઓ અને નાસ્તિકો તથા ધર્મશાસ્ત્રોની આજ્ઞાઓને છુંદનારાઓ અત્યજનેતી જોડે રાટીવ્યવહાર તથા જલવહેવાર અને સ્પર્શવહેવાર કરી દિંદુધર્મનું સત્યાનાશ વાળવા બેઠા છે, તેવી રીતે શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુણજી શ્રીગોકુલનાથજી તેમજ અન્ય શ્રીગોસ્વામિખાળકોનાં હાર્દ વચનામૃતને જોડે મુકીને અહસંબંધ ન લે, પુષ્ટિમાર્ગિય મર્મોદ્યોગો ન પાળે, ખુદ શ્રીગોસ્વામિખાળકોએ અહસંબંધપૂર્વક આપેલી માળાઓને તોડે, શ્રીભાગવતને તથા શ્રીસુભોધિનીજીને શ્રીકાકેરજીને પણ ન માને એમને પુષ્ટિ-માર્ગમાં ધુસારવાનો પ્રયત્ન કરનાર બહિર્મુખજી છે એમાં જરાય અતિશયોક્તિ નથી. જેવી રીતે અંદરે ઝેર બરેહું હોય ને ઉપર મોંપર દૂધ ભર્યું હોય એવો ધડો આપણે દેહી દમ્બે છીએ એવી રીતે કરવું રહ્યું. વળી શ્રીગોકુલનાથજી આગળ શું કહે છે-યદા સર્વજલદોષાણા તાવદેવ ગુણદોષાદિવર્ણના મન્વતિ ॥ યાવદ્ ગંગાપ્રવેશો ન મન્વતિ ॥ ગદ્ગાપ્રવેશાનન્તરં સર્વેષાં જલનાં ગંગાત્વેનૈવ સર્વ ધર્મોપયોગિત્વં મન્વતિ ॥ તદ્વત્ યાવત્પર્યંતં મક્તિમાર્ગીયાચાર્યઃ કૃત્તં નિવેદનં ન મન્વતિ તાવદેવ મળવદ્ભજને તદીયગુણદોષાદિવિચારણં સંમન્વતિ ॥

અર્થ:—જેમ સર્વ જળ ત્યાં સુધીજ દૂપિત ગણાય છે કે જ્યાં સુધી તેમને ગંગાજીમા પ્રવેશ એટલે સંબંધ થતો નથી. પણ શ્રીગંગાજીમા પ્રવેશ થયા પછી સર્વ પ્રકારના જળો ગંગાજળજી બની જાય છે, ને તેનો ગંગાજળ પ્રમાણે સર્વધર્મકાર્યોમાં ઉપયોગ થાય છે. તેમ અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં સુધી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગિય આચાર્યો વડે નિવેદન જીવ ન કરે ત્યાં સુધી ભગવદ્ભજનમાં તે દૂપિત છે, ત્યાં સુધી તેને દોષનો વિચાર સંભવે છે. (પછી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગિય આચાર્યદ્વારા) અહસંબંધ કર્યા પછીજી જીવ નિર્દોષ બની મેલોપયોગી બને છે. દવે આપણે વિચાર કરો કે અહસંબંધ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા લીધા વગરનો જીવ ગમે તેવો પવિત્ર હોય છતા પણ નિર્દોષ ન બને, કારણ કે આ જન્મમાં તે પવિત્ર છે, પણ પૂર્વેના સદજ દોષ તે તો નિવેદનદ્વારાજ નિવૃત્ત થાય તે થતા નથી, તો પછી અહસંબંધ ન લેનારાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં સ્વર્ગે પણ ન ગણાય એ દીરા જેવું સ્પષ્ટ છે. અરે આવાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં છે, એવું જે બોધનાર છે, તેને પોતાનાં વચનનું ઉલ્લંઘન કર્યા બદલ શ્રીગોકુલેશ શાપ આપે એમા નવાઇ નથી.

(૨) પ્રદર્શકો નામ સ્વમાર્ગચાર્યદ્વારા મળવતિ નિવેદનમ્ ॥

શ્રીકૃષ્ણાનુગ્રહ એટલે દ્વિતીય લાલછ શ્રીગોવિંદરાયજીના પુત્ર ને શ્રીહરિરાયજીના પિતૃચરણુ આ વાક્ય છે. એનો અર્થ એવો છે કે-બ્રહ્મસંબંધ એનું નામ કહેવાય કે પુષ્ટિમાર્ગિય આચાર્ય-દ્વારા ભગવાનના નિવેદન એટલે સર્વસમર્પણ.

મદ્ભત્તચક્રો નામ સાક્ષાત્પુરોત્તમસંબંધકર્ણ ॥ તત્ત્વ શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શરણવ્રતનૂર્વક્ત્વમ્ ॥ શ્રીમન્ને-ત્સવજીનું આ વચનામૃત છે. બ્રહ્મસંબંધ એટલે સાક્ષાત્ શ્રીપૂજું પુરોત્તમ સાથે સંબંધ કરવો તે, અને તે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શરણે જઈને સર્વસમર્પણપૂર્વક સંબંધ કરવો તે.

અહીં કોઈ એમ કહેશે કે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા એટલે શ્રીમદાપ્રભુજીદ્વારા, ના એવો ભાવ નથી, ને એવો ભાવ હોય તો તો શ્રીગુણાંકજી કે શ્રીગોપાલનાથજી અથવા અન્ય પણ કોઈ બાળકે બ્રહ્મસંબંધ ન કરાવી શકે. વળી આ વચનામૃત કહેનાર શ્રીમન્નેત્સવજીના સમયમાં શ્રીમદાપ્રભુજી સાક્ષાત્ પ્રકટ પિરાજતા નહોતા, એટલે શ્રીમદાપ્રભુજીને જ માટે 'શ્રીમદાચાર્યદ્વારા' એ શબ્દ નથી. અહીં મને મેં બ્રહ્મસંબંધ લીધું તે વખતનો પ્રસંગ યાદ આવે છે એ પ્રસંગ ઉપરથી "શ્રીમદા-ચાર્યદ્વારા" આ શબ્દનો ચોક્કસ નિકાલ થઈ જશે.

મેં એક મહાનુભાવીને પૂછ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે યુગમાં શી ભાવના કરવી ? આ ભગવદીયના વચનના મને વિશ્વાસ હતો ને છે, તેઓ બાપાશ્રીના કૃપાપાત્ર હોઈ એમના સત્સંગથી મેં પુષ્ટિમાર્ગમાં શરણ રતીશું. આ ભગવદીયે કહ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે બ્રહ્મ-સંબંધ આપનાર શ્રીગોસ્વામી બાળક સાક્ષાત્ શ્રીમદાપ્રભુજીજી છે. એ ભાવના રાખવી નેહ્યે. ને છે પણ શ્રીમદાપ્રભુજીજી. હવે આ વાક્યથી હું બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતનું યુરુદેવનું સ્વરૂપ સમજી ગયો, પણ મારા વિચારો એથી આગળ દોડ્યા. ને બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતેજ શ્રીયુરુદેવ શ્રીમદાપ્રભુજીનું સાક્ષાત્સ્વરૂપ છે, તો સદા કેમ નહિ ? કારણ કે તે તો સદાજ સોનું છે, હીરા તો સદાજ હીરા છે. એકજ વસ્તુ કણે કણે બિન બિન હોય એ તો ન મનાય. આ વિચારના નિર્ણયમાં એવું પરિણામ આપ્યું કે શ્રીયુરુદેવ એ સદાજ સદા આચાર્યશ્રીમદાપ્રભુજીનું સ્વરૂપ છે, સ્વતંત્ર રાષ્ટ્રાધિપત્યસ્વમાહાત્મ્યાય નમઃ ॥ આ નામનું સત્સ્તત્વ દૃઢ જતી ગયું. આજ ભાવના પ્રમાણે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શબ્દ શ્રીમન્નેત્સવજી મૂકે છે એમ સમજું. બ્રહ્મસંબંધસંસ્કાર પ્રદર્શ કરતાં શ્રીયુરુદેવ સાક્ષાત્ શ્રીમદાપ્રભુજી છે એ ભાવના રાખવાથી સંસ્કાર ફળસ્વ નિવડે છે. અરે !! સદાજ સદા શ્રીયુરુદેવ સાક્ષાત્ શ્રીમદાપ્રભુજી છે એવી ભાવના તો ઉત્કૃષ્ટમાં ઉત્કૃષ્ટ છે, એવી ભાવના રાખનારને એ અગ્નિકુવળું સ્વરૂપ તેવા પ્રકારના એટલે શ્રીમદાપ્રભુજીના સાક્ષાત્કાર જેવા અનુભવ પણ આપે. આ વાત અનુભવગમ્ય છે વચનગમ્ય થવી સુરહેલ છે. અતુર તેજ કહેવાય કે જે સાનમાં સમજી જાય, ને એકડો શીખવતાં દસ સુધી પહોંચી જાય.

(૪) નિવેદનં તુ સ્મરત્યમિયત્ર ॥ અતઃ એવ શ્રીમદાચાર્યવચનનાં નાન્યમર્ણાવપ્રતિમદ્દાંતીકારઃ ॥ શ્રીગોકુલોત્સવજીનું આ વચનામૃત છે. આની પૂર્વે શ્રીગુણાંકજીનો સંબંધ છે. શ્રીગુણાંકજી નવ રતનની દીકાના કહે છે કે સદા સર્વદા તાદશી બાળો. સાથે સમર્પણ એટલે નિવેદન વિચારવું. હવે નિવેદન એટલે શું ? તો અહીં શ્રીગોકુલોત્સવજી કહે છે કે નિવેદન તેજ કે શ્રીમદાપ્રભુજીના વંશદ્વારા ધૃત્વરને સર્વસમર્પણ કરવું.

ખીજે કોઈ રસતે નિવેદન કરે તેનો પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર નથી, આ વાક્ય તો એમજ કહે છે કે શ્રીવલ્લભકૃપાદ્વારા શરણ ન રતીકારે તે પુષ્ટિમાર્ગમાં નથી, (૧) એકખીજમાં માહોમાહે કાન ડુંકી બ્રહ્મસંબંધ થયું એમ માની લેનારા સાંપ્રદાયિક નથી એ વસ્તુ આથી સ્પષ્ટ થાય છે. વળી

જેઓ તેવાઓના કૃદમાં ક્રસાઇ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા શરણુ સ્વીકાર્યા છતા તે શરણુ તરછાડી પાખંડી બની જાય છે, તેના પશુ પુષ્ટિમાર્ગમાં પ્રવેશ કે અંગીકાર નથી કરણુ કે શરણુ સ્વીકારવા છતાં તેને શ્રીવલ્લભકુળના શરણુમાં અનિશ્ચાસ આબોધે એટલે તે પુષ્ટિમાર્ગથી વિખુટા પડી ગયો. જ્યાં સુધી ગંગાજી સાથે સંબંધ હોય છે ત્યાં સુધીજ ગંગાજીનું 'જળ ગંગાજી છે, પણ ગંગાના જળને ગંગાજીમાંથી લઇ કોઇ બીજી નદીમાં રેડીએ તો ગંગાજળ મરી સામાન્ય જળ બની જાય અથવા ગંગાજળને ખાળમાં રેડીએ તો ખાળનું જળ ગણાય ને તે અસ્પૃશ્ય બની જાય છે. તેમ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા અલસસંબંધ કરવા છતાં જેઓ શ્રીવલ્લભકુલ સાથેનો સંબંધ તોડી આવા પાખંડીઓ જેડે બચદાર રાખે અથવા લખા જાય તેઓ પણ ત્યાજ્ય છે. ખાળકુડીમાં પડેલું ગંગાજળ માહાત્મ્ય વગરનું છે. દુઃસંગથી તેનું આધિર્દેવિશ્વ નાશ પામે છે અને આની રીતે બનવાથી પ્રજા તેનાથી સદા પ્રવાહનાજ કામ થાય છે, ને પુષ્ટિમાર્ગથી તદ્દન દૂર જ પડે છે.

પત્રદ્વારા અલસસંબંધ—પત્રદ્વારા પણ અલસસંબંધ થઇ શકે છે. વાચકવર્ગને વૈશ્યવધર્મ પતાઠાદ્વારા ખબર છે કે ભગવદીય નાના બા ઉત્તેજીઆવાળા ક્રીળનાને જનમનગરવાળા ગોરવામી શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ મહારાજશ્રીએ પત્રદ્વારા અલસસંબંધ આપ્યું છે છતાં તેઓ ઉત્કૃષ્ટદશા ભોગવે છે. ગુરદેવની તો એમણે જાણી પણ નથી કરી. પણ અહીં પત્ર જેને અલસસંબંધ આપવાનું હોય તેનેજ અને તે શ્રીગોસ્વામિઆલકજ લખે. સે'કડો વર્ષપર ગમે તેના પર ગમે તેણે લખેલા પત્રનો ઉપયોગ આજે ગમે તેને માટે અલસસંબંધમાં ન કરી શકાય. કપોલકૃપિત વાડાઓના જ્યાંય માટે શ્રીગોસ્વામીજીલકોના પવિત્ર પત્રોનો ફરી દુરુપયોગ ન થાય. એ પણ આશ્ચર્ય પામવા જેવું છે, શ્રીગોકુલેશ સાક્ષાત આજે નિત્યલીલાની ભાષામાં નિત્યલીલાભાષી પત્ર લખતા હોય તો તે આપણે એમનું હાલનું અલસસંબંધ માન્ય રાખીએ પણ આ તો ગમે તેને અલસસંબંધ આપવા માટે શ્રીગોકુલેશે લખેલો પત્ર હશે. તેનો ગમે તેને પોતાના વાડામાં ધુસાડવા ઉપયોગમા લે એ પાખંડીની પરિસીમા છે. એવા પત્રદ્વારા અલસસંબંધ લેનારનો જ્યાંય કરવો એ પણ ખરી ધૃષ્ટતાજ છે એમ કેમ ન માનવું ?

જે પત્રને આધારે પોતાના પાખંડ મતનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે અથવા ચલાવી રહ્યા, તે શ્રીગોકુલનાયજીનો કહેવાતો પત્ર હું રણુ કરું છું, અહીં પણ અર્થના અનર્થ કેવા કર્યા છે ? વા અવળો ઉપયોગ કેવા કર્યો છે તે આપણે તપાસીએ. આ પત્ર ઉપરથી શ્રીગોકુલેશજીની ચતુરાઈ આપણને સમજાઇ જશે. મરકરીમાં પ્રેમજ્ઞાં ટોળાં માટે શ્રીગોકુલેશ હસતા ત્યારે તેઓ સાચું અને પ્રસન્ન થઈ હસે છે એમ માની લેતા, તેમ આ પત્રનો પણ અર્થનો અનર્થ થયો છે:—

સ્વસ્તિ ધીવલ્લભાના મટકલ્યાણદ્વંદ્રમાણદેવદાસદવાલદાસદ્યામદાસસિંધર્જનારદમજ્જયરમપરમેશ્વરદાસ હીરમણિપ્રજ્ઞસિલ્લાશિષ્ય: । 'શમિદ માવત્કમાશાસ્ત્રમે । અપરચ । સદા શ્રીગોવર્દનેશ: સ્મર્તવ્ય: । કિંચ શ્રીમદાચાર્યસંબંધિભ્ય: સાક્ષાન્નામપ્રદ્વેને પત્રદ્વારા સ્વપત્રદ્વારા વા સેવકદ્વારા નામપ્રદ્વેને માર્ગસંબંધાદવશ્યં ભગવદંગીકારો ભવત્યેવ નામ સંદેહ: ॥ તેન ચેવં પત્રદ્વારા નામપ્રદ્વેને સન્દેહસ્તે તથા યોષનિષા: યથા ચેવં સંદેહ હતિયત: । તદનન્તરં તદ્વૃત્તાતો છેલ્લનીય ॥ કિમધિકં માર્ગસ્વરૂપવિત્તુ ॥

ઉપરના પત્રમાં શ્રીમદાચાર્યસંબંધિભ્ય: સાક્ષાન્નામપ્રદ્વેને પત્રદ્વારા સ્વપત્રદ્વારા વા સેવકદ્વારા નામપ્રદ્વેને માર્ગસંબંધાદવશ્યં ભગવદંગીકારો ભવત્યેવ નામ સંદેહ: ॥

અહીં આપણે પ્રથમ નામપ્રદ્વેણનો અર્થ સમજીએ, જે શ્રીગોકુલનાયજી સિદ્ધાંતરહસ્યની ટીકામાં શ્રદ્ધાસર્વધરણ નામ દત્તમાર્ગાચાર્યદ્વારા ભગવતિવેદનમ્ । તેનૈવ.....સર્વ દોષનિશ્ચિત્તિર્ભવતિ ।

અહસંબંધનો અર્થ આહો ભગવાનને નિવેદન કરવું એવો આપે છે, ભગવાનનું નામ મહત્વ કરવું એમ નથી આપના. માટે નામ નિવેદન ને નામમહત્વમાં કંઈક તાત્પર્ય હોવું જોઈએ. આપણે નાના બાળકને અહસંબંધ એકદમ નથી આપવાતા પણ પ્રથમ નામમહત્વ એટલે નામ પમાડીએ છીએ. આ નામમહત્વ એટલે નથુ વખત અષ્ટાક્ષર જપાવી માળા પહેરાવવી તે. નામમહત્વ એટલે પ્રભુનું નામ મહત્વ કરવું, એટલે માત્ર અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો. આ અષ્ટાક્ષરમંત્ર લેવામાં પત્રદારા, સ્વપ્નદારા કે સેવકદારા લેવામાં વાધો નહોત્ય. આ બાબતમાં તો શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ પણ નામ મહત્વ કરાવવાની (અષ્ટાક્ષર આપવાની) આચાર શેઠ કાશીવાળા પુરુષોત્તમદાસ, નરેન્દ્રાવાળા ગોપાળદાસ અને આચાર હરિવંશજી વગેરેને આપી હતી, પણ તે જીવો પાછળથી અહસંબંધ શીવસંબંધકદારા કરતા. જે નામમહત્વ સેવકદારા જ કરાવવાનો અર્થ અહસંબંધ કરાવવું એવોજ હોય તો જસે-બાવન ચોરાસીમાં આપણે વાંચીએ છીએ કે અમુક વૈષ્ણવે અમુક વૈષ્ણવને અહસંબંધ માટે પત્ર લખી આપી શીવસંબંધ કે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પાસે મોકલ્યો. જે વૈષ્ણવનેજ અહસંબંધ આપવાની સત્તા કે ચોગ્યતા હોય તો ગોતેજ અહસંબંધ આપે, પત્ર લખી આપી શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પાસે કે શ્રીમુસંબંધ પાસે અહસંબંધ કરાવવા શા માટે મોકલે ? માટે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષરમંત્ર લેવો, નહિ કે અહસંબંધ. પછી લખે છે કે માર્ગસંબંધાદયર્થ મગવદંગીકારો મત્યેવ ન સંવેદઃ અહો કહે છે કે માર્ગસંબંધાત્ । એટલે નામમહત્વ કરવાથી માર્ગનો સંબંધ થાય છે. નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવાથી પ્રભુ તરફ જવાનો માર્ગ તેનો સંબંધ થાય છે. જેમ આપણે રસ્તા ન દીડો હોય તો કાંઈ આપણને જતાવે કે આ માર્ગ છે. આ વખતે આપણે રસ્તા પર પથ મુકીએ તો માર્ગનો સંબંધ કયો કહેવાય. એ રસ્તે રસ્તે જઈએ એટલે ઇચ્છિત સ્થળે પહોંચીએ. એટલે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લીધા પછી અષ્ટાક્ષર જપીએ ને અષ્ટાક્ષર લીધા પછીની પાળવા ચોગ્ય મર્પદાઓ પાળીએ, તો મગવદંગીકારો મત્યેવ । પછી અહસંબંધ થાય છે.

આપણા માર્ગમાં તો અહસંબંધ કરવું એજ ભગવદંગીકાર છે, માટે ઉપરનો સંસ્કૃત શબ્દનો અર્થ અહસંબંધ નક્કીજ થાય છે, મતલબ કે જે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લે છે, તેને અહસંબંધ લેવાનું નક્કીજ થાય છે. અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો એ અહસંબંધની વધાર્થ છે. વધાર્થ તો સ્વપ્નદારા, પત્રદારા કે સેવકદારા પણ મોકલી-શકાય. પણ વધાર્થનું ફળ તો અહસંબંધ છે. વધાર્થ મળી એટલે ફળ નક્કીજ છે. માટે એવ શબ્દ વાક્યમાં વાપર્યો છે, અષ્ટાક્ષર મંત્ર એટલે નામમહત્વરૂપ વધાર્થ મળી એટલે વધાર્થનું ફળ ભગવદંગીકાર એટલે અહસંબંધ જરૂર યશે એમાં સંદેહ નથી. આપણે બધીએ છીએ કે, આપણા માર્ગમાં નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવો એ પણ મોટી મહત્તાવાળી વસ્તુ છે. વૈષ્ણવને ત્યાં બાળક જન્મે કે થોડી મુલત પછી તરતજ નામમહત્વ કરાવવું જોઈએ, કારણ કે વખતે બાળપણમાં આધું જાય તો તેના જીવનો પ્રભુના નામ સાથે સંબંધ થવાથી બીજા જન્મમાં પણ અહસંબંધની સવડ મળે છે. આમ બાળક જન્મ્યું હોય ને કાંઈ શ્રીગોસ્વામિબાળક પાસે ન હોય તો અષ્ટાક્ષર તેને વૈષ્ણવ આપી શકે ને તે પણ તાદશી વૈષ્ણવ હોય તોજ આપી શકે. સેવક કહેવાનું કારણ એજ છે, કે જે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને સેવક હોય તેણે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના લક્ષિતમાર્ગની સર્વ મર્પદાઓ પાળવીજ જોઈએ. સેવક તેજ કે શુરની આચાર પ્રમાણે વર્તે; શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની આચાર્યો પ્રમાણે બરાબર વર્તનારજ નામમહત્વ એટલે એટલે અષ્ટાક્ષર પણ આપી શકે, અને તેણે સેવક તાદશીજ હોય. સ્વપ્નદારા આચાર પ્રમાણે કરે છે છતાં અહસંબંધ પછીથી થાય છે, એવા દાખલા પણ આપણા

માર્ગમાં છે. સાંભળવાના દામોદરદાસને પ્રભુએજ સ્વપ્નદ્વારા આજ્ઞા કરી હતી કે, આ પત્ર વાંચે તેને શરણે જાજે. આ આજ્ઞા એ નામગ્રહણ છે, ને એ નામગ્રહણથી પાછળથી એ પત્ર વાંચીને ખરાબર સંમગ્નવતાર શ્રીમહાપ્રભુજીનું અહસંબંધ લઈ શરણુ સ્વીકાર્યું તે ભગવદ્ગીકાર છે. સ્વપ્નદ્વારા શરણુની આજ્ઞા પ્રભુએ કરી એટલે અહસંબંધની સવડ નક્કીજ થશે એમ નક્કીજ છે. એમાં સંદેહ નથી એમ શ્રીગોકુલેશ પત્રમા કહે છે.

પત્રદ્વારા પણ નામગ્રહણ કરાવાય છે, ને સાક્ષાત પાસે જઈને અહસંબંધ કરવાની સવડ ન હોય તોજ આમ પત્રદ્વારા નામગ્રહણ કરાવાય છે, અથવા અહસંબંધ પણ અપાય છે. હવે વિચારવાનું એ છે કે અહસંબંધ એકવાર કર્યા પછી બીજાવાર ન થઈ શકે. પણ પત્રદ્વારા અહસંબંધ કરાવ્યું હોય ને ફરી શ્રીગુરુદેવનો સમાગમ યાપ તો સાક્ષાત બીજાવાર સન્નિધાનમા અહસંબંધ લઈ શકાય.

સેવકદ્વારા નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવામા પણ શ્રીવક્ષભકુળ પાસે લેવાની અનુકૂળતા કે સવડ ન હોય તોજ સેવકદ્વારા લેવું નોંધએ. સવડ શ્રીવક્ષભકુલદ્વારા હોય છતાં કોઈ વૈષ્ણવ આપે તો તેમાં તો મોટો અપરાધી બને છે, નરોડા શ્રીયુસાંધિજી બિરાજતા હતા છતાં ગોપાળદાસે નામગ્રહણ કરાવવાની હડકરી તો પરિણામ કેવું વિપરીત આવ્યું? તે આપણે જાણીએ છીએ. તો શ્રીવક્ષભકુળદ્વારા સંપૂર્ણ સવડ છતાં મહદ બની જવાની આંકંક્ષાથી વા પૂજવાની આકાંક્ષાથી અથવા સેવકો વડે પોતાની ખરાબ વાસનાઓ પૂરી કરવા અહસંબંધ આપતું એ મહાપાપાંડીઓનું કામ છે.

વળી અહસંબંધ ન કર્યું હોય તે તો તદ્દન નગરો રહે તેના કરતાં પાખંડી પણ શુરુ કરે એ સમજી શકાય પણ શ્રીવક્ષભકુળ પાસે અહસંબંધ લીધું હોય તેવા વૈષ્ણવની શ્રીયુસાંધિજી બાળકની માળા ઉતરાવી પોતે અહસંબંધ આપી નવી માળા પહેરાવે આ શ્રીગોકુલેશની કઈ આજ્ઞા પ્રમાણે? હું તો આવી વાતો સાંભળીને સમસમી બનું છું, ને આવા અર્થનો અનર્થ કરનારા ને તદ્દન પુષ્ટિભક્તિમાર્ગથી વિપરીત કામ કરનારાઓની તથા તેવાઓનો પક્ષ કરનારાઓની શ્રીગોકુલેશજી શી વચે કરશે એજ હું નથી સમજી શકતો !!!

વળી પત્રમા દશમ સ્કંધે શ્રીભાગવતજીનો દાખલો આપે છે, તો શ્રાદ્ધની બાબતમા શ્રીભાગવતજીના સપ્તમ સ્કંધનો શ્લોક નહિ માનવાનો કે નહિ આચરવાનો, ને આ શ્લોક ફાલતો આવ્યો એટલે પકડી પડવાનો આ ક્યાનો ન્યાય? શું શ્રીભાગવતજીના ફાલના શ્લોકો માનવાના છે ને ન ફાલના એટલે જરા અધરા પડે તે નથી માનવાના? આ ન્યાય એવો હશે કે ફાલે તે સહેલું સહેલું શ્રીભાગવતનું પાળવું ને જરા અધરું કે પોતાની હાજતોમાં નડે એવું હોય તો મુકી દેવું? વળી શ્રીભાગવતજીના આ શ્લોકમા તો સ્વર્ગ સમુત્તીર્થ શબ્દ આપે છે, જર્ત્તર્ય પણ નહિ કહેતાં પણ સમુત્તીર્થ શબ્દ કહે છે તેમા પણ તારતમ્ય છે. પોતે સંસાર સાગરમાંથી તદ્દન પાર ઉતરી જઈને બીજાને ઉતારે છે, એવો ભાવ એમાં છે. શું તેઓ તદ્દન સંસાર સાગર તરી ગયેલા છે કે બીજાને તેઓ તારી શકે? શું આ અનર્થશીલ કાર્યોના બચાવ માટે સહવસ્તુનો ઉપયોગ નથી થતો?

ને શ્રીગોકુલેશ ખાસ દુર્ગમ્યાર્ચાર્યદ્વારા મગવન્નિવેદનમ્ । આવો અહસંબંધ કરવાનો, અર્થ આપે તે વળી બીજાવાર સેવકદ્વારા અહસંબંધ કરવાની હિમાયત કરે પણ ખરા? નજી કરે. માત્ર તાદશી, વૈષ્ણવ હોય તો નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર આપી શકે એવું તો કહે છે. ત્યારે

અવળો અર્થ સમજી લધિા ને કાવતું બંધ બેસાડી દીધું. વળી તેનેવ.....સર્વદોષનિવૃત્તિર્ભવતિ ॥ આથી તો ઉપલી વાત શ્રીવલ્લભકુળદ્વારા અહસંબંધ કરવાની દૃઢ થાય છે. તેનેવ એટલે શ્રીવલ્લભ કુળદ્વારા અહસંબંધ કરવાથી સર્વદોષનિવૃત્તિ થાય છે. ને સેવકદ્વારા, પણ અહસંબંધ એટલે ભગવન્નિવેદન થઈ રાકતું હોત તો એતન્માર્ગિચાર્યદ્વારાની પાસે શા સેવકદ્વારા એવો શબ્દ મુકતાં શ્રીગોકુલનાથજીને પરિશ્રમ પડત ? ના, ના, જેમણે ખૂબ ટીકાઓ ને ગ્રંથો લખ્યા તેમને સેવકદ્વારા એટલો શબ્દ લખતાં શીઠ્ઠરતને પરિશ્રમ ન જ પડત ! ! !

આચાર્યશ્રીઓદ્વારા અહસંબંધ લેવાની વાણી તો ટીકામાં હોવાથી તદ્દન નિશ્ચયાત્મક છે. વળી ઘણી ટીકાઓ એકઠી કરતાં આવુંજ સિદ્ધ થાય છે, તેથી તે વધારે પ્રમાણ્યૂત છે. અને શ્રીગોકુલેશનો પત્ર તો તેઓ પાસે એકજ છે. અને કહાય ખરો હોય તો આ શ્રીગોકુલેશના પત્રને પ્રમાણ્યૂત માની તે પ્રમાણે વર્તવું, ને અને બીજાં ભક્તિમાર્ગીય મર્પોદા પાળવાનાં શ્રીગોકુલેશનાં વાક્યો પ્રમાણ્યૂત ન માનવાં, આ પણ કલ્પિત વાક્યાની કલ્પિત અનન્યતા ને ન્યાયવૃત્તિને ધન્ય છે ! ! !

દીનદિકર.

હૃદયના નાદ !

(૧) આ સર્વ અહંતામમતાર્થ સંસાર મિથ્યા મૃગજલસમાન છે. તેમાં કુબળતા આ હૃદ્ય હવને પ્રજ્ઞ પોતાની કૃપાર્થી નાવદારા બચાવે છે.

(૨) આ જીવ પ્રજ્ઞનો દાસ છે અને પ્રજ્ઞસેવા એ જીવનનું સાધન તથા ફળ છે.

(૩) લૌકિકમાં જેમ સ્ત્રીને પતિસંબંધી સુખમાં મન રાખી ફક્ત કરવું અનુકૂળ નિવડે છે, તેમ આ જીવ તો અલૌકિક શ્રીપ્રજ્ઞના સુખારવિંદસ્વરૂપ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા સાક્ષાત્ શ્રીયસોદાત્સંગ લાભિત પ્રજ્ઞ શ્રીકૃષ્ણ સાથે સંબંધ હોવાથી વિશેષ નિશ્ચિંત છે અને મજેસો અણક્ષરમંત્ર એ જીવનનું ઔપધ છે.

(૪) પ્રજ્ઞ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, માટે ચિંતાનો સર્વથા ત્યાગ કરવો એમાં શ્રેય છે. કારણ જીવ કંઈ પણ કરવાને અસમર્થ હોઈ ચિંતા કરવી નિષ્ફળ છે.

(૫) શ્રીકૃષ્ણ સર્વ શુભ કરશેજ એ નિશ્ચય છે.

(૬) મારું સર્વસ્વ ધન શ્રીપ્રજ્ઞ છે. શ્રીકૃષ્ણ યસોદાત્સંગ લાભિત પ્રજ્ઞ મારા હૃદ્ય છે.

(૭) હૃદયમાં દ્વેષભાવ તેમ ક્રોધ પણ વરતું પ્રત્યેનો અસાધ એજ પ્રજ્ઞથી વિમુખતા છે. સર્વ વરતું પ્રજ્ઞમય અનુભવી રહેવું એજ પ્રજ્ઞનિષ્ઠત્વ દાર છે.

ફક્ત રસેશ પ્રજ્ઞ શ્રીકૃષ્ણ સાથે આનંદ છે. તે આ નિઃસાધન જીવને પ્રજ્ઞકૃપાએ મળશેજ તેવો વિશ્વાસ છે. તે ધ્યેય તરફ હૃદયમાં અહર્નિશ નિરદાશિ પ્રજ્ઞ બન્યું તો શ્રેય મળ્યું હું.

“દીનદાસ.”

ગાંડા ભક્ત !

(લેખક—રા. “શારદ” સુ. કડી.)

એ હતા તો જુના જમાનાના, નહોતી એમનામાં સાહિત્યભરી વાણી કે નહોતાં એમનામાં આ કુનીઆનાં ડહાપણો ! પણ હા, એકજ વાત તેમનામાં હતી, અને તે એ કે શ્રીકૃષ્ણજીની સેવા, આ ઉપરાંત કોઈ વૈષ્ણવની પોતાનાંથી બનતી સેવા કરતા, આ સિવાય ભાગ્યેજ એમના એકધારી જીવનમાં આ કુનીઆનો બ્યવહારપ્રસંગ આડે આવતો. બાલપણથીજ માતૃપિતા તરફથી શ્રીકૃષ્ણજી અને શ્રીકૃષ્ણજીની સેવાનું જ્ઞાનજ વારસામાં મળેલું હતું. લોકો તેમને ગાંડાભક્ત ના નામે ઓળખતા અને આ સાવખોટું પણ નહોતું ધણી વખત કોઈ કુખી વૈષ્ણવને જોઈ તેમની પાસેની ગમે તેવી કાંમતી વસ્તુ આપવામાં પણ પાછું વાળી ભાગ્યેજ જોતા. ધણી વખત બને છે તેમ નીચ લોકો ભક્ત તરફ દ્રેષ્ટી જોતા, પણ આથી આપણા ભક્તને જરાએ હરખ શોક નહોતો થતો. આ સિવાય બીજી તેમના વિશાળ હૃદયની ઉચ્ચતા વધારે જગજગદેર હતી. ગમે તેવા કુખીધાને તેમના ઝુંપડામાં સ્થાન હતું. એમના શ્રીકૃષ્ણજી અને “ભાઈ” પ્રભુ બધું હીકજ કરશે, એવા આશ્વાસનથી ધણાં નિરાશ થએલાં કુખી હૃદયોને આશાના ઓપ ચઢના પણ આ બધાય વચ્ચે કંઈ કુખ હોય તો ફક્ત તેમની ગરીબાઈનું. ભક્તને પૈસા સંબંધી ધણી વખત ખૂબજ અડચણો વેડવી પડતી. આજે ભક્તરાજ એવીજ કોઈ ચિંતાથી ઉદાસ દેખાતા હતા. જો કે નિત્ય પ્રમાણે મુખ પર તો આનંદની રેખાઓ દેખાતી હતી. છતાં પણ એ આનંદની પાછળ જલ્દી કોઈ ઉંડી વિચારમગ્નતાએ ઘેરા ધાલ્યો ના હોય ! તેમ ઉંડી નજરથી જોનારને લાગ્યા વિના ના રહે.

“ ગાંડા ભક્તનું ઘર આ ” બહાર ખડકી તરફથી અવાજ આવ્યો. બધી ચિંતા જૂલી ભક્ત સફળતા ગોઠ્યા “ હા, ભાઈ ! આવો શું કામ છે ! ” સેવક પોતેજ ગાંડા ભક્ત ”

“ ભક્તરાજ, પ્રણામ અને જમશીકૃષ્ણ ”

“ ભાઈ જમશીકૃષ્ણ ” સ્મિત હાસ્યથી આવનાર વ્યક્તિને નવરાવી નાંખતાં ભક્ત બોલ્યા. “ બોલો, શી આરા છે ? ”

“ ભક્તરાજ ! કુનીઆના કુખીને તમારા ઝુંપડામાં સ્થાન મહે છે માનીને આપની પાસે એક માચના કરવા આવ્યો છું. ”

“ બહાજગમ મારાં, બોલો તમારું હું શું રકું કરી શકું ? ” આવનારના કપાળમાંનું તિલક જોતાં ભક્ત બોલ્યા.

“ પ્રભુ ” આવનાર વ્યક્તિનો કંઠ કુખીની લાગણીથી ગળગળો થઈ જતા કહેવા લાગ્યો— દીકરીનાં લગ્ન છે, હું પણ હતો તો હીક હીક પણ છેલાં કેટલાં વરસથી વેપાર રોજગારમાં નુકસાની જવાથી વિટંબનામાં આવી પડ્યો છું. ગરીબાઈ ઘર કરી મારી પાસે રહી છે. ધણું કરગર્યો પણ દીકરીનો સાસરો લગ્ન લેવાની હંક લઈ બેઠો છે. ” આવા સંજોગમાં મારા માટે બેજ રસ્તા ખુલા છે, કાંં પો ગમે ત્યાંથી રૂપીઆ મેળવવા અગર તો મ.....” કુખના ભારથી અને ભવિષ્યની ચિંતાથી આકીના શબ્દો આવનાર વ્યક્તિ ન ઉચ્ચારી શકી.

“ કોઈ જાતની શીકર નહિ. ભાઈ પ્રભુ બધું હીકજ કરશે ” મોં પર અંતરનો જરામ લાવ દેખાડ્યા વિના એના એજ સ્મિત હાસ્યથી જલ્દી કશું ન હોય તેમ પ્રત્યુત્તર વાળ્યો.

જે જમાનાની આ વાત છે એ જમાનામાં આજના જેવી બેંકો નહોતી, કચેરીઓ નહોતી આપણા લક્ષ્મણજીનું તો એક જ કર્તવ્ય હતું. દાણકારકું તરીકે તેમને દરબારમાંથી માસિક વેતન મળતું અને એમાં પોતે આનંદ માની શ્રીકાકેરજીને અંતરના લાડ લાગી જીવન સાર્યક કરતાં! આવની કાલેજ દરબારમાં ભરવાના રૂ. ૧૧૦૦) પોતાના હાથે ગણી લઈને સેવામાં ન્હાયા હતા. એ યાદ આવતાં પોતાના ધર્મજાણતું કાર્ય કરી શકાશે એ વિચારે લક્ષ્મણ મલકાયા પણ આવતી કાલે પોતાનું શું? એ વિચારે દાણમુઝાયા, દાણભારઆંખ મીચી, જાણે વિચાર કરી એક નિશ્ચય પર આવ્યા હોય તેમ બબડ્યા. “કંઈ નહિ, માફ તો થા પડશે. પણ મારા ધર્મજાણ પર આવેલું આટલું સંકટ દૂર ન કરી શકું” એ મારી કેવી અધમતા ” આમ બડબડી રાજભોજ સરાપી આરતી અને શ્રીકાકેરજીને અનુસર કરી બહાર આવ્યા. અતિથિને પ્રસાદ લેવરાવી લાઇ નિવૃત્ત થયા બાદ રૂપીઆ અગીઆર સોની ભરેલી થેલી અતિથિના હાથમાં આપી, બોલ્યા “જગ્યા જલ્દીથી પ્રભુ તમારું શુભ કાર્ય પાર પડે.”

“લક્ષ્મણ આવનાર વ્યક્તિ ઉપકારથી આર્સોગણ થતી બોલી પછી આવતી કાલે તમારું શું?”

“ગાંડા,” માતા નાના બાલકને રમકડું આપી સમજાવે તેમ સમજાવતા બોલ્યા, “એ તને શું ચિંતા? પ્રભુ બધું હીકજ કરશે”

કાંઈ વિજયી થોડો વિજયના હર્ષથી સમરાંગણ તરફ નેષ્ટ રહે એ અઢાથી નેષ્ટ રહ્યા.

આજે આખાય મધુપુરમાં એકજ વાત ચાલી રહી છે. ચારે ચારે અને દરેક જાણીતાં સ્થળેએ ગાંડાભક્તે રૂપીઆ ન આપવાથી રાજાએ તેમને કેદખાનામાં ન્યૂખમાની વાત લોકો ઉઠાસે બનીને કરી રહ્યા છે! નીચ જુદિના લક્ષ્મણનું છુદ્ડ જોવામાંજ રાજ એવા કેટલાક કેષી લોકો આનંદથી આંખો નચાવી વાતો કરવા લાગ્યા કે:-“એ તો લક્ષ્મણ બધાય એવા” એમ માની આનંદ પામે છે.

ત્રીમજ દિવસે હજુરીઆ મારફત ગાડા ભક્તે રૂપીઆ કેને ચા માટે આપ્યા, એ સાંભળીને રાજજીનું અંતર ઉમળકાથી ભરાઇ ગયું. મારી પ્રજા આટલી બધી ધર્મોભિમાની છે એમ જાણી પોતાને કૃતકૃત્ય જાણવા લાગ્યા. ભક્તને પોતાની પાસે બોલાવી મારી મારી કહેવા લાગ્યા—

“ગાંડાભક્ત કશું મનમાં લાવશે નહિ” “અમે તો આ દુનીઆના વિલાસ અને લાલસામાં ઉછરેલા છીએ. આપના હૃદયની ઉચ્ચતા શી રીતે જોળખી શકીએ?”

“કંઈ નહિ રાજન” “એમાં તમે શું કરો? પ્રભુ જે કરે એ હીકજ કરે.” ત્રણ દિવસના કેદખાનામાં સખ્ત ઉપવાસ મેળા છતાં એના એજ હાસ્યથી જવાબ આપતા ભક્ત બોલ્યા.

“અને લક્ષ્મણ” રાજજી આ ધર્મ પ્રેમી ભક્ત તરફ આનંદથી જોતાં બોલ્યા. “આગળથી મને કીધું હોત કે આવા કામમાં મેં રૂપીઆ વાપર્યો છે. તો આ દુઃખ વેઠવું પડત”!

“રાજાજી, એમાં મેં શી મોટી ઘાડ મારી હતી કે તમારા આગળ કહી બતાવું? પોતાના એક દુખી ધર્મજાણ પ્રત્યે મેં સહજ માયા બતાવી એ તો મારી ફરજ છે” “હવે જવાની રમૂ છે?” રાજજી આતા આપી.

ભક્ત હર્ષ ભેર ઘેર આવી સેવામાં ન્હાયા! આજે પણ મધુપુરના લોકો ગાંડાભક્તે પોતાના ધર્મજાણને માટે વેઠેલું સંકટ સંભારી વૈજ્યવ હૃદયની ઉચ્ચતા માટે મગર અને છે.

॥ श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ॥

॥ श्लोक ॥

स्वस्ति श्रीमत्सदानंदो रसात्मा पुरुषोत्तम ।

श्रीवल्लभाचार्यसुतो गोविन्दो जीवतात् चिरम् ॥१॥

श्रीदेवकीनंदननंदनप्रभोः श्रीगोकुलेन्दोधरणानुरागिनः ॥

श्रीवल्लभाचार्य तवात्मजः श्रीगोविन्दरायो भवतात् चिरायुः ॥२॥

॥ सौरठा ॥

श्रीमद्वल्लभलाल भये तिहारे लालजी,

मुन भक्तन प्रतिपाल भक्ति बघाई दीजिये ॥१॥

वल्लभलाल रसाल लाल बघाई मुनत ही ॥

निज जन भये निहाल पुष्टिभक्ति दढ करिहो ॥२॥

निज भक्तन रिझवाल श्रीवल्लभ वल्लभ सदा ॥

जियो तुम्हारे लाल, सेवो गोकुलचन्द को ॥३॥

रचयिता उपाध्याय काशीनाथ भट्ट-धीकानेरनवासी ।

दोहा—गोकुलेन्दु सेवन निरत वल्लभाचार्य कुल चन्द ॥ श्रीदेवकीनंदन सुवन
वल्लभलालहि वन्द ॥१॥ प्रगटे तिनके गेह महि लाल भुवन विख्यात ॥ ता पर रच
फविता कहूँ सो सब श्रवन सुहात ॥२॥

छप्पय—मखत नखत नव ग्रह रु लग्न शुभ संवत आयो । सज्जन वैष्णव संत
साधुजन मन हरसायो ॥ प्रकृत दृश्य विचित्र रूप पावन अति पायो । पुष्टिमार्ग मो
पुष्ट दुष्ट मत वृन्द विलायो ॥ पुनि तात मात ऋण तीन तैं ऊकण होय आनंद छये ॥
जय वल्लभलाल कृपाल ग्रह प्रगट लाल बाबा भये ॥१॥

(२)

आनंद अतिही अमंद अवनि मंडल महीं मच्यो ॥ दे आशीष अनेक वेद विप्रन
मिल बच्यो ॥ प्रेम पूर्ण अनुराग राग रंग वज बहु रच्यो ॥ कीरति कलित बखान दान
याचक जन जच्यो ॥ अभिराम कामवन गाम विच धामरमंगल छये ॥ श्रीवल्लभलाल
रसाल गृह प्रगट लाल बाबा भये ॥२॥

रचयिता कविरत्न भट्ट भाऊलाल शर्मा-धीकानेरनवासी ।

શ્રીગોવિંદલાલ બાવાશ્રીનું ઘોળ.

- આજે આનંદનો દિન છે રે, મારે હૈયે હરણ ન માય હો બેની
ગોકુળમાં આવી વધામણીરે, શ્રીગોવિંદલાલ બાવા પ્રગટ્યા હો બેની. ૧
- દૈવી તે જીવને તારવારે, ભૂતલ ધરીયો દેહ હો બેની,
કારતક માસ સોહામણીરે, વાર ભલો શુભવાર હો બેની. ૨
- ગોકુળમાં વાળંત્ર વાગીયારે વૈષ્ણવની બીડાલીક હો બેની,
ગોકુળમાં શ્રી જોડક શોભતીરે, આનંદ ઓચ્છવ થાય હો બેની. ૩
- મંગલ કીરતન ગવાય છેરે, કુમકુમ કેસર છીરકાય હો બેની;
કામવનમાં આનંદ સમુદ્ર ઉમગ્યોરે, ગોકુલમાં રસની રેલમ રેલ હો બેની. ૪
- નયણે આ સુખ નીરખીયુંરે, તેના ભાગ્યતણો નહીં પાર હો બેની,
દાસી જસોમતીની વિનંતિરે, રાખો ચરણની પાસ હો બેની. ૫

[આ ઘોળ દેવગઢબારીઆવાળા બક્ષી મગનલાલભાઈનાં પુત્રી અ. સૌ. બહેન જસોદાબે રચેલું છે.]

શ્યામ-ગીત.

(ઢાળ—સીતારામનાં સન્તાન.)

પ્રભુભક્તનાં શુભામ, ટાળે દુઃખમાં તમામ;
જીલો હો ! શ્યામ-ગીત રનેહથી.

સાખી—કરે કસોટી ભકતની, આપી દુઃખ હંગેશ;
વળગ્યો રૂહે તહેને છતાં, બહાલો લાગે વિશેષ.
રાખે શ્યામ ઉરધામ, બળે ભાવથી તમામ;
જીલો હો ! શ્યામ-ગીત રનેહથી.

સાખી—ખાધી ભાણ વિદુરની, આખ્યાં શવરી-જોર;
સુદામાના રનેહથી, ખાધા તાંદુલ ઓર.
કરશે ન વામ કામ, બળે ભાવથી તમામ;
જીલો હો ! શ્યામ ગીત રનેહથી.

સાખી—દ્રૌપદીની પત રાખવા, પૂર્યાં ચીર અનેક;
ઠેરવ કપટી તો સુવા, ભજ્જો રાખી દેક.
એની દષ્ટિ સુખ-ધામ, બળે ભાવથી તમામ;
જીલો હો ! શ્યામ-ગીત રનેહથી.

સાખી—મીરાં ને મહેતા તણાં, કાખ્યાં કટ કરોડ;
ભવની ભાવટ ભાગશે, પૂરશે પ્રભુજી કોડ.
જીતો જિન્દગી-સંઘામ, બળે ભાવથી તમામ;
જીલો હો ! શ્યામ-ગીત રનેહથી.

મૂળજસાઈ પીતામ્બરદાસ શ

૧ હા પ્રભુ!! આ સર્વ તારું છે, અને હું તારો દાસ છું, તારે શરણે આવેલો છું તારી પ્રેરણા પ્રમાણે વર્તવું જોઈએ એ પ્રમાણે અનુસંધાન રાખવું.

૨ અસત્ય જોલવું નહિં. તેમજ જેમાં પ્રભુનું નામ ન આવે તેવું વાક્ય જોલવું નહિં. લૌકિક વ્યવહારથી જોલવું પડે તેમાં જરૂર જેટલું જ જોલવું. વૃથા આલાપ, કોઇની નિંદા કે એવી અન્ય વાર્તાઓથી વેગળા રહેવું.

૩ અહર્નિશ પ્રભુનાં નામનું સ્મરણ કરવું. મનમાં કોઈ વખત પણ જોડા વિચાર કરવા નહિં. જોડા ઇચ્છાઓ તેમજ તરંગો ઉઠવા દેવા નહિં. પ્રભુ ગિરાજવા લાયક હૃદય બનાવવા માટે, તેને પવિત્ર રાખવાની જરૂર છે. કારણ કે કોઈ જોડા માણસ આપણે ઘેર આવનાર હોય ત્યારે તેને રહેવા માટે સ્વચ્છતા સંબંધી કેટલી કાળજી રહે છે, તો ઇશના પણ ઇશ ગિરાજવા લાયક શુદ્ધ અને પવિત્ર અંતઃકરણની જરૂર છે. અને જોડા વિચારોથી અંતઃકરણ મલિન થાય છે. તેથી તેમાં પ્રભુનો આવેશ ઠદિ પણ થતો નથી.

૪ લૌકિક ઘર ધન સ્થિતિ સંબંધી ચિંતા કોઈ વખત કરવી નહિં, કારણ કે પ્રભુ સર્વસમર્થ છે. તેનું કર્તૃ થાય છે, તો વધા ચિંતા કરવાથી કાંઈ અર્થ સરતો નથી. ઉલટું પ્રભુની સેવામાં સ્મરણમાં, વિશ્લેષ પડે છે, અને તેથી જેને માટે ચિંતા કરીએ તે સિદ્ધ થતું નથી, અને બન્ને જાનુની હાનિ થાય છે.

૫ પ્રભુ સર્વના સ્વામી એટલે માલીક-કર્તા છે. તેથી સર્વને સુખ આપવાવાળા છે. તેમાં ખોતાના લક્ષ્મીને જરા પણ વિસારતા નથી.

૬ દુઃખની વેળાએ સદા ધીરજ રાખવી કેમકે જેમ લૌકિક સુખ અસ્થિર છે, તેમ દુઃખ પણ અસ્થિર છે, તો તેની અવધિ પૂરી થતાં ચાલ્યું જશે. દુઃખ એ પણ માણસની ઉન્નતિમાં સહાયક છે. કારણ કે એક ને એક જાનુમાં (સુખમાં) રહેલાને કસોટી વગર ઉન્નતિ થઈ શકતી નથી.

૭ હમેશાં વિવેક અને ધીરજ રાખવી અને પ્રભુનો આશ્રય કદી પણ મનથી છોડવો નહિં. પ્રભુ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, તો તેના આશ્રયે જે રહે છે તેનું અનિદ્ર કદી પણ કરતા નથી. કદાચ પરીક્ષાર્થ અથવા અનિદ્ર નિવૃત્તિને અર્થે કાંઈ વિપરીત વૃત્તિ આવે! તો તેવા સમયમાં પણ પ્રભુ મારાં લલ્લાને માટે કરે છે એવું અનુસંધાન રાખી પ્રભુનો જ આશ્રય રાખી દઢ રહેવું. તો ભગવાન કે જેનું નામ હરિ છે તો તે લક્ષ્મીના દુઃખોને નિશ્ચય હરશે જ.

૮ હમેશાં સત્સંગ કરવો એટલે જે સદા શરીરથી તેમજ મનથી પવિત્ર હોય, અસત્ય અથવા મિથ્યા ભાષણ કરતા ના હોય, પ્રભુમાં પ્રીતિ હોય, પ્રભુસેવામાં તથા કીર્તનકથામાં તત્પર હોય, સકળ વિદ્યમાં સમાન ભાવવાળા હોય, સામાનું દુઃખ દેખી જેનું અંતકરણ જોદ પામતું હોય, પ્રભુ ઇચ્છાથી સત્ય માર્ગે જે પ્રાપ્ત થાય તેમાં સંતોષવાળા હોય તેવાઓનો જ સંગ કરવો.

જીવ, સાવધાન ।

(લે. શાહ હીમતલાલ ભોગીલાલ, મુ. સાવલી.)

- ૧ કોવ એ આંગણરૂપ છે અને ક્રોધાવેશ થાય તો હૃદયમાં પશ્ચાત્તાપથી શુદ્ધિ કરવી. હૃદયને નમ્ર બનાવી કાણુ રાખવો. વિચાર કરી બોલવું. વ્યવહાર કાર્ય સિવાય વૃથા બોલવું નહિ.
- ૨ કામ ક્રોધને પ્રભુનામથી પ્રભળવો. (બાળવો.)
- ૩ ક્રોધ એજ જીવનનો શત્રુ છે. શાંતિ, ને સહનશીલતા એ મોટામાં મોટું તપ, યોગ છે. કામ, ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ અહંકારનું મૂળ છે અને અહંકાર જન્મમરણનું કારણ છે.
- ૪ “ ક્ષમાશીલ ” બનવા પ્રયત્ન કરવો. હૃદયમાં પ્રભુનામ દદ કરવું.
દયા અને ક્ષમા એ મુજો સામાનું હૃદય આકર્ષે છે અને તે ક્રોધનું ઔષધ છે.
- ૫ પોતાની ભૂલ કણલવી એ દરેક મનુષ્યની ફરજ છે. તેમાંથી ઉચા મુજો આવે છે. ભૂલ યાપ તો પશ્ચાત્તાપ કરવો. પશ્ચાત્તાપ એજ પાપપુન્યને નાશ કરનારો યત્નશ્રમિ છે. ફરીથી ભૂલ ન યાપ તે મોટે સાવધાન રહેવું
- ૬ દરેકનું હૃદય પ્રેમથી જીતવું, પ્રેમ વિનાનું જીવન નકામું છે. જીવ ગાન ઉપર સમભાવ રાખવો. સામા જીવનું (આત્મા) કુખ વિચારવું.
- ૭ પ્રેમ એજ જીવન વિકાસનું સાધન છે.

પ્રાર્થના.

(લે—શ્રીયુત ભાદલાલભાઈ મુખ્યાચ.)

- નર ઉત્તમ શ્રીવરુભ વિકૃલ, આપ ચરણમાં નામનું શીશ;
- રોમે રોમ લંચ મૃત્યુનો, વધી પડયો છે હે જગદીશ. ૧
- તન તપાસી જોતાં જીવાની, જતી રહી થયો વૃદ્ધાવેશ;
- મન મુઆય વપુરંગ ઉડયાથી, રયામ મટી થયા ધોળા કેશ. ૨
- દાહ બળી થઈ દૃષ્ટિ દુઝી, પાણી ટપડી તેજ ધટે;
- સરસ શેણા શ્રવણ હતા તે, બહેરાયે અઢીયા ન મટે. ૩
- ગોલક જેવા લાગ ગરવીલા, તેમાં હાલે દાંત ને દાહ;
- વિયોગ થયો તે વારે ખાધું, અન્ન પચવતાં છે દુઃખ ગાહ. ૪
- દમવા માંડયું દશે દિશાથી, સો વ્યાધિએ વાસ કર્યો;
- દાખે પ્રાણુ અપાન ઉદાન બળ, ઉદે બિર્ધ ગાત કરી ઠર્યો. ૫
- સરસ શક્તિ જે હતી શરીરે, વળી પગમાં તે થઈ ગઈ લીન;
- દેવતા ડચી ધન્વિનું દેવત, કેમ હુંડીને કરે અધીન. ૬
- તકમીની લોહુપે વળગ્યું, તે મન, વશ વર્તવું કેમ;
- પ્રાલિટ દીન જાણી આપનો, જવા દેશો ના આબોયો તેમ. ૭
- ડહાપણ દાખી દલ કર્યો બહુ, લાવમાં કહેવાયો હું ભક્ત;
- વાક્યપતિ વિકૃલેશ વ્યાસનો, પ્રયાણ કાળ સાચવનો દક્ષ. ૮
- લાડમ ધેત્રા અદેયદાની ઓ !, આહો ત્યમ એક પળે કરો;
- ખાલી ભરીને ભરું ખાલવો, કૃપા પચારે ફરી ભરો. ૯

॥ શ્રીશારદામ્ના વિજયતેતરામ્ ॥

શ્રીમં પરમહંસપરિત્રાજકાચાર્યવર્યપદવાક્યપ્રમાણપારાત્રપરીણયમનિયમાસનપ્રાણાયામપ્રત્યા-
હારધારણાધ્યાનસમાધ્યષ્ટાંગયોગાનુષ્ઠાનનિવૃત્તપદ્ધર્થાચરણચક્રવર્ત્યનાથવિચ્છિન્નગુરુપરમ્પરાપ્રાપ્તિપદસ્થા-
પનાચાર્ય-સાંખ્યત્રયીપ્રતિપાદકવૈદિક્ષ્ણીકમર્ગપ્રવર્તક-નિશ્ચિલનિગમાગમસારહૃદય-શ્રીમ સુધન્વસામ્રાજ્ય-
પ્રતિષ્ઠાપનાચાર્ય શ્રીમદ્રાજાધિરાજગુરુમૃગડલાચાર્ય-ચાતુર્વર્ણ્યશિક્ષકગોમતીતીરવાસશ્રીમદ્વારકાપુરવરા-
ધીશ્વરપદ્ધિમાત્રાય-શ્રીમચ્છારદાપીઠાધીશ્વર શ્રીમન્માધવતીર્થસ્વામિર્યકરજ્ઞમલમજ્ઞાતશ્રીમદ્રાજરાજેશ્વરા-
શ્રમસ્વામિનાં-પરમપ્રિયશિષ્યમેષ્ટિપ્રીવદશ્રીરાજમહારાજસામન્તમૂપાલદિવાલ્લભાદિચાતુર્વર્ણ્યપ્રજાજનાન્,
પ્ર યત્તલૈક્યાનુસન્ધાનનિયતનારાયણેરુમરણસંનૂચિતશિપ્તસમુહસન્નુતરારામ્ જગદ્ગુરુભા મહેશ્વરાપ-
રાવતારશ્રીમચ્છંદકરમગવત્પૂર્યપાઠાચાર્યાણામાદિમૈકાતિકસ્થાનદ્વારકાસ્થશ્રીમચ્છારદાપીઠગોચરાભીક્ષિતન-
વધિકશ્રેયોનિદાનમિતિ સાર્વજનીનમેતત્.

આથી આજ્ઞા કરવામાં આવે છે કે કામવનવાળા શ્રીગોકુલેશની ગાંડીવાળા
શ્રીવલ્લભવશભૂપલ્ય શ્રીમદ્ગોસ્વામીપ્રવર શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજની પ્રશસ્ય ઇચ્છાથી
સવર્ત ૧૯૭૩ ના આશ્વિન શુક્લ દશમી (વિજ્યાદશમી) એકાદશી, દ્વાદશી, એ
ત્રીતે ત્રણ રોજ શ્રીમુંબઈમાં શ્રીમાધવભાગમાં શ્રીસનાતનધર્મ પ્રાન્તીય મહાસંમેલન
લાગવાનું નક્કી થયું છે તે શુભ પ્રમંભે ઉપર્યુક્ત સંમેલનમાં ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લેવો
અને સર્વ પ્રકારની સહાયતા કરવી ઇષ્ટ છે. હાલના સમયમાં સર્વ સનાતનીય હિન્દુ
પ્રજાએ તથા સર્વ સમપ્રદાયના આચાર્યોએ ઐક્ય કરી હિન્દુથી ઉતર ધર્મોએ
તરફથી થતા હુમલાઓ અને તેનાથી થતી અસર સામે સનાતન હિન્દુ ધર્મનું
સંરક્ષણ કરવું જોઈએ એ પ્રથમ કર્તવ્ય છે-એ સૂચવવા માટે આ આજ્ઞાપત્રિકા
પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવી છે ઇતિ સિવમ્ સ્વારી મુકામ-અમદાવાદ, સાકર ખત્તર
તા. ૧૦-૧૦-૧૭

આજ્ઞા,

શ્રીભગવદ્ભાષ્યકારાવતારકાન્દ ૨૪૮૭ } કેશવસાસ મગનસાસ ત્રિવેદી.
દ્વિતીય ભાગપદ કૃષ્ણ ૧૦ આપાઠાદિ સં. ૧૮૭૪ } કાર્યાધિકારી સં. શ્રીશારદાપીઠ
ઉપરનું આજ્ઞાપત્ર છપાયતું હતું, છતાં મિ. ત્રિવેદી અને તેના ખામ મિત્ર
તેનો ઇન્કાર કરતા હતા, તેથી અહીં અસદ્દ મુજબ છાપીએ છીએ. શ્રીવલ્લભવંશના
સનાતનધર્મીય આચાર્યત્વનો સ્વીકાર છુદ્ધ શારદાપીઠવાળા ચક્રલાભીના શકરાચાર્ય
પણ કરે છે તેટલુંજ કુદ્દત જોવાનું છે તંત્રી.

ચર્ચાપત્ર.

શીલુત તંત્રીજી, નીચેનું ચર્ચાપત્ર પ્રગટ કરશેાજી !

ખજમે વખત રૂબરૂમા મળ્યા છતાય કંઈ સંતોષકારક ઉત્તર ન મળવાથી આપના હસ્તક તન્ન આવતાંજ આ પત્ર પેહીજ તકે પાઠવીએ

અમ્હેં ખાસ અંકમા ત્રણ કૃતિઓ મોકલેલી “ નવધાભક્તિ ” “ પુણિજન ” અને “ પ્રણિપાત ” એને માટેની નોંધ જે લેવાઈ તે આપ ખાસ અંકમાં વાંચી લેશેજ.

લાઈ દીનકિંકર ખરેખર સાહિત્યસૃષ્ટિમા દીન કિંકરજ બાસે છે ! હજી એમનામા લેખો સુધારવાની સાહિત્યની દૃષ્ટિએ શકિત આવી હોય એ અમને અમાન્ય છે. અને એવા એક અર્ધજ્ઞ સાહિત્યકારને આ માસિકનું તન્ન સોંપવાનું પગલું લરાય એ અનિષ્ટ ખરું ! અમારા લખાણોમા શબ્દાન્તર કે વાક્યાન્તર કરવાનો હજી કોઈ પશુ તન્નને સંભવે નહિ. અને એ લાઈ એમની ‘રસાન્વિ’નો આધાર દરેકમાં દેખે તો તે તન્નમય ધર્મ જાય અને અને તન્ની પદેથી વાનપ્રસ્થ થવું પડે !

અમારા લેખ એટલે ‘રસાન્વિ’ નું અણકરણ નહિ કિન્તુ કવિ ન્હાનાલાલના અપવાગઘનું અનુસરણ ! અને હીક હીક લેખો કે કાળે ખાસ અંકમા નજ લેવાય ! વિશિષ્ટ અંકમા ઉત્કૃષ્ટ સામગ્રી સિવાય ઇતર શોભેજ કેમ ! તો એ માટે હીક હીક શબ્દો કાં વાપરવા ?- વિકૃતા વાપરવા !

કૃપયા અમારા મૂળ લેખ ‘ નવધાભક્તિનો ’ ફરીથી એજ રિયતિમા પ્રગટ થાય તો સર્વોત્તમ માનીએ !

પ્રત્યુત્તરની આશાએ વિરમતા અને છીએ,

રમણ શાસ્ત્રી અને ઈન્દુકુમાર શહેરાવાળા.

[આ સભ્યે મને તો કાંઈ ખબર નથી. કાર્યોદયમાથી આવા કાંઈ લેખો મારા હાથમાં આવ્યા નથી. ચર્ચાપત્રીઓને વિનંતિ છે કે હવેથી આવેા કડવો અનુભવ નહિ થાય. પ્રુથ્વીથી લેખો પાઠવજે. તંત્રીજી]

નાઠો એ ચોર.

(લાજા બેસે છે ચોર, બાલા ! બેસે છે ચોર.)

નાઠો એ ચોર, બેસે નાઠો એ ચોર; લઈને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. વિનવતી ઊભી તોય સુલે ના નઠોર, લઈને મોંઘી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. પોતે છે ચોર તોયે રાખે છે દોર, બેસે મ્હેં તો કાનુકાનો તોર. નાઠો. ધકકનું દિલ થાયે માવડીનો ચોર, લઈને મોંઘી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. જમ્યું શું જોર એનું જમ્યું શું જોર ? આવી આવી ગોરગી ચોરે છે ચોર. નાઠો. ચોરું છે ચિત્ત એલે બાંધે છે દોર, રાધાના કાળજની એ તો છે દોર. નાઠો એ ચોર, બેસે ! નાઠો એ ચોર; લઈને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર

મૂળજીસાઈ પ્રીતામખરદાસ રાહડ.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય.

૧. ઉદ્દેશો—આધુનિક કલુષિત વાતાવરણના પ્રવાહમાંથી બચવા ધર્મોત્સાહી-વૈષ્ણવ સમાજ સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તોથી ભરેલું સાહિત્ય વાંચી, વિચારી અને સ્વત્પાંશે પણ પોતાના જીવનમાં ઉતારી તે દ્વારા પોતાની, પોતાની જાતી પ્રગતી, અને ધર્મ-ચ્યુત યતાં પોતાના ધર્મ-બંધુઓની કષ્ટકે પ્રગતિ કરી કર્તવ્યપથ પર લાવવા રચનાત્મક કાર્યદ્વારા યોગ્ય-પ્રયાસ કરે તે આ પુસ્તકાલયનો પ્રધાન ઉદ્દેશ છે.

૨. મુખ્યત્વે વૈષ્ણવોની કેન્દ્ર નગરીમાં એક પણ સામ્પ્રદાયિક-ધાર્મિક વ્યવસ્થિત પુસ્તકાલય (લાયબ્રેરી) નહિ હોવાથી કેટલાક ધર્મોત્સાહી-જ્ઞાસુ વૈષ્ણવોને ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચવા મળી શકતું નથી. તેથી તેઓ સમ્પ્રદાયના પરમાદર્શ એવં વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાન્તોથી અનભિય (અગ્રાત) રહી આજુ પ્રવાહમાં ધસકાય છે. અને અન્યને પણ (પોતાની ધાર્મિક અજ્ઞાનતાથી) ધસડે છે. તેવાઓને સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય વ્યવસ્થિત રીતે વાંચવા મળતું રહે અને તેથી તેઓ પ્રવાહમાં નહિ તથાતાં પોતાનો ધાર્મિક આદર્શ શું છે? સમ્પ્રદાયના સંસ્થાપક શ્રીમદ્ભક્તોધીશ્વરથી લઈને અઘાપિ પર્યન્તના આચાર્યવર્યોના સિદ્ધાન્તો શું નિરૂપણ કરે છે? વિગેરે યોગ્ય રીતે (વૈષ્ણવી-જનતા) જાણી શકે તે આ પુસ્તકાલયનો દ્વિતીય ઉદ્દેશ છે.

૩. નિયમો—આ પુસ્તકાલયનું નામ 'શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય' રહેશે.

૪. આ પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક ગિરિધરલાલ જ. શાહ છે.

૫. આ પુસ્તકાલયનો લાભ લેનાર બર્કિન પામેથી સભાસદ તરીકે દાખલ શીના માત્ર આઠ આના લઈ સભાસદોના રજીસ્ટરમાં તેમનું નામ દાખલ કરવામાં આવશે.

૬. સભાસદે પ્રથમ રૂપિયા ત્રણ અથવા તેથી વધુ ડીપોઝીટ (અનામત) તરીકે અને પાસ છુકનો એક આનો વ્યવસ્થાપકને આપવાથી એક છુક તદ્દમાં નામ અને ડેકાણું ભરીને આપશે. (વ્યવસ્થાપકની સહી વિનાની છુક ખોટી સમજવી.)

૭. સઘળાં છાપેલાં (મુદ્રિક) પુસ્તકો, માસિકો, ત્રૈમાસિક કે દ્વિમાસિક અથવા સાપ્તાહિક કે અન્ય વર્તમાનપત્રો વિગેરે પુસ્તકાલયના સભાસદોને ઘેર વાંચવા આપવામાં આવશે.

૮. ઘેર વાંચવા આપવાનું સાહિત્ય પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક એક ઇસ્તુછુકમાં (વાચવા આપેલા સાહિત્યનું રજીસ્ટર નોંધ છુકમાં) લખી તેવા આવનારની સહી લઈને આપશે.

૯. ઘેર વાચવા આપેલ પુસ્તક આઠ દિવસમાં, માસિક ત્રૈમાસિક કે દ્વિમાસિક ચાર દિવસમાં અને વર્તમાનપત્રો સાહિત્ય બીજે દિવસે અથવા જરૂર હોય તો તેથી પણ વહેંચા પાછાં આપી જ્યાં (જહારગામના સભાસદોને નિયત કરેલાં દિવસોથી કમલ દિવસો સમજવા વર્તમાનપત્રો સાહિત્ય જહારગામ મોકલવામાં આવશે નહિ.) પુસ્તક કે માસિકો સાહિત્યની ખીજને જરૂર નહિ હોય તો એકવાર લઈ ગયેલને ફરીને આપવામાં આવશે.

૧૦. છાપેલાં પુસ્તકો, માસિકો અથવા વર્તમાનપત્રો વિગેરે સાહિત્ય સભાસદ ફક્ત પોતાને માટે લઈ જાય. ખીજને માટે નહિ જેઓ સભાસદ નહિ હોય તેમને પુસ્તકો સાહિત્ય સભાસદના નામ ઉપર આપવામાં આવશે નહિ.

૧૧. પુસ્તકો વિગેરે છુકપોસ્ટથી મંગાવનાર જહારગામના સભાસદોએ ટપાલ તથા રજીસ્ટરનું ખર્ચ અગાઉથી આપવું પડશે. આવી રીતે મોકલવામાં આવેલ પુસ્તકો વિગેરે શ્રમ થાય કે અબ્યવસ્થિત થાય તો તે સઘળાં નુકશાનીનું જોખમ તેને શિર રહેશે અને તેમજ તેની પુરેપુરી કિંમત ભરી આપવી પડશે. અથવા નવું લાવી આપવું પડશે.

૧૦. પુસ્તકાલયના પુસ્તકો વિગેરે ખદારગામના સભાસભેને જુદા પોસ્ટથી મોકલવામાં આવશે પોસ્ટના ધારા પ્રમાણે રજીસ્ટર કરવામાં આવશે.

૧૧. સભાસભે પુસ્તકાદિ જે સાહિત્ય લાઇ નવ્ય તે સંભાળ પૂર્વક રાખવું અને હોય તેવી લતમાં પાછું ન આવે ત્યાં સુધીની લતમગ જોખમદારી તેમની છે. પુસ્તકો વિગેરે ફાટશે, ડાકે અથવા શમ થશે તો તેની પૂરેપૂરી કિંમત હારી આપવી પડશે અથવા નવું લાવી પવું પડશે.

૧૨. દરતલિખિત (અમુદિત) પુસ્તકો, ન મળી શકતા પુસ્તકો, ન છપાતાં પુસ્તકો કે મુશીખતે મળતાં પુસ્તકો અથવા તેવુંજ અન્ય સાહિત્ય વ્યવસ્થાપકની હસ્તા સિવાય ક્વા આપવામાં આવશે નહિ. વાંચવાની જીજ્ઞાસાવાળા સભાસભેને પુસ્તકાલયના નિયત કરેલાં મથમાં વાંચવા આપવામાં આવશે. તદનંતર તેમનાથી જાણતાં કે અજાણતા કેંઈપણ તુકચાનું તો તેનું જોખમ તેને શિર છે.

૧૩. ઘેર વાંચવા જોખતાં પુસ્તકો વિગેરે સંવારના (રતા. ટા) ૮ થી ૯ અને સાંજના (ટા. ટા) ૬ થી ૭ ના સમયે પુસ્તકાલયમાંથી જ મળશે.

૧૪. ઉપરોક્ત નિયમોને ખ્યાનમાં રાખી દરેક સભાસભેએ પુસ્તકાલયનો લાભ લેવો.

૧૫. ઉપરોક્ત નિયમોમાં સુધારો વધારો કરવાની વ્યવસ્થાપકને સત્તા રહેશે.

પુસ્તકાલય પરત્વેનો પત્રવ્યવહાર નીચેને એડ્રેસે કરવો.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય, વ્યવસ્થાપક ગિરધરલાલ જ. રાહ.

૨. શ્રીલાલજીવાનું મંદિર (ભુવેશ્વર) મુંબઈ નં. ૨

આડખી કીંમતે ચાલુ છે.

શ્રીહરિરાયજીનું દિવ્ય જીવન ચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ન્યો. રૂ. ૨) છે તે રૂ. ૧ થી આપવાનું હાલમાં સુધી ચાલુ રાખ્યું છે. જીવનચરિત્ર આદ્યજીવન અને ચમત્કારી છે. વી. પી. મંગાવવા રતાં રેલ્વે પાર્સલથી ઘણા માલકો એકઠા થઈને મંગાવે તો જાણ લાભ થાય. પોસ્ટથી પણ ઘણા રેલકો મંગાવે તો વી. પી. ખર્ચ ખચી જાય. ધોળપદ સાગર-દલે જૂજ જ નકસો છે. ખીજી આવૃત્તિ મળ્યાં નીકળવાની નથી. સાગરસાતસો પેજનું પુસ્તક માત્ર રૂ. ૧ માં ચપલદ સારું છે આ ઉપરાંત-

શ્રી ભક્તિમાર્ગીય સરતી અંથમાળાના અંથો.

- | | | |
|---|--------|-------|
| (૧) શ્રીગોકુલેશના હારણ પ્રસંગો અને વચનામૃતો લાગ ૧ લો | ૧-૦-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૨) શ્રીગોકુલેશના હારણ પ્રસંગો અને વચનામૃતો લાગ ૨ જો | ૧-૦-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૩) રસિક વિકાસ | ૧-૦-૦ | ૦-૩-૦ |
| (૪) શ્રીહરિરાયજીનું જીવનચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ૨-૦-૦ હાથ | ૧-૪-૦ | ૦-૬-૦ |
| (૫) ધાર્મિક અને સામાજિક લક્ષગીત સામ્ર ૧-૦-૦ હાથ | ૦-૧૨-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૬) દીનતાને આશ્રયનાં પદ | ૦-૧-૩ | ૦-૦-૬ |

લખો-આ કાર્યલિપિમાં.



परम भगवद्गीय डोट खजीभाई रतनसी, धमानी.
(जिम्हे पदरसी रुपीआ खर्चीने, धोलपदसागरना
पहेला भागनी दे हजार प्रताना प्रचार कर्यो.)



परम भगवद्गीय श्रीरगरीजी.

શ્રીરજારીજી.

સં. ૧૯૫૬ ની સાલના અરસાની વાત છે. મારી ઉંમર લગભગ ૯ વર્ષની હતી. ગુજરાતમાં બધુંકર દુષ્કાલ મ્હોં ફાટીને અનેક પ્રાણીઓનો પોતાના અન્નંત ઉદરમાં ચમત્તી દેતો હતો. અમદાવાદમાં અસંખ્ય પશુઓ આબ્યાં હતાં ! ગોમાતાનો ત્રાસ તો દેખી ચકાતો ન હતો. ગામડાના નિવાસી ઘણાં મનુષ્યો પણ ઉદરપૂરણાર્થે આ પુણ્યચાલી શહેર-અમદાવાદમાં આબ્યાં હતાં. રથો રથો આ વખાના માર્યો ગરીબો અને ગોમાતાઓ માટે ઉત્તમ સવડ અમદાવાદના દાનવીર સદ્ગૃહસ્થોએ કરી હતી. નિત્યલીલાસ્ય દયાલુ ગોસ્વામી શ્રીક શ્રીમજ્જાપણ મહારાજશ્રીએ પણ આવા સેંકડો દુષ્કાલપીડિતોને-અનાથોને આશ્રય આપ્યો હતો. દરરોજ તેમને ખાવાને માટે મહાપ્રસાદ અને તે ઉપરાંત બહાર રસોઇ પણ તૈયાર કરાવીને સવડ કરી હતી. આખી ડોસીવાડાની પોળ દરરોજ ગરીબોથી ભરાઇ જતી હતી ! આ જ અરસામાં માત્ર એક ધીતીયું પહેરીને એક વ્યક્તિ “રજારી સું, બહેનો સું, બે સોપડા નદીમાં” એમ પોકાર કરતી અમદાવાદમાં પર્યટન કરતી હતી. તે કોઇને પોતાનું નામદામ જણાવે નહિ, પોતાની કાંઈ પણ યોગબાણેય ન આપે. કોઇ પૂછે તો ‘નદીમાં’ એટલો જ જવાબ દે. તે અમદાવાદના બધા મંદિરોમાં જાય, માતા, મહાદેવ, હનુમાન વગેરે કોઇને પણ છોડે નહિ ! માત્ર એટલું કહે કે, મારી ગાંધી જીવનિયામાં રેવા નદીમાં ડૂબી ગઇ તે પંજી આ દયા થઇ છે. પણ પોતે કોણ છે ? તો ‘રજારી’ એજ તેમનો જવાબ. બીજું કંઈ વધુ બોલેજ નહિ. એમ અમદાવાદમાં ફરે, કોઈ પ્રસાદ લેવારે તો ગોમાતાને તેમાંથી અર્ધો ભાગ ખવરાવીને પોતે ખાય. અમારે ત્યાં ધણીવાર પ્રસાદ લેવા રજારીજી આવતા હતા.

એટલામાં નિત્યલીલાસ્ય તૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો. શ્રીક શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજશ્રીની તેમના ઉપર કાંઈ અજ્ઞ કૃપા થઇ ગઇ. આપશ્રી તેમને પોતાની સાથે કાંકરાલી લઇ ગયા. તે પંજી ત્યાં એવા તેઓ સ્થિર થઇ રજા કે હવે ક્વચિત જ બહાર નિકળે છે. આપશ્રીએ રજારીજીને દીક્ષા આપીને વૈષ્ણવ જનાબ્યા ત્યારથી એમની વૈષ્ણવતા અન્નંડ બની છે. ભારત-વર્ષનાં તમામ તીર્થસ્થળો-ધામોળા રજારીજી ફર્યો છે, એની નામાવલિ સાંભળવા માટે કાંઈ નહિ તો અર્ધો કલાક નેહ્યો. તેમાંએ તેમની ભાષા સમજવી નેહ્યો. તેઓ અમદાવાદમાં બિરાજતાં સ્વરૂપને ‘નટલો શામલો’ કહે. શ્રીનાથજીને ‘શ્રીનાથલો’ કહે છે. એમનો ચન્દ્રકાશ જ ન્યારો છે. એકદમ કાંઈ ન સમજાય. ગાઢ પરિચયમાં આવ્યા પંજી જ તેમની સાથે વાર્તાલાપનો આનંદ આવે. તેઓ જાણે છે બધું, પણ જરૂર નેટલા જ ચન્દ્રોનો ઉપયોગ બાપમાં કરે છે. જેમકે, ખાવું, આવવું, લઇ આવવું વગેરેમાં ‘હાડકું’ એનો જ ઉપયોગ થાય. કોઇ રજારીજીને કહે કે શેઠે કહ્યું છે કે આમ કરો તો તુરં જ તેમ કરી નાખે ! એક વખતે કોઇ દુષ્ટે તેમને તેની રીતે કહી દીધું એટલે રાજસાગરમાં ફેલી પડ્યા ! ત્યારથી નિત્યલીલાસ્ય મહારાજશ્રીએ એક માણસ-તેમની તહેનાતમાં રોકેલો છે.

રજારીજીએ અદ્યર પુરાણો સાંભળ્યા છે. આપશ્રીએ કાંકરાલીના એક પૌરાણિકને તેને માટે ખાસ રોકવા હતા. એ પુરાણોની બધી વાતો રજારીજીને હજી પણ સાકરે છે. એ પુરાણી-જીએ રજારીજી માટે ફકાદાર કરીને દોઢ વર્ષ સુધી દિવસભર કથા સંભળાવી તેથી સંમદણીના રોજમાં આખરે તેઓ પરલોકવાસી થતાં તેમની પાછળ રજારીજીએ સદ્ગૃહસ્થોદાય તેમના કુટુંબનું પોષણ કર્યું અને એક આકર્ષક મહાન દેવતાગાના મહુમ સદ્ગૃહસ્થને કહીને તેમના દબ્યથી બંધાવી આપ્યું. રજારીજી પોતે તો જાગીયામાં ‘સુરવિલાસ’માંજ રહે છે. દરેક ફરકલ તથા

પ્રધાનથી વગેરેનાં જુદાં તેમાં તેઓ લાગ્યા છે. આ બગીચા પાછળ હળરો રૂપીઆ ખરચાયા છે. વનસ્પતિને શ્રુતિમાં વૈષ્ણવ કહે છે અને તેની સેવામાં રજારીજી અઢર્નિશ તૈયાર રહે છે. મેવામાં પણ રજારીજીનું માન અપૂર્વ છે. સૂર્યવંશતિલક સદમત મહારાજા તો તેમને ઉભા થઈને માન આપતા હતા. અત્યારે પણ તેમનો માન મરતબો થોડો નથી. મુંબાઈના ધનાઢ્ય વૈષ્ણવો તો તેમનો પડતો બોલ ગ્રીતી લે છે. આ લેખ પછી જે શિક્ષાલેખ છાપ્યો છે, તે વાચતા બજારો કે રજારીજીએ શ્રીકાંકરોલીની કેવી સેવા બજવી છે? એ શિક્ષાલેખ પછી પણ હળરો રૂપીઆની સેવા પોતાના ગુરુધરની તેમણે કરાવી છે. રજારીજીને નિજ ગુરુદેવ પ્રતિ, જે ભાવ છે તે બીજે સ્થળે લાગ્યે અનુભવાય છે. રજારીજી તો કહે છે કે નિત્યલીલાસય શ્રીઆલ-કૃષ્ણ પ્રભુ તો મારા જેવા પતિતના ઉદ્ધારને માટેજ, મારે માટેજ આ ભૂતલ પર પધાયા હતા. અત્યારે પણ આપશ્રીના જ્યેષ્ઠ કુમાર શ્રીકાંકરોલીનરેશની કૃપા રજારીજી ઉપર થોડી નથી. શ્રીકાંકરોલીના ધરની સેવા કરનારાઓમાં રજારીજીનું નામ કાયમ રહી જશે.

રજારીજી બધાને પૂછે કે “ભણેલા સો ?” તેઓ જવાબ ન આપે તો પોતે કહેશે કે હું ભણેલો છું. (જે આંગળા બતાવીને) જે સોપડા, નદીમાં ” બધા સાથે, પછી તો તે રાત્રી હોય કે ગમે તે હોય, આટલોજ વાર્તાલાપ તેઓ પ્રારંભમાં કરે. કાશી જતી વખતે રજારીજી ફરટકલાસમા શ્રીમાનંતી સાથે હતા. પ્રયાગનું રેશન આવ્યું. જે આવે તેને ઉપરનો પ્રશ્ન કરે. અને જે આંગળા બતાવે ! ત્યાં તો કાષ્ટ ગુજરાતી સમજે નહિ એટલે આહવાળાને જ્યારે તેમણે ઉપર મુજબ કહ્યું એટલે જે ખાસા ભરીને આપવા માંડી ! તેવીજ મળત કલકુલ વેચનારાઓ આવ્યાં ત્યારે થઈ કાશીમા બ્રાહ્મણમહાસલા વખતે, (રજારીજીને જ્વર હોવાથી શાલ ઓઢવાની આગા હતી તેથી) શાલ ઓઢીને રજારીજી શ્રીમાનો સાથે મહાસામા આવ્યા. (આમ તો રજારીજી એક ધોતિયાં સિવાય કાષ્ટ પણ કાષ્ટમાં કંઈ પણ પહેરતા નથી.) કાશીના પંડિતો તો એમને કાષ્ટ ધુરંધર પંડિત સમજીને એકદમ સહુથી પહેલે નંબરે બેસાડ્યા ! પછી એકાદ પંડિતે તેમની માથે સંસ્કૃતમાં વાત કરવા માંડી ! પંડિતા : કુત્રત્યા : ! ક વા નિવાસ : ? રજારીજી કહે કે “ નદીમાં ” અહીં અજબ રકાસ થાત, પણ મેં સંસ્કૃતમાં પેલા પંડિતજીને સમજાવી દીધું કે આજે આ પંડિતજી (રજારીજી) ધણાજ બીમાર છે, તેથી બરાબર જવાબ નહિ આપે.

રજારીજીનું સ્તોત્ર પણ અજબ છે ! મંદિરમાં સ્વરૂપો પાસે તથા શ્રીવલ્લભવંશ પાસે આ પ્રમાણે તેઓ સ્તોત્ર બોલે છે :— “ કેમ બોલતા નથી ? કેમ ચાલતા નથી ? કેમ કોકના ઘરમાં પેહી રજા સો ? કેમ નેહરતા નથી ? મહાં આયો તો ધહડીને લઇ જમશ. ચાલો મારી દારે મારવાડમાં. પહેલું દૂધ તમને પાઈ અને પછી દૂધ હું પીશ. તમેય રજારી સો ને હુંએ રજારી છું.” વગેરે બોલે છે. શ્રીવલ્લભવંશસ્થિમાં રજારીજી એક અદ્ભુત, અજબ અને વિલક્ષણ વૈષ્ણવ છે. કાંકરોલી જે જગ તે જરૂર તેમનાં દર્શન કરે, તેમની ગોસેવા નિહાળે, તેમની વનસ્પતિની સેવા જુએ, અને ગુરુધરની ટહેલ એમને આશ્વર્યમય બને; એવી નમ્ર વિનંતિ કરી હાલ તો વિરમીશ.

શિલાલેખ.

યહ મુંદર નિવાસં વાગ ધૌર વાકે ફિરતો કોટ, વાગકે બીચમેં મુંદર મદલ હૈં, વહ મહેલ ધીમદ ગોસ્વામિનીજી શ્રી ૧૦૮ શ્રીમુંદરવતી વહજીકે નામહું વંધાયો હે. ધૌર વાંગમેં બારસપદ્ધાનકે મહે સમાનકો જૂલ હૈં, સો શ્રીદ્વારકાનાથજીકે જૂલ્લેકે લીયે હૈં ધૌર શ્રીમદ-

गोस्वामिबालनके जूल्हेके लीये हैं, दूसरेके लीये नहीं है जो दूसरो कोइ जूलेगो तो वह याके धर्ममें बहिर्मुख होयगो ओर नरकको भागी होयगो

श्रीके निराजवेके लिये सोनेको सिंहासन ओर चादीको सिंहासन सोनेकी आरती ओर श्रीके धरागेवेको थाल ओर सोनेकी झारी, बटा ओर सोनेकी गाय दो (२) ओर हाथी दो ओर घोडा दो ओर सिंह दो सोनेरी भरत कामको मखमलको चंदरबा, पिठवाई, रडपाट ओर चोकी सुधा, ओर चिबुकको हीरो, श्रीठाकुरजीके श्रीकंठको कठी मोतीको लीलामणीको तामें पदक (१) बीचमें पना फिरते हीरा जडाउं है ओर नरुनेसर एक आजूबाजू मोती बीचमें हीरा जडाउं हैं, सोनाकी वेणु वेतर सोनाको हार १ ओर नखटो चादीको बडो बंगलो श्रीठाकुरजी वीराजवेको तथा चादीके थाल तीनमें चादीके खीलेने भरे हुवे है ओर भी याके सिवाय छोटी बडी बहुत सी चीज स्वारीजीने बनवाये श्रीद्वारकानाथजीके भेट कर दीयो है या देखमें जो वस्तु लिखी है सो नित्य श्रीद्वारकानाथजीको ही अंगीकार करायवेकी है यह सन उपर लीखी मई सन चीजेके मालीक श्रीमद्गोस्वामि श्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी ओर विनके लाउजी श्रीनजभूषणलालजी ओर श्रीविठ्ठलनाथजी ओर विनके श्रीभाभीजी महाराज श्री सौन्दर्यवती बहुजी है ओर धगीचामें कुंठ १ बावडी १ वे टोनोंको जल बगीचाकु पायवेरे लिये है ओर सन लोकनके पीवेके अिमे है ओर नहायवेके लिये सरल मनाई है ।

या उपरात स्वारीजीने श्रीगौमाताजीके लिये जल पीवेकी प्याउ बघाई है ओर श्रीगौमाताके लिये रु. १६००० अके सोल हजार श्रीद्वारकानाथजी के दरीखानामें श्रीकृष्णमंडारमें जमा कराये है या रुपीयाको व्याज दर महीना रु. ६० अके साठ होयगो सो वे व्याजके रुपैयामें सु रोज रु. २ अके दोको सामग्री श्रीद्वारकानाथजीकू नित्य अरोगवायके महाप्रसादके लडुवा नग अके आठ होय सो वे श्रीद्वारकानाथजीकी गौमातानकू स्वारीजी अपनी हयाती तक अपने हाथसु खवावें ओर विनकी गेरहाजरीमें बट मटाप्रसाद श्रीके मंदिरके अधिकारीजी जो होय सो अपनी हाजरीमें स्वारीजीकी आडीरू नित्य श्रीमंदिरके गोवर्धनपूजाके चोवमें गौवनकु बूझायके खवावें वे अधिकारीजीके सामने खवावें खवायेवे में ओर कोईको भरोसां राखनो नहि श्रीगौमातानकुं उपर लिखे लडुवा ८ अके आठ खवाये आप उपर लिखे हुवे रु. १६००० सोले हजारकी रकम श्रीगौमाताके लिये जमा कराई है विनकी व्यवस्था श्रीगौस्वामी महाराज श्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराज तथा विनके बहुजी महाराज श्रीसुन्दरवती बहुजीको अस्तु पुण्य है वासू भी कोई पण काल कोई बध न कर सके । श्रीद्वारकानाथजीकी गादीपर जो कोई गोस्वामिबालक विराजतें होय वह विनकी तरफसु यावतचंद्रदियाकर परीयत बाही रीतसू चलाये उपर लीखी हुइ गउमातानकी बानतमें श्रीमद्गोस्वामि १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराजने अपने श्रीहस्तकी महोर करके लेख स्वारीजीकुं गउमातानके लीये कर दीयो है वह लेख श्रीद्वारकानाथजी

के मंदीरके नगारखाने के दरवाजे पर लगायो है श्रीद्वारकानाथजीके मंदीरके जो अधिकारी होय वे यह रीतसू ये लेखके अनुसार संपूर्ण रीतसू चरतेगे सो गडलोकके मार्गपर जायगे अगर मदान्ध होय के अगर गर्व करके फोड गडको लड्डुवा बघ करके अदबी में दानो ओर चारो वदवे सो डीक नही कारण श्रीको अरोगायके गायनकृ प्रसादी खवाबनो वह बहुत लाभकारी है ये काममें कोइपण तरहको फेरफार कीसीको करनेको हुकम नहि है पन काम बघ जेगे तो प्रभुको अपराधी होके गडमातनको बाजुं ओर वह काम बघ करवेमें समती देयवेवारेनेकुं वशपरम्परा महत् श्राप लगेगे ओर वह कुभीपाक नकमें जायगे श्रीसुंदरनिवास बाग बघवायो ओर श्रीद्वारकानाथजी कं संवत १९७५ के वैशाख वदी ७ अशुवारके दीन बागमें पधरायके मनोरथ कियो सो सब मिलके कुल खर्च रेवारीनी के हस्तक रु. १५१००० एक लाख एकावन हजार भयो है यह काममे उदेपुरके महाराणाश्री १००८ श्रीफतेहसिंहजी साहन ओर बिनके भतीजा महाराजश्री १०५ श्री हिम्मतसिंहजी साहब इन दोनोने मिलके सेनामें अच्छी मदद दीनी ओर दोनोने श्रीद्वारकानाथजी के यावत्चंद्रदिवाकर परयत भेट कर दीयो है ओर वैष्णवोंने बहुत अच्छी मदद दीनी है यह सब काम रेवारीजीने अपने तनमन धनसे करके श्री द्वारकानाथजीकु भेट कर दीयो है यासू सन मिलकतपर श्रीद्वारकानाथजी सिवाय दूसरे कीसीको हक नहि है कोइ तरहसे कीसी बातसे कीसीका कोइ उजर नही है यह लेख रेवारीजीने अपनी राजी खुशीसे कर दीयो है यमि कोइ बातकी न्यूनाधिकता लीखी हो सो बातकी रेवारीजीने माफी मागी है सं. १९७६ के आशु शुद्ध ५ बुध ता. २७-११-३० इ.

श्रीभद्रगोकुलभां—अनेक धर्मशास्त्राओ छ. तेभा प्रतीक तो तदन भासी पड़ी रहे छ छना तेनो सङ्गथेय थतो नथी. दावभा श्रीगोकुलता निवासी विद्वान् मुष्पाछ श्रीगोकुलेश छेडाक विद्यार्थीओने सेवाना अनवरतमा संस्कृत भाषानुं ज्ञान आपे छ, तथा संप्रदायना प्रथो सज्जुवे छ. आभा के विद्यार्थी ओने अनवरतदिनी सबड नथी देाती तो ते पक्ष पडिव गोकुलेश छ भेजनी आपवा प्रधास करे छ. भात तेभने एक स्यातनी नरर छ. आ सरेया अमे नरर लेछ छ, अने ते सुतर कार्य करे छ. अनवरतीय रोड पक्षदास करनदास नाथाने विनति छ के ओकाइ स्यात धर्मशास्त्राभां आ सरेया भाटे आप. भीछ पक्ष धर्मशास्त्राभां सुभाषना सङ्गुदरेओने विनति छ. विशेष आ सरेया भाटे भीछ पक्ष भददनी नरर छ. पथासक्ति सदायता करनाराओओ आ सरेयो पत्रनरदकार करवे-भ्रीगोकुलेश राभां सासी, श्रीपुष्टि अवयर्थीप्रम, सु गोकुल (छ. मयुता)

अरेवानी छेडकभां—सेवा करनार पदम सभचरीय आनवदास वड्डमदास छजे छ के—“अभने अंभर भण्यो छ के, दोनी भाष्य अरेवानी श्रीमहाप्रसुछनी छेडकना नामधी पररो करीने शुभरात-काठियावाड, सुभाष वगेरे सरेयो करे छ, अने पैसा छपरावे छ. आवा कोड भाष्यने अदाधी गोकुलेश नथी, तेभने पैसा कभरायनासमे ओक पाठ पक्ष अदा माहवी नथी, भाटे आवा दोनीओधी सोपधान रहेवानी नरर छ.”

गोपीतदावनी छेडक—ने मुष्पा राधावल्लभ भाभनदास नामनामे छेडकने नागे वैष्णुवे पासेधी पैसा छपराववानुं अमे साभज्ये छ. ते ओक पररो छने निकज्ये छ. तेने ओकाइ वर्ष ययुं, पत्तो नथी पञ्च तेखे ओक पाठ पक्ष अदा माहवी नथी. भाटे कोछमे गोपी तदावनी छेडकने नागे ओक पाठ पक्ष अदा भाष्यने आपनी नहि छी. हा. नरदास देगलान्, के. गोपी तदाव, पोर-वरवाडा (काठियावाड).

ભગવદીય રવજીભાઈ.

મુઆમના વૈષ્ણવોમાં “ રવજી ભગત ” (જોખા) નામે પ્રખ્યાત શેઠ રવજીભાઈને ભાગ્યેજ ઝાળખાવવાની જરૂર હોય. કેલસાના વ્યાપારમાં તેમણે દ્રવ્ય સંપાદન કર્યો પછી જે ટહેલ કરવા માંડી છે તે અદ્ભુત છે. મુઆમના બધા મંદિરોમાં શ્રીની સેવા તથા જોખાતાની સેવામાં તેમણે જે તનુજ અને વિતન સેવા કરી છે અને કરે છે તે ભાગ્યેજ કોઈ કરી શકશે. ઉપરાંત મોટા મંદિરમાં મહાપ્રસાદ વાંટનાર તરીકે તો તેમને કોઈ નહિજ ભૂલે. જે તે સ્થળે ‘ રવજી ભગત ’ મહાપ્રસાદ વાંટતા ન હોય તો તે સ્થળ સુનું લાગે! આવા શુદ્ધ આદર્શ વૈષ્ણવ જીવન-વાળા શેઠ રવજીભાઈએ નામસેવામાં પણ ખૂબ ફાળો આપ્યો છે. ધોળપદસાગરની બેદનર પ્રતોના તેમણે પ્રચાર કર્યો છે. તેમાં નીચે મુજબ મોટી રકમ તેમણે ખર્ચેલી છે. વૈષ્ણવો તેમને ઉપકાર કરી નહિ ભૂલે. અને હું તો આવી સેવામાં નિમિત્ત બનાવવા અદ્ય તેમને નમસ્કાર છું.

ખર્ચ—૩. ૪૬૫-૦-૦ કાગળો રાખ્ય ગેજ ૪૫ રતલી, ૧-૬-૦ કાગળો વખારમાંથી પ્રેસમાં ગયા તેની મજૂરી રૂ. ૫૧૭-૪-૦ છાપખાનાનું ખીત નં. ૨૧, રૂ. ૨૮૪-૧૪-૦ ખાઈ-ડરને ખાઈ-ડરના ખીત નં. ૪૭, રૂ. ૧૭-૪-૦ બ્લોક નં. ૩ બતાવ્યા તેના રૂ. ૨૯-૧૪-૦ ચિત્રો ચાર છપાવ્યા તેના, રૂ. ૨) વેરાવળથી શ્રીગોકુલાધીસજી મહારાજનો ફોટો આવ્યો તેના રૂ. ૧૩૪૭-૧૦-૦ કુલ ખર્ચ.

અઢારસો દિવસનો નફો!

જ	ક
૩૦૮૦-૧૨-૦ લવાજમના.	૧૧૮૮-૦-૦ છપામણ ખર્ચ.
૧૬૪-૦-૦ ગહેર ખજારના.	૭૨૧-૦-૦ ચિત્રો તથા બ્લોક.
૪૮-૦-૦ સહાયતાના.	૪૫૧-૦-૦ ટપાલ ખર્ચ.
૪૫-૦-૦ પી. પી. ખર્ચના.	૩૩૭-૦-૦ કાગળો.
૩૩૭૭-૧૨-૦	૨૭૮-૧૧-૦ બંધામણ, વળામણ તથા અંક બીડવાના.
	૧૪૪-૦-૦ ઘર ભાડું.
	૨૫-૦-૦ વતમાન પત્રો ખરીદી.
	૩૭-૦-૦ પરચુરણ ખર્ચ.
	૩૧૮૧-૧૧-૦
	૧૫૬-૧-૦ સીલીક.
	૩૩૮૭-૧૨-૦

આ નફો ઉપરાંત મુઆમના કેટલાક ગ્રાહકોના ખીત વર્ષ, ત્રીજ વર્ષ તેમજ ચોથા વર્ષના લવાજમો વસુલ થતાં ગયા વર્ષની ચારસો રૂપીઆની ખોટ પુરાઈ ગઈ છે, અને તેમાંથી પણ બચત રહી છે. ઉપર મુજબ જે નફો આવ્યો તે નાણાં અને ‘ ધોળપદસાગર ’ તથા અન્ય પ્રસ્તુત પ્રકટ કરવામાં રોક્યા છે. અમદાવાદમાં એક કાર્યલય રાખવું પડ્યું છે. ખીત ખર્ચ વધારવું પડ્યું છે.

દિનકિંકરથી ચેતો—આજુ વર્ષની મારી ગેરહાજરી દરમ્યાન આ કાર્યલયને એકદમ તુકચાનીના ખાખમાં ભાઈ દીનકિંકરે ઉતારી દીધું છે. લવાજમો ગ્રાહકોને નામે જમા કર્યો નથી. જેના લવાજમની પહોંચ પોતે જાણી છે, તેનું લવાજમ ચોપડામાં જમાજ કરીધું નથી. હીસાબમાં ચોટાળો છે. હજી હીસાબ નખાસું છું. આખરે લાચારીએ મારે તેમની સામે ફેજાલગીરી પગલાં

પ્રાયશ્ચ વહેનના ગોઘોઘાસથી સંપ્રદાને મોટી ખોટ ગઈ છે. એઓ તે પ્રભુની નિત્યલીલાનો અખંડ આનંદ લેતા ન હશે, પણ લોક દષ્ટિએ આપણને એક યાચન.

દેવગંઢ ખારીઆમાં એક મરતલી વૈષ્ણવનું નાણુપાત્રેનું અવસાન—અનેના મરતલી વૈષ્ણવ ગાંધી ચક્રાવ અસુવલાવ મારણ સુદી ૬ના રોજ ભગવત્પ્રદાણ થયાથી અર્ધાંત્ર વૈષ્ણવોને તેમની બારે ખોટ પડી છે. તેઓ લગભગ સાઠ વરસની વયમાં પાત્રીસ વરસથી મરતલ હશે લૌકિકમાં હવેના રૂપીયાના વેપાર વણનમાં ગુણાયેલા હોવા છતાં ફક્ત બે દિવસની ખીમારીમાં પોતાની અંતપર્યંત દયામાં સુદી ૬ની સવારમાં વૈષ્ણવોને જોવાની પોતાને ત્યાં આજને આજ સામમી પહેલો શ્રીને દોઢાલા હુલાવવાનો મનોરથ આદર્યો અને સાંજે સૂત્ર દમ હોવા છતાં પોતે નાહી, નતે શ્રીને દોઢાલા હુલાવી, ગેરથી નીચે આંખા, અને સર્વ મરતલી વૈષ્ણવ તથા વૈષ્ણવોને ત્યાં મહાપ્રસાદ લેવાથી પહેરામણી કરી પોતાના દ્રવ્યમાંથી વયાસક્તિ આપને દિવસે મળવાથી વૈષ્ણવો બહારમાંથી આવે તેમને સામમી અર્થે અમુક રૂકમ તેમજ અનેના મંદિરમાં અમુક ઉત્સવ ઉપર મનોરથ કરવા ખર્ચે તેમજ શ્રીગોકુલમાં રાજસોમ વગેરે કરવા તથા ગુરુશ્રીને ભેટ પોતાની સાવચેતીમાં કરી, છકડા રોજ રાતના સાડાં દસ વાગે દેહ છોડી પરગણને પ્રાપ્ત થયા છે. ધડા લેવાનું એ છે કે નાનપણથી સેવા સત્સંગ કરેલા હોવાથી લૌકિક ભવબંધારમાં અનહદ પયેલા હોવા છતાં ભગમલવત્ સંસારમાંથી એકદમ ચિત્તને નિરોધ દોષ પ્રભુપ્રાપ્તિ થવાનો આ એક સચેત દાખલો છે. એમના પુત્ર પુરુષોત્તમદાસ પણ તેવા દોષ પિતાને પગે આવી ધર્મમાર્ગમાં પ્રાયશ્ચ રહે છે. ઇશ્વરે ધીમે ધીમે પદ—છત્ર અથે નર વે નરમે, છત્ર રેન દિન—દરિ નામ લીધા છે. અત સમે થયા કર મુદે તેા હુ ન નમકે હાય ગયો હે, કહે દરિયાય દરિકે મીલવેકા પહેરે હી છત્ર કાળ કીધા હે, માલ સમે પહેવાય લીધા, ધર પાછું હું તેા પીર કહા રહ્યો હે.

ગોઘોઘાસ—લખતા દિલગીરી યાચ છે કે અનેના, કીનકવર ગોપાળલાલના મંદિરના વિરિનારા બ્રાહ્મણ બદ્ધ આવર્ધનદાસ પ્રભુજી ગયા માસથી રૂકમી શુક્રવારના રોજ રાજકોટ સુકામે ભગવદ્દામવાસી થયા છે. આ રીતે માનસે એક વચોટકદ સંતોષવિશાસ અને અનુસરી ભગવદીયને શ્રાવ્યા છે. અર્ધાં સાપ્રદાયિક સેવાપદ્ધતિના નિષ્ણાતો રચી આગળીને રહે બહુચ તેટલાં છે, તેવામાંથી આ એકની ખોટ પડતા અર્ધાં વૈષ્ણવોમાં ગમગીની ફેલાયેલી, પુરુષોત્તમ માસ આખો ઉત્સવાદિમાં કરી પણ અગચ્છ વિના તેઓ સેવાનો લાભ લઈ રાખ્યા. જેવા માસ પૂર્ણ થયો કે તરતજ મૂનરૂપના બાધિથી તેઓ પીડાવા લાગ્યા. બાધ વધતોજ ગયો. હાટરો અને વૈજોની આપરેશન માટે સલાહ પડી, અને તેઓ અત્રેથી રાજકોટ ઉદિપટલમાં ગયા. આપરેશન થયું. સફળ થયું પરંતુ રૂકાવરયાને અગે યક્તિના અસાવે પ્રતિ નબળી થતી આવી, અને ત્યાં ભગવત્પ્રદાણ પામ્યા. પ્રભુની કૃપા કહો કે મીઠાકેસલાલજી બાવા ત્યાં વિરાજતા હતા તેઓની કૃપાથી અતિમ રિધતિ સારી રીતે સુધરી અને મીયમુનાજી વગેરે અરમ-ત્સાપ્રદાયિક રીત્યા પામ્યા. તેઓ પાછળ એક પુત્રને મૂકી ગયા છે, જે પણ પિતા પાસેથી મળેલા સંસ્કારોને લીધાવે છે. “શુદ્ધાદૈત”ના તેઓ આરંભીત આઠક તેમજ આઠક હતા.

પરમ ભગવદીય મહિલાલક્ષ્મી (દેવગંઢ ખારીઆવાળા)થી કૌટુંબ વૈષ્ણવ અપ્પાત ઠરો. તેમણે અચાનક નતિપુરામાં મીનિરિશાળ પાસે (દરદાસવર્ધના ચાલુમાં) ફાળુ ભગુર દેવનો ત્યાગ કરી દીધો. મહિલાલક્ષ્મી એટલે ગૃહસ્થામને સ્વીકાર ન કરતા, એકદમ સંન્યાસી જેવું તપસ્વી ત્યાગી જીવન ગાળનાર એક મર્ધાં વૈષ્ણવ તેઓ વૈષ્ણવોની સેવામાં તેા તનતોડ મહેનત કરી અમ્મ રહેલા હતા, તેઓ વિદ્વાન ન હતા, પણ બહુમુત અને સાપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના નણુકાર અને ગામઠી હતા. તે ઉપરાંત સારા વક્તા હતા. મહુશાળા આયુર્માન ગો. મીપુરુષોત્તમલાલ બાવાની સેવામાં તત્પર હતા. તેમણે ‘પ્રેમ પત્રિકા’ નામની માસિક પત્રિકા પણ પ્રકટ કરી હતી, પણ તે આવી નહિ. છેવટે તે યાત્રામાં વૈષ્ણવોની અજમ રહેલ કરતા. તેમનું ચ વિચ્છ શુદ્ધ દર્શન. મીનિરિશાળમાં રૂકા રોપવાની સેવા, મળ્યા મનોરથોની સેવા આદિમાં દેહના કષ્ટની પરવાન કરતા ન હતા. ગત ઉજી કાલમાં મળની વેઠકા અને મંદિરોમાં હુલાવના ક્ષેત્ર પહેલાંકાની તનુલ સેવામાં તેમણે વાંસડના ઉનાળાના તાપની કે બૂખ તરસની પણ-પરવા ન કરી. આવા એક સેવાભાવનાવાળા ભગવદીયની ખોટ કહી નહિન પૂરાય.

શ્રીસુબોધિનીશ્વરો સંપૂર્ણ અનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રસિકેશ્વર શ્રીકૃષ્ણની બાનાત્મક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમદ્ભાગવતનું મહત્ત્વ જાણવું હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેના નામ નોંધાવો. સંપૂર્ણ શ્રીસુબોધિનીશ્વર સરસ બાધાન્તર અને વિષમ પદ્યોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ એકજ અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધાચાર્ય મહારાજ આગા કરે છે અલ્પજ્ઞ વિદ્વાન એ ઉલ્લખને સમાન રીતે આ બાધાન્તર અને ઉપકારક છે.

ગ્રાહકોને નામ નોંધાવવાના સ્થળો:—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય યુસ્તકાલય—નડિયાદ. ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ પીતાંબરદાસ વડવાકુવા—નડિયાદ ૩. જ્ઞેષ્ઠી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—જામનગર. ૪. શુદ્ધાદૈત કાર્યાલય, રાજમહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

શ્રીકૃષ્ણાય નમઃ ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग્યશ्रुतिः)

विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषद्શ્રુતિઃ)

વિજ્ઞાપનમ્ ।

હુતપ્રાય પ્રાચીન સંસ્કૃત સાહિત્ય, એવ રાષ્ટ્રીયભાષા હિન્દી મેં શ્રીસુબોધિનીજી एवं श्रीहरिरायजी—आदिके ग्रन्थों का अनुवाद.

શ્રીપીયૂષપત્રિકા.

નામેક માસિક પત્રિકા વિદ્યલેસરી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજ एवं विद्वद्रत्न गोस्वामी श्री ६ श्रीव्रजरत्नगडजी महाराजके संक्षेपत्वमें प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये ।

મિલનેકા પત્રા—હીરાલાલ શાસ્ત્રી, સ્વડાયના સંસ્કૃત પાઠશાળા—નડિયાદ; હરિશંકર શાસ્ત્રી, વડામંદિર—નડિયાદ, શુદ્ધાદૈત કાર્યાલય—અમદાવાદ.

हरिशङ्कर शास्त्री.

મોમાંસારોશ્ત્રી, વેદાન્તે ચિશાર્દ M. R. A. S. વ્યવસ્થાપક,

શક્તિ માટે સૌથી સરસ !!

અમૃત ગુટીકા !!

વીર્યવીકારના તમામ દરદેા જઠમુળથી દુર કરી બદન તાકાતથી ભરપુર અને પ્રયુક્તીન થાય છે. દરેક પ્રકારની તન-મનની નીરબળતા દુર કરી, નિસ્તેજ ચહેરાને કાંતિવાન અને આનંદી બનાવે છે. મગજની કમજોરી, બદનનો દુઃખાવો, માંદગી પછીની નબળાઈ, અસ્ત્રી, અપયો ઇત્યાદિ અનેક શારીરિક વિકારો દુર કરી નસોની શીથીલતાને મટાડે છે. દરેક રૂપમા એક સરખો ગુણુ આપે છે.

કીંમત ૩૨ ટીકડીઓની ટયુબના રૂ. ૨.

જેનસઅસ્થમોલ [મીક્ચર તથા ગોળીઓ]

હમથી હેરાન થતા દરદીને ઘુરત રાહત થાય છે. કદ કંઈ પણ ત્રાસ વખત નીકળે છે અને ઉંધ સારી રીતે આવે છે. સરદીની ખાંસીમાં તાત્કાલીક ગુણુ થાય છે. નીરાશ થયેલા દરદીને અગમ્યાથી જોવાની ખાસ બલામણુ છે.

કીંમત મીક્ચરનો રૂ. ૧૫૫ ગોળીનો રૂ. ૧) બન્ને સાથે મંઆવવાથી રૂ. ૨૫.

દરેક દવાનું ટપાલખર્ચ લુદ્ધ. રજીસ્ટર ટ્રેડમાર્ક "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો. દરેક ઢેકાએ લેખાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

કેાણ છે એવો કે જેને ફાયદો નહિ થયો હોય ?

તરત ફાયદો આપનારી ૪૦ વર્ષોથી કસોટી પર ચઢેલી.



દ્રાક્ષાસવ

અધ્યાત્મને જળવાન જોશભેર, મુંદર અને મુઝી બનાવવા હોય તો મુખસંચારક કું. તું ગળ્યું ખાસમુધા પિવાવો, કિંમત એક શીશી એકના ૦૫૫) આના.

આ શરીરમાં શક્તિ વધારે છે, કબજાબાત, અશક્તિ, ઉંધરસ, ઉંધ ન આવવી તથા ધડપણમાં થતાં કષ્ટાધી બચાવે છે. ૧૬) મોટી શીશીની રૂ. ૨) નાનીની રૂ. ૧).

મળવાનું કેાણું-મુખ સંચારક કું., મથુરા.

સત્યવ્રતં સત્યપરં ત્રિસત્યં સત્યસ્ય યોનિં નિહિતં ચ સત્યે ।

સત્યસ્ય સત્યં ઋતસત્યનેત્રં સત્યાત્મકં ત્વાં શરણં પ્રપચે ॥

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્યમન્દિર”

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને સુંદર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અગદારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—બર્જ, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલા (મુદ્રિત થયેલા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુંદર અને અત્યારંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીગુસાંઈજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ. પા. ગો. બાલકેના રંગબેરંગી સુંદર દ્રોણાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ણના રંગબેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેડો તથા પોકેટગાયરી, ગીતાગાયરી, વિગેરે થોડા ન્યોછવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છપીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફેમો મઢાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી બાઈડીંગ (બન્ડ) થોડા કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—પુસ્તકાલય.”

(વાચન—વિભાગ)

ગુપ્ત તથા આલુઆલુના પરાઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવી પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરમેઠાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ક્રી (મહત્ત) પુસ્તકાલયની થોડા વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ ત્હેના ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસરી કોઈ પણ ધર્મજીવાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એટ્ટેસે લખો મા મળે:—

મળવાનો સમય—	} ગિરિધરલાલ જ. શાહ, બુકસેલર. વ્યવસ્થાપક— ‘ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’ કે. શ્રીલાલભાવાનું મન્દિર, ભુવેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.
સવારના ૭ થી ૧૨ (રેડા. ટા.)	
સાંજના ૪ થી ૮ „	

તા. ક:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી વખતે પોતાનું નામ તથા એડરેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપીયાની અંદરની કિંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુત્તર માટે જવાબી કાર્ડ મા પોસ્ટસ્ટાપ બીવડા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મહત્ત મોકલવામાં આવશે નહિ.

, નિવેદક—ગિરિધરલાલ જગજીવનકાંસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરનાં ટેકાણે ભરી મોકલો.

હિસ્ટરિયાઈ વાતરોગ દર્શન.

બ્લોક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂઝી, ચકરી, ફેફર, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અગોરકન છેલી શોધ મુજબ પાઘાત્ય, યુનાની અને આધુનિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમન ૧-૪-૦ પો. જુડું, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના ૦૧. શાળા માટે નહું મંજુર કી. ૦૧૦ પો. ૦)૦

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણ,

૧ પેટ દવા વાયુમુક્તાજ છે ઉપરના દરદોમા ૨૪ કલાકમા ફાપદો મળે છે. સિયોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રચન સુધીના દરદોમા વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો હુટથી મંગાવે છે. દવા મદિનાની, કીમત ૩ પ) પો. જુડું.

છગનલાલ લલ્લુલાલ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડોક્ટરોની દવા ખાઈ કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), મુખાધના ઝાઝા, અતિસાર અને આતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાસાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી વીસ વરસના અતુલવની રામખાણ દવા માટે ફજર મળેલા સવાલપત્ર મંગાવે. પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો —

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, સુસ્પેસીઆલીસ્ટ—માણસાવાળા.

જુ મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાડીગરાની પોળમા તંબુગરાની ખડકી ઘર નં. ૩૫૬.

અમારૂં બાલનંદ બચ્ચાએને હુદ પુષ્ટ આનંદી અને સુદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુડું.

અમ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ કેબાઈનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સહાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાયવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ દાય લાગશે. સ્ત્રીની પાપમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પ્રાથમાલીથી દર રહી સુખી થવાનો રસ્તો સુઝશે.

કિંમત કે ચોસ્ટ કાંઈ પણ નહિ, માત્ર તમારૂં પુરૂં સરનામું મોકલી મંગાવો

વૈદ્યશાસ્ત્રી માણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔપધાસય—જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

આત્મ જીવન અથવા દિવ્ય અક્ષર દેહ.

લેખકો—સદગત મૂલચંદ વ્રજસીંહસ તેવીવાલા બી. એ. એલએલ. બી. એડવોકેટ હાઈકોર્ટ મુંબઈ, તથા પ્રેમિસર જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ. અમદાવાદ, ઉપરાત સુપ્રસિદ્ધ તત્ત્વજ્ઞાની સાક્ષર દિ. બ. શીશુત નર્મદાચંકર દેવચંકર મહેતા, બી. એ. નો હૃદયવેધક ઉપાધ્યાય.

કાવ્યોનો ઉદ્દેશ શો ? કવિશ્રીના તે વિશેના વિચારો, કવિશ્રીના કાવ્યોનું વર્ગીકરણ, કવિશ્રીના કાવ્યોમા નરવરતું તત્ત્વજ્ઞાન, જીવ, જગત, અલ્પ વિશેના તેમના વિચારો, સંસાર બંધનોમાથી છૂટવાના ઇલાજો, દીનતા ઉપાસના, અનન્યતા, શરણાગતિ, ભક્તિ વગેરે વિષયો પર કવિશ્રીના સચોટ વિચારો, સૂઝાર રસનું સ્વરૂપ, કવિશ્રીનું મુખ્ય લક્ષ્ય, જીવન સૂત્રો, કવિશ્રીની અન્ય કવિઆ સાથે ઊંડાના, કવિનું સાક્ષર જીવન. આટલા વિષયોપર અસરકારક વેગવાળો કવમથી સવિસ્તર પ્રકરણો લખાયા છે. કવિશ્રીની ત્રિરંગી બે છત્રીઓ તથા કવિશ્રીના હરતાલકર વગેરે સામેલ છે.

તે ઉપરાત કવિશ્રીની જ્યંતીઓ પર વચાવવા નિબંધો તથા વ્યાખ્યાનોનો મહાન સંગ્રહ જેમા મહાન વિકાન આચાર્યો તથા વિદ્વાન લગભગ સઘળા સાક્ષરોએ કવિશ્રીને અર્પેની સુવાસિત કુસુમાજલિ મહેકી રહેતી છે. ગુજરાતી સાહિત્યમા આ અંથ અનુક્રમણી છે પચસો પૃષ્ઠ, પાકું પુકું કીમત બે રૂપીઆ આ માસિકના ગ્રાહકોએ માત્ર રૂ. ૩૦ રૂપીએ મળશે.

મુંબઈ યુનિવર્સિટીમાં એમ. એ. ના અભ્યાસક્રમમા ટેકસ્ટબુક તરીકે મંજૂર થયેલો.

શ્રીદયારામકૃત કાવ્યમણિમાલા ભાગ ૧ લો.

(આવૃત્તિ બીજી) સુધારા વધારા સાથે છપાઈ તૈયાર થઈ ગયો છે.

આ અંથમા અત્યાર સુધીમા પ્રકટ નહિ થયેલા કવિરત્ન ભક્ત શ્રીદયારામભાઈના ઉત્તમોત્તમ અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથો તથા કાવ્યોનો નીચે પ્રમાણે દિપ્તિપુ સાથે સમાવેશ કર્યો છે.

સંગ્રહાયસાર—(તત્ત્વજ્ઞાનનો મહાન ગ્રંથ) રામાનુજ, નિંબાક, મધે અને ચંકર વગેરેના સંગ્રહાયોના તત્ત્વજ્ઞાનનું રહસ્ય બહુજ સચોટ રીતે સમજાવ્યું છે.

અર્જુનમલાખ્યાન—ભગવન્નામ લેવાનો અદ્વિતીય ચમત્કાર જોવા હોય તો આ ગ્રંથ જરૂર વાંચો.

કલેશકુટાર—આવા સમયમા દરેક મનુષ્ય ચિંતાના સમુદ્રમા તરકાર થાય એ સ્વાભાવિક છે. “ચિંતા ચિંતા સમાન છે.” અમો ખાતરી કહીએ છીએ કે આ ગ્રંથ વાંચ્યા પછી જાંઘીભંર તમને ચિંતા યજ્ઞ નહિ.

કાલજ્ઞાનસારોશ—પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે એ કોઈ જાણતું નથી. અને બધા ગ્રહલતામ રહે છે. આ ગ્રંથ એવો અદ્વિતીય છે કે પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે તેનો જીવ-દીથી નિશ્ચય થઈ શકે છે. બીજા પદો—બીજા અનેક જ્ઞાન, નીતિ અને ભક્તિના પદોનો મહાન સંગ્રહ. આટલો મોટો ગ્રંથ છતાં કીમત માત્ર રૂ. ૧) એકજ રાખવામા આવી છે. પાના ૨૦૦ પાકું બાઈડિંગ, કવિશ્રીની પ્રાચીન રંગીન છત્રી સાથે. આ માસિકના ગ્રાહકોને માત્ર રૂ. ૦૧૧ બાર આનામા મળશે.

મળવાનું ઠેકાણું—પ્રકાશક નારાયણદાસ પરમાનંદદાસ શાહ (ઉલોઈવાલા) ટે. પાંજગપોળ ઓશીસ સામે, પાંજરાપોળની ચાલી, મુંબઈ નં. ૪

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી ભરપુર

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

મૃદિકારિષ્ઠ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

ઝંડુ તાકત તાકત-તાઝગી મેળવવા

શરદી મટાડનાર

થાક ઉતારનાર

ઉધ લાવનાર

હસ્ત સાફ લાવનાર

ભુખ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝગી બદનાર

ફાય, ખાંસી, મૂર્છા અને સાધારણ

નબળાઈમાં તાકત આરામ આપનાર

લગ્નજીવનદાર દવા

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લેવો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્ક્સ લીમીટેડ-મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ-ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ આધીના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યનીલાસ્ય ગોસ્વામી શ્રીઃ શ્રીજીવનેશાચાર્યજી મદદારાને આ સરલમા સરલ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિશંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મદદારાજીની “ઉપદેશવિવેચકસંકાનિરામવાદ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાય આ ગ્રંથમા છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ.

આ ગ્રંથમા રજુ કરીને તેનું અપૂર્વ સંતોષજનક સમાધાન કયું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિશે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. લુપ્ત લુપ્ત સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમાં છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન રા. રા. દરિયુજી વીંગાજીએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

કેશવજી—શ્રીલાલબાવાઈ મંદિર.

ભૂલેશ્વર, સુખાઈ નં ૨ તથા તેજ મંદિરમા.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જી. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, બીન, દીલરૂબા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રામાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના જોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોઠડાવાળા.

સુ. ધ.કુકા. (૯ અમદાવાદ)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધલા, તો. ર. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સીરિકમા હશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધલા રૂ. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં, પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખેા કાર્યોપમા..

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રંથ—‘શુદ્ધાદૈત’માં પ્રકટ થઇ ગયલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૨. લાવલાવના—(લા. ૧૨૦) શ્રીહારિકેશવરજીત આ ગ્રંથ એક અદર્શિય વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે નોંધાવર પડીથી જાણવાશે.

૩. પંદરમે અધ્યાય—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુદર વિવેચનો સાથે દરેક રસીક પર શકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો માત્ર દોઢ આનો. ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૪. આટલું તો કરજે જ—નિલનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧- આનો, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૫. ‘લક્ષ્મીપાણી’—કવિશ્રી દયારામભાઈનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, ૧૦૦૦ આનો, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૬. ભક્તવાણી—મહારાજા વિદ્યાન શ્રી. છઠ્ઠાવાર ભટ્ટજીએ સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે નો ત્રણ આના, ૮ ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવચનામૃત—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનામૃતોનો મહાન સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર પડીથી.

૮. ચૈરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો—છપાય છે. વાચવાલાયક ગ્રંથ. નોંધાવર પડીથી.

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી મદ્રાસી ઘણી હોવાથી આ સાહસ ખોટું છે. મૂળ ત્રણ આના, ૮ પાલ અર્થ એક આનો.

૬. ૧૭૪૮, ચંબમહેતા. પ્રોફ.—અમદાવાદ.

शुद्धद्वैत



श्रीमदस्वप्नभूमण्डलाचार्यचक्रचूडामणिश्रीशुद्धद्वैतसम्प्रदायस्थापकजगद्गुरु
 श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणप्रतिष्ठापितप्रधानपीठश्रीनाथद्वाराश्रीश्वर
 गोस्वामिकुलकमलदिवाकर विद्याभूषणकर महोदारचरित्र
 गोस्वामी श्री १०५
 श्रीदामोदरलालजी महोदय.

॥ श्री हरिः ॥

ધાર્મિક આન્દોલન.

—૬૬૬—

વર્ણશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું મહા વેશન.

ભારતના સર્વ સંપ્રદાયોના આચાર્યશ્રીઓનો અદ્ભુત સહકાર-વિદ્વાનોની અસાધારણ ઉપસ્થિતિ-અત્યંતજેનો કહેવાતો સત્યાગ્રહ-તેની પાછળ રહેલો ભેદ-શાંતિથી ચાલેલું કામકાજ-સુધારકોનો સખ્ત પરાજય-સનાતન આર્ય સંસ્કૃતિનો પૂર્ણ વિજય અને પુષ્ટમાર્ગીય આચાર્યશ્રીનો મહાન્ સત્કાર.

ધર્મપ્રાણુ દિવ્યદેશ-ભારતવર્ષ એટલે જગન્નિયતાની દિવ્ય પવિત્ર સૃષ્ટિનો મહાન્ આદર્શ ! ભારતભૂમિ એટલે નિખનાવ્યાધિત આધ્યાત્મિક જ્ઞાનજ્યોતિ પ્રકટાવનારા વિશ્વવંદ્ય મહર્ષિઓની જન્મદાત્રી માતા ! આર્ષોવત એટલે જેના સર્વ રજ ક્ષોભાથી પણ મધુર ધર્મ-સ્વ નિકળી રહ્યો હોય તેવો પુનિત દેશ ! આવા મહાન્ જગદંબ દેશના ગુણગાન કરના કોણુ સમર્થ છે ? જેના પિતાવ ઉત્સર્ગમા સર્વોદ્ધારપ્રયત્નાત્મા પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાદુર્ભાવ પામીને કુલ દાનવોનો સહાર કર્યો હતો ! જેની નિર્દોષ તીર્થસ્થલીમા અતિમાનુષ્ય તપ આચરતા મહર્ષિ-શુનિઓ તથા ભક્તિમદ્ભાકિની વડેવગવના સતો અને ભક્તશિરોમણિઓને માટે પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાકટ્ય લઇને તેમને અમદ્ આનંદનું દાન કર્યું છે, તે આજ ભારતદેશ છે ! જગતમાના અચાનતિમિરનો ખૂણાખાચરામથી પણ નારા કરનાર મહાન્ તત્ત્વવેત્તાઓની ખાસ આર્ષભૂમિનું ગૌરવ અખડિત અને અવર્ણનીય જ છે. આ ગૌરવને પ્રાપ્ત કરવા માટે અનેક દેશો સદીઓ સુધી મથશે પણ તેના લેઇને હજી નહિજ પ્રાપ્ત કરી શકે.

સર્વશિરોમણિ-આયોનર્તનું ગૌરવ માત્ર ધર્મથીજ હતુ, અને રહેશે. ભારતસંતાનોની નસેનમગ્નો રહેના સ્વધર્મોભિમાનના પગથાણુઓએ દેશના ગૌરવને સુરક્ષિત રાખ્યુ છે ભારત-નિવાસીઓની પ્રવૃત્તિ, પછી તે વ્યાવહારિક હો કે પારમાર્થિક હો, પરતુ તે ધર્મના પવિત્ર જાધનની અનહેજનને થોડે અંશે પણ સહન કરી શકતી નથી. ભારતની પ્રવૃત્તિઓમાથી જે ધર્મનું પૃથક્કરણ કરવામા આવે તો તે દરેક પ્રવૃત્તિઓ નિજેનન યજ્ઞને દેશના ગૌરવને દાનિ પહોચાડનાર જ દેખાય આ સત્ત્વનો પ્રકાશ દેશના ઇતિહાસમા સ્થપે સ્થપે અનુભવાય છે. ભારતવાસીઓનાં નાનાના નાના ગાળકોએ પણ ધર્મરૂપ પ્રાણના રક્ષણ માટે ભૌતિક પ્રણીનું અગિદાન આપ્યુ છે કોમળ પણ દેશનો ઇતિહાસ ધર્મના અવર્ણન માટે ભારતની માદક સંખ્યામય દહાતો પુરા પાડતા સમર્થ નથી એ જ ભારતનું સર્વાંગિક ગૌરવ, એ જ ભારતનું સ્વધર્મોભિમાનમા સર્વદેવશિરોમણિપણુ છે.

શૈવ અન્ને કરાવવાની આવશ્યકતા છે. ઇતિહાસ કહે છે કે ભારત, નિવૃત્તિપ્રિય હતું. તેની દૃષ્ટિ અંતર્ગત હતી. બાહ્ય ભૌતિક ઉન્નતિની તેને જરૂર ન હતી. નિવૃત્તિના ગર્ભમાંથી ઉદ્ભવેલા પરમ સુખરૂપ બાહ્ય સાથે ખેડવાના અભ્યાસવાળું પ્રાચીન ભારત, ખડારથી સુખના આભાસ વડે આંજી નાખનારા કુળમાં પરિણત થનારા પ્રવૃત્તિનાં સંતાનોને તે આહતું ન હતું. તેની તે વેળાની પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિઓનાં સ્વરૂપો જુદાં હતાં. ભૌતિક સુખને લક્ષ્યમાં જુદાવીને તે માટેની જે અનેક હીલચાલો, કરવામાં આવે છે, તેને જ પ્રવૃત્તિસંગ્રા આધુનિકો અર્પે છે. પ્રાચીન મમ્મ યમાં તેમ, ન હતું. પ્રાચીન ભારતની પ્રવૃત્તિ આધ્યાત્મિક હતી. એ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિથી થતી થતી ઉન્નતિની પાછળ ભૌતિક ઉન્નતિ ધસકાઠને આવતી હતી. દેશના અવકાશરૂપ એ ઋષિ-ઓની વાણી ઉપર પછુ એટલી બધી પ્રજુતા હતી કે સ્વતઃ પ્રકટતી વાણીને અર્થ સ્વયં અનુસરતો, નહિ કે લોકિકવત્ અર્થને વાણી અનુસરતી; તે ઋષિઓની આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને ભૌતિક પ્રવૃત્તિજન્ય ઉન્નતિ અનુસરતી આવે એમાં, આશ્ચર્ય શું? સંક્ષેપમાં હાલમાં હાલમાં જેને નિવૃત્તિશબ્દથી ઓળખવામાં આવે છે, તેને પ્રાચીન મદ્યિઓ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને નામે ઓળખતા; અને એવી પ્રવૃત્તિથી ઉદ્ભવતી ફલદલાને નિવૃત્તિસંગ્રા અર્પતા. આર્થવર્નના અવકાશોની આ પ્રાચીન પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિથી જે ધર્મ પ્રકટ થયો છે, તેનું જ વર્ણન ઉપર છે.

સમયપરિવર્તન—ઉપર્યુકત ધાર્મિક પ્રવૃત્તિ અને નિવૃત્તિનું ક્રમસઃ પરિવર્તન થતું ગયું ત્યારે દેશમાં અવનતિએ પોતાનું સામ્રાજ્ય ચોતરફ વિસ્તારવા માંડ્યું. એ અવનતિ દેવીએ ધાર્મિક લાગણીથી રહિત થતા જનસમાજને ધર્મી, દ્વેષ, કુસંપ આદિ પોતાના સંતાનોના અધિકાર હેઠળ મુકી દીધો, કહો કે કુળના એક મદાન સાગરમાં એને ધ્રુવેથી દીવો. અગાનાધકારમાં એવી રીતે અથડાના દેશમાં ઘણા સમયસુધી ધાર્મિક અવ્યવસ્થા ચાલુ રહી. ધાર્મિક નિયંત્રણ બ્રાહ્મણો અને ક્ષત્રિયોની સ્વાધીનતા નીચે હતું. પરંતુ કાલવશાત્ તે નિયંત્રણ ધર્મરક્ષક ભતિ-ઓથી સ્વાધીન રાખી શકાયું નહિ; તેથી ઉત્તરોત્તર ધર્મનું પરિપતન થતુ ગયું. સનાતનધર્મના ઉત્તમોત્તમ પ્રયોના રહસ્યો, સામે ગમે તેવી રીતે આક્ષેપો થયા. કહો કે સનાતન ધર્મને તોડી પાડવાને ચોતરફથી હુમલાઓ થતા લાગ્યા. આ સમયે દેશમાં સનાતન વૈદિક ધર્મનું રક્ષણ કરનાર કોઈ મહાધુરધર નેતાની આવશ્યકતા હતી, કહો કે તે માટે પ્રજાનાં પ્રાકટયની જ જરૂર હતી. કારણકે ગીતામાં પોતે પ્રતિષ્ઠા કરી છે કે જ્યારે જ્યારે ધર્મની હાનિ થશે ત્યારે ત્યારે હું પ્રકટ થઈશ. એવી રીતની પ્રતિષ્ઠા પૂરી કરવા માટે પ્રજાએ સ્વાશે કરીને અનેક આચાર્યોનું સ્વરૂપ ધરીને સનાતન ધર્મનું સરક્ષણ કર્યું. વેદાદિ શાસ્ત્રમાં ધર્મનાં જે જે રહસ્યો બતાવ્યાં છે, તે તે રહસ્યોને તેવા તેવા સમય, દેશકાળ અને અધિકારીઓને જોઈને પ્રકટ કર્યાં અને એક વાર ફરીને સનાતન ધર્મને ઉચ્ચ દશામાં લાવી મુક્યો. આ મમ્મ પછુ વ્યતીત થયો, હવે આગળના સર્વ સમયને જુલાવી દે તેવા સમય આવ્યો છે. ધર્મનાં સ્વરૂપોના લોપ કરનારા અને ધાર્મિક મર્યાદાને નહિ ધ્વજનારાઓનો સમૂહ દેશમાં વંધવા લાગ્યો છે. ખડારથી અને અંદરથી સનાતન ધર્મ ઉપર પ્રકાર થતા લાગ્યા છે. કેટલાકે જ્યારે પ્રકટ રીતે હુમલો કરે છે કે સારે કેટલાકે કહો કે પહિત-વંચો કો ધર્મની અંદર પેળીને ધર્મથી યુક્ત જનસમાજનો વિશ્વાસ ખેળવીને ધાર્મિક પ્રજાને ધર્મચ્યુત કરવાનો પ્રયાસ કરવા લાગ્યા છે. આવા ચિકટ સમયમાં ધર્મના સદાપ્રહીઓને માથે સ્વર્ણમવ્લય ધર્મણ ત્રાયતે મહત્તો મવાત્ એ કથનાનુસાર ધર્મરક્ષણનો પ્રસંગ આવ્યો છે. એક રાષ્ટ્રનો વિશ્લેષ કરતા માટેના જેટલા પ્રયોગો થાય છે; તેટલા, કહો કે તેથી પણ વિશેષ પ્રયોગો ધર્મના નાશ માટે થતા લાગ્યા છે. પરંતુ વાહરે

આખો દેશ ઉદ્યોગહીન, અર્થહીન, કંગાલ થઈ ગયો. ઠરોડો ખેડાર આહુડાઓને ખોળામાં સ્થપી ભારતમાના રહી રહી છે ! આ બધી દશાના જવાબદાર અંગ્રેજ કેળવણી પામેલા દેશનેતાઓના સમૂહ છે. હવે તેઓની આંખો ઉઘડી છે. હવે ખાદીનો જ ઉપયોગ કરવાની ખામ પોકારવા માઠી છે. આર્થ સંસ્કૃતિમાં વસ્ત્રોમાં મુખ્યસ્થાન ખાદીનેજ હોય, પણ યુગપ્રીય સભ્યતાના ચળકાટમાં પતંગીયાંતી પેટે પ્રાણપાંચુ કરનારા એ નબ્બ શિક્ષિતોને ખાદી ક્યાં મળતી હતી ? ખાદી પહેરનારા ધાર્મિકોને તો તેઓ હસતા હતા પણ બ્રહ્મચારી તેમની આંખો ઉઘડી ગઈ અને હવે ખાદીરવાનો સ્વાગ ખૂબ બજાવવા માંડ્યો છે. આ એકજ ઉદાહરણ ખસ છે. જો એક બાલ એટલે આ શરીર દાંકવા જેની જાળનમાં આર્થ સંસ્કૃતિને ઊરાહી મેલીને પાશ્ચાત્ય સુધારાના યુગમાં બન્યા તો કેવા હીન દશામાં આવ્યા ? આ એક માત્ર બહારના પોપાકના ત્યાગથી જ આ દશા થઈ તો જીવનપ્રાણ જેવા ધર્મના અનાદરથી કેવી હીન તેમજ ભયંકર દશા થશે તેનો વિચાર કરવો રહ્યો. વર્ણશ્રમવ્યવસ્થા જો તોડવામાં આવશે, પાતિનત્વના આદર્શોને પગતળે છુંડવામાં આવશે, સ્પર્શસ્પર્શ અને ખાનપાનનો વિવેક નહિ રહે તો સમાજ કેવા દુખના ગંધાતા કોચમાં સડશે કે જેનો ખ્યાલ પણ રવાડાં ઉભા કરે છે ! જેમ માત્ર સુદેશી વસ્ત્રોના ત્યાગથી હીન દશા સાંપડી અને વિદેશીનો બહિષ્કાર કરવા માટે હવે પ્રાણપાંચુ કરવાનો મમય આવ્યો, તો આપણી સંસ્કૃતિઓને દેશવટો દીધા પછી શા દાલ થશે ? પછી ખાદીના ઉપદેશની જેમ વર્ણશ્રમના વખાણ થશે કે ? પાતિનત્વની પીછાણ થશે કે ? નીતિ અને ધર્મના આદર્શોનો આદર કરવામાં આવશે કે ? અત્યારે તો આ દેખાતી વસ્તુચિંતિને પણ કોઈ નહિ જ ભુલે. “દાપોજ પાછા વળવાના” છે ! હમણા તો સ્વાસ્થ્યની મદદાળની લાલચે પોનાની સંસ્કૃતિપ્ર પ્રાણપાંચુ કરી હતી, આત્મચિંતાથી થઈને વિદેશીઓની સભ્યતાના ગુણાગ જ બનવાના છે. આ પ્રવાહને કાણ અટકાવી શકશે ? તો પણ ધર્મપ્રાણ આચાર્યશ્રીઓ અને વિદ્વાનોએ સામયિક પ્રવૃત્તિ કરે જ પુરેકા છે.

ધર્મ માટે સર્વત્યાગ કરનાર તપસ્વી—સમયનો પ્રખય પ્રવાહ, અને તેના ભયાનક પરિણામના આગ દ્રશ્ય સમર્થ વિદ્વાન શ્રીયુગ લક્ષમણ શાસ્ત્રીએ પરિચિત્તોને અનુભવ કર્યો. એમનામાં રહેલું શુદ્ધ બ્રાહ્મણ વર્ચસ્વ ધર્મદશાનો ચિનાર જોઈને શેમાચિત થઈ ગયું. એમણે ધર્મ રક્ષણ માટે કમર કમી. દ્રવ્યોપાર્જન માટેના પ્રયાસો કાલમને માટે છોડી દીધા. જ્ઞાન, અપમાન, ભોભ, વાલચ વગેરેનો સાથ સંપૂર્ણ રીતે ત્યજ્યો. કેવલ હૃદયમાં ધર્મરક્ષણની ધગશ લાલકી રહી ! કુલા, વૃષા, નિશા વગેરેની પણ પરવા ન કરી. છતિદાસમાં કંઈ નહિ સંભાળેલું, આધુનિક દષ્ટિએ તદ્દન અમંભાવિત એવું માદગાર બ્રાહ્મણમહાસમ્મેલન કાશીમાં ઈર્ષ્ય. સર્વ સંગ્રામોના મદાન આચાર્યોને એક જ તીર્થસ્થયમાં, એક જ સભામંડપમાં એક જ રંગમંડપમાં પધરાવીને ભારતના ધાર્મિક છતિદાસમાં એક અનોડ લખાવો જેમાઠી દીધો. ઉપદાસ કરનાગ સુધારકોના હાંત પણ ખાટા થઈ ગયા. તેઓ શરમને લીધે કાશીમાં ગ્રહો પણ બતાવતા ન હતા. એ માદગાર સમ્મેલનનો ધાર્મિક જગતમાં થોડો પ્રભાવ પડ્યો નહતો. આ સમ્મેલનનો અર્થ યશ શ્રીલક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજીને જ થયો છે. એ સમ્મેલન પછી તો સ્થિતિનું ઝડપથી પરિવર્તન થઈ ગયું. સુધારક ગણાતા દેશનાયકોએ સાર્વજનિક સંસ્થાઓમાં તથા દેશની વ્યવસ્થાપિકા સંસ્થાઓમાં સતતતન ધર્મ પર ગુમ તેમજ બહેરમાં પણ છુરી ફેરવવા માઠી ધર્મહાસ કરનારા કાનનો ધડવા માડ્યા. તેમાંનો એક શારદા એ ઉપનામના સંભાસનો યવના-યનપૂર્ણ ખરોડો તો પાસ પણ થઈ ગયો. આથી સનાતન પ્રજા બળભગી બની. શાસ્ત્રીજી તો આથી

ખૂબ ખિન્ન થયા. તેમણે તો હવે લેખ જ લખ લીધો. અવિરત પ્રયામ કરવા માડ્યો. ધર્મહાસ કરનારી ચાલુ પ્રવૃત્તિ સામે જે શસ્ત્રો રક્ષણ કરવા યોગ્ય છે તેનો સંગ્રહ કરીને ઉપયોગ કરવામાં પાછી પાની ન કરી. તેમણે ‘અખિલ ભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ’ નામની સંસ્થા સ્થાપીને રચનાત્મક કાર્યક્રમ પ્રારંભી દીધો. મહામહોપાધ્યાયની સરકારી પદવી સરકારને પાછી મોકલી આપી. સ્થલે સ્થલે અવિશ્વાન પ્રયાસ કરીને ‘સંઘ’ શાખાઓ તથા પ્રચાર કાર્ય મારફતે સુસિ સેવની સનાતની જનતાના કાનમાં દુંદુભિના નાદો કરવા માડ્યા. આથી વિદ્વાનો તથા આચાર્યશ્રીઓ પણ જાગૃત થયા અને તેમની સાથે પૂજ્ય સહકાર કર્યો. છેલ્લા સમયમાં મહારાષ્ટ્રના એક જ ધર્મવીર મહંત સંત સંતોષ મહારાજની સહાયતાથી મહારાષ્ટ્રમાં ખૂબ પર્યાટન કરીને જાગૃતિનો સંચાર કર્યો. શાસ્ત્રીજીના નિ.સ્વાર્થ ત્યાગમય જીવનની અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિની ભારે અસર થઈ. એથી જલગામમાં ‘સંઘ’નું ખાસ અધિવેશન રાખવામાં આવ્યું. એની સફલતા માટે તકામાર તૈયારી પણ કરવા માડી.

રાહ જીવે છે. આવા વિપત્તિના સમયમાં પણ જો આપશ્રી ન પધારે તો અમારો ધર્મ સુરસિન કેમ રહે ? ”

શ્રીવદમણ શાસ્ત્રીજી તથા સંતોજી મંદારાજ પૌષ વદ ૧૩ ગુરુવારના પત્રથી લખે છે કે:- “જનતાપર પ્રભાવ પાડવાનું કાર્ય તો આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓના પધારવાથી જ બની શકે છે. અમે સેંકડો પ્રયાસ કરીએ તો પણ તેથી કાંઈ સિદ્ધ ન જ થાય. આપનાં સાન્નિધ્ય અને કડાક્ષ પાત્રથી જનસમૂહના મનમાં અતિ આદર ઉદ્ભવશે. આપશ્રીના પધારવાથી અહીં મંદારાજીય તથા ગુજરાતી જનસમૂહ સમુદ્ધતી પેડે પ્રસરી જશે. જો આપશ્રી નહિ પધારે તો અમે અત્યંત દુઃખી થઈશું અને સનાતન ધર્મનું રક્ષણ પણ હુઈટ બનશે....આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓએ તો કલેશ તથા શ્રમ સહન કરીને આ ધર્મરક્ષણ કાર્ય કરવા પધારવું આવશ્યક છે. અમારી આ પ્રાર્થના નિષ્ફળ નહિ જ નવ સમય હવે થોડો છે માટે તારફાર જવાબતી રાહ જોઈએ છીએ. ”

શ્રીનાથદ્વારાના સંયોગો—ઉપરના તારો તથા પત્રો વખતે શ્રીનાથદ્વારામાં જુદા જ સંયોગો હતા. શ્રીમાન્ બાવાસાહેબના નાનાં શીબેટીજીનાં શુભ લગ્ન થયે થોડો જ સમય વીત્યો હતો. ઉપરાંત પૌષ સુદ છઠ્ઠા ત્રીજ શ્રીમાન્ બાવાસાહેબનો જન્મદિનનો પ્રસ્તાવ હતો. મને તો ચતુર્થપંચમપીઠાધીશ્વરનો કામવનથી તાર મળ્યો કે, કાર્તિક વદ ૧૩ ના રોજ હું શ્રીનાથદ્વારા પહોંચીશ, માટે ત્યાં જલ્દી આવવું. હું દીપોત્સવાક પ્રકટ કરીને, વી. પી. કરીને, કાર્તિકાંક પ્રકટ કરીને સંપત્ત મહેનતના કારણે તાવમાં તવાતો હતો. કાંઈ આરામની જરૂર હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારા જવાનું કોને ન ગમે ? હું તુરત જ કાર્તિક વદ ૧૧ ના રોજ રાત્રે અમદાવાદથી ગુજરાત ગેલમાં ઉપયોગ. લગ્ન પ્રમગે શ્રીનાથદ્વારામાં ખૂબ ધામધૂમ થઈ રહી હતી, પ્રસ્તાવમાંથી પણ સમય કાઢીને વ્યાખ્યાનોની યેજના કરવામાં આવી હતી. લગભગ બે બે કલાક સુધી સભાનો કાર્યક્રમ ચાલતો હતો. અપ્રદાશિક વિદ્વાનો—પંડિત શ્રીરમાનાથશાસ્ત્રીજી, પંડિત શ્રીનાથ-શાસ્ત્રીજી, પં. શ્રીકંઠમણિજી, પં. જટાશંકરજી, પં. વ્રજનાથશાસ્ત્રીજી આદિના વ્યાખ્યાનો યથા. ચાર દિન સુધી આ સભા ચાલી. શીત્લીયપીઠાધીશ્વર અને તેઓશ્રીના અનુજ ગે. શ્રીવિદ્યનાથજી બાવાસાહેબના વ્યાખ્યાનો યથા. શ્રીમાન્ બાવાસાહેબ શ્રીદમોદરલાલજી મહોદયના પ્રવચને તો ઘણીજ અસર કરી. શ્રીનાથદ્વારામાં આવું જાહેર વ્યાખ્યાન આપશ્રીનું પહેલું જ હતું એમ ત્યાંની પ્રગ્ન કહેવા લાગી. હિન્દુ પ્રગ્ન ઉપરાંત વડોરા તથા જૈન કોમના શ્રીનાથો પણ શ્રીમા-નના ભાષણથી ધણા જ ખુશી થયા અને પોતાના પવિત્ર નગરના યુવરાજ અને એક ધર્મોચાર્યના આવા વિદ્વતા અને વિચારોથી પૂર્ણ ગંભીર ઉદ્ગારો સાલળાને મગર બનવા લાગ્યા. લગ્ન માર્ગશીર્ષ સુદ ૧ ના હતાં. હું તો લગ્ન પ્રસંગ પછી શ્રીનાથદ્વારા છોડી જવાનો હતો. કારણ આપશ્રી કામવનથી શ્રીનાથદ્વારા પધારી શક્યા નહતા. છતાં પરમ લગવડીય શેઠ રણડાડાસજીના સૂચન હુકમથી રોકાઈ ગયો. વળી માર્ગશીર્ષ સુદ ૧૫ પૂર્ણિમાને રોજ દર વર્ષે હરપનભોગ થાય છે, તેનાં દર્શનની પણ લાલચ હતી. પછી તો આવ્યો શ્રીગુસાંધજીનો મહોત્સવ, તેનો લાલ કેમ ત્યજાય ? એટલામાં શ્રીમાન્ બાવાસાહેબનો પૌષ સુદ ૬ નો જન્મદિન આવ્યો. એટલે તો “એકે દારકા” કરી પડી રહ્યો. એટલામાં તો ઉપરના તારો તથા પત્રોની હારની હાર ચદ થઈ ગઈ. પ્રસ્તાવો અને ઉત્સવો એકઠા થવાથી જે પરિશ્રમ આપ શ્રીમાનને પડ્યો હતો, તેમ આ એક નવી જવાબદારીએ આવીને ઘેરો ધાર્યો ! આવા સંયોગમાં શ્રીનાથદ્વારા છોડાય તેમ હતું જ નહિ. છતાં ધર્મપ્રાણ પંડિતોનો મહાન્ આગ્રહ અને જે ધર્મરક્ષણ માટે શ્રીમાનનું પ્રાકટ્ય આ ભૂતલ ઉપર થયું છે, તે કાર્ય જ બ્યારે આવી પડે ત્યાર પછી કેમ બેસી રહેવાય ?

પંડિતોની નમ્ર વિનંતિઓ પર વિનંતિઓ તથા તારો આવવા લાગ્યા. આખરે જન્મદિવસ પણ શ્રીનાથદ્વારા ન કરનાં જલગામ જવાનો નિશ્ચય કરી નાખ્યો. આ વાત તો શ્રીનાથદ્વારામાં એકદમ પ્રસરી ગઈ. અધિકારી વર્ગે તથા કર્મચારી ગણે તો પોતાની ઉન્નતિ તથા કદર થવામાં આ અણુકાણું વિદ્ય આવી ગયું જણીને પોતાના ભાગ્યને ઉપાલંબ આપવા લાગ્યો. કારણ કે જન્મદિનના અંગે જે દરબાર બંધાય છે તેમાં યોગ્યતા મુજબ પગારમાં વધારો થાય છે, સરપાવ તથા શેઠ રકમોથી કદર પણ થાય છે એટલે એમને તો ખેદ જ થાય. તેમાંએ વૈષ્ણવોની વાત શી ? દિવસોથી “જન્મ દિન લાલકો ફિર આયો” એ વધાઈનો સુમધુર નાદ હૃદયમાંથી નિકળતો હતો, તેવામાં એકદમ એ આનંદરસ ઝરતો નાદ, ધ્વનિ બંધ થઈ ગયો ! એટલે વૈષ્ણવોની આશા તો નિષ્ફળ જ થઈ ગઈ. ધણો જ કચવાટ કરવા લાગ્યા. જન્મદિનનો અતૈકિક આનંદ પોતાને નહિ મળે તેથી તેમનો ઉત્સાહ જ લાગી ગયો. વૈષ્ણવોના મુખો ઉપર તો આનિની છાયા છવાઈ રહી. સમય સમયપર વિનંતિઓ શ્રીમાનંતે યત્ન. જન્મદિનને દેવે વધુ સમય તો હતો જ નહિ. હાથમાં આવેલુ અમૃત કોઈ ઝુટારી જતું હોય તેવો અનુભવ વૈષ્ણવોને થયો. જન્મદિનનો આનંદ છોડીને શ્રીમાન્ જલગામ પધારે તેમાં કોઈ પણ રાજ ન હતું. આખરે લકિતની ઉચ્છ્વાસે પોતાનો અમરકાર ખતાવી દીધો. ભગવાનની નિષ્કુરતાને પીગળાવી નાંખી ! અકિતવશ પ્રભુ જન્મદિનનો આનંદ આપ્યા વિના કેમ છટકી જાય ? આખરે બધાની હાલ લાગણીને ત્રણ થયે જ છુટકો ! શ્રીમાને પણ જન્મદિન શ્રીનાથદ્વારામાં જ કયો જન્મદિનની રાત્રે જ શ્રીમાન્ તો માવથી જંકચન પધાર્યો અને લા જ પોટયા. કારણ કે પૌપ મુદ્દ છ ના રોજ સવારની દશ વાગ્યાની દ્રેનમાં તો કૂચ કરવાનું હતું !

સામાયક સ્થિતિની લીપણતા—એક વાત તો રહી જ ગઈ. સં. ૧૯૮૬ નો પૌષ માસ એટલે છ. સન ૧૯૩૧ નો જાનેવારી મહીનો. આપણી વિધિવિધિમાં રાષ્ટ્રીય લડતની પરાક્રમ્યે પહોંચેલો માસ ! હજારો દેશભક્તો જીવના જીવતા જ નરકવાસ કરતાએ ખરાબ દારાવાસમાં અમાનુષ ત્રાસને રાજપુત્રીથી ભેરી રહ્યા હતા ! હજારો બાલકો, સ્ત્રીઓ, વૃદ્ધો, યુવકો એ મહાન્ સ્વાતંત્ર્યયુદ્ધમાં મોટા જન્મ જેવા અધિકારીઓની લાગીઓ ખાધને, પોતાના રક્તથી લોહીનરથી ભૂમિની તુપાને દૂર કરતા હતા. રાજકીય લડતે ઉમર ૩૫ લીધું હતું. પીન્ડી સરકાર જરા પણ નમ્રતા તૈયાર ન હતી. રાષ્ટ્રીય મહાસભાએ તો આ છેલ્લી લડતમાં મર્ત્યવ હોમા દેવાનો નિર્ણય જ કરી નાખ્યો હતો. આવા વિકટ સમયમાં ઘરમાંથી બહાર પણ કોણ નીકળે ? તેમાંએ વળી આ તો સનાતન ધર્મનો પ્રશ્ન રહ્યો. સ્વતંત્રતાપ્રાપ્તિની ધૂનમાં પોતાના પ્રાણક પિતા મમ્મા ધર્મના આદર્શોને ઊંધી આંખે જોઈને, તેમને પોતાની કાર્ય-મિદિમાં નડતર સમાન માનીને મીટાવવાની જોશભેર ચળવળ કરનારા દેશનેતાઓ સામે આ સમયે કેમ થવાય ? સમગ્ર દેશમાં તેમની જ જાણે આજુ આલની હોય એમ હતું. તેમાં મુના-ઈમાં સનાતન ધર્મીય સભામાં જે ધાધલ ચર્ચ હતી, તેને કોઈ વિસરી ગયું ન હતું. આ વાતાવરણથી જલગામ નહિ જ જવાની સવાહ શ્રીમાનંતે મળી હતી શ્રીનાથદ્વારાના બધા વિચાર-શીલોએ એજ વિનંતિ કરી હતી. વિદ્યાવિભાગના નેતા શાસ્ત્રીજી રમાનાથજી તો ધણું જ ગભરાતા હતા. જલગામમાં શું થશે ? “વધુશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધ”ના અધિવેશનમાં કેવા તોફાનો થશે ? દેશની સ્વતંત્રતાની લડત લડનારાઓ સામે થવામાં અત્યારે કેવું જોખમ સમાયલું છે ? આવા અનેક દાંડપનિક તરંગો ઉડતા હતા. એ ઉપર પરિમિત જવણદિના તર્કો કોઈ વિચિત્ર પરિણામના બીજા ૩૫ને જોઈને બહારાઈ જતા હતા. પણ શ્રીમાનના આત્મજયની વાન જ કાષ

ઐર છે. આપના આદર્શો અને હૃદય જ ઠાંઈ અનેરું છે ! એક અભાગ્યારી દુઃખન ઉપર પણ મહાન વેરની ભાવના આપના હૃદયમાં કદી ઉદ્ભવતી નથી. આપના નિષ્કલમ્બ સરલ હૃદયથી એક વિરોધી પણ વધ યથ જન્ય છે. કાશીમાં શું હતું ? ત્યાં કાઈ વાતાવરણ સ્વચ્છ કે અનુકૂલ તો નહતું જ ! કાશીમાં શ્રીમાન્ પંચાયો ત્યારે ત્યાં પણ ઘણા વિચારશીલ વિદ્વાનોએ સભામાં ભાગ નહિ લેવાની યોજાનું વિનંતિ કરી હતી. પણ ત્યાં તો શાત અને પ્રકાશમય યજ્ઞકિરણોથી શ્રીમાને સર્વ-આચાર્યતારાગણુમાં એક શીતરશ્મિ ચંદ્રની માફક દર્શન આપીને બધાની અટકણે ખોટી પાટી હતી. કાશીની ઘાઘણ મહામજા સમયે જે ગૌરવ શ્રીમાને પ્રાપ્ત કર્યું તે સાપ્રદાયિક ગૌરવના ઇતિહાસમાં અદ્વિતીય રીતે ચિરસ્મરણીય બન્યું છે. આ પ્રકટ પ્રતાપના પ્રત્યક્ષ અનુભવ પછી મને તેની વિકટ રચિતિને પણ શ્રીમાન્ કાળમાં લાવવા એક મહાન સમર્થ મહાપુરુષ છે એ વાનમાં સંદેહ થવો જ ન જોઈએ. તો પણ જીવશુદ્ધિ અને સ્તેષ એ બન્નેના મિશ્રણથી માદા-ત્મ્યજ્ઞાન તિરોદિત થાય અને 'સ્નેહ સહ પાપસાંકા એ કવિકુલયુગ કાવીદાસના વાક્યનો પણ આક્ષાત્કાર સંભવે; એ જ પુષ્ટિમાર્ગની લોકોત્તર વિવક્ષણતા છે. એટલે અન્ય વ્યક્તિ 'સ્નેહવચ કે લૌકિક છદ્ધિએ શ્રીમાનના પ્રત્યક્ષ પ્રતાપજનને પણ ભૂલે એ જ સીધાવૈચિત્ર્ય ગણાય ! શ્રીમાન્ તો ઘોઘ જ એવી સવાહને આધીન થવાના હતા ? આપશ્રીએ તો જલ્દયામ પધારવાનો નિર્ણય કરી દીધો. તારથી ખબર આપી અને અગાઉથી "એડવાન્સ પાર્ટી" મોકલી દીધી.

જલગામ તરફ રવાના:—સં. ૧૯૮૭ ના પૌષ સુદ ૭ ને શનિવારે ૧૦ વાગ્યાની ટ્રેનમાં માવની જંકશનથી વિદાય થયા. રત્તામાં કાંઈ જાણવા જેવું અન્યું નહતું. મંદસોર ઉપર એક વૈષ્ણવ શ. મુનશી દર્શનાર્થે આગ્યા વૈષ્ણુવોને ખબર નહતી, તેથી સ્ટેશન પર ક્યાંથી આવી શકે ? રાત્રે રતયામ આવ્યું રતયામ રાત્રે ૧૦:૧૦ વાગ્યે છોડ્યું. 'બધા નિદ્રાવશ હતા. એટલામાં રાત્રે દોઢેક વાગ્યાના સુમારે જ્યજ્ઞયના ગજનભેદી ખનિથી બધા જાગૃત થઈ ગયા. જોયું તો ઈંદોર સ્ટેશન આવી મથું હતું સેંકડો વૈષ્ણુવો દર્શનાર્થે જ્યજ્ઞયનો ખનિ કરી રહ્યા હતા. શ્રીમાનને ડામાથી બદાર પધારીને દર્શન આપે છે તેટલામાં તો એકદમ ડામા પર બીડ તૂટી પડી. દર્શન પછી ચાલુરપર મારેની અંધીરના તો વૈષ્ણુવોની જોવા લાયકજ હોય ! એવી તો ધક્કામુક્કી શરૂ થઈ જન્ય કે જાણે સ્ત્રી, વૃદ્ધ અને બાલકોની તો દુર્દશા જ આટલી ! સ્વર્ણમેવકો ગિચાગ ચુ કરે ! એટ તો ફેંકવા મારી. મારી ઉપકવાની તૈયારી થઈ-મારી ઉપડી ત્યાં સુધી આ બીડ અને જેટના પૈનાની ફેંકફેંક ચાલુ જ હતી ! તેમાં એકાદ હથુ (બે પૈસા) તો મારા તથા પ્રાથમેટ સેક્રેટરી ગેડ રજીડોડાસ પેટવાદીનાં માથા કાઢ્યાં છે કે પાકા તેની ખબર લેવા આવી પહોંચે ત્યારે તો તેની ઐરજ લીજાત આવતી ! આખરે વૈષ્ણુવોના પ્રેમસાગરના મહાન તરંગો વચ્ચે મદાનોકાની જેમ આ જાગ્યરથ ધમધમાટ કરેતો આગળ વધ્યો. સ્ક્રવારે ખંડવા પહોંચ્યા. રોડ પુરુષોત્તમદાસ તથા મુખ્યાજી રતિપાવભાઈની આગેવાની નીચે વૈષ્ણુવ સમુદાય સ્ટેશનપર ઢાંજર હતો. વધારામાં હરદાથી પરમ ભગવદીય રાય-બદાદુર રોડ દરિયકરજી ઐનરરિ 'મેથરેટ્ટ પણ શ્રીમાનના દર્શનાર્થે આવી પહોંચ્યા હતા. અહીં તો મારી ઘણીજ રોકાઈ. એકસપ્રેસ આગે દોઢ કલાક મોટી હતી. આખરે મારી આવી અને નાની મારી બદલીને જી. આઈ. પી. રેલ્વેની મોટી મારીપર સત્રાર થઈ ગયા. થોડાજ સમયમાં જુદાનપુર આવ્યું. અહીંની બીડે તો ઈંદોર છુધારી રીધું. ચાલુરપર અને બંદરું દાવ અફજનજ હતું. સ્વર્ણમેવકોનો બદાખસ્ત સારો હતો. છતાં વૈષ્ણુવો તેમની અવરથાને તોટી નાખવામાં ભક્તિભાવની પરિસીમાં માને એટલે

ભગ્ય ધર્મધ્વજ શ્રીમાન આચાર્યચરણે દરકાન્યા પછી તેનું રહસ્ય ધર્મપ્રાણ શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ સમજાવ્યું હતું. તેમણે કહ્યું કે, આ ધ્વજમાં શ્રીશેષશાથી ભગવાન બિરાજે છે. બ્રહ્માજી ચાર વેદોનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે. જગદંબા શ્રીમદ્વાલકથી પ્રભુતા ચરણ મેલી રહ્યાં છે. આ પ્રભુ પાસે એક ગોમાતા આવી છે. એ ધર્મવિધ્વંસક અસુરોના આત્માચારોથી પીડિત ભારતની ધાર્મિક પ્રજાની પ્રતિનિધિ છે. મૂર્ધિવત્પ્રવચ્ચાજી એ શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધનું રહસ્ય આ ચિત્રમાં છે. ગોમાતા ભગવાનને વિનવે છે કે હવે અસુરોના ભારથી મુક્ત કરો. આ પ્રાચીન પરિસ્થિતિ અભારના યુગ ઉપર પણ રોશની ફેંકી રહી છે! તે પછી સ્વાગતસભાપતિ શ્રીસંતોજી મદારાજે પણ વિચેચન કીધું. આ ધ્વજ આચાર્યશ્રીના શ્રીદસ્તથી સ્થાપિત થઈ છે. એનાં રક્ષણ માટે સર્વસ્વનો ભોગ આપવા તૈયાર રહેવાનું છે. તે પછી એક ઉત્સાહી જોશદાર વક્તા શ્રીકમલનયનાચાર્યજી શાસ્ત્રીજીએ ગર્જના કીધી, કે “જેમ શ્રીસંકરાચાર્ય, ગમાતુળચાર્ય આદિ મહાત્માઓએ ધર્મ-ધ્વજ ઉઠાવીને સનાતન ધર્મને ડોકો વગાડ્યો તેમ આજના આપણા સમાપતિશ્રીએ આ ધ્વજ ફરકાવી છે! આ જલગામ કંડકારણ છે. ભગવાન શ્રીરામચંદ્રજીના સમયમાં હુકર તપસ્યા કરનાર મહર્ષિઓની આ તપોભૂમિ હતી. છતાં એ મહર્ષિઓને સંતાપનારા રાક્ષસો પણ આ ભૂમિમાં હતા. એ રાક્ષસોના ત્રાસથી બચાવવાની મહર્ષિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને ભગવાને ચૈત્ર દળાર રાક્ષસોનો સંહાર કરીને આ ભૂમિને નિષ્કંટક કરી હતી. ફરી અહીં મુસલમાનો આવ્યા હતાં શ્રીશિવાજીએ તેમનો સંહાર કરી નાંખ્યો. આ ઉપરાંત ધર્મધ્વજના ગીતો પણ ગરબા દતા, એવી રીતે સભામંડપ ઉત્તેજક ભાષણોથી ઉમળની ગયો હતો. ધ્વજમા બિરાજતા સાત્ત્વિક પ્રભુપાસે રાજસ તામસ વાતાવરણ પ્રસરતું હતું! શ્રીમાન બાવાસાહેબશ્રી આ કેમ સહન થાય? આપશ્રીએ પોતાની સ્વતંત્રસિદ્ધ શાત, સાત્ત્વિક સુમધુર શૈલીથી એક નાનું પણ છટાદાર અને અતિબોધક વ્યાખ્યાન કર્યું; અને મંડપમાની તામસ ઉગ્રતાને બદલે શાન ભક્તિરમ ભયો પવિત્ર પવન સંચરી રહ્યો. જનસમૂહનાં હૃદયોમાં કોઈ દિવ્યભાવના ઉત્પન્ન થઈ. આ રહ્યું તે ભાષણ:-

ઉપસ્થિત વિદ્વદ્ગણ, મહિલાગણ અને સભ્યગણ! વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંધના અધિવેશનને અને આજનો આ સમારોહ છે. અહીં એ સંધનો આ સમારોહ કેમ થયો? વર્ણાશ્રમ અને સ્વરાજ્ય; એ બન્નેનો સંધ કેવો? આદિ વિષયો ઉપર પછીથી કહીશ. હાલ તો આ ધર્મધ્વજના વિષયમાં કાંઈક કહેવાનો છું. આ દેશ ધર્મપ્રાણ છે. ધર્મ એજ ભાગતનું સર્વસ્વ છે. ભારતીય જીવનની વિશિષ્ટતા એ ધર્મ જ છે. ધર્મનું રક્ષણ ભાગ્યવર્ષ કરે છે અને ભારતવર્ષનું રક્ષણ ધર્મ કરે છે. અધર્મનો ત્રાસ કાંઈ આજે આ દેશમાં પહેલોજ પ્રસયો નથી. ધર્મ પણ વારંવાર યાત્ર થઈ જાય છે. ધર્મનું સ્વરૂપ પ્રકટ-પ્રત્યક્ષ તો હોતુ પણ નથી. જ્યારે ધર્મ પોતાનું સ્વરૂપ યાત્ર કરી દે છે, સંકેતી લે છે ત્યારે અધર્મનું વાતાવરણ જામે છે. અધર્મથી ત્રાસ પામીને જનસમૂહ ધર્મના પણ રક્ષણદાર પ્રભુ-ધર્મીને શરણે જાય છે. જલની અતિનૃપાવાળો માણસ જેમ કોઈ જલપ્રભુ તળાવને શરણે જાય તેમ દુઃખી પ્રજા આખરે ધર્મી પ્રભુને શરણે જાય છે. આ ધ્વજમાં તે જ વાત બતાવી છે. જુઓ, ભગવાન શેષશાથીના શરણુમાં પૃથ્વી અને બ્રહ્માદિક દેવો આવ્યા છે. ધર્મના ચાર પાદ (પગ) છે. તેમાં હવે કસિયુગમાં તો માત્ર એક જ પાદ રહ્યો છે અને તે પણ શિથિલ-અવસ્થામાં. એ માદનું ઉત્થાન થાય, ધર્મ સુરક્ષિત રહે તે માટે સર્વ સંધશક્તિએ એકત્ર થઈને સતત પ્રયત્નો કરવા પડશે. શ્રીનાગપણનાં પવિત્ર ચિત્રથી અંકિત આ ધ્વજ બતાવે છે કે પૃથ્વી અસુરભારથી દગાઈ ગઈ હતી. તેણે પોતાનું આધિદેવિક ગોમાતાનું સ્વરૂપ મદાણ કર્યું. વળી સર્વ દેશોમાં મુખ્ય દેવ બ્રહ્માજી હોવાથી તેમને

અગ્રેમર બનાવીને મદાદેવજી વગેરે શ્રીનારાયણ પાસે આપ્યા. આ વાત કહેવાઇ છે, છતાં “પિતૃસ્ય પેયણું મેધત્વાય” એ મીમાંસા-વાયથી ફરીને કહ્યું છું નારાયણ એટલે, નારયું, જલયું-અયન-સ્થાન; એવો અર્થ છે. આ ગામનું નામ પણ જલગામ જ છે ! (પ્રચંડ તાળાઓ !) અહીં દેવાની પેઠે આપણને શેષશાયી પ્રત્યક્ષ નથી. પણ સર્વના હૃદયમાં બિરાજતા એ પ્રજાનું ચિત્ર આ ધ્વજમાં છે ! તે જલમાં સ્નેહા નારાયણની જેમ આજે આપણે જલગામમાં આ રાષ્ટ્રધ્વજમાં બિરાજતા શ્રીનારાયણની પ્રાર્થના કેમ ન કરીએ ? જેમ ત્યાં પૃથ્વી આદિનો ભાર દૂર કરવા આઠા અખી તેમ અહીં પણ અલક્ષ્ય રીતે પ્રજા ધર્મરક્ષણ કરવાની આઠા કરી રવા છે. આ ઉપરાંત મને તો આ રહસ્યથી પણ એક વિલક્ષણ રહસ્ય ભાસે છે ! શ્રીવિષ્ણુના ચરણપરિવેશમાં અનેક ચિત્ર છે તેમાં એક ચિત્ર ધ્વજનું પણ છે. આ ધ્વજ તો અહીં ફરડી રહેલો પવિત્ર ધર્મધ્વજ જ છે એવી ભાવના જ હોવી જોઇએ. (જેસમેર તાળાઓ !) એ મદાન ધર્મધ્વજને સંભાળી રહેલા એક પ્રચંડ કાયાવાળા સ્વામી શિવાનંદજીએ એ ધ્વજ આ મમ્મે સંભાળતો આચાર્યશ્રીના પુનિત કરકમલમાં અર્પી દીધો !) એ જડાને તો પ્રજાના ચરણરૂપ ગણીને પૂજવો જોઇએ. એ વાત નિઃસંદિગ્ધ જ છે. એ ચરણના શરણમાં રહીશું, એ ચરણની છાયાનો આશ્રય કરીશું તો આપણે નિર્ભય છીએ. જેમ બ્રહ્માદિકની રત્નિ સંભાળીને લગવાને અવનાર લઈને, કાલનેત્રિ, કંસ વગેરેનો સંહાર કર્યો તેમ અત્યારે પણ એ જ પ્રજા સહાયક છે. અમારો ઉદ્દેશ કોઈનું ખૂટ ઇચ્છવાનો નથી. આ પવિત્ર ધ્વજ નીચે આપણા પ્રતિદંદીઓ પ્રતિસ્પર્ધીઓ આવે તો તે પણ નિર્ભય જ રહેશે. કોઈના નાશની ઇચ્છા આપણા હૃદયમાં ન જ હોવી જોઇએ. આપણે તો માત્ર પ્રજાની પ્રાર્થના કરીએ કે, એમની કુર્મતિનો નાશ થાય અને પ્રજા તેમને સુમતિનું દાન કરે. (કરતધ્વનિ !)

મદાન લગ્ય બુદ્ધસ-સરવસ,

આશ્રીન આર્યસંસ્કૃતિનો વિનયધ્વજ એ અલૌકિક સંસ્કૃતિના ઉદ્ધારક જગદ્ગુરુ શ્રીવત્સનાચાર્યજીના વંશજ અને મુખ્યપીઠસ્થિત એક વિદ્વાન આચાર્યશ્રીના મુખ્યારક હાથથી ફરકાવ્યા બાદ એક લગ્ય સરવસ નગર-પર્વટનાથ અને ઉત્સાહ-અભિવૃદ્ધિ માટે યોગ્યતામાં આવ્યું સરવસને મોખરે શરણાઈ વગાડતા વાળવાળા હતા તે પછી એજ મદાન આકર્ષક દિવ્ય ધર્મધ્વજ ઉઠાવીને લગ્નચેદ સ્વામી શિવાનંદજી ચાલતા હતા. તે પછી પંડિતો અને ધર્મપરાયણ જન સમૂહ ગોહવાયો હતો. મધ્યમાં શ્રી. લલમણુદાસશ્રીજી ‘શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ હરે મુરારે, હે નાથ નારાયણ વાસુદેવ !’ એ શ્લોકથી લગવન્નામનો ધ્વનિ કરતા તથા અસંખ્ય જનસમુદાય એ પવિત્ર નામોચ્ચારો ઝીંકીને ગચનમાના અપવિત્ર વાતાવરણનો નાશ કરતા હતા. આસુર વાતાવરણ તો સૂર્યોદય થતા અંધકારની જેમ કોણ જાણે ક્યાં લપાઈ ગયું હતું ! “જગદ્ગુરુ શ્રીવત્સનાચાર્યજીની જય” “શ્રીનાથજીની જય” “શ્રીદારિકાધીશજી જય” “શ્રીદામોદરલાલજીની જય” “સનાતન ધર્મજી જય” ના મદાધ્વનિના મનાતનેધર્મીય જનતા ગચત છે અને સ્વધર્મ માટે પ્રાણાર્પણ કરવા તૈયાર છે એમ હાખવતી હતી મહજ અંધારે થતા અનેક આસતી બત્તીઓ પણ દાગર થઈ ગઈ. સરવસમાં ગયેથી પાછળ શ્રીમાન સંભાળતો મદોદય પોતાની મોટરમાં બિરાજ્યા હતા. સરવસનાં રક્ષણાર્થ મજબૂત સ્વયંસેવકોએ ચોતરફ પહેરો રાખ્યો હતો. સંભાળતીની મોટર પર તો અસાધારણ જનસમૂહ દર્શનાર્થ ધમતો હતો, તેથી અહીં તો વ્યવસ્થા જ મુરકેલ પડી હતી. શ્રીમાન માથે આવેલા લોકરી સીપાદીઓએ પોતાનું સર્વ જળ ખર્ચીને મોટર પરનો ધસારો કાઢ્યા લીધો હતો. રથે રથે સરવસના

સન્માનાય દરવાજાઓ તથા મુદ્રાલેખો હતા ! આ પ્રમાણે જ્યેનાદ કરતું સરવસ આખા ગામમાં ફરીને ઠેકાણે આવી પહોંચ્યું હતું. આ ધાર્મિક વિજયનાદ ન સાંખ્યારી ઘંટાકણું જેવી કોઈ વ્યક્તિઓ રસ્તામાં રાષ્ટ્રીય નેતાઓની જગના પોકારો કરતી, પણ તેમના પોકારના પડમા પણ તે સમયે પવિત્ર ધ્વનિ વાળી જનતાનાં હૃદયો ઝીંકી શકનાં ન હતાં. એ રીતે પહેલા દિવસનો કાર્યક્રમ સુખશાંતિથી પૂર્ણ થયો હતો. શ્રીમાનને રેલ્વેનો શ્રમ ઉત્તરો વગેરે હતાં પણ અધિવેશનને પાર, ઉતારવાની વિચારણામાં ફિસે પણ નિદ્રા ન લીધી અને રાત્રે પણ ફરી વિચાર ચાલ્યો. શ્રીમાને તો જમતી દરકારજ ન કરી. ધર્મરક્ષણયે ગમે તેવા ત્રાસ પણ સહી લીધો.

જલગામમાં અદ્ભુત જનસમૂહ—સંમેલનને અગે આટલી મોટી જનસંખ્યા યશે એનો સ્વપ્ને પણ ખ્યાલ ન હતો. ઠંડીની મોસમ હતી છતાં તે સમયે શીતતાએ ચાત રૂપ ધરીને જનતાને કેટલીક સવડ પણ કરી આપી હતી. 'સંઘ'ની શાખા-પ્રચાખ્યાઓના લગભગ પાંચીસો પ્રતિનિધિ આપ્યા હતા. નેપાલ, બંગાલ, ગિદાર, પંજાબ, સી. પી., મદ્રાસ, કેન્ટક, રજપૂતાના, રુજરાત-કાશિયાવાડ, આસામ, સિન્ધ, આદિ વિભાગોમાંથી અનેક ધાર્મિક સજ્જનો અને વિદ્વાનો હાજર થયા. ઉપરાંત અન્ય દર્શનકર્તાઓની બીડતું તો પૂછતું જ શું ? જાણે માનવ મહાસાગર પૂર્ણ ભરતીએ ચડ્યો હતો. આખું જલગામ 'નરગામ'ના રૂપમાં ફેરવાઈ ગયું હતું. જનસમૂહની શ્રદ્ધાનો તો પાર પણ ન મળે. બધા આચાર્યશ્રીઓને વંદન કરી આવે ! શુદ્ધાદિત-સંપ્રદાયના મુખ્ય પીઠના આચાર્યશ્રી પહેલવહેલાજ પધારેલા એટલે શ્રીમાનના બંગલા પાસે તો ચોવીસે કલાક મેદિની જામેદારી રહેતી હતી. મહારાષ્ટ્રની (દક્ષિણી) ગ્રામ્ય જનતાને ખબર પણ ન હતી કે આ તે કયા મંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી છે ? કેટલાક તો બોલે કે " શ્રીનાથદાસ-મઝ્યે શંકરાચાર્ય આદે. " તો પણ તેમની શ્રદ્ધાની અલિહારી છે ! શ્રીફળ લઈ લઈને આવે. શ્રીમાન આચાર્યશ્રી એકજ વખત ચરણરૂપશં આપવાનો નિયમ અહીં જાળવી રાખ્યા નહિ. લગભગ કલાક બે કલાકે ચરણરૂપશં આપવાં પડતાં ! વળી તેઓ ચરણરૂપશં પણ અજળ રીતથી કહે ! બન્ને આખો અને મારું ચરણને લગાડે સારે જ તેમને સંતોષ થાય. સ્ત્રીપુરુષને 'એક સરખો જ ભાવ હતો. શ્રીલક્ષ્મણશાસ્ત્રી અને શ્રી સંતોષ મહારાજને તો આ માનવસાગરનું કેમ સ્વાગત કરવું તેનો જ વિચાર થતો હતો ! એ બન્ને મહાનુભાવોએ દિવસોથી લુપા, નૃપા, નિદ્રાનો ત્યાગ કર્યો હતો. વિદ્વાનોના આદર માટે જીવતોડ મહેનત કરી રહ્યા હતા. ધર્મનિષ્ઠ શેઠ જમણીસન રામવિદ્યાસજીનું જીર્ણીક ફેડટરીનું દોઢ માઈલનું કંપાઉડ અને તેમાંનાં બધાં મકાનો તંબુઓ સ્વાગત માટે તૈયાર હતા ! જાણે જલગામની રૂપથી કરતું નરગામ જ હા વચ્ચું હોય એવો દેખાવ થઈ ગયો હતો. તે ઉપરાંત ગામના મકાનો, રૂઢી વગેરે પણ શેઠનાં હતાં. ચારસો સ્વયંસેવકો હતા. ઉગ્રાણ, સુહાનપુર, ચાલીસગાંવ, મહાવીર વ્યાયામશાળા, ખજૂરબ વ્યાયામ શાળા આદિના સ્વયંસેવકોનો બંદોબસ્ત તારીફ લાયક હતો. સુહાનપુરના સ્વયંસેવકો તો વૈજ્ઞાનિકો હતા. અધિવેશનની આ મહત્તા, આ ગૌરવ, આ ભવ્યતા વિરોધીઓના હૃદયમાં આજ સંગાવતી હતી. મહાયજુનો ધ્વંસ કરવા જેમ અસુર આવતા તેમ કેટલાક દેવીઓએ આવીને ધર્મનિષ્ઠ અત્યંતેને બહેકાવવા માંડ્યા હતા. રાત્રે જાહેર રસ્તાઓમાં પણ લાપણો કરીને સંમેલનવિરુદ્ધ તેમને ઉકેરવાનું કામ ચાલુ કર્યું હતું.

અનિર્વર્ણનીય-મહાસંમેલન.

પૈપ સુદ ૬ સોમવારનો દિવસ તો મહારાષ્ટ્રના ધાર્મિક ઇતિહાસમાં ચાદગાર રહી જવો. વીસ હજાર સંખ્યાનો જનસમૂહ ભાગ લઈ ચકે તેવા મહાન વિશાલ મંડપ તૈયાર કરવામાં

સંધનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનો ઉદ્દેશ એ છે કે જન્મથી જ વર્ણવ્યવસ્થા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધ્યેયનું રક્ષણ થાય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું અસારે ચારે બાજુ પરથી ધર્મનો નાશ થઈ રહ્યો છે હવે તે તરફ ખેંચકારી બતાવશે તો ધર્મનો નાશ મનીષમા જ છે આ અગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી રૂઢી અને ટેલેન્સે મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માંડી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર ડગવાદ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે આ આસુરી તાલીમ લઈને અનેક પ્રકારના કુતરો જનસમૂહ રતો થયો છે તેમજ તેવા કેળવાયવા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ધુસી જઈને ધર્મનાશને યિ દેશને લઈ જવા માગે છે સ્વચ્છદ ખાનપાન, પુનર્તંત્ર, વધુનંતરલક્ષ વેદ તીર્થાદિનો તેરસકાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે તેઓ માત્ર સ્વધર્મનાશક સ્વરાજ્યની ચાલેના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને રોકવા માટે જ આ સંધની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેગવેલુ સ્વરાજ્ય તે સ્વરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ થશે સંધનો ઉદ્દેશ હાલના પાર્લામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા માનતો નથી ગાંધીજી પોતે પણ પાર્લામેન્ટની વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જો કે મોતીલાલ નહેરુ ગિરે તો ભારત વષને યુરોપ બનાવવા આહ્વાન કરે છે પણ આ સંધ તો સ્વરાજ્યને આહ્વાન કરે છે હિન્દીનીના સ્વરાજ્યને માનતો નથી. અહીં તો ક્ષત્રિય કુલોત્પન્ન ધર્મનિષ્ઠ પ્રજાપાતક એ જ રાજ્ય જોઈએ આનું નામજ ખર્ચ સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે આ વર્ણુની કારનાને આ સ્વરાજ્યમા સ્થાન નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય સિદ્ધાંત જ એ છે કે કોતપોતાના ધર્મમા રહી સિદ્ધિ મેગવરી એવે મુસનમાનો કે દ્વિચિયનોના ધર્મમા ડબન : વાનો ઉદ્દેશ તો હોય જ નહિ મુસનમાન હિન્દુ ન બની શકે અગી હિન્દુ મુસમા બની શકે એટલે ધર્મવિદેવના મુજબ ઉખડી જરો આવે વિદ્યા સનાતન આદર્શ જગત્મા છે : મુસનમાનો તથા ઈસામજીએ બીજાએ વગાવવા માગે કેવા જુઓ કયા છે ?

કોંગ્રેસ અને સંધ—આજમા સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માગે કોંગ્રેસ દેહાત કષ્ટ સહન કરી રહ્યો છે કોંગ્રેસે પણ વિદેશી બહિષ્કાર તથા સ્વદેશી પ્રચારના શસ્ત્રો લીધા છે પણ તેનું ધ્યેય અર્થ : એ છે આ સંધ તો ધર્મવૃદ્ધિથી જુએ છે અને વિદેશી માત્રમા અપવિત્ર બીજો છે તેને અપકવાનીએ ના પાડે છે આ વિષય પર ‘સંધ’ પ્રવાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસની કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેમ કોંગ્રેસની બીજા ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ પવને કાંઈ વિરોધ નથી જ પણ કોંગ્રેસને ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તે તેનો વિરોધ તો મધે જ કરવો રહેશે.

આજુ નાજમતા—આચાર્યજી અને પંડિતજીનાં યાદ રાખો કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધર્મરક્ષા થઈ શકે તેમ નથી સરકારે શિક્ષણને પોતાના પગમાં દસાવ્યું છે તેમાથી આપણે આવી પ્રજાને મુક્ત કરી એ આપણ સૌથી પહેલું કામ છે, અને તે કામ છે, એકની કેળવણી જ નહિ પણ અમારા ઋષિમુનિસમન ધર્માર્થ કામ મોક્ષ રૂપ ચાર પુરુષાર્થ પણ તરફારે સર મેના જે માગે વળ મોળના ભાષણથી અને કાગળપર લખેલા કંઠાવથી કાંઈ પ્રયત્નિદિ થવાની નથી બાદ વિવેચનના સમય કરતાં પણ અધિક જોરથી અત્યારે યુરોપી રાજ્ય સંસ્થાના આપ લોકો ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઈ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ દગથી વેદશાસ્ત્રોએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ કરી દીધું છે રાજ્યની સ્થાના એવા પ્રકારની કે કે જેના સંજ્ઞામા આવતા પૂર્વજોના ધ્યાપેવા સામાજિક રાજકીય વગેરે માર્ગો તથા વ્યવસ્થાને

शुद्धादित



आर्यसमृति-सनातन धर्मक रक्षणार्थं महान् स्वार्यन्यागी
 और
 अखिलभारतवर्षीय स्वराज्य संघक स्थापनाक अग्रणी नेता
 धर्ममाण विद्वद्भर श्रीयुत् लक्ष्मणशास्त्रीजी दाविड.

૧ સંધનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનો ઉદ્દેશ એ છે કે જનમથી જ વર્ણવ્યવસ્થા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધ્યેયનું રક્ષણ ચાર્ય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું. અત્યારે આરે બાળુ પરથી ધર્મનો નાશ થઈ રહ્યો છે. હવે તે તરફ ખેલકારી બતાવાશે તો ધર્મનો નાશ મમીપમા જ છે. આ અગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી રફોલો અને કોલેજો મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માંડી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર જડવાદ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે. આ આસુરી તાલીમ લઈને અનેક પ્રકારના કુતકો જનસમૂહ કરતો થયો છે. તેમજ તેવા કેળવાયવા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ધુસી જઈને ધર્મનાશને પથે દેશને લાઇ જવા માગે છે. સ્વચ્છંદ આનંદપાન, યુનવર્ગ, વર્ણાન્તરલગ્ન વેદ તીર્થાદિનો નિરસ્કાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે. તેઓ આવા સ્વધર્મનાશક સ્વરાજ્યની સાહના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને રોકવા માટે જ આ સંધની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેળવેલુ સ્વરાજ્ય તે સ્વરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ થશે સંધનો ઉદ્દેશ હાવના પાંચામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા માનતો નથી ગાંધીજી પોતે પણ પાંચામેન્ટરી વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જો કે મોતીલાલ નહેરુ વગેરે તો ભારત વર્ષને યુરોપ બનાવવા આહે છે પણ આ સંધ તો રામરાજ્યને આહે છે. કાલિન્ડીના રમકાઓને માનતો નથી. અહીં તો ક્ષત્રિય કુલોત્પન્ન ધર્મનિષ પ્રજાપાતક એક જ રાજ્ય બોધ્યો. આનું નામજ ખરૂં સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે આર વર્ણની પદોરનાને આ રામરાજ્યમા ગ્રાહ્ય નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય મિદ્ધાત જ એ છે કે, પોતપોતાના ધર્મમા રહીને સિદ્ધિ મેળવવી એટલે મુસનમાનો કે કિશ્કિર્થનોના ધર્મમા કબજા કરવાનો ઉદ્દેશ તો હોયજ નહિ મુગનમાન હિન્દુ ન બની શકે અને હિન્દુ મુસલમાન બની ન શકે. એટલે ધર્મવિદ્વેષના મળજ ઉપડી જશે આવો વિશાલ સનાતન આદર્શ જગતમા આ છે ! મુસનમાનો તથા ખ્રિસ્તીઓએ બીજાઓને વરણાવવા માટે કેના બુલ્હો કયાં છે ?

કોંગ્રેસ અને સંધ—આજકાલ સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માટે કોંગ્રેસ દેહાત દષ્ટ સંકલન કરી રહ્યો છે કોંગ્રેસે પણ વિદેશી બહિષ્કાર તથા સ્વદેશી પ્રચારના શસ્ત્રો લીધા છે. પણ તેનું ધ્યેય અર્થ છે. આ સંધ તો ધર્મદૃષ્ટિથી બુદ્ધિ છે અને વિદેશી માત્રમા અપવિત્ર બીજો છે તેને અનુક્રાંતીએ ના પાડે છે. આ વિષય પર ‘સંધ’ પ્રવાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસના કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેમ કોંગ્રેસની બીજા ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ સંધને કાષ્ટ વિરોધ નથી જ. પણ કોંગ્રેસને ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તે તેના વિરોધ તો મંથે જ કરવો રહેશે.

આનું મંજૂરતા—આચાર્યજી અને પંડિતજી ! યાદ મળે કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધમરક્ષા થઈ શકે તેમ નથી સરકારે શિક્ષણને પોતાના પંચમા કસાબ્યું છે. તેમાથી આપણે બાની પ્રજાને મુક્ત કરવી એ આપણુ સૌથી પહેલુ કામ છે, અને તે ક’ણુ કામ છે, એકલી કેળવણી જ નહિ પણ અગારા અપિમુનિતમત ધર્માર્થ કામ મોક્ષ રૂપ, આર પુરુષાર્થ પણ તરફારે સગ કરેના છે. માટે કેરળ મોદાના બાપજોથી અને કાગળપર લખેલા ઠરાવથી કાષ્ટ કાર્યસિદ્ધિ થવાની નથી ‘મોદ વિપ્લવના સમય કરતા પણ અધિક જોરથી અત્યારે યુરોપી રાજ્ય રચનાથી આપ લોકોનું ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઈ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ દળથી વિદેશીઓએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ કરી દીધું છે. રાજ્યની રચનાજ એવા પ્રકારની છે કે જેના સંજગમા આવના પૂર્વજોના સ્થાપેલા સામાજિક રાજકીય વગેરે માંજો તથા વ્યવસ્થાને

शुद्धादित—२



आयमन्त्रति—सनातन धर्मके रक्षणार्थे महान् स्वार्थेन्यागी
 और
 अखिलभारतपर्याय स्वराज्य मयके स्थापनोके अग्रणी नेता
 धर्ममाण विद्वद्वर श्रीयुक्त लक्ष्मणशास्त्रीजी द्राविड.

गुड्डादेव



अखिलभारतवर्षीयधर्माश्रम स्वराज्यमघचे एफ. स्वा.पत्र
ओर

अलगायक दसुयमहाधियेशनचे स्वागत सभापति

श्रीसन्तोषी महाराज, (कुकरभुंदा)

આપણને અણુઓ ઉપજે છે. ધર્મપ્રેમી સુસજ્જમાનો પણ એ વિદેશી રાજ્યની કળમાં કચડાતાં ખિલાફત જડમૂળથી ઉખરી ગઇ. એજ દશા ચીન જાપાનની થઇ. એ વિદેશીઓની આસુરી માયાવી વ્યામોહક સુકિત અદ્ભુત રીતે જાન જુલાવનારી છે.

અહીં ભારતમાં પણ વિદેશીઓના વ્યાસંજયી ઋષિમુનિઓની આદર્શભૂત ચાતુર્વૃક્ષાત્મક સમાજરચના અને રાજકીય વિભાગ નાશ પામી રહ્યા છે. તેમને પુનર્જીવિત કરવા છે. જદુર્માનની રાજ્યકારભારની માયાવી જાળ એર છે. મતાધિકાર ક્યા નૈતિક સિદ્ધાન્ત પર આપવામાં આવ્યો છે, તેની તો કોઈ તપાસ કરો. ત્રણ ત્રણ વર્ષે ચૂટણી, કોઈ પણ નૈતિક ધોરણ વિનાની મતદારી અને ઉમેદવારી! આવી રીતે ચાલતો કારભાર તે પણ એરજ તરેહનો હોય એમાં શી નવાઈ. એનો પરિણામી દાખલો એ સારડા કાયદો છે. સુધારકોના મતાધિક્યથી એ કાયદો થયો. સનાતનીઓ કમર કસે તો એ એસેમ્બલીમાં એ કાયદો રદ કરાવવો કંઠે નથી. આજ દશા રાજનૈતિક તથા સામાજિક પ્રસ્તાવોની છે. જે દેશની રાજકીય સભા અસ્થિર, તો તેથી શું સ્થિર કિતકાય થાય? પાશ્ચાત્ય પ્રજાઓ આમજ ચગડાણે ચડી છે.

આપણા દેશની વ્યવસ્થા આપણા સ્થિર મનાતન ઋષિ કૃત નિયમો જે અપૌરુષેય વેદપર રિચન છે, તે પ્રમાણે ચલેલી છે. અમારી આ ધર્મવ્યવસ્થાનો નાશ કરનાર આસુરી રાજવિભાજ છે, વિદેશી ચોડા નથી, તેથી એ આસુરી રાજકીય વિભાજનો જ નાશ કરવાની જરૂર છે. આચાર શ્રીકુમારિલ ભટ્ટાચાર્ય વગેરેએ જેગ પોતાના તપોબળથી બૌદ્ધ આક્રમણને પાછું હટાવી દીધું, તે પ્રમાણે કાર્ય કરવા આ અધિવેશન કર્યું છે.

વેદવેદાંગનિષ્ણાત પંડિતોનો દ્વાસ થતો જાય છે તથા પ્રાચીન વિદ્યાનો પુનરુદ્ધાર પણ કરવાનું કાર્ય ઉભું થયું છે. વિદ્યાપીઠની રચના કેવી હોવી જોઈએ, તે વિષે મારા નમ વિચાર આપની આમજ મુકું છું. સનાતન ધર્મ જાતિ અને તે તે જાતિના સિત્તજિજ્ઞ કર્તવ્યોના વિવેકપર આરા આપી રહ્યો છે. શિક્ષણ યથાધિકાર હોવું જોઈએ. કેવળ શિક્ષવિદ્યા કળા જ નહિ, પણ પ્રાચીન ગ્રંથોના પઠનપાઠન પર પણ ધ્યાન અપાવું જોઈએ. સનાતન ધર્મ પર હુલા કરનારાઓનાં લોકવચ્ચ લખાણો જેરી બહાર પડે છે, તેથી તેના ખંડનનું કામ પણ જરૂરી અને બહોળા વિસ્તારમાં થવું જરૂરું છે. સનાતની સમાજ ધોર નિદ્રામાં પડ્યો છે. સર્વની જડ પુરોહિતો તો અત્યંતમા ડુબ્યા છે. તેથી સર્વનો ત્યાગ કરી આ બાજતે ભગીરથ પ્રયત્ન કરવો પડશે. મંદિર મઠ અને ધર્મોદા ખાતાઓના મહંતો વહીવટદારો વગેરે પૈસા સાથે પ્રમાદમાં પડ્યા છે, તેમને પણ ધર્મના કામમાં ઉપયોગી બનાવવા પડશે. એ બાજત આ સધે દેખરેખ રાખવી પડશે. નહિ તો સુધરેલ જમાડકોની આખો ધર્મદાયની મિલકત કાયદાઓ કરી કબજે કરવા પર લાગેલી છે, આચાર્યપીઠોની પણ એજ દશાનો ભય છે. તેથી તેમણે પણ કમર કસી ધર્મરક્ષાર્થે આ સંઘ સાથે કામ કરવું જોઈએ. આ પ્રમાણે આ અધિવેશનને અનેક કાર્ય કરવાનાં છે તેમાં જન ધનની પણ ભારે જરૂર છે. આ અધિવેશન કોઇ સંસ્થાનો નાશ કરવાને થયું નથી. પણ ધર્મશિથિલતા છોડી સનાતનીઓ યથાસકિત અદ્વાપૂર્વક આચારપરિપાલન કરે તેવા યત્ન કરવાને આ સંઘ થયો છે.

સામયિક આંદોલનોનો આદર—આ સમયે ભારતવાસીઓ ધણ જ, કષ્ટમય જીવન પીતાત્રી રહ્યા છે. આવા વખતમાં એકસાંપીમાં અટકાવ થાય તેવું કાર્ય સંધ નહિ કરે એ નિશ્ચય

છે. આ વખતે જે આદિલન ચાલે છે, મુબાઇ, ધારાસણા, ખારડોલી, ખેડા વગેરે સ્થળે જન-સંમૂહે જે તનમનધનનો મહાન ભોજ આપ્યો છે તેને માટે ધણી ભાષણો ધન્યવાદ અર્પી રહ્યા છે. સરકારને પણ યાગ્યવધક્ય મદદિર્હી આ વાક્ય અંગે અપરંપુ કરીએ છીએ:—“પ્રજાને પીડવાના સંતાપથી પેદા થયેલો અગ્નિ, રાજાના કુલને રાજવંશીને, રાજાના પ્રાણને બાળી નાખ્યા સિવાય પાછો ફરતો નથી.” આ સ્લોક સરકાર માટે એક લાયકિદરૂપ યર્ષ પડેલો નેપ્રએ. આ વખતે આ સંધ સનાતની ‘જનસમૂહને નેરશોરથી દુઃકુલિનાદ કરીને કહે છે કે સ્વદેશી વસ્ત્રો જ સનાતનીઓ પહેરે, મીસના પણ કપડાં ન પહેરતાં શુદ્ધ ખાદીના જેડીયાથી કાંતેલાં અને શાળોમાં વણેલાં કપડાંનો જ સ્વીકાર કરે.

આ અધિવેશન માટે જે યજ્ઞોએ સહાયતા કરી છે તે બધાને શ્રતથઃ ધન્યવાદ થટે છે.
 નમો ब्रह्मण्यदेवाय गोत्राक्षणाहिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

તર્કપંચાનનની ગર્જના.

તે પછી અ. ભા. વર્ણોત્તમ સ્વરાજ્યસંઘના પ્રથમ વર્ષના પ્રમુખ શ્રીમાન પંચાનનજી તર્કરત મહોદયે પરિષદમાં ભાષણ કરતાં જણાવ્યું કે:—

માનનીય ધર્મોત્તરાગી સભાસદ ગણુ ! કરુણામય ભગવાને જેવી અનુકંપા ભારતવર્ષ પર પ્રારંભથીજ રાખી છે તેવા સૌભાગ્યમય સમય આજ પણ નેવામાં આવે છે. કાલ સ્વભાવથી દિવસ રાત્રિ અને શિયાળો ઉનાળો જે રીતે થોડા સ્થાન બેઠ પ્રભાણે ભાવમાં ન્યૂનાધિક થાય છે તેજ રીતે ભગવાને હિંદુસ્થાનમાં એ પ્રકૃતિસિદ્ધ સ્વભાવ બનાવી રાખેલ છે. અર્થાત્ જે પણ અશુભ આવે છે તે શુભ ફળ દેવાવાળું બની જાય છે, એ વાત પુરાણાદિ પ્રાચીન ધર્મિ-દાસો નેવાથી જણવામાં આવી જાય છે. ધર્મથી શુભ થાય છે અને અધર્મથી અશુભ થાય છે, એ ધર્મ શ્રુતિ સ્મૃતિદ્વારા જ પ્રમાણિત થઈ શકે છે.

પ્રાચીન સમયમાં વેન નામના રાજાએ ધર્મનાથ કરીને વર્ણસંકરના કૃત્રિમવાનો અરંભ કરી દીધો હતો. હિંદુ તે વખતે તેના ચરીરનું મયન કરવાથી ઉત્પન્ન થયેલા ૫૫ મહારાજે કેવળ ધર્મનીજ રક્ષા કરી નહિ પણ તેને-ધર્મને વિશેષ ચલચરી બનાવ્યો. વેનનું તે અનુભવ આચરણ ભારતવર્ષની સ્વાભાવિક વંદનારાસર શરિયુને અરંભ સુભકારક જ નિષ્કર્ષે તેની પછી બૌદ્ધ વિશ્વવેનો સમય આવ્યો, જેણે પ્રથમ તો વર્ણોત્તમ ધર્મને ઉખેડવાજ માન કર્યો પરંતુ આગળ વ્યવસ્થા તેજ તેની જિહ્વનું કારણ બન્યું. કારણ તે વખતે મહાયુગિ વાતસ્થાવર, સખર સ્વામી, કુમારિલ ભટ્ટ, ઉદયનાથાચાર્ય અને વિશેષ કરી પૂજ્યપાદ શ્રીસંકરાચાર્યજીનો ધર્મ તત્ત્વ પ્રકાશન પ્રભાવ તે હુમ્મ યતા ધર્મને રક્ષીને અધિક સુદૃઢ બનાવવામાં સહાયક થયો

યદિ બૌદ્ધવિશ્વવ યથો ન હતો તો આપણને એવા મહાત્માના વચનામૃતથી નિર્ગળ પ્રધાન ધાર્મિક વિવેચનોતો લાભ મેળવીને સમયની બખડેલી તતિતો મુકાબલો કરવાનું જા પ્રાપ્ત થાત નહિ. આ સંબંધમાં આ બે ઉદારદરજી બસ થયે. એથી સમજશે કે ભારતવર્ષ પર આવેલું અધર્મમૂલક અશુભ તેને માટે શુભનુંજ કારણ બની જાય છે, એવુંજ શુભ વસ્થુ આ વખતે પણ દૃષ્ટિએચર થાય છે.

આપ લોક પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યા છે કે વિદેશી શિક્ષણથી વર્ણોત્તમ ધર્મનો મોટો સંહાર થઈ રહ્યો છે. રાજનૈતિક પરાધીનતા હટાવવાને માટે સ્વરાજ્યપ્રતિપાદક અહિંસામૂલક અસહ-કારનું જે વર્ણોત્તમધર્મોનુસાર વિધાન અને વ્યવહાર ઋષિઓ દ્વારા બનેલ છે તેનો પણ લોક ત્યાગ કરી રહ્યા છે. અમારા ધર્મશાસ્ત્રનો સિદ્ધાંત છે કે ભારતવર્ષનું પૃથ્વીનું સર્વ શ્રેષ્ઠ સ્થાન અને શુભ કાર્યભૂમિ છે. એના વિરુદ્ધ આચરણ કરીને જે ભારતીયો મ્હેન્ટોનો સંસર્ગ કરે છે, મ્હેન્ટો દેશોમાં જાય છે અથવા જે આઘણું મ્હેન્ટો ભાષા શીખે છે તેને મહાન દોષભાગી થવું પડે છે. યદિ હિંદુસ્થાનીઓ આ પ્રમાણે બગડી ન જતે તો મ્હેન્ટોનો માત્ર જમીનપર અધિકાર રહેવા છતાં પણ હિંદુસ્થાનીઓનું “સ્વરાજ્ય” કદાપિ નહિ થાત અને સાથે સહકાર કરવાને કોણ પ્રવૃત્ત થાત! આજકાલની જેટલી વિદેશી વ્યવસાયની ચીજો છે તે તમામ અમારા શાસ્ત્રની આગા પ્રમાણે હમેશા ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે. હાડકાથી સાફ કરેલી ખાંડ, દારૂ મળેલી દવાઓ, ચરબીવાળું કાપડ, ખીરકૂટ વગેરે મ્હેન્ટોનું અન્ન, મારીથી બનાવેલા ચીની વાસણ જે એકવાર મોઢું-લગાડવાથી એંદા થઈ જાય છે તે, ફેસફરસની બનેલી દવાસળી, વિદેશી મીઠું અને સ્વાભાવિક રીતેજ અગુદ્ધ માદક દ્રવ્યો વગેરે વાતો અમારૂં શાસ્ત્ર ક્યાં બતાવે છે? એવી શાસ્ત્રવિરુદ્ધ વિદેશી વસ્તુઓ ખરીદીને કોણ નરકમાં જવા માગે? નો શાસ્ત્રો-પર શ્રદ્ધા રહત તો! આ રીતે સનાતન ધર્મનું પાલન થાત તો વિદેશીઓનો વ્યવસાય અહીંજ જમીન સકત નહિ.

માટે આપણે ન વિદેશીઓથી મિત્રતા કરવી કે ન વિરોધ કરવો, કારણ બેઉ પ્રકારથી તેઓનો સંસર્ગ થઈ જાય છે માટે જેને સંસર્ગ થઈ ગયેલ છે તેણે તે ત્યાગીને આપણા હિદ્દારના માટે આપણા શાસ્ત્રપર નજર કરવી જોઈએ. શાસ્ત્રની રક્ત્યવિદ્યાઓ હૃદયંગમ કરવી જોઈએ, હુમ વિદ્યાઓનો પુનરુદ્ધાર કરવો જોઈએ અને યથાધિકાર અધ્યાત્મગાન માટે યત્ન કરવો જોઈએ અર્થાત્ આપણે યથાવિધિ જે સનાતન ધર્મનું પાલન કરીએ તો સ્વરાજ્ય આપણને એની મેજે પ્રાપ્ત થાય તેમ છે.

ભારતના સહાનુભૂતિના તારો અને પત્રોનો મોટો ચોકડો લઈને સંમેલનના મંત્રી ધીધુન દત્તાત્રય જોધી બી. એ. એલ. એલ. બી. રંગભૂમિ ઉપર આવ્યા. તાર અને પત્રો મોકલનારાઓનાં નામો જ માત્ર વાંચી શક્યા. તદનંતર એક જ સમયે ભુલભુલ વિદ્વાનોએ ચારે આચાર્ય-શ્રીઓને પુષ્પવાર ધરાવીને સ્વાગત કર્યું ત્યારપછી સર્વ આચાર્યશ્રીઓને ક્રમવાર સંમેલનને પ્રાથમિક શુભ આશીર્વાદાત્મક વ્યાખ્યાનો કર્યાં.

શ્રીશંકરાચાર્યજીએ કહ્યું કે:—“પરિસ્થિતિ બચકર છે. ધર્મશુદ્ધિમાં દહતા રહી નથી હિદ્દારના માર્ગ સ્પષ્ટતા નથી. “પોતપોતાના કર્મમાં રહીને જ સિદ્ધિ મેળવી શકાય” એ શાસ્ત્ર-વચન કોણ સાંભળે છે? સ્વતંત્રતા માટેના વ્યર્થ પ્રયાસો થઈ રહ્યા છે, ધર્મરહિત સ્વતંત્રતાથી તો ભારતવર્ષનું પતન જ થશે. ભારતવર્ષની અત્યેક પ્રતિષ્ઠા ધર્મથી જ છે. ધર્મના આદર્શથી બ્રહ્મ બનીને, પૂર્વજોની કીર્તિને બટો લગાડી, અધાર્મિકતાને ખરીદી શું લદાણ લેવાના છે? કહે તો ધર્મનિષ્ઠ જનતાએ સંધબદ્ધ થઈને ધર્મરક્ષા કરવી રહી. એ યત્નમાં બધા યશસ્વી બનો.”

શ્રીરામાનુજાચાર્યજી સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કે:—“અત્યારે તો લોકોને સ્વધર્મનો ત્યાગ જ કરી નાખવો છે, અને દુઃખ વહોરવાં છે. નો ધર્મમાં બધા ચાહે તો વિપત્તિનું નામોનિશાનજ

ન રહે. સમાજની આ અવગતિનું કારણ આધુનિક અંગ્રેજી શિક્ષણ છે. બાળકોને કુવામાં ધોકલવામાં આવે અને તેથી જેમ તેનો સર્વનાશ થાય તેમ આધુનિક શિક્ષણમાં બાળકોને મોકલાય છે, અને ધર્મહીન દશા અનુભવાય છે. જે સત્તાએ આ રિયત કરી છે, તેના હાથનાં વિદેશી કપડાં પહેરતાં પણ શરમ આવતી નથી. વસ્ત્ર તો હીક પણ તે દેશના અપવિત્ર બિરકુટ બાઇને પોતાનું અંતર પણ બદલ કરાય છે. આને માટે ગુનાહગાર આપણે જ છીએ. અંગ્રેજો કેટલા સ્વાભિમાની છે ? બાળક જન્મવાનું હોય છે ત્યારે અહીંથી વિલાયતમાં ચાલ્યા જાય છે. જ્યારે આપણા દેશીઓની મૃત્યુ તો જીવે. તેઓ પોતાના બાળકો વિલાયતમાં જન્મે એમ ઇચ્છે છે ! વિદેશીઓએ નિજ બાહુબલથી આ દેશની સત્તા મેળવી નથી, પણ છળકપટથી મેળવી છે. એ જ છળકપટમાં કસાયલા દેશીઓ આપણા ઘરને ઉજાડ કરવા મથી રહ્યા છે ! ચારે વર્ણુ વિરાટના જીદાંજીદાં અંગરૂપ છે, પોતપોતાના ગુણકર્મોનુસાર વર્તે તો ઉદ્ધાર જ છે. આમાં ઉચ્ચ નીચતાનો ટોટો જ ક્યાં રહેલો ? “અનાચારથી બધા ચાકાલ બની જાય છે” એમ રૂપક કહ્યું છે. માટે પોતપોતાનો ધર્મ નભાવીને દેશની પ્રતિષ્ઠા સિદ્ધ કરો, ઉઠો, ભગૃત થાઓ.”

પ્રતિવાદિભયંકરાચાર્યજીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે:—“અહીં પ્રારંભમાં અમારી પાસેથી આશીર્વાદની ઇચ્છા રાખવામાં આવી છે. અમારા આશીર્વાદથી બધાનું કલ્યાણ થાય એવું સામર્થ્ય રહ્યું નથી કાંઈ જમાનો તેવો હશે, પણ અત્યારે તો ‘મુખ પરાયા અજથી કાણું’ કહ્યું, હાથ પરાયા દાનથી સળગાવ્યા તો એ શક્તિ ક્યાંથી આવવાની હતી ?” હવે તો આપણે બધાએ મળીને પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની છે. કારણ કે સમયસમય પર અવતાર લઈને ધર્મનો રક્ષણકાર તે જ બને છે ! આપણી પ્રાર્થના તે જરૂર સાંભળશે, એવો આપણા હૃદયમાં વિશ્વાસ હોવો જોઈએ. આપણે બધાએ ધર્મનિહ થવું ઘટે. ધર્મોનુરાગી બનીને, એકસંપ જાગવીને પ્રાચીન મહોદાનુસાર ચાલવું રહ્યું. તો સ્વરાજ્ય પાસે જ છે.”

સભાપતિ શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રીના આશીર્વાદ.

આચાર્યવર્ધ ગો. શ્રી ૬ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયે સુવંદ આવળે એકે નાનું, પણ છટાદાર વિવેચન બધા આચાર્યોના બ્યાખ્યાન પછી કર્યું. આપશ્રીએ રંગભૂમિ ઉપર ઉભા થઈને બાપણુ શરૂ કર્યું તેથી સભામાં શાંતિ પ્રસરી ગઈ. એ ટુંકું બાપણુ આ પ્રકારે છે.

યાદશોડસિ હરે કૃષ્ણ ! તાદશાય નમોનમઃ ॥ યાદશોડસિ હરે કૃષ્ણ તાદશં માં ચ પાલ્ય ॥

બધા ઉપરિચિત આચાર્યજીન્ટે આ વિષયમાં ખૂબ કહ્યું છે. પોતપોતાના હાઈ ઉદ્યોગો વ્યક્ત કરીને આશીર્વાદો પણ આપ્યા છે. અસ્તુત પરિચિતમાં શું કર્તવ્ય છે તેનું પણ પ્રતિ-પ્રાદન થઈ ગયું. કવિયુગમાં સંઘસંક્રિતનું પ્રાગત્ય છે. સર્વ આચાર્યો મળીને જે કહે, જે કાર્ય પ્રારંભે તેમાં ભગવાન શક્તિ પ્રેરે છે. મારામાં તો આશીર્વાદ આપવાનું સામર્થ્ય નથી. મારા કરતાં બધા વયોદૃઢ એવા આચાર્યોએ અહીં ઉપરિચિત થઈ આશીર્વાદ આપી દીધા છે જ, તો હું શું આશીર્વાદ આપું ? અમારા એ આશીર્વાદ માત્ર જ નહિ, પણ અહીં પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને શરણે આપણે રહેવાનું છે, માટે પ્રથમ તેને વંદન કરો ! [એમ બોલીને શ્રીમાને સ્વર્ણસિંહાસન પર મધ્યમાં બિરાજતા વેદભગવાન પાસે જ્યારે સિર ઝુકાવ્યું ત્યારે તો સભામાં ડોહ અનેકો પ્રભાવ પડ્યો અને ‘ધન્ય હો, ધન્ય હો’ એ અવજાથી આખો અંકપ ગીટ

હોયો! કરતક પ્વનિથી ઉત્સાહ તથા દિવ્ય શક્તિના ફેલાવાનો પુરાવો આપના જનસમાજે શ્રીમાનતા અને વેદભગવન્તા 'જ્યનાદ' કરી મૂક્યા!] એ જ વેદભગવાનના આશીર્વાદથી બધું કાર્ય પાર ઉતરશે કારણ કે વેદભગવાન અનાદિસિદ્ધ છે. એ વેદ શ્રીકૃષ્ણના નિઃશ્વાસરૂપ છે. શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન જ ધાર્મિક, વાચિક અને માનસિક આશીર્વાદ આપે તો કૃતાર્થતા છે. કોઈ પૂછે કે આ સંધર્મમાં વર્ણાશ્રમ અને સ્વરાજ્ય બે એક કેમ થઈ જ્યાં? એ બન્નેનો સંબંધ શો? ધર્મ તો એક વૃષરૂપ છે અને કલિયુગમાં માત્ર તેનો એક જ પાદ, તે પણ શિથિલ અવસ્થામાં છે પણ દગ્ગર દાયે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન તેની રક્ષા કરે છે. વર્ણાશ્રમ પણ ધર્મનું એક અંગ છે. એની રક્ષા સ્વરાજ્યથી જ થઈ શકે. પરીક્ષિત રાજા જેવા સમ્રાટોની સત્તામાં એ ધર્મ સ્પર્શિત હતો. તે વખતે તો માત્ર એક જ મહારાજા પરીક્ષિત હતો. અહીં તો અત્યાર અનેક આચાર્યો, પંડિતો આદિ આવેલા છે. તો જરૂર વર્ણાશ્રમરક્ષા થશે જ. જો વર્ણાશ્રમને દશવીને કેવળ 'સ્વરાજ્ય' સિદ્ધિ કરવામાં આવશે તો તે 'સ્વરાજ્ય'નો અર્થ શો? પોતાનું સ્વતંત્ર ભારતીયત્વ નષ્ટ કરીને સ્વરાજ્ય મેળવ્યું તો શું? સ્વરૂપ તો નાશ પામ્યું ત્યાં સ્વ-પોતાનું રાજ્ય કેમાં રહ્યું? એ તો કોઈ વિદેશી કે વિધર્મીઓનાં રાજ્ય જેવું જ થાય. ભારતીય સંસ્કૃતિનો નાશ થયા પછીનું સ્વરાજ્ય કામનું શું છે? પોતે જો ધન પર-વૃક્ષસાખાની ઉપર ફક્તની છત્ત્વથી ચડ્યા, તે જ સાખાને છેદવાની મૂર્ખતા કરનારને શું ફક્તની પ્રાપ્તિ થઈ શકશે? ના, કદી નહિ. આજકાલ 'સ્વરાજ્ય'ના પોકારો થઈ રહ્યા છે, પણ સ્વરાજ્યનો અર્થ શો? સ્વ એટલે મનુષ્યો, તેમનું રાજ્ય તે સ્વરાજ્ય, એ જ અર્થ કે બીજો છે? તો હવે મનુષ્ય એટલે શું? તો એ જ પ્વનિ નિકળશે કે જે પોતાના પરંપરાગત ધર્મનું રક્ષણ કરે. લૌકિકની સાથે અલૌકિક તરફ નજર રાખે. આ કુન્ધવી સુખમાં જ માત્ર ન મોહાતાં ધર્મનું રક્ષણ કરીને અલૌકિક શ્રેય સિદ્ધ કરે એનું નામ મનુષ્ય. એ ધર્મનો જ બધાં નાશ થયો ત્યાં મનુષ્યતા-હ-સાન્યત ક્યાં રહેવાની હતી? ધર્મેજ દીનાઃ પશુમિઃ સમાનાઃ । ધર્મથી દીન થતાં પશુના જ પ્રાપ્ત થશે. જો પશુના પ્રાપ્ત થઈ તો પશુને પશુ પર શાસન કરવાનો કરો હજી નથી અને તેનું શાસન ચાલતું પણ નથી. ધર્મ વિના સુખશાંતિ જ નથી. મનુષ્યતાનું લક્ષણ એ જ છે કે ધર્મરક્ષણપૂર્વક શાસન કરતું એ માણસાઈ ગણાય. આનું જ નામ ખરૂં સ્વરાજ્ય છે. ભગવાન પુનઃપુનઃ ધર્મરક્ષણાર્થે પ્રકટ થાય છે, અને ધર્મરક્ષણ કરીને, ધર્મદ્રોહી શિવપાલ વગેરેનો સંહાર પણ કરે છે. એ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સર્વની ધર્મશ્રદ્ધા સ્થિર અને જગતની બનાવે એ જ પ્રાર્થના છે." (તાગોઓ)

સભાપતિનું વરણ.

તે જહી સભાપતિની વરણીનું કાર્ય હાથ લગાડ્યાં આવતાં પ્રતિવદિત્ત્યકરવાર્થે અને સંબેધરપીઠાર્થે શંકરાચાર્ય ઉઠીને ચાલના થયા । આખી સભાને આ રુપું નહિ. કારણ કે હવે કાર્યક્રમ બહુ ન હતો. તેમજ સર્વ આચાર્યોના સહયોગની જનના ઉપર અસર પણ ઘણી જ થાય. ખેર, પ્રશ્ન એ એ બંનેને એવી માત્ર પ્રેરી દગો! પણ ઉદાર વિચારના શ્રીમાનુજવાચ શ્રીપદ્મિરિપીઠાધિપતિ પતિરાજ સ્વામી તો બિરાજમાન રહ્યા. એ રૂઢ અને સમર્થ વિદ્વાનના સ્નેહપૂર્ણ વ્યવહાર વિશે હવે પછી ઉલ્લેખ કરીશું. મદામડોપાખ્યાય પંડિત શ્રીગિરિધર શર્મા રંભુમિ ઉપર આવ્યા. પ્રમંથ પ્વનિથી તેમજ આ અધિવેશનનું સુકાન જગદ્ગુરુશ્રીવલ્લભાચાર્યજીના મુખ્યપીઠારિથન આચાર્યવર્ષ ગો. શ્રીદમોદરદાસજી મરોદ્ધના કરકમલમાં સોંપવાની રરખાસન રણ કરી. આ વખતે એ વિદ્વાન વક્તાએ એક હજાર વ્યાખ્યાન પણ કર્યું. તેમાંના

આ ઉદ્દગારો તો તેમના નોખવા લાયક છે:—આર્ય સંસ્કૃતિ, વૈદિક સંસ્કૃતિના છેલ્લા મહાન ઉદ્દારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી યથા કે જેઓ શ્રીએ ભારત વર્ષમા ભકિત-મંદાકિની ગંગાનો પ્રવાહ ફેલાવી દીધો. એઓશ્રીનું પ્રધાનપીઠ શ્રીનાથદ્વારા છે. તે સ્થાનને આપણા સભાપતિશ્રીના શ્રીપિતૃ-ચરણ આચાર્યશ્રી અલંકૃત કરે છે. આપણા સભાપતિશ્રી તો યુવરાજ છે. જેમ કોઇ સમ્રાટ દિગ્વિજય માટે પોતાના યુવરાજને મોકલે તેમ વર્ણાશ્રમના રક્ષણાર્થ શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર-આચાર્ય-સમ્રાટે-પોતાના યુવરાજશ્રીને દિગ્વિજયાર્થ મોકલ્યા છે. હવે આપણે નિર્ભયપણે એમના સભા-પતિત્વનીયે કાર્ય કરવાનું છે ! ” સભાપતિનું વરણ કરનારા ઠરાવને દરેક પ્રાતના પ્રતિનિધિઓએ અનુમોદન આપ્યા પછી તે ઠરાવ તાળીઓ અને હથેલસાદપૂર્ણ જયનાદના ધ્વનિ સાથે પસાર થતાં શ્રીમાન સભાપતિ મહોદયે આરંભિક બાપણ કરતાં જણાવ્યું કે—

આધુનિક પરિસ્થિતિ કેવી છે તે સર્વના ધ્યાનમાં છે. આ સ્થિતિમા આવો મહાન કાર્યભાર ઉઠાવવાની તાકાત મારામા નથી. અધિવેશને મારું સભાપતિ તરફિનું જે વરણ કર્યું તે ઠીક છે, પણ તે વહન કરવાનું સામર્થ્ય પણ જોઇએ ! શૈનકાદિક યુદ્ધ કરતા હતા, માત્ર નિમિત્ત-રૂપ હતા. યજ્ઞમાન તો નિમિત્તજ છે. કાર્ય તો અન્ય ઋત્વિજાદિ કરે છે આવા મહાધમ્મનો ભાર ઉઠાવવો એ પણ અલોભાગ્યજ ગણાય ! વરણતઃ હું સભાપતિ નથી. સાચ્યા સભાપતિ તો અહીં બિરાજતા વેદ ભગવાનજ છે. તેજ કૃપા કરીને મારા પર જે સભાપતિનો ભાર સ્થાપિત થયો છે તે ઉઠાવી લેશે. આ ભાર તે જડ પદાર્થનો ભાર નથી. અલૌકિક ભાર ઉઠાવ્યા વિના ચાલેજ નહિ. અહીં પધારેલા યાવન્માત્ર આચાર્યશ્રીઓ એ ભાર ઉઠાવવાની યક્તિને પ્રેરશેજ. અને પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને સાષ્ટાંગ દંડવત્ કરીને પ્રાર્થના કરે છું કે, આ સ્થાનનું ગૌરવ તેઓ રક્ષણ કરી રાખે. (“ નમો ધ્વજપટેવાય ” એ શ્લોકનો ઉચ્ચાર કરીને વેદ ભગવાનને જ્યારે સભાપતિશ્રીએ સાષ્ટાંગ દંડવત્ પ્રણામ કર્યો ત્યારે તો આખી સભાના હૃદયો શ્રદ્ધાજળથી છલકાઇ ગયાં ! વયોવૃદ્ધ આચાર્યો અને વિદ્વાનોની આખો અશ્રુભાંતી ચર્મ્મ ગર્મ્મ !) ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ આચાર્ય અને વિદ્વાન બ્રાહ્મણોને હસ્ત જોડીને આ સ્થાન મંદણ કરવા આમ માગી. આ વખતે સભાપતિશ્રીના મૂળ પૂર્વજ આચાર્યશ્રીનો શીસુમોધિનીજનો શ્લોક—માત્રા ચચ્છન્તુ સિદ્ધયે કાનમા ગુંજ રલો ! આ નમ્રતા, આ વિવેક, આ દિગ્વિજય ગુણની સખી એક સમર્થ રાજસતાધારી આચાર્યશ્રીમાં, એક કરોડ અનુયાયીઓ જેઓશ્રીને પોતાના હૃદયસમ્રાટ માને તેમનામાં કદી સંભવે ? આ વિચારે તો સભાને આશ્ચર્યમા કુબાલી દીધી ! વયોવૃદ્ધ શીરામાનુજચાર્યજી તો ગદ્ગદ કંઠે સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કે; “ આ યુગ તો શ્રીવલ્લભયુગ છે, વલ્લભ એટલે પ્રિય. તેથી સર્વ લોકના તમે પ્રિય છો. બધાએ તમને સભાપતિ બનાવ્યા છે. સર્વને પ્રિય થાઓ તેવી રીતે આ સ્થાનને દીધોવો. ” વળી નાથદ્વારાધીશ છે. નાથદ્વારા એટલે પ્રયુને મળવાનું દાર, એ અથ તો પ્રસિદ્ધ છે, પણ નન્અથનંદારા—એટલે આ વિના બીજું દાર નથી. એ પણ સુંદર અર્થ તેમાંથી જ નિકળે છે. ” યતિરાજના સંપ્રદાયે ભારે અસર કરી. આવા સોહાર્દપૂર્ણ વ્યવહારો આચાર્યશ્રીઓ વચ્ચે ચાલતા હોય તો ધર્મનો ઉદય થતાં કદી વાર નજ લાગે એવા ઉદ્દગારો નિકળતા લાગ્યા.

ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ પોતાનું સંસ્કૃત બાપણ શુદ્ધ બવાજે કર્યું,

॥ श्रीहरिः

श्रीमद्वेदव्यासविष्णुस्वामिसम्प्रदायसमुद्धारसम्भृतश्रीपुरुषोत्तमवदनावतारसर्वात्रायसञ्चारवैष्णवान्नायप्रा-
चुर्यप्रचारश्रीनिन्वमङ्गलचार्यसाम्प्रदायिकापितसाम्प्रदायसनाखण्डभूमण्डलचार्यजगद्गुरुमहाप्रभु-
श्रीमदाचार्य इति विद्यानगरनरपतिश्रीकृष्णदेवसमर्पितविस्दावर्लीनिराजमानश्रीजगद्गुरु १०८
श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणप्रधानपीठस्थगोस्वामितिलकात्मजविद्यामुधाकरश्री १०५ श्रीमद्वोस्वामि
चिरञ्जीवश्रीदामोदरलालजीमहोदयानां जलप्रामेऽधिवेशिताखिलभारतवर्षीय-
वर्णाश्रमस्वराज्यसंघमहाधिवेशने सभापतीनां (प्रेसीडेन्ट)

भाषणम्

नमो भगवते तस्मै कृष्णायाऽद्भुतकर्मणे रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यतः॥१॥

नमो नमस्तेऽस्तुतभाय सात्त्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनाम् ।

निगस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामानि ब्रह्मणि रंस्यते नमः ॥ २ ॥

अधि ! महानुभावा धर्माचार्या, महारा जा, निखिलशास्त्रनिष्णातधियः सुधियः, धर्मकनिष्ठा
प्रेक्षितः, धर्मानुयायिनः सामान्यसभासदश्च

धर्मरक्षा प्रधानमुद्देश्यम्

विदितमेवैतद्भवतां यदिद् भारतं वर्षं धर्मप्राणो देश तत्रापि दाक्षिणालसमीपगोऽयं
भूभागस्तु धर्मरक्षणाय वदपरिकरो बहोः कालात् प्रसिद्धतम । अत्र हि भारते स्वभावत एव धर्मक-
जीवना ग्राहणा धर्मरक्षणैकत्रता । क्षत्रिया धर्मकजीवना विशः धर्मानुयायिनश्च शूद्रादयः । किं
वृत्ताऽत्र याः स्त्रियोपि स्वधर्मपरिरक्षणपरित्यक्तजीविता भवन्तीति सुविदितचरमेव सर्वेषां नः ।

इदमपि तु सर्वेषां नो न परोक्षमेव यदिह चराचरगुरुर्भगवान् पुराणपुरुषः श्रीकृष्णोऽपि
धर्मरक्षार्थमेव युगे युगे कृतावतारो भवति ।

अद्य वयमपि सर्वे धर्मरक्षाविचारार्थमेव विषयाऽपि बहूनि कथानि नानादिगन्तवासिनः
योत्साहमगाऽऽगताः स्मः । धर्मरक्षार्थमेव । धर्मरक्षणमुद्देश्यमिति, न, कर्मणि, सदेहदेहेः । धर्म-
साम्राज्यपरिरक्षणदीक्षिता देवगुरुवो बृहस्पतिर्भरद्वाजप्रभृतयश्चाऽस्माकं पूर्वजाचार्या अभूवन् ।
अहमपि भवद्भिः स्वधर्मपरिरक्षणनिनद्धाशयैरिह महासभायामस्या समापतिपदे वृत्तोऽपिग्रापितश्च धर्म-
रक्षाशयैः साहसमेतदुद्बोद्धुमुच्यते भवामि

इदमपि तु न विस्मर्तव्य यदिह महति दुःसाध्ये कर्मणि सर्वेषां नः श्रीगोवर्धनोद्धरणचरण-
नलिनमेव शरणं भविष्यतीति मे बलीयान् विश्वासः । स एवाऽस्मभ्यं कार्यशक्तिं वितरन्विति मे
प्रथमतस्तत्तत्तत्तयोः प्रार्थना ॥

अयि भो सभासद. ! विविधेष्वपि धर्मेषु सर्वधर्मभूमिभूतोऽयं वर्णाश्रमधर्मो विशेषधर्म इति विशेषतया रक्षणीयो भवति । अस्मिन्नरक्षिते मन्ये सर्वेऽपि धर्मा अरक्षिता एव भवेयुः ।

केचिद् वैदेशिकदर्शार्थादक्षिता विविधतरङ्गातुले वैदेशिकभावमहागते आमूलचूडमेव दुःकृता वर्णाश्रमधर्ममिमं छलेन बलेन राजनीत्या च सुस्पष्टमेव नाशयितुं गृहीतव्रता भवन्ति सज्जाताधेति प्रदीयतां चतुर्दिशं दृष्टिः । तैः सहाऽयमस्माकमभियोगः । ततश्च यावता बलेन तैरयमस्माकं प्रियो धर्मो नाशयितुमभिकाङ्क्ष्यते तावतैव ततोऽप्यधिकेन वा बलेनात्माभिरप्येतस्य सर्जनहितस्य वर्णाश्रमधर्मस्य रणक्षाय बद्धपरिकरेभ्योऽवितव्यम् । यतो हि स्वधर्मो रक्षितः सर्वेषां रक्षको भवति ।

स्वराज्यमप्याकाङ्क्षते

अयि सन्ध्या । केचन पुनः स्वराज्यप्राप्तिमेव संप्रति भारतीयानां प्रधानं ध्येयं गणयन्ति । अस्माकमपि नाऽत्र काचन विप्रतिपत्तिः । कामयामहे वयमपि स्वराज्यम् । किन्तु स्वधर्मवर्णाश्रमधर्मं वा विनाऽयं तु केवलं स्वराज्यं न काङ्क्ष्यतेऽस्माभिः । को वा बुद्धिमान् धर्मरहिते स्वराज्ये कामनां कुर्यात् ? धर्मरहितं हि प्राप्तमपि स्वराज्यं ह्रिष्टमस्थिरं च भवति । धर्ममात्ररहितानामेतेषां विधर्मणा-भेतत्स्वराज्यमतिधर्मरहितं कुर्यात्स्वराज्यमिव च कदाचन भवतीति सुस्पष्टमेव समाचारपत्रवाचिनां विज्ञानम् ।

सुराज्यं हि सुखकरं भवति न तु स्वराज्यमात्रम् । भारतीयानां रावणस्याऽपि स्वराज्यमासीत् । वेनस्याऽपि स्वराज्यमेवासीत् । को नाम विज्ञो रावणस्य वेनस्य च राज्यं भारतीयानां स्वराज्यं नासीदिति वदेत् ? स्वराज्ये सत्यपि तयोः सुराज्यं नासीदिति वक्तव्यम् ; अत एव तत्र महान् क्रोध आसीत् । विप्रबन्धु समाजस्य महानभूत् । तस्माद्विज्ञैः सुराज्यमेवाऽपेक्ष्यते न तु केवलं स्वराज्यम् ।

सौराज्यं च धर्मेणैव भवितुमर्हति । धर्मेण सर्वोऽपि जनो मर्यादासु तिष्ठति । बद्धजनमर्यादां च स्वराज्यं सुराज्यं सुखकरमकेशकरं च भवतीति विदितमेव प्रेक्षावताम् ।

तस्मात्संधोऽयं इयमपि वाञ्छति ।

वर्णाश्रमस्वराज्यसंघश्चाऽयं वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं च कामयत इति नात्रैवाऽस्येदं ज्ञातव्यम् । अत्र हि वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि कामयमाना जनाः संधीभवन्ति । संधो हि चञ्चल भवति । पुरा हि तपो बलमासीत् । ततो यजिर्वलमभूत् ततः पूजा । संप्रति तु संधो बलमस्ति । यद्यपि सर्वदैव समूहोऽपि बटमासीत्, किन्तु संप्रति कन्यैः तु विशेषतः, संधे शक्तिः ।

तदर्थमनैकयं दूरीकरणीयम् ।

वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि वाञ्छतामस्माकमाविप्रमाचाऽन्यजात् चातुर्वर्ण्यानां संधो महान् विद्यते । ततश्च बलवन्तो वयं भवामः । किन्तु भारतीयेष्वस्मासु परस्परं सौहार्दस्य शुभकामनायां ऐकमत्यस्य चाऽभाव इति संघवन्तोऽपि वयं दुर्बला एव सज्जाताः स्मः । वयं हि परस्परं मैकैकस्य वञ्चयामहेऽपमानयामो द्विपक्षे । गवेययामः प्रकाशयामश्चैकैकस्य दूषणानि ।

तेन च परापरमेव भेदोऽविश्वासश्च प्रसृतो विद्यते । एकोऽपरस्य भिद्यते न विश्वसिति तत एवारब्धमपि कार्यं सर्वदा विनश्यति । ततश्च प्रथमतस्तु देशदेशान्तरागतेषु मे साग्रहमावे मिदमेव यदितः परं सर्वैरिदं व्रतमिव स्वीकरणीयं यदयं सर्वेपि परस्परस्य भ्रातरः परस्परं वर्णा स्वराज्यकार्यं एकैकस्य साहाय्यं विधास्यामः । परस्परं सद्भावेन प्रतिष्ठां रक्षन्तो प्राणप वर्णाश्रमस्वराज्यकार्यं निर्वह्यामः ।

राजशासनेपि सनातनधर्मसभ्यैरधिकाराः प्राप्तव्याः

ब्राह्मणादीनां पूर्वजातैर्ये महापुरुषैस्तपसा बलेन विद्यया धनादिभिश्च येऽधिकाराः पूर्वमर्जितेभ्यो च यथाकथञ्चिदद्यावधि परम्परया ब्राह्मणादयः कुत्रकुत्रचिदधिष्ठिता अपि सन्ति, सम् तेऽधिकारेषु परेऽनधिकारिणस्तिष्ठन्ति, वदन्ति च ते भारतीया एतत्पदमधिष्ठानमनधिष्ठिता इति ततश्चेतः परं पुनरापि ते एवाधिकारा अस्माभिः परहस्तेभ्य आच्छिद्य स्वहस्ते करणीयाः भारत ब्राह्मणैः पुनरापि विधास्यानेषु महापदमादातव्यम् । अस्माकं शत्रुवैरैः शासनविभागप्रधानस्थान लम्बनीयानि । अरमदीयैर्वर्णिकूपवरैः पुनरापि व्यवहारव्यापारधनादिविभागाः स्वायत्तीकरणीया भारतीये । शत्रादिबुलसमुद्भवैरपि कलास्थानेषु स्वधर्ममनतिक्रम्य प्रधानपदं स्वीकृतव्यम् ।

आन्दोलनं कर्तव्यम्.

यद्यपि तपः सन्तोषश्चोभयमपि सर्वथा श्रेयस्करम् । किन्तु येन तपसा धर्महानिरात्मनाः भवेत् तत्तपः श्रेयस्करं भवति । सन्तोषोऽपि तथा । महर्षिर्वसिष्ठो महातपा अतिसंतुष्टश्चासीत् किन्तु यदा बलोन्मत्तेनाभिमानिना राजा विधामित्रेण तद्धर्मनाशमयाहितं च विधातुमारब्धं त तेनाप्यगत्या तत्प्रतीकारो विहित एव ।

न वयं कस्मा अपि द्विषः । न च कस्याप्यपकारं कर्तुमामिकांक्षामः । किन्तु स्वाप प्रतीकारं समाजधर्महितरक्षणं तु वाञ्छाम एव ।

परस्यापि डेषस्त्याज्यः

अद्यावधि केनापि वर्णाश्रमरक्षणकामेन विदुषा केनापि किमापि प्राप्नुमिच्छता म व्याघातो न कृतः, तदाधिकारे स्थितैरप्यस्माभिः 'सर्वः स्वार्थं समीहते' इति नीतिमवलम्ब्य धर्मयागिनामप्युपेक्षैव कृता । एवमपि ये शिरसि दण्डनिपातनमिव बलादेवात्मदधीनमपि व श्रमधर्मं त्याजयितुमीहन्ते यतन्ते च तदर्थं, तत्प्रतीकारस्त्ववश्यमस्मात्कार्यम् । आत्मनाशे धर्मं च सन्तोष उपेक्षा वा नैव श्रेयस्करीति संघशोऽस्माभिर्मिळिवा धर्मरक्षणस्य समाजहितस्यामा कारलम्बनस्य चोपाया अवश्यं परिग्राह्याः ।

केचित्तु धर्ममुपेक्ष्य विनाश्य वा स्वराज्याभिलाषिणः प्रधानराजव्यवहारसमाप्तुं [पसेन्त्य सामान्यराजसभासु] कौन्सिल] नगरपरिहार (म्युनिसिपल कमेटी) परिषत्सु च, एवमेव स्वदे

राष्ट्रीयसभासु च प्रविश्य प्रधानाधिकारान् लब्ध्वा स्वसमानैः सम्यैरतिसन्धाय बलादेव भारतीयानां धर्मं त्याजयितुमीहन्ते, प्रतिवर्षं च नवनवान् धर्मविध्वंसकान् प्रस्तावानुपस्थापयन्ति, बलादेव च भारतीयानां सर्वथाऽनभिवाञ्छितानपि तान्प्रस्तावान्प्रमाणयन्ति व्यवहारयन्ति कारयितुमिच्छन्ति च । येन धर्मविग्रहः समाजविग्रहो राज्याविग्रहश्च समये समये भवति । ततश्चात्राप्युपाया विधेया एव ।

सनातनधार्मिकरैरेसेम्बलीप्रभृतिषु स्वस्थानं रक्षणीयम्.

भारतीयानां पण्डितानामग्रे राजनीतिविषयकोऽयं प्रश्न उपस्थायापि विनश्यति । अस्मिन्कोणे पुरातनपण्डितैः कदाचनाऽपि दृष्टिर्न निक्षिप्यते स्म । कदाचन केपांचन दृष्टिर्गच्छायपि किन्तु ते प्रज्ञामात्रवादिनो ब्रह्मज्ञा इत्युत्तरं प्रयच्छन्ति यत् प्रधानराजसभादिषु केचनाधिकारं लभन्तां मा लभन्तां वा किमस्माकं पण्डितानां ततः प्रयोजनमिति ।

अहो कियती हानिः ? कथं वा भयङ्करः परिणामः ? येन हि वयं जीवामः, यद्वि भारतीयानां जीवितं तमेव धर्मं वैदेशिकैः संधायाऽऽत्मीया एव धर्मवितोषिनो विध्वंसयन्ति तथापि वयं न निद्रां मुञ्चामः । वयं सुखं स्वपिमः, परे तु धर्मविध्वंसका यथायथं भारतीयानेव जनान् प्रलेभ्य वंचयिष्या च स्वस्य राजसम्यपदप्राप्तये सम्मतिं (वोट्) प्राप्नुवन्ति । तत्र गत्वा चास्माकं प्रियं धर्मं यथेच्छं नाशयन्ति ।

वोट्दातृषु सत्त्वमात्मीयं रक्षणीयम् ।

ततश्चात्रापि प्रथममुपायः सत्त्वरं परिग्राह्योऽस्माभिः । संघरास्तत्र तत्र (एसेम्बलीकोमिसे-
(३)) गत्वा प्रतिच्छन्नधर्मनाशकानां तेषां तत्स्वरूपं प्रकाशनीयम् । निवारणीयाश्च तेभ्यः पदप्राप्तये सम्मतिप्रदातारः । सर्वत्र प्रदेशेषु च वर्णाश्रमधर्मरक्षिण्यः सभाः स्थापनीयाः । प्रचारणी-
याश्च सर्वत्र धर्मोपदेष्टारः । प्रधानराजसभासु नगरपरिष्कारपरिषत्सु राष्ट्रीयसभासु (कामेस) चास्माकं विशिष्टा विद्वांसो धर्माग्रहवन्तः प्रवेशनीयाः । सुघोरं चान्दोलनं विधातव्यम् । सम्यतापूर्वकेण च धर्मान्दोलनेन राजभाक्तिः प्रदर्शिता भवति, सामर्थ्यमावर्जितं भवति, स्वत्वं च रक्षितं भवति ।

निःसत्त्वो निर्बलश्च पुरुषः प्रजासु राज्ञि चापमानभाजनं भवति । यदा हि भवन्तोऽपि धर्मरक्षार्थं चतुर्दिशं सुघोरमान्दोलनं विधास्यन्ति तदा राज्ये राजजने च भवतामपि प्रतिष्ठा स्यादेव । भवतां च वाञ्छितं सिद्धं स्यादेव । निर्बलस्य कोपि सहायो न भवति । विना कोलहलं माताऽपि पुत्रं स्तनं न पाययति ।

• तस्माद्-धर्मरक्षणार्थं स्वस्याधिकारप्राप्त्यर्थं च संघशो विद्वद्भिः संमन्त्र्य ते त उपाया अवश्यं परिग्राह्याः । धर्मोपदेशश्च सर्वत्र दातव्यः । उपायचतुरं च जनं भगवान् श्रीकृष्णोऽप्यनु-

गृह्णाति । भगवदनुग्रहेण चावश्यमेव समीहितसिद्धिर्भविव्यतीति तदनुग्रहार्थं वयमपि तत्पर-
सरोजयोः प्रार्थना निवेदयतो निरमाभो बहुपल्लवान् । हरिः ॐ शम् ।

किरातहणाऽऽन्धपुलिन्दपुच्छसा आभीरकङ्का ययना. खसादयः ।

येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुष्यन्ति तस्मै प्रभविष्यवे नमः ॥

स्वयं समुत्तीर्य मुदुस्तरं यमन् भगवन् भीममदभ्यसौद्राः ।

भवत्पद्माम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याता सदनुग्रहो भवान् ॥

हीन्दी अनुवाद.

हमारे भारतवर्षीय आचार्य महानुभाव ! सुक्षत्रिय महाराजा ! धर्मप्राण विद्वदगण ! एवं
सामान्य समासद लोक !

इतिहासके द्वारा अब ये बात सर्वत्र प्रसिद्ध हो चुकी है कि यह एक भारतवर्ष ही धर्म-
प्राण देश है । धर्म ही इस देशका सामर्थ्य है ! जिस तरह मनुष्यको अपने प्राणपर किसी
प्रकाशकी भी आघात आनेका सन्देह हो तो वह अपने सब सामर्थ्यको इकट्ठा करके उस आपत्तिका
उपाय करनेके लिए तत्पर हो जाता है इसी तरहसे यह भारतवर्ष भी जब तक इसके धर्मपर
किसीने भी आघात पहुँचाया है या पहुँचानेका प्रयत्न भी किया है तो उस समय इस भारतवर्षने
अपनी सब ताकतको इकट्ठी करके उसका सब तरहसे उपाय किया है । इस लिए मान्य होता है
कि यह वर्णाश्रमधर्म इस देशका प्राण है ।

विशेषकर राजपूताना और यह दक्षिण प्रदेश तो अपने धर्मकी रक्षा करनेमें सुप्रसिद्ध है।
चिन्तासे आजतक यहाके ब्राह्मण लोग धर्मरक्षण होते चले आ रहे हैं । यहाँके क्षत्रिय धर्मरक्षा
वन को लिए बैठे रहते आए हैं । यहाँके वैश्यगर्भ अपने जीवनको धर्ममय बनाते चले आ रहे
हैं । कि बहुना यहाँके शूद्र और अन्त्यजादि भी वर्णाश्रमधर्मके अनुयायी होने चले आ रहे हैं ।
और हमें विशेष तो इस बातका गर्व है कि भारतवर्षकी और विशेषकर दक्षिण प्रदेशकी स्त्रियोंने
भी अपने देह प्राण और सुखोंका परित्याग मुखसे कर दिया है किन्तु धर्मका परित्याग कभी नहीं
किया । और तो क्या कहें यह बात भी आप लोगोंको विदित ही है कि इस एक भारतवर्षमें ही
जगद्गुरु श्रीकृष्णभगवान् भी इस वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करनेके लिए ही बारबार अवतार
धारण करते हैं ।

आज अपने सब लोग भी जो अनेक कष्टोंका सहन करते हुए नाना देशोंसे यहा आकर
इस ध्यानपर एकत्रित हुए हैं उसका भी एक यही प्रयोजन है कि किसी प्रकारसे इस वर्णाश्रम-
धर्मकी रक्षा करना उचित है । स्वधर्मकी किसी तरह भी रक्षा करना यह हम सबका प्रधान
कर्त्य है । आज धर्मरक्षार्थ ही सबके हृदयमें उसाह भरा हुआ है ।

भाव एवं ऐकमत्य का अभाव है। हम आपसमें एक दूसरे का अपमान करते हैं, एक दूसरे को ठगना चाहते हैं और एक दूसरे से द्वेष रखते हैं। और तो क्या कहें हम आपसमें एक दूसरे के दोष ढूँढने लगते हैं और उनको प्रकाशित करने में अपना हित मानते हैं। इसका यह फल हुआ है कि एकदेशवासियों और भाई भायों में हमारे यहां भेद और अविश्वास घेर कर चुका है। उस आपस के भेद और अविश्वास की बुराई से हमारे प्रारम्भ किए हुए अनेक महत्त्व के कार्य भी कभी कभी मध्य में ही नष्ट होजाते हैं।

— इस लिए प्रथम तो अनेक कठिनाई को सहन करके भी अपने धर्मकी रक्षा करनेके विचारसे भिन्न भिन्न देशोंसे आए हुए संघके सदस्य महानुभावोंसे मेरा यह साग्रह आवेदन है कि जो हो चुका उसे जाने दीजिए किन्तु अब आजसे ही आप लोग एक व्रतकी तरह स्वीकार करें कि हम सब आपसमें एक दूसरेके भाई हैं और इस लिए एक गृहकार्यकी तरह इस वर्णाश्रम स्वराज सपरूप गृहकार्यमें हम सब एक दूसरेकी सहाय करते रहेंगे।

परस्परमें सद्भाव रखते हुये एव एक दूसरेकी प्रतिष्ठाको अपनी मानकर उसकी रक्षा करते समूहचल एवं व्यक्तिचल दोनोंसे ही वर्णाश्रम—स्वराज्य संघके कार्यको प्रतिदिन उन्नत बनाते रहेंगे।

हमारे पूर्वज ब्राह्मणादि चतुर्वर्ण जात जिन महापुरुषोंने अपनी तपस्या अपने बल अपनी ही श्रिया और अपने धनादिसे जो जो अधिकार पूर्व समयमें प्राप्त किए थे, और अब भी जिन अधिकारोंपर कहीं कहीं किसी तरहसे भी सही, हमारे ब्राह्मणादि भारतीय ही परम्परासे आज तक अधिष्ठित चले आ रहे हैं। किन्तु खेद है कि हमारे आपसके भेद और अविश्वाससे उन अधिकारोंके प्रधान स्थानोंपर तत्कालीनोंके अनधिकारी विदेशी और विधर्मी लोग सब तरहसे स्थित हो चुके हैं। और छटबलसे हमारे ही अधिकारोंको धीनकर वे लोग फिर यह कहते भी हैं कि भारतीय लोग इन अधिकारोंपर स्थित होनेके अधिकारी अभी नहीं हैं।

अब हमें उचित है कि अपने धर्मको न छोड़ते हुए फिरसे अपने अपने अधिकार उनके हाथसे अपने हाथमें लें। भारतीय ब्राह्मण लोग अपने प्राचीन श्रियाम्थानोंके प्रधानपदोंपर फिरसे स्थित हों। हमारे क्षत्रिय वीर फिरसे शासन विभागकी बागडोर अपने हाथमें ग्रहण करें। भारत-वर्षीय वणिजप्रवर्गोंको चाहिए कि अपने बल एवं उद्योगसे फिर भी उन्हीं अपने व्यापार और धनादिके अपना स्थानोंपर अपना अधिकार जमावें। और हमारे भारतीय शूद्रादि सज्जनोंका भी यह कर्त्तव्य है कि अपनी प्राचीन मर्यादाको न छोड़ते हुए अपने कलारथोंके प्रधानपदोंको पुनरपि त्वरितगति करें।

कितने ही प्राचीन मर्यादाके सन्तोषी पुरुष कभी कभी यह भी कहने लगते हैं कि भारतीयोंका तो सन्तोष और तप ही सर्वस्व है उससे सब कार्य सिद्ध हो सकते हैं। ठीक है जिस समय हमारा आत्मा हमारे पास था और हमारा धर्म बलपूर्ण था उस समय तप और सन्तोष

श्रेयस्कर थे किन्तु आजकल हमारा आत्मा दूसरोंके हाथमें है और हमारे धर्मका नाश दिनों दिन होता चला जा रहा है ऐसे समय आत्मनाश और धर्महानि सहनेवाले तप और सन्तोष श्रेयस्कर नहीं हो सकते ।

महर्षि वसिष्ठ बड़े सन्तोषी और तपस्वी थे किन्तु जब बलौन्मत्त अभिमानी विधामित्रने उनके धर्मकी हानि और आत्मस्वातंत्र्यका नाश करना चाहा तब उन्हें भी अगत्या उसका उपाय करना ही पड़ा ।

विधर्मी लोग ही नहीं किन्तु कितने ही हमारे भाई भारतीय होकर विधर्मियोंके वेप भाषा भावोंके जालमें फँसकर उनकी नकल करते करते जो वैसे ही हो चुके हैं वे भी शासन और व्यवहार-स्थानोंपर प्रतिष्ठित होकर हमारी आत्मवृत्ता और धर्मका नाश करनेपर कमर कैसे बँडे हैं । उसका भी हमें अवश्य कोई न कोई उपाय करना ही पड़ेगा ।

हमारे हृदयमें किसी के प्रति द्वेष नहीं है और न हम किसीका अपकार करना चाहते हैं किन्तु जो आपदाएँ हमारे ऊपर आई हुई हैं किंवा आने वाली हैं उनका उपाय तो हमें अवश्य करना चाहिए ।

आजसे २ वर्ष पूर्वतक हमारे किसी भी सनातनधर्मी विद्वानने किसी विभागके कुछभी प्रासिके मार्गमें किसी तरहका भी विघात नहीं किया था । 'सर्व' स्वार्थ समीहिते' इति न्यायसे कि वा धर्मरक्षार्थ स्वराजप्राप्ति भी सनातन धर्मियोंका स्वार्थ ही है, ये समझ कर भी धर्मरक्षाका अधिकार रखते हुए भी हम लोगोंने धर्मत्यागियोंकी उपेक्षाही की ।

इस तरह उपेक्षा करते रहते भी जो लोग सिरपर दण्ड मारते चले आ रहे हैं, हमारे अर्धन धर्मका भी नाश करानेके लिए राजपूतका भी आश्रय ले रहे हैं उनका तो प्रतीकार हमें करना ही होगा । आत्मनाश और धर्मनाश के समय भी सन्तोष किंवा उपेक्षा करना उचित नहीं है इस लिए हमें भी अपना संघबल तैयार करके धर्मरक्षा समाजहितरक्षा एवं अपने अधिकार-प्राप्तिके उपायोंका स्वीकार तो अवश्य करना चाहिए ।

यह बातें अब स्पष्ट हो चुकी हैं कि कितनेही धर्मकी उपेक्षा किंवा उसका नाश करके खाली स्वराज्य चाहनेवाले ऐसेम्बली कौंसिल और म्यूनिसिपिअ बोर्डोंमें अपूर्ण अधिकारोंको भी प्राप्त कर और अपने समान अधिकारवाले विधर्मियोंके साथ एकमत हो कर जबरदस्ती सनातन धर्मियोंके धर्मका नाश राज्यबलसे करानेके लिए विशाल उद्योग कर रहे हैं ।

प्रतिवर्ष कान्तिनल ऐसेम्बली और म्यूनिसिपल कर्माटियों में नवीन नवीन धर्मविध्वंसक प्रस्तावोंको उपस्थापित कर रहे हैं और उन्हें मनमानी रीतिसे पास भी करा लेते हैं और इस तरह हमारे धर्मका नाश कर रहे हैं । इसका तो उपाय हमें करनाही पड़ेगा ।

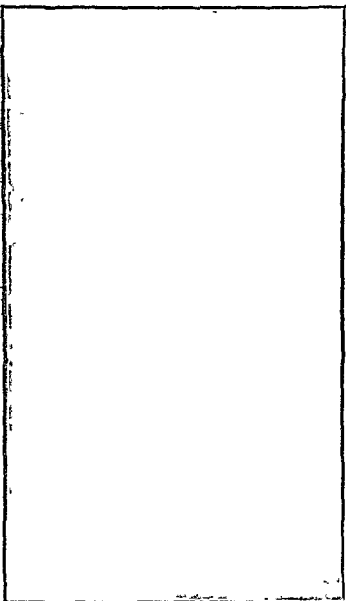
स्वराज्य हमें भी चाहिए इस लिए हम स्वराज्यप्राप्तिके मार्गमें विघ्न करना सर्वथा नहीं चाहते। प्रत्युत विदेशीय वस्तु बहिष्कार और स्वदेशीय वस्तु स्वीकारके द्वारा जो कि पवित्रता-रक्षा और धर्मरक्षाका सहायक है उसमें भी सहयोग देनेके लिए तैयार है। किन्तु हमारा धर्म-रक्षा प्रधान उद्देश्य है इस लिए धर्मनाशके उपायोंका प्रत्युपाय तो हमें अवश्य करना ही होगा। इस लिए अब राज्याशासन विभागमें भी प्रवेश करना यह भी इस परिषद्का उद्देश्याज्ञ होना उचित है।

राजनीतिविषयक यह प्रश्न आजतक तो हमारे प्राचीन पण्डितोंके साम्हने उपस्थित हो हो कर भी नष्ट होता रहा। पुराने विद्वानोंने इस कोने पर अभी अपनी दृष्टि डाली ही नहीं। प्रत्युत कभी २ दृष्टिपात करते हुए भी ब्रह्मज्ञानियों की तरह 'ऐसेम्बली प्रभृति राजसभाओंमें कोई भी जाओ, हम पण्डितोंको इन बातोंसे क्या मतलब?' इस तरह उपेक्षा ही करी।

किन्तु इस उपेक्षासे बड़ी हानि हुई है। बड़ा भयंकर परिणाम आया है। जिस धर्मको भारतीय लोग अपने प्राण समजते आ रहे थे, जिसके लिए कोटिशः भारतीय छीपुगुणोने युद्धमें मुखसे प्राण खो दिये थे उसी हमारे सनातन धर्मका नाश हमारे ही भाई विदेशियोंकी चाखे आकर कर रहे हैं और हम सोचे हुए की तरह बेखबर रहे आये, अब इन सच आपत्तियोंका भी उपाय करना चाहिए।

हमें अपनी सनातनधर्मजनताके अनेक सच तय्यार करने चाहियें और उनके द्वारा ऐसेम्बली कौन्सिल म्युनिसिपल कमेटी प्रभृति चाहे स्वदेशीय चाहे विदेशीय हो दोनों गन्यरासन विभागों में प्रवेश कर अपनी धर्मरक्षा के लिए वहाँ स्थान-प्राप्ति करना चाहिए।

जो लोग अपनी ही जनता से वोट ले लै के वहाँ जाते हैं और अपने धर्मपर आघात कर रहे हैं उन लोगों का वह प्रच्छन्न स्वरूप और धर्मनाशका कार्य सामान्य धार्मिक जनता के आगे प्रकट करना चाहिए। जो लोग उन्हें भोलेपन से भारतहितैषी समझकर उनकी सदस्यता के लिए सम्मति (वोट) देते हैं उन्हें इसके रहस्य को समझा कर इस अनर्थ से मुक्त करने चाहिए। देश देश में सर्वत्र वर्णाश्रम धर्मरक्षिणी सभाओं का स्थापन करना उचित है। चारों तरफ धर्मोपदेशकों को भेजने चाहियें। प्रधान राज (कौन्सिल) सभा राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस) और नगरपरिष्कारिणी सभा (म्युनिसिपल) प्रभृति शासनविभागोंमें भी धर्मप्रही उभय भाषा-भिज हमारे विद्वानों को भेजने चाहिए। इस विषय में विपुल आन्दोलन करना चाहिए। सम्भ्यता पूर्वक यदि राजनीतिका भी आन्दोलन किया जाय तो उसमें किसी प्रकार का दोष नहीं है, प्रयुक्त उससे राजभक्ति का प्रदर्शन होता है, जनता में सामर्थ्य है यह विदित होता है, और अपने स्वयं का रक्षण होता है।



अथिक्ल भारतवर्षिष्य-वर्णाश्रम स्वराज्य सङ्गमा चतुर्थे मङ्गलिविबेचन-जलगाप.

(सभासप्तदशके रङ्गमञ्जरी अपूर्व दृश्य)

—आमपाश्वर्यम्—

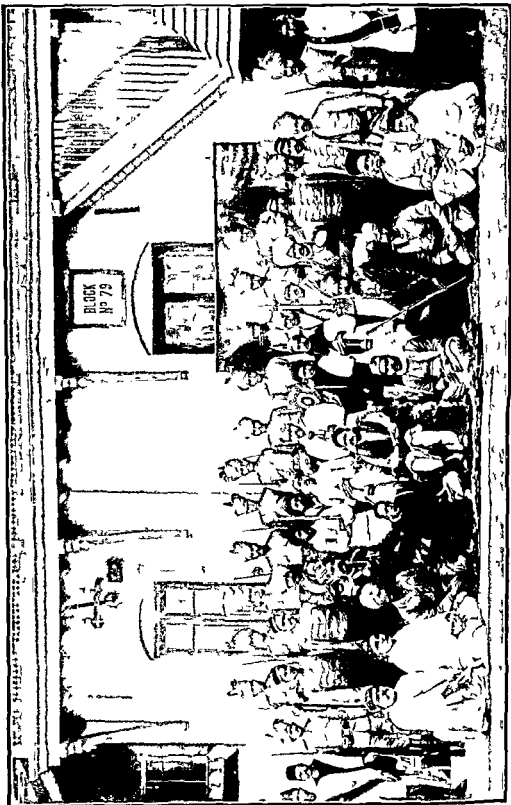
दीवम्

—अद्विष्टपाश्वर्यम्—

श्रीमान् सभापति मन्त्रोदय

श्रीवेद मन्त्राधान

१ श्रीयदुनिर्मितमन्त्राधीन्यन्त्रा



જિસ પુરુષ મેં કોઈ સત્ત્વ નહીં અત એવ-જો નિર્બલ હૈ ઉસકા આદર ન તો પ્રજામે
 ધાર રાજવર્ગમે હી હોતા હૈ । સસત્ત્વ ઔર સવલ પુરુષ કા હી માન પ્રજા ઔર રાજા કે યહો
 યો સક્રતા હૈ । જિસ સનાતનધર્મી જનતા મી ધર્મરક્ષા કે લિધે મર્યાદિત ઔર વિપુલ આન્દોલન
 ચલાવેગી ઉસ રો-; ઉસકા મી ભારતીય પ્રજા ઔર રાજા દોનો મેં આદર હોગા ઔર ઉસી સમય
 હમારે લોગોંકી વાંચ્છિતપ્રાપ્તિ હો સકેગી ।

ઇસ લિધે હમારા વક્તવ્ય યહ હૈ કિ અપને ધર્મ કી રક્ષા કે લિધે ઔર અપને અધિકારોં કી
 રક્ષા કે લિધે ઈસી પ્રકાર સંઘ બનાકર હમેં ડન સર્વ ઉપાયોં કા પ્રહણ કરના ઉચિત હૈ

ધર્મરક્ષણાર્થ જન ઉચિત ઉપાયોં કા પરિગ્રહ હોગા ઉસ સમય શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન્ મી
 હમારે ઉપર અવરૂપ કૃપા કરેગે । ભગવદનુગ્રહ સે હમારે ઇચ્છિત કાર્ય મેં અવરૂપ સિદ્ધિ હોગી
 'દત્તા' કહકર મેં ભગવાન્ શ્રીકૃષ્ણકે ચરણક્રમલ મેં પ્રાર્થનાપુષ્પાન્નલિ નિવેદન કરતા હુઆ અપને
 વક્તવ્ય કો સમ્પૂર્ણ કરતા હૂં । હારે. ઐ રમ્ !

કિરાતહ્રાણાન્નપુલ્લિદ્વપુન્કસા આભીરકઙ્ગા યવનાઃ સ્વાદયઃ ।

યેડન્યે ચ પાપા યદુપાત્રયાત્રયાઃ શુવ્યન્તિ તસ્મૈ પ્રભવિષ્યવે નમઃ ॥

સ્વયં સમુત્તીર્ય સુદુસ્તરં ધુમન્ ભવાર્ગવ મીમમદધસૌહદા ।

મત્પદામ્બોરુહનાવમત્ર તે નિઘાય યાતા. સદનુગ્રહો ભવાન્ ॥

સભાપતિ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયનું લાપણુ.

ગુજરાતીમાં સાર.

મહાતુભાવ ધર્મીયાર્થો, મહારાજાઓ અને સર્વેશ્વરાઅનિષ્ઠાત વિદ્વાનો તથા ધર્મનિષ્ઠ
 ગૃહસ્થો ! આપ જાણતાજ હશે કે આ ભરતખંડ ધર્મપ્રાણુ દેશ છે તેમાં પણ દક્ષિણમાં રહેલી
 ભૂમિના મનુષ્યો તો બહુ કાળથી ધર્મરક્ષણાર્થે કેડ બાંધીને તત્પરજ છે એમ પ્રસિદ્ધ છે. આ
 ભારતની અંદર સ્વાભાવિક રીતે, શાહજો ધર્મનેજ પોતાનું ધન માને છે, ક્ષત્રિયો ધર્મરક્ષણનેજ
 પોતાનું મત માને છે, વૈશ્યો ધર્મનેજ પોતાનું જીવન-માને છે અને શૂદ્રો વગેરે પણ ધર્મના
 અનુયાયીઓ જ છે. કિંબહુના આ દેશની સ્ત્રીઓએ પણ પોતાના ધર્મના રક્ષણાર્થે જીવનને
 પરિમાણ કરેલો છે એ આપણે બધા સારી રીતે જાણીએ છીએ. આ પણ આપણે સર્વેને
 અજાણ્યું નથી કે આ જગતના ચરાચરચરુપુરાણપુરુષ ભગવાન્ શ્રીકૃષ્ણે પણ ધર્મના રક્ષણને
 માટેજ યુગે યુગે અવતાર ધારણ કર્યા છે.

આજે આપણે પણ સર્વે જુદા જુદા પ્રાંતોમાંથી ધણું કષ્ટો સહીને ઉત્સાહપૂર્વક ધર્મરક્ષણ
 વિચાર અર્થે અહીં એકત્ર થયા છીએ. સ્વધર્મની રક્ષા કરવી એજ આપણો પ્રધાન ઉદ્દેશ
 હોવો જોઈએ એ નિઃસંદેહ છે. પોતાના ધર્મસામાજ્યનું રક્ષણ કરવાની દીક્ષાવાળા દેવશુરોએ
 ગૃહસ્પતિ ભરદ્વાજ વગેરે અમારાં પૂર્વીયાર્થો યદ્દ ગએલા છે. તમો કે જોએ સ્વધર્મના રક્ષણની
 આકાંક્ષાવાળા છો તેઓએ મને આ મહાસભાના સભાપતિપદ ઉપર અધિષ્ઠાપિત કરેલ છે તે
 સાદસ કેવલ હું શ્રીગોવર્ધનધરણના ચરણના આશ્રયી સ્વીકારું છું, અને મને દૈવ વિશ્વાસ છે
 તેજ ભક્તવાન મને કાર્યસક્તિ પ્રદાન કરમે.

સભ્યો ! વિવિધ પ્રકારના ધર્મોમા પણ સર્વ ધર્મના મૂળરૂપ વર્ણશ્રમ ધર્મ છે તે વિશેષ ધર્મ છે માટે ખાસ કરીને રક્ષણ કરવા લાયક છે. આ ધર્મનું જો રક્ષણ કરવામાં ન આવે તો હું માનું છું કે ખીજ તમામ ધર્મ પણ રક્ષણ વિનાના યષ્ઠ જાય.

કેટલાક વિદેશી શિક્ષાદિક્ષાવાળા વિવિધ તરંગોથી વ્યાકુળ અને વિદેશી ભાવમા નખચો તે શિખ સુધી કુએવા આ વર્ણશ્રમ ધર્મને કપટથી, દગાથી, રાજનીતિથી નાશ કરવાને માટે મત લઈ બેઠેલા છે, એ તમો જ્યાં જુઓ ત્યાં સ્પષ્ટ જ છે, તેઓની સાથેજ આપણો પનારો પડ્યો છે. એટલા માટે એટલા બળથી તેઓ આપણા પ્રિય ધર્મનો નાશ કરવાને ઇચ્છે છે તેટલાજ અથવા તેથી પણ વધારે બલથી આપણે પણ સર્વજનહિતકારક વર્ણશ્રમધર્મના રક્ષણને માટે કમર કરીને ઉભા રહેવું જોઈએ, કારણ કે સ્વધર્મનું રક્ષણ કરવાથી તે ધર્મજ સર્વનું રક્ષણ કરશે.

કેટલાક વળી હાલમા સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિનેજ ભારતવાસીઓનું મુખ્ય ધ્યેય માને છે, એમાં અમારે અડચણ નથી. અમે પણ સ્વરાજ્ય ઇચ્છીએ છીએ, પરંતુ સ્વર્ધર્મ અથવા વર્ણશ્રમ ધર્મનો નાશ કરીને કેવળ સ્વરાજ્યની ઇચ્છા નથી રાખતા. ક્યો એવો જુદિમાન પુરુષ ધર્મરહિત સ્વરાજ્યની કામતા કરે ? ધર્મરહિત સ્વરાજ્ય મળ્યું હોય તોય તે કલેશકારક અને અચિર નિવડે છે. કેવળ ધર્મરહિત અને વિધર્મીઓનું સ્વરાજ્ય એ અતિ ધર્મકલેશકર અને અચિર જેલુ થાય છે. એ સમાચારપત્રો વાચનારથી અજાણ્યું નથી.

સુરાજ્યજ સુખકર છે પણ એકલું સ્વરાજ્ય નથી. ભારતવર્ષમા રાવજનું પણ સ્વરાજ્ય હતું તેનું પણ સ્વરાજ્ય હતું અને એવો ક્યો ઝાલો માણસ એ બન્નેના રાજ્યને સ્વરાજ્ય ન કહી શકે ? અલબત્ત એ સ્વરાજ્ય હતું પણ સુરાજ્ય ન હોતું એટલા માટે એ રાજ્યોમા મોટો કલેશ હતો અને સમાજમા મોટો વિસ્ફોટ હતો તેથી જુદિમાન પુરુષો સુરાજ્યને માગે છે નહિ કે સ્વરાજ્યને. સુરાજ્ય ધર્મ પડેજ મેળવી. ચકાવ છે. ધર્મથીજ સર્વ લોકમર્મોદામાં રહે છે. જે લોકો ધર્મની મર્મોદામા બંધાયેલા હોય તેઓનું સ્વરાજ્ય એજ સ્વરાજ્ય છે અને એ સુખકર અને અકલેશકર થાય છે એ સર્વ જોનારને જણીતું છે.

આ વર્ણશ્રમ સ્વરાજ્યસંધ વર્ણશ્રમધર્મવાળા સ્વરાજ્યને ઇચ્છે છે એ એના નામ પાથી સમજી શકાય એવું છે, અને આમા વર્ણશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્યની ઇચ્છાવાળા જનો એકત્ર થાય છે, કારણ કે સંધ એ બળ છે. પૂર્વે તપ યગ્નજી હતું, તત્પર્યાત એ બળ હતું, પછી પૂન એ બળ હતું અને હાલમા સંધ એજ બળ છે. જો કે હમેશાં સમૂહ એ બળ છે એ વાત ખરું પરંતુ આ કળિયુગમા સંધશક્તિ એ વિશેષ બળ છે.

વર્ણશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્ય બન્નેને એક સાથે ઇચ્છવાવાળા અમારા લોકોના સંધર્મ આદ્યવર્ષ અતર્જત બ્રાહ્મણથી લઇને અર્વજ સુધી સામેલ છે. આ રીતે અમારા લોકોનું જા પણ બહુબ્યાપક છે, કિંતુ અમારા ભારતીયોમા પરસ્પર શુભ કામના તથા સૌહાર્દની એકમતિ ન હોવાના કારણે આપણે સંધશક્તિશાળી હોવા છતાં અત્યંત દુર્બળ તથા ક્ષીણ જેવા યદ ગયા છીએ. આપણા લોકોમાં એ પણ વિકાર આવ્યો ગયો છે કે એક ખીજને ઠગીએ છીએ અસમાન કરીએ છીએ અને ઇધ્યાને વધારીએ છીએ. એક ખીજના દોષ શોધવા તથા પ્રકટ કરવા જ લાગી ગયા છીએ.

એથી લોકોમા પરસ્પર સેદ તથા અવિશ્વાસ વધતો જાય છે. એક ખીજમાં એક ઉત્પત્તિ દરીએ છીએ પરંતુ વિશ્વાસને હુલ્લમા સ્થાન દેતા નથી. આ પ્રકારે ચર કરેલું કાર્ય સર્વદા નષ્ટ

યદ્ય જન્ય છે. માટે સર્વ પ્રથમ દેશદેશાન્તરથી આવેલા મહાત્મલાલોને માફ માગદ નિવેદન છે કે હવેથી આપ આ પ્રતિભા સ્વીકાર કરો કે સૌ એક બીજાના ભાઈ છીએ અને વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યમાં એક સાથે મળી એક બીજાને સહાયતા કરો. પરસ્પર સહલાવથી પ્રતિષ્ઠિત તથા માણુ-પણુથી રક્ષિત વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યનો હું અભિલાષી છું.

આજ સુધી કોઇ વિદ્વાને વર્ણોશ્રમધર્મની રક્ષાની ઇચ્છાને વશ થઇને કોઇના ઉદ્દેશની સિદ્ધિના માર્ગમાં બાધા પડેલાહી નથી. સર્વ સ્વાર્થ સમીક્ષિતની નીતિ મુજબ તેના તે તે અધિકારોપર અધિષ્ઠિત રહેવા છતાં પણ અમે લોકોએ તેની ઉપેક્ષાજ કરી છે. પરંતુ તે પછી પણ જે લોક દંડનિપાતની માફક જળજળસ્તીથી અથારા વર્ણોશ્રમધર્મને નષ્ટ કરવા ચાહે છે અને તે માટે યત્ન પણ કરે છે તો તેના પ્રતીકાર માટે આપણે અવશ્ય તત્પર થવું જોઈએ. આત્મનાશ તથા ધર્મનાશને વખતે સંતોષ તથા બેદરકારી રાખવા કદાપિ ઉચિત તથા શ્રેયસ્કર નહિ કહેવાય. એ માટે આપણે સહનદ થઇને અવશ્ય ધર્મરક્ષણ તથા સમાજહિતરક્ષણના ઉપાય કરવા જોઈએ. કોઇ લોક જે ધર્મનો નાશ કરીને સ્વરાજ્ય લેવા ચાહે છે તે એસેમ્બલી, કાઉન્સિલ અને મ્યુનિસિપાલિટીમાં પ્રવેશ કરીને પોતાની ટોળાઓ બાધીને બળાતકારે ધર્મનો નાશ કરવા ઇચ્છે છે. ધર્મવિધ્વંસક લોક પ્રતિવર્ષ નવા નવા ધર્મવિરોધી ઠરાવ રજુ કર્યા કરે છે અને 'હિંદીઓની ઇચ્છાથી તદ્દન પ્રતિકૂળ તે ઠરાવોપર જળજળસ્તી પોતાનો મત પણ આપી દે છે તેમ તેઓની ઇચ્છા હોય છે કે તેને આચરણમાં પણ મુકવે. પરંતુ આવી વાતોથીજ સમગ્ર સમયે ધર્મવિધ્વંસ, સમાજવિધ્વંસ વગેરેની સભાવના રહે છે, આ બાબતમાં આ કારણથી પણ યત્ન કરવો અત્યાવશ્યક છે.

ભારતીય પડિત જનો સમક્ષ રાજનીતિ સંબંધે પ્રશ્ન ઉભો થવા છતાં પણ તે નષ્ટ થઈ જાય છે. પુરાના પડિતો આ તરફ ધ્યાન સુદ્ધ દેતા નથી અને જો કદાચિત્ કોઇ રીતે કોઈની દૃષ્ટિમાં વાત પણ આવી અથ તો તે જ્ઞાતમાનીની માફક એવો ઉત્તર આપતા જોવાય છે કે “એસેમ્બલી-ધારાસભામાં કોઇ કોઇ પ્રકારનો અધિકાર પ્રાપ્ત કરે અથવા ન કરે એમાં અમારે પડિતોને શું પ્રયોજન ?”

એથી કેટલી હાનિ તથા કેટલું ભાવંકર પરિણામ થઈ કહ્યું છે? જેના આધારથી અમે લોકો જીવતા છીએ, જે અમારા ભારતીયોનું જીવન કહેવાય છે તે “ધર્મ” વિદેશીઓ તથા આપણા પોતાના ધર્મવિરોધી માણસોદ્વારા નષ્ટબ્રજ કરાઈ રહ્યો છે, તો પણ આપણી નિદ્રા નથી ટુટતી આપણા લોક સુષમ્મા નિદ્રા લપ્ત રહ્યા છે, બીજી તરફ ધર્મવિરોધી લોક ભારતીયોને પ્રલોભન આપીને છતરીને મત લઈ રાજસભાઓમાં પ્રવેશ કરે છે અને અધિકાર જમાવે છે. આ જાળને તે લોક અમારા ધર્મનો મરજી મુજબ નાશ કરે છે માટે આ દશામાં આપણે ઉપયુક્ત માર્ગનું ધીમી અવતરણ કરવું જોઈએ એસેમ્બલી કોંગ્રેસ પ્રભુતિમાં સંઘ બાધીને હુસારું અને તે ધર્મનાશકોનું સ્વરૂપ સર્વની સામે પ્રકટ કરી દેવું જોઈએ એવા લોકોને મત ન આપવા માટે પ્રજાને સમજાવવી જોઈએ. સર્વ પ્રદેશમાં વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યસંબંધી ચાખા ચાપન કરવી જોઈએ, સર્વત્ર ધર્મોપદેશક મોકલવા જોઈએ, કોંગ્રેસ, ધારાસભા, મ્યુનિસિપાલિટી વગેરેમાં આપણા વિશિષ્ટ ધાર્મિક વિદ્વાનોને કાબલ કરવા જોઈએ, અને ઉગ્રમાં ઉગ્ર આદેશન કરવું જોઈએ.

નિસત્વ તથા નિર્જાળ પુરુષ પ્રજા તથા રાજ બનેલા અપમાનને માત્ર યાય છે. જે વખતે આપ લોકો ચારે તરફથી અતિ ઘેર આદેશન ઉદાવશે તો વખતે રાજ્યજનોમાં પણ આપની પ્રતિષ્ઠા થશે અને લક્ષ્યસિદ્ધિમાં વિલંબ નહિ થાય નિર્જાળની સહાયના કોઈ કરવું નથી. કોલા-

હજી કપાવિના મા પશુ પોતાના પુત્રને દૂધ પીવરાવતી નથી. માટે ધર્મરક્ષણાર્થે તથા પોતાનાં અધિકારીની રક્ષાને સાર વિદ્યાન સંભળ્યો. સંબંધક યદ્ય વિચારપૂર્વક અવરમ પ્રબળ ઉલ્લેખ કરે અને સર્વત્ર ધર્મોપદેશ કરે. ઉલ્લેખી પુરુષોપર ભગવાનની પશુ અતુકંપા યશે. ભગવાનની કૃપાથી મનની ક્ષત્તા મુજબ સિદ્ધિપશુ અવરમ યશેજ. તે ભગવાનની કૃપા પ્રાપ્ત કરવાને માટે તે દેવદેવેશના ચરણકમળોમાં પ્રાર્થનાપૂર્વક સાદર પ્રણામ કરીને માફ વક્તવ્ય સમાપ્ત કરે છું.

સભાપતિશ્રીના આખ્યાન પછી વિષયવિચારિણી સભાતું અધિવેશન રાત્રે નવ વાગે રાખીને, પહેલી બેઠક સુખશાંતિ અને ઉત્સાહ સાથે સંપૂર્ણ થયલી જાહેર થઈ. આ વખતે સાંજના સાત તો વાગીજ ગયા હતા. તો પશુ શ્રીમાન સભાપતિ બરોબર સમય ઉપરજ ૬ વાગે પધામી. હજી મંડપમાં ગજીતરીનાજ સભ્યો આવ્યા હતા. શ્રીમાન સમયસર પધામીતું સાંભળતાંજ એકદમ ટોપેટપ બધા આવવા લાગ્યા. જોતજોતામાં મંડપમાં તો ગીરદી થવા લાગી. જે ન આવવા જોઈએ તે પશુ તમાશો ત્યેવા જાણે આવ્યા હોય તેમ અંદરે બરાબ ગયા. આ ગરબ્યવસ્થા થવાથી સભાપતિશ્રીએ કાષ્ઠાનો પૂરો અમલ કરવા માંડ્યો ! પોતાના સીપાહીઓને મંડપની વ્યવસ્થા સોંપી દીધી. જેઓ સભાસદ ન હતા, તેમને મંડપમાંથી બહાર જવા દુકમ કીધા. માત્ર જેમને હજી હતો તેમનેજ મંડપની અંદર રાખ્યા. આથી શાંતિ પ્રસરી ગઈ ! પછી મોટી રાત સુધી વિષયવિચારિણી સમિતિતું કાર્ય ચાલ્યું. બીજે દિવસે 'વિદ્યારિપદતું' અધિવેશન સવારમાં ૮ વાગે હતું, તેથી સમિતિ કાર્ય અધૂરું રાખીને ઉઠી ગઈ. આજે રાત્રે અંતજોનાં હૃદયોમાં ઝેર રેડવાનો ખુબ પ્રયાસ ચાલી રહ્યો હતો. જાહેર સભાઓદ્વારા અંતજોને ઉઠેરીને સંગેશનના સભામંડપમાં ઘૂસી જવાનો અને તે સુરાદ પાર ન પડે તો સુખ્ય દાર ઉપર સત્યાગ્રહ કરવાનો ચેતરો રચ્યો. આ વાતની ખબરે રાત્રે જ પડી હતી. પશુ પ્રશુ ઉપર શ્રદ્ધા રાખનારાઓ કાંઈ થોડા જ હરી જાય છે ?

બીજે દિવસ—અંતજસત્યાગ્રહ !

જે કલાક નિદ્રા લીધા પછી પ્રભાત થતાં પયારી છોડી પડી ! જલગામમાં તો જન-સંખ્યા ખુબ વધી ગઈ હતી. જુહાનપુર આદિના વેખ્યુલો મોટી સંખ્યામાં આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાનના દર્શન અને ચરણસ્પર્શ માટે તો મોટી ફાજ આવી પહોંચી હતી, ઉપરાંત મંડપના ઉત્તર દાર પાસે પચાશેક અંતજોની એક દુકડી આવી ગયાના અને તે દાર બંધ કર્યાના, તેમજ દાર બંધ થતાં જ તેની પાસે દારને ઘેરો ધાલીને રામનામ જપવાનો તમાશો કરતા અંતજોની વાત આવી ગઈ ! હવે શું કરવું તે માટે વિચાર ચાલ્યો. જલગામના અંતજોને તો પડીજ ન હતી. કેંગ્રેસના રોજના આઠ આનાના રોજગારે આવેલા બહાર ગામના દરેક ટંડાઓતુંજ આ કારસ્તાન કે તરફટળ હતું. હિન્દુસ્થાનના કમનસીબે જાતપાત તોડકે મંડળવાળા બ્રહ્મચારીઓમાંના કોઇને કોઇ દરેક ગામમાં હોય છે ! આ ગામના તેવા કેટલાકો પરજ પાછળ રહીને દોરી ખેંચતા હતા ! જલગામના અંતજો તો ધર્મદ્રોહ કરવા તૈયાર જ ન હતા. આ તરફ અધિવેશનની લખ્યતા કેંગ્રેસની બેઠકને પંજુ ઝાંખી પાડતી હતી. આ ઉકળાટ પેલા કહેવાતા મુધારકેથી કેમ સંખ્યા ? પહેલાં તો આ અધિવેશને જ તોટી નાંખવું એવા નિશ્ચય પર તેઓ આવેલા, અને તેવાં બાપણો પશુ કરેલાં હતાં ! પશુ એ વાત તો ભાગ્યહતા પ્રબલિત અગ્નિ સાથે બેલ કરવા જેવી હતી. તેથી ગામના અબજુ અંતજોને હથિપાર બનાવીને બીજ સુરાદ પાર પાડવી હતી. અધિવેશનના મંત્રી પાસે તેઓ આવે છે તેની ખબર મળતાં એક રા. મેર નામના શિક્ષિત મુદરકે મારશલ લખી મોકલ્યું કે—આ સંઘમાં લખલ થયા માટેનું

જે પ્રતિષ્ઠાપત્ર છે તે ઉપર અંતરે સહી કરી આપે અને જે સ્થાન પર મંડપમાં અમે બેસાડીએ ત્યાં બેસે તો આ અધિવેશનમાં ખુદીથી આવી શકે છે." પણ પેલા બહારનાઓને તોફાન જ કરવું હતું. કોઇ વાતનો નિવેડો આવવા દેવો જ ન હતો, તેથી "અંતરેને દાખલ કરવામાં નહિ આવે" એવું પાટીયું મંડપની દહતી બહાર જ લગાડી દેવામાં આવ્યું. આખરે તેઓએ ઉપર જણાવ્યા મુજબ સલામત (!) શરૂ કર્યો. ઘણાઓએ આ વખતે પોલીસની સહાયતા લેવાનું કહ્યું, પણ તે માર્ગે જવાની ધર્મપ્રાણ શ્રીલંકેશ્વર સાહેબે નાજ પાડી. સલામત શરૂ થઇ ગયો. આ બાકીની સત્યાગ્રહીઓને ત્યાંથી ઉચકીને બીજે સ્થળે મૂકી દેવા એ એક પદ્ધતિમાં અને તેવું હતું, પણ "નાગાથી બાદશાહ આધા" એ કહેવન મુજબ દક્ષિણ દરવાજામાંથી બધા આચાર્યશ્રીઓ તથા વિદ્વાનો મંડપમાં ગયા, અને વિદ્યાર્પણ કર્યું ત્યાં તો શરૂ પણ કરી દીધું! એક દારૂપર અંતરે અને તમારુંખીનોતી કડ જાગી હતી. સમય ઘણો વીતતાં અંતરેને ખાવા માટે ચણા અને પીવા માટે પાણી પૂરું પાડ્યું હતું. કોઇને કુદરતી હાજતે ઉઠવાની પણ મનાઇ હતી! તેમના નેતાઓને તો ખૂબ ધામધૂમ કરવી હતી, જનસમૂહની સહાનુભૂતિ ખેંચવી હતી! પણ આવા બાકીઓ કોઈ સંસ્થાગ્રહીઓ કહેવાય? આ પેતરે તેમનો મુદ્દો આપ્યો નહિ. એટલે વેશ બદલી બીજે બારણેથી કંપાડડમાં પેગની ખજાર પડતાં જ આ જાગી નના મીલમાલેકે પોલીસને ખજાર આપી દીધી. તે પરથી આ પ્રાથમિક માસીકની જાગીનમાં પેસવા બદલ બહારગામના તોફાની બાકીઓને પોલીસે ગિરફતાર કરવા માંડ્યા એટલે મામલા અંતરેને તો જીવ લાઇને, સુઢી વાગીને નાસી ગયા! બાકીની સત્યાગ્રહીઓ આ રીતે ફેરવેલો. આ વાતની ખજાર છાપાઓમાં તો અજબરીતે ચિતરવામાં આવી હતી. પૂતા અને મુંઝવણ વર્તમાનપત્રોના પ્રતિનિધિઓ ત્યાં રિપોર્ટ લેવા બેસતા હતા, પણ છત્રી આપે આંખળા હોય તેમ અજબરિ રિપોર્ટ લખતા હતા. આજના છાપાઓ એટલે જેમાં સોએ નવાણું ટકા મૂકા ગયેલા આવાતા હોય હોય તે, અને જે દમડી કિંમતના વિચારોનું ભુમું ભરનારા એડીટરચાર્યોના બીલામણાં ચિત્રામણો! તે પણ ઘણાં પત્રોએ એટલું તો લખ્યું કે આ સત્યાગ્રહની યોડી પણ અસર સંભવન પર થઇ ન હતી. જ્યારે સત્યાગ્રહ શરૂ થયાની વાત અંગ્રજમાં સાંભળી ત્યારે તો હૃદય ફફડી ઉઠ્યું હતું! શ્રીનાથદાસથી નિકળતાં ભવિષ્યના જે વિન-રખનો જોવામાં હતાં તે પ્રત્યક્ષ કરવાનો શું સમય આવી પણ ગયો? પણ મંડપ પાસે જતાં સત્યાગ્રહ પાછળ રહેવું બળ અને તરકટ ઘુરતજ પ્રત્યક્ષ થયાં. શ્રીમાન સલામતિ પણ ત્યાં પધાર્યો. કોઇ જાનતું વિદ્વત્ આવ્યું નહિ. શ્રીમાનના પ્રતાપબળથી વિદ્વાનો પામે પણ ન ફરકી શકે એવો અનુભવ નવો તો હતો જ નહિ. છતાં આવા વિકટ સમયમાં તેના માક્ષાત્કારથી જીવશુદ્ધિમાં માદાત્મજાનની જ્યોતિ વધુ પ્રદીપ્ત અને છે.

યાદગાર અધિવેશન—સવારમાં વિદ્યાર્પણ થયું તે બપોર સુધી ચાલ્યું, વિવિધવિધા-રિણી સમિતિ પણ થઇ, ઉપરિચિત થયેલા અત્યંત સત્યાગ્રહ વિશે ખૂબ ઉદ્ધાપિત થયો. ત્યારબાદ ફરારોનો નિર્ણય કરીને બધા ભોળતાદિ દેહકાર્યો સજામંડપ છોડી ગયા. આજે બપોરે ત્રણ વાગે 'સંઘ' ના મહાધિવેશનની બીજી બેઠક હતી. પહેલા દિવસ કરતાં આજે માનવેસમૂહ તો વિશેષ ઉભરાતો હતો. સભામંડપ તો નાનો પડ્યો અને આસપાસના મંડપના આવરણોને ફાડી તોડીને મંડપની બહાર પણ જનસમૂહ મંડપની અંદરનું દરય જોવા લાગ્યો. આજે બીજા આચાર્યો અધિવેશનમાં ન આવ્યા તેથી ભારે ચર્ચા થઇ હતી. પણ આજનો દિવસ તો યાદગાર બન્યો હતો. આજનું દરય તો કાઢીની મહાસભાને પણ બુલાવી દે તેવું હતું! લગભગ ૨૦

હજાર સંખ્યાની જનતા ઉપરિચિત થઈ હતી. ભાહુતી અંત્યજનોના દંભ અને પાખંડમય અરણ્ય રુદ્ધને કોઈની સહાયુભૂતિ મેળવી ન હતી. મસલત સમિતિએ પસાર કરેલા ઠરાવો એક પછી એક રજુ થયા, અને વિદ્વાન્ પંડિતો અને ધર્મનિષ્ઠ સહૃદયોના સંપૂર્ણ અનુમોદનથી પસાર પણ થવા લાગ્યા. આ ઠરાવો ઉપરનાં લાપજો અજન્મ ગ્રેરક હોઈ ધાર્મિક જુરસો ઉત્પન્ન કરતા હતા. આ જ સમયે વિધાયતમા ગોળમેજી પરિષદ ચાલુ હતી તેથી એ પરિષદને ચેતવણીરૂપે પહેલો ઠરાવ મૂકાયો; અને નીચે મુજબ તાર વિધાયતમા વડા પ્રધાનને તથા બીજા ગોળમેજી સભ્યોને કરવામા આવ્યો. એ તાર આ પ્રેમારે છે—

THE PRIME MINISTER,

LONDON (England.)

At the meeting of the All-India Varnashram Swarajya Sangh held at Jalgaon, Khandesh District, Bombay Presidency.

It was resolved that in the new Constitution which is to be framed as the result of the Round Table Conference, it should be provided that there shall be no interference by Legislation or otherwise in matter affecting Hindu Religions or Religion and Socio-Religions beliefs Practices and Culture of the Sanatan Hindus and that such provision shall be unalterable. *

Please put this Resolution before the Round Table Conference and be good enough to get this provision introduced into the new constitution.

From

Goswami Shri Damodarlalji Maharaj,

Chief Acharya Vallabha Sampraday of Nathdwara
President,

All India Varnashram Swarajya Sangh Conference.

Copies to

Secretary of State for India,

Maharaja of Durbhanga

Maharaja of Dholpur.

Dated, 30-12-1930. 6 p. m.

ખીજે ઠરાવ સોલાપુરમા ફાસ્ટીની સમ્મ પામેલા સહૃદયો માટેનો હતો, પણ આ સરકાર પાસેથી એવી દયાની આશા જ હવે તો ફેગટ ગણાય. ત્રીજે ઠરાવ એકસો (૧૦૦) કાર્યકર્તા ધર્મચીર ઉભા કરવા માટેનો હતો. “સ્વાધીનશ્ચવનવાળા, સદાચારસંપન્ન, સર્વથા નિરવાર્ય, ઉત્તમોત્તમ વ્યાગી” આવા કાર્યકર્તા જોઈતા હતા. આ વિશેષચુવાળા તો ભાગ્યેજ નિકળ્યા આવે. સગામા જ્યારે નામ નોધાવા માડ્યા ત્યારે તો જાહેરમા નામ આવે એવી આશાએ ધજાઓ પોતાના નામ પોકારવા માડ્યા, પણ સભાપતિશ્રીએ કપરી કસોટી કરી; ઉભા થઈને જણાવું કે જેને નામ નોધાવવું હોય તે પાછલથી કાર્યાલયમા નોધાવે, અહીં ઘોઘાટ ન કરે. જોયું કે પાછળથી

અર્થકરાચાર્યજીએ હાજરી આપી! શારદા ખીલ માટે જ્યારે ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તો શંકરાચાર્યજીના એક પંડિત કે જેઓ વારંવાર વ્યાખ્યાનપીઠ ઉપર આવીને, કાંઈને કાંઈ ગર્જના કરીને, જનસમૂહને હાસ્યમાં ગરકાવ કરતા હતા, તેમણે તો કહ્યું કે “હું તો મારા નાના ભાઈનાં લક્ષ નાનપણમાં જ કરવાનો છું; જોઈ છું કે બ્રીટીશ સરકાર મને શું કરે છે?” આથી ખૂબ હસાહસ થઈ અને તાળીઓના વિપુલ અવાજે થયા! જે સદી ગંભીર આવી! આજે અત્યજનરપરને લગતો ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તેણે જનસમાજનું ખૂબ ધ્યાન ખેંચ્યું. આ ઠરાવ શાસ્ત્રીજી રમાનાયજીએ મૂક્યો, અને તેને અનુમોદન મારે આપવાનું હતું, મારો તો ખાસ વિષય હતો, કારણ કે આ સવાલ જ્યારથી ગાંધીજીએ ઉઠાવ્યો છે ત્યારથીજ હું એ વિષે લખી રહ્યો છું. એ વિષેની વિગતો જ્યારે મેં મૂકી ત્યારે સભા આશ્ચર્યચકિત થઈ ગઈ. સભાપતિશ્રીએ પણ શ્રીમુખે પાંચ મિનિટનાં વ્યાખ્યાન માટે મને શાબાસી આપી ત્યારે તો હું કૃતાર્થજ થયો. આ ઠરાવે ઘણી ચક્રચાર ઉત્પન્ન કરી, પણ તે પસાર થયો. ખીજા પણ ઠરાવો પસાર થયા. છેવટે ઉપકારાદિ વિધિ થયા પણ અધિવેશન પૂર્ણ થયું.

વિદ્યપરિષદમાં ખૂબ ચર્ચા ચાલી. આમાં આવીને જેને જે કાંઈ સવાલ કરવા હોય તેને માટે પૂર્ણ છૂટ હતી. ખૂબ શાસ્ત્રાર્થો થયા. શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજીના વાચસ્પતિસભા વક્તા અને વિદ્વાન પંડિત રાજેશ્વર શાસ્ત્રીજીએ તથા અન્ય પંડિતોએ ચંકાઓનું સમાધાન અગ્રી રીતે કર્યું હતું. આવતા વર્ષનું મહાધિવેશન કલકત્તામાં ભરવાનું આમંત્રણ સ્વીકારાયું હતું.

પસાર થયેલા અગત્યના ઠરાવો.

ઠરાવ ૧ લો:—ગોળમેજ સભાદ્વારા જે બાવી શાસનવ્યવસ્થા કરવામાં આવે એમાં એવું વિધાન થવું જોઈએ કે હિંદુઓની ધાર્મિક અને સામાજિક વ્યવસ્થા તથા બંધારણમાં કોઈ પ્રકારનો હસ્તક્ષેપ કરવામાં નહિ આવે. આ આશયનો ઠરાવ તાર હિંદી પ્રધાન મારફત વડા પ્રધાનને મોકલી દેવા જેથી તેઓ તેને ગોલમેજ સભામાં રજૂ કરે.

ઉપરનો ઠરાવ રા. રા. હીરાલાલ સોલીસીટરે રજૂ કર્યો અને ટેકા મળ્યા બાદ સર્વાનુમતે પસાર થતાં ખીજો ઠરાવ રા. માધવરાવ ગોંધાલેએ રજૂ કર્યો; અને તે પસાર થયો.

ઠરાવ ૨ જો:—અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનું આ અધિવેશન શ્રીમાન વાઇસરોય મહોદયને નિવેદન કરે છે કે સોલાપુર જિલ્લામાં મહાપ્પા વગેરે જે ૪ વ્યક્તિઓને ફાંસીની શિક્ષા થઈ છે તેના પર આપ નામકારે કૃપા કરી ફાંસીની શિક્ષા રદ કરવી.

ઠરાવ ૩ જો:—આ અધિવેશનની સભામિત્રાં એ આવશ્યક જણાય છે કે અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંધના ઉદ્દેશને પાર પાડવાને માટે ઓછામાં ઓછા ૧૦૦ સ્વાધીન જીવન-વાળા, મહાચારમંપન્ન, સર્વશા નિરુપદ્રાઈ ઉત્તમોત્તમ તથા શ્રી કાર્યકર્તાઓને સાફ અગ્રીક બદાર પાઠી કાર્યકર્તાઓની વ્યવસ્થા તુરત કરવી જોઈએ, અને એને માટે એક ઉપસમિતિ સ્થાપી જોઈએ કે જે આ કાર્યને શીઘ્ર પૂર્ણ કરે.

ઉપરનો ત્રીજો ઠરાવ શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ રજૂ કર્યો અને પસાર થયા પણ ચોથો ઠરાવ મહામંત્રી સ્વામીજી દયાનંદજીએ રજૂ કરતાં, શ્રી. ગિરિધરશર્માના અનુમોદનથી પસાર થયો.

ઠરાવ ૪ થો:—સંધના કાર્યને માટે દ્રબની સંગવડ અર્થે માનનીય વ્યક્તિઓનું એક ઉપદેશન હિંદુસ્થાનના મુખ્ય મુખ્ય સ્થાનોમાં ફરીને આવશ્યકતા પ્રમાણે દ્રવ્યસંગ્રહ કરી શકે એવા પ્રયત્ન થવો જોઈએ. ધનસંગ્રહને માટે કમમાં કમ એવા લોકોની પ્રતિષ્ઠા લેવી જોઈએ કે જે નિયમિત રકમ એક વધતી અંદર એકત્ર કરવાનો ખોલે પોતપોતાના ઉપર ઉકાવે અને સાખાસભાઓને પણ તેની યોગ્યતાનુસાર કાર્ય સોંપવું જોઈએ.

ખીજો સામાન કેમ ઉપાડી શકાય ? સદ્બાળ્યે એક હાથ મળી ગયો. વાહણમાં ચંદ્ર ઢંકાઈ રહેલો એટલે અંધારાનું સામ્રાજ્ય હતું ! તેમણે વળી રેશનના તાર અને રેલ્વેલાઇનવાળા રસ્તામાં ચાલવાનું હતું. એક ભોમીઓ પણ સાથે હતો. આ દોઢ માઇલની વિકટ મુસાફરી તો કદી નહિ બુલાય ! અસારસુધી જે મોજ ઉડાવી હતી, તે અહીં નિકળી ગઈ. એમ અચકાતાં ઠોકર ખાતા જ્યારે માલગાડી પાસે ગયા ત્યારે ત્યાં ઉમેલી માલગાડીઓમાં ખડવા જનારી કષ્ટ તે શોધતાં પણ સમય નીકળી ગયો. આખરે માલગાડીનો પતો લાગ્યો અને ગાર્ડના ડબ્બામાં બેસવાની જગા મળી ગઈ ! આ ડબ્બે શોધવા માટે ઈંછન પાસેથી ઠેઠ છેડવા ડાબા સુધી લારલાદેલી સ્થિતિમાં કવાયદ કરતાં જે ડબ્બે લાધ્યો તે પણ ખોચરાના સાલનો હતો એટલે બેસવાના કે સામાન મૂકવાના નીચેના પાટિયાં પણ ટુટી ગયાં હતા ! એટલે રેલનાં પૈકાં કેમ ફરે છે અને નીચેના લોખંડના પાટા અને પથરાયલા પથરાનો દેખાવ કેવો થાય છે તેનો અનુભવ લેવાની જરૂર હતી તે પૂરી પડી ! જેમ તેમ કરીને સવારે નવ વાગે ખડવા પહોંચ્યા. હવે તો હાથમાં એક જ કલાક હતો. માલગાડીમાંથી ઉતરીને સામાન ઉઠાવીને ખડવા રેશન તરફ આ સંઘ આપ્યો. રેશન-પાસે આવતાં નાની અને મોટી લાર્બન પાસેપાસે યઈ જાય છે. મોટી લાર્બન પર ઈંજિન ચાલતું હતું તેથી હું નાની લાર્બન તરફ ચાલતો હતો. પણ પાછળથી અંગ્રેજ મુસાફરીની સ્પેરયલ નાની લાર્બન પર જોડાઈને આવી રહી હતી. હું તે લાર્બનની વચ્ચે હતો. મારા હાથમાં શીમાન્ટી જોખમની પેટી-કલમદાન હતી. પેલી ટ્રેન-વાળા ઈંજન ક્ષુધવરે સીટીઓ પર સીટીઓ લગાવી, પણ મેં ઇંજીનોના ઘોંપાટમાં સાંભળી જ નહિ. રેશનનું પ્લેટફોર્મ તદ્દન નજીક આવેલું જોતા જ મેં પેલી નાની લાર્બન છોડી કે પાછળથી ધમધમાટ કરતી સ્પેરયલ ગાડી પસાર થઈ ગઈ ! આખા હવેલા થયો ! સિમ્નલ આપનારે કહ્યું કે તમને આજે ધનુરે જ બચાવ્યા છે ! પણ તેને કયા ખબર હતી કે, બંધી બાબતમાં અંગીકૃત જીવના રક્ષણદારની છાયામાં રહેનારને ખીજો કયો નવો ધનુર આવીને બચાવવાનો હતો ? એક કલાકમાં શીમાને રેશન પર જ નિત્ય કાર્ય કરી લીધું ! વૈષ્ણવો તો દર્શનાર્થ આવેલા હતા જ. પણ નાગપુરની પેટે તેમના મનોરથો મનમાં જ રહી ગયા ! બરોબર અગીયાર વાગે ખડવા છોડ્યું. રાત્રે રતલામ આવ્યું, અને સવારે ચિતોડ યહને પૌષ વદ ૧૦ મંગલવારે સવારે ૮ વાગે માવલી રેશન પર આવી પહોંચ્યા. શીમાન્ટ મોટરમાં બિરાજીને તાબડોતબ શીજની સેવામાં પધાર્યા.

શીનાયદારામાં પધાર્યા પછી એક જાહેર સભા ભરવામાં આવી. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની શાખા અહીં રથાપી. જલગામમાં જે કાર્યક્રમ થયેલો અને જાહેર વર્તમાન પત્રોમાં જે ગપગોળા ઉડેલા તે વિષે લંગ્રણુથી ખુલાસો કરવા અને આરાયતા મેં જલગામ અધિવેશનનો અભ્યુત્થાનો ઘોડો શાબ્દિક ચિતાર આલેખ્યો. ત્યારબાદ અહીં પણ 'સંઘ'ને શીનાયદારાના અધિકાકારીઓ તરફથી સારી મદદ મળી અને ધણી સલામતો થયા. બદારગામના વૈષ્ણવ સદ્ગૃહસ્થોએ પણ 'સંઘ'ને યથાશક્તિ મદદ કરી એ રીતે સભાપતિએ 'સંઘ'ને મદદ કરવાનું કાર્ય પેતાને ત્યાંથી જ પ્રારંભ્યું ત્યારબાદ કાકરાલીમાં શીવતીયપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શીર શીવજન્મપણુલાલજી મદારાને પણ 'સંઘ'ની શાખા રથાપી અને પોતે ઉદારતાપૂર્ણ મદદ સંઘને કરી. એ રીતે 'સંઘ'માં સક્રિય મદદ સંપ્રદાયે કેટલી કરી તેનો હુંક હતિહાસ અહીં આલેખ્યો છે. શીનાયદારા મહારસકાંતિ કરી, હવે એકના દિવસ પાસે આવ્યાથી વર્ષાંતર્ગમી કરીને અમદાવાદ જવાનો નિર્ણય કયો. લગભગ અઢી માસે માધ સુદમાં હું અમદાવાદ આવ્યો.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધોળા. ભગ-ભાગ-૨. નિત્યપા. ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રંથો, શ્રીવલ્લભાખ્યાન, શ્રીચમુનાજીનાં ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદલાસકૃત રાસ. આખ્યાયી, ભગરંગીત, મુળપુરુષ, નિત્ય ૫૬ (જન્માવવાથી યોદાડવાનાં) જન્માષ્ટમી વધાઈઓ, દીનતા આશ્રયનાં પદો, શ્રીભાગવતનાં ૧૬ ધોળા, મક્તિપોષણ, શીનાયજનાં ધોળા, શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, સાતગાળક શ્રીવલ્લભકુલ આદિનાં ૪૦૦ ધોળા આવો સાતસો પાનાનો સરતામાં સરતો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર છપાઈ, આકર્ષક બંધાઈ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ. ટ. ખ. સાત આના.

૧. શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર—અટીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળા અને શ્રીગોકુલનાયજી અને શ્રીરધુનાયજી તથા શ્રીગોપેશજીની સંસ્કૃત કીડાઓનો સવિસ્તાર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અઠી આના, ટ. ખ. દોઢ આનો.

૨. પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ—શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, શ્રીગોકુલનાયજી તથા શ્રીવલ્લભકુલના અસરકારક ઇતિહાસો, તેમજ મહાનુભાવ રસખાનજી તથા શ્રીમતી તાજની વાર્તા તો વાચ્યાજ કરશે. આવા ગોટા પુસ્તકનું નોંઝાવર માત્ર ૭ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૩. શ્રીગોકુલેશજીનો માંસાપ્રસંગ—શ્રીગુસાંઈજીના ચોથા લાલજીએ જહાંગીરના જુઓત સામે જે અદિસક 'ધર્મપુદ્ધ વર્ષો મુધી ચલાવ્યું તેનું' જલહલતી લાપામાં વણું, યુક્તિઓથી સમજાવેલું તિલકનું રહસ્ય, સચિત્ર પુસ્તક છતાં નોંઝાવર માત્ર દોઢ આનો.

૪. શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર—નવ લાખ શ્લોક લખનાગ મહાનુ વિદ્વાન ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર તથા શિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ વિશે કવિ શ્રીદયારામભાષીનો ગ્રંથ છે. વિષ્ણુદોહીઓને તમાઓ મારનાર આ ગ્રંથની નોંઝાવર માત્ર ચાર આના.

૫. જન્મત મહાત્યાગ—પંચમપીઠાધીધર શ્રીગોવિન્દપ્રભુએ જયપુર નરેશના જીઓ સામે ચલાવેલી લડતનો ઇતિહાસ વાંચી રડવું આવશે, ખુદી થશે, દસશે, સચિત્ર છતાં નોંઝાવર ચાર આના. ટ. ખ. ૧૧ આનો.

૬. વૈષ્ણવ નરેશો—દિનમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રાજમહારાજઓનાં અદ્ભુત કૃતિઓ, સચિત્ર, મૂલ્ય ત્રણ આના. ટ. ખ. ૧૧ આનો.

૭. આરણું તો કંરોજ—ટુંકામા ટુંકો નિત્ય નિયમ ૩૦ ગ્રીસ દળર નકલો વેચાઈ ગઈ છે. નોંઝાવર એક આનો. ટ. ખ. ૧૧.

૮. ન્યાયમૂર્તિના ચુકડો—મુંબાઈના ન્યાયમૂર્તિ રાંગણેકરે ભગવદીય શેઠ પ્રામજી સૂરજીએ પાંડેલા કેસમાં આપેલો અગત્યનો ચુકડો વાંચીને સુધારકોની પોલ પારખી શકશે અને પુષ્ટિમાર્ગની નફોજલાલી જોઈ શકશે. મૂલ્ય બે આનો. ટ. ખ. એક આનો.

૯. પંચાવન પાઠનો ગુટકો-પૃષ્ઠ ૨૫૬—નિત્ય નિયમના પંચાવન પાઠોનો આ ગુટકો જે પહેલાં ૪૨ પાંદો હતા તે) મોટા અક્ષરમાં દમણાં ફરી છપાઓ છે. મૂલ્ય માત્ર ત્રણ પાના. ટ. ખ. એક આનો.

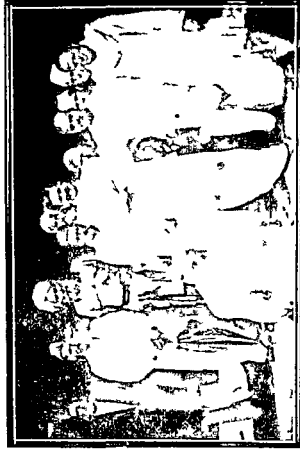
૧૦. શ્રીનટ્વરલાલનાં ધોળા—રાજનગરવાળા ચિ. ગો. શ્રીરણજીડલાલબાવાસાહેબનાં નિત્યલીલાગ્રંથ અ. રી. વહજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય બે આના. ટ. ખ. અઢી આનો.

જધા ગ્રંથોમાં ટપાલ ખર્ચ ભરવું.

ટેકાણું—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

૧૯૪૮, રાજમહેતાની મોળ, અમદાવાદ ન

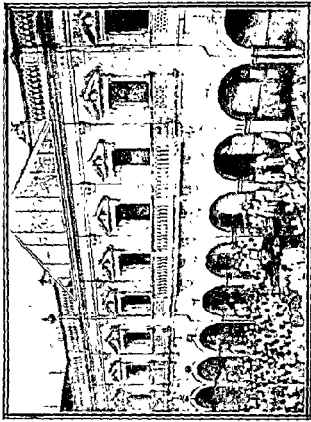
शुद्धादित



धारापुरीनी गुषामां सदृशस्यो तथा निज परिकर साथे श्रीमान

Photo Seth Hansraj

शुद्धादित



Photos: Seth Hansraj (bhat)

वर्णाश्रम स्वराज्य संघता सभापति तरीके सुवार्द्धर्म करेले आंदोलन. माधवबागनी यादगार सभातुं हरय.

Saraiya Art P. Ahmedabad.



દરેક ધર્મ, સંપ્રદાય અને સંસ્થાઓની સન્માન અને તટસ્થ રીતે સેવા બળતરી રહ્યું છે. હાજર રહેલા બીજા ધણીઓએ પણ દરબારથીએ કરેલી પ્રથાસાને અતુભાદન આપ્યું હતું.

બાદ અમારા પ્રતિનિધિએ મહારાજથી સાથે તેઓથીની પધરામણીનો હેતુ, સ્વદેશી વગેરે બાજતોના સંબંધમાં વાતચીત કરીહતી, જે અમે સવાલજવાબના આકારમાં હેઠળ રહ્યું કરીએછીએ—

સવાલ—હાલમાં આપથીની અત્રેની પધરામણીનો હેતુ શો છે ?

જવાબ—અમારો અહીં આવવાનો હેતુ વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કારોબારી કમીટીની બેઠકમાં હાજરી આપવાનો, વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું ડેપુટીશન ગોઠવવાનો અને સંસ્કૃત યુનિવર્સિટી સ્થાપવાની હિલચાલ કરવાનો છે. અમારા અહીં આવવાના હેતુ વિષે જે ખોટી અફવા ફેલાઈ છે કે અમે કોંગ્રેસને તોડવા માટે પ્રચાર કરવા આવ્યા છીએ તે વાત બીવકુલ ખોટી છે. એ વાત ખરી છે કે અમારો વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ ધર્મમાં બાધક હોય તેના વિરોધ કરવાનો છે, પરંતુ જ્યાં સુધી અમારા ધર્મમાં દબલગીરી થતી ન હોય ત્યાં સુધી અમારે કોઈની સાથે-કાંઈ વિરોધ નથી. અમે કોંગ્રેસને તોડવા માટેના કાર્યનો પ્રચાર કરવા માટે અને નથી આવ્યા પણ ધર્મની રક્ષા કરવા માટે આવ્યા છીએ. ધાર્મિક બાજતોમાં દબલગીરી સામે જ અમારો વિરોધ છે. બાકી જે બાજતોમાં ધાર્મિક વિરોધ ન હોય તે સર્વ બાજતોમાં સહકાર કરવા આવ્યા છીએ. અને એ વાત અમે અહીં સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છીએ છીએ.

મંદિરો અને સ્વદેશી.

સવાલ—મંદિરોમાં સ્વદેશી પ્રચાર વિષે આપ શું કહો છો ?

જવાબ—અમારા મંદિરોમાં સ્વદેશીનો પ્રચાર સારો છે, પરંતુ અમારી સંસ્થા ધર્મની સંસ્થા હોવાથી બહારથી કોઈ ગૃહસ્થ કાંઈ ભેટ લાવે અને તે વિદેશી પણ હોય તો તેના પર અમે દબાણ કરી ચક્રીએ નહિ. પરંતુ અમે અમારા મંદિરમાં તો સ્વદેશી વસ્ત્રોજ ખરીદીએ છીએ. પરંતુ કોઈ પરદેશી કાપડ લાવે તો અટકાવી ચક્રીએ નહિ.

સવાલ—આપથી આપના ભક્તોને સ્વદેશી યીજોજ ભેટ લાવવાનું ફરમાન ન કરી શકે ?

જવાબ—અમે તેમના પર તે જાતનું દબાણ ન કરી ચક્રીએ કે ફરજ ન પાડી ચક્રીએ પરંતુ તેઓને સમજાવીએ તો ખરાજ અને તેમ તો કરીએ છીએ.

ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજન આપવાની હિમાયત.

હું તો ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજન આપવાનો હિમાયતી છું. છુદ્ધાનપુરમાં મેં તો સાચાકામ સામે વિરોધ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. કારણ કે સાંચા કામ માણુમ જાતને તુલકાનકારક છે. એકલા ચરખાજ નહિ, પરંતુ દરેક ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજને આપણે આપવું જોઈએ.

વહીવટસંપ્રદાયમાં સ્વદેશીનો આગ્રહ.

અમારા વહીવટસંપ્રદાયમાં તો સ્વદેશી માટે પરપરાથી બારે આગ્રહ છેજ. આ સ્વદેશીની ભાવના એટલી બધી તો અમારામાં બારે છે કે દેવસેવામાં અમે બેઠા હોઈએ તે વખતે અમે પરભાષા પણ વાપરતા નથી. અમે પણ જ્યાં સુધી સ્વદેશી વસ્ત્રો હોય ત્યાં સુધી અમે તે વસ્ત્રોજ વાપરીએ છીએ.

પ્રભુ માટે સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ નથી.

અમારા મંદિરોમાં સ્વદેશીની બાજતમાં આવી ભાવના પ્રસરેલી છે પરંતુ અમારા પ્રશ્ન માટે તો ઉત્તરોત્તમ વસ્તુ અમે અંગીકાર કરાવીએ છીએ. તેમાં સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ રાખતા નથી. કારણ કે પરમેશ્વરને તો સ્વદેશી-પરદેશી સમાન છે. 'આમ જતા પણ શ્રીકૃષ્ણ માટે

ગોલ્ડ ઈંડીયા વર્ણુશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘ.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક-સાત કલાક ચાલેલું કામકાજ.
સંસ્કૃત યુનિવર્સિટીની સ્થાપના વિષેનો સવાલ-રાઉકટેબલ
કોનફરન્સમાં પ્રતિનિધિ મોકલવાની ચર્ચા.

કરોડો સનાતની હોંદુઓની તથા ભારતવર્ષના સમસ્ત ધર્મીયોની બહોળી લાગવગ ધરાવનારી અખિલ ભારતવર્ષીય વર્ણુશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક શુધવારે સાંજે ચાર વાગે અહીં વાલકેશ્વરમાં શ્રીકૃષ્ણકુંજ નામના બંગલામાં મળી હતી. તેમાં ભાગ લેવા માટે જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રધાન પીઠપર બીરાજતા સુપ્રસિદ્ધ આચાર્યવર્ધ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદય શ્રીનાથદ્વારાથી અહીં પધાર્યા છે. એઓશ્રી સંઘના સભાપતિ હોવાથી પ્રમુખસ્થાને બીરાજ્યા હતા તે ઉપરાંત મુંબઈના મરાઠુર ધર્મીયાર્થ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ગોકુલનાથજી મહારાજ પધાર્યા હતા. બનારસથી જાણીતા સ્વામીજી શ્રી. દયાનંદજી અને સુપ્રસિદ્ધ પંડિત દેવનાથકાચાર્યજી પણ મંત્રી તરીકે હાજર હતા. તે ઉપરાંત પંડિત શ્રા. રમાપતિમિત્રજી, પુનાવાળા આપટ શાસ્ત્રીજી, શ્રી એનાપુરે શાસ્ત્રીજી, અમદાવાદવાળા રા. વસંત-રામ શાસ્ત્રીજી તથા કોપામ્બલ શ્રીકૃત નાણાવડી સોલીસીટર તથા સુરતવાલા પ્રોફેસર દૂરંગલ એમ. એ. વગેરે આવ્યા હતા.

સંસ્કૃત યુનિવર્સિટી માટે ડેપ્યુટેશન મોકલવાનો ઠરાવ જલગામ ખાતે થયો હતો તે પર વિચાર ચલાવતાં હાલના કટોકટીના મામલાપર વિચાર કરતાં મુંબઈની આર્થિક સંકડામણુ જોતાં હાલમા ડેપ્યુટેશન મારફત મુંબઈમાં ફંડ ભરાવવાનું કામ સુલભી રાખવાનો ઠરાવ થયો હતો. જો કે હોંદના રાજ્યમદારાજનઓએ ડેપ્યુટેશનને આમંત્રણ આપેલું છે, પણ પચાસ લાખની આદેશાહી રકમ આવા સમયમાં એકઠી કરવાનો અશ્ર મુશ્કેલી ભરેલો લાગવાથી હાલ તુરંત મુંબઈના ધર્મિક ધનાઢ્ય શ્રીમતોપર ફંડનો થોડો પણ બોજો નહીં નાખવાનું કમીટીએ યોગ્ય ધાર્યું હતું, અને સંઘના વિશાળ ધાર્મિક આદર્શના પ્રચાર અર્થે મુંબઈ ઈલાકામા સભાઓ દ્વારા આદોલન કરવાનો ઠરાવ થયો હતો.

તે ઉપરાંત રાઉક ટેબલ કોનફરન્સમા પ્રતિનિધિઓ મોકલવા વિષેની ચર્ચા ચાલતા હોંદના જાણીતા ધર્મોગ્રહીઓની એક વગવાળી કમીટી નીમવામા આવી હતી. કરોડોની સંખ્યા ધરાવનારી સનાતનધર્મોગ્રહી હોંદુ જનતામાંથી યોગ્ય સંખ્યાના પ્રતિનિધિઓનો સ્વીકાર બીડીશ ગવર્નમેંટ કરે તે માટે આદોલન કરવા, ઠરાવ્યું હતું. વર્ણુશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ સ્વરાજ્ય માટે પૂર્ણ સહમત છે, પણ તેમાં હોંદુ ધર્મના રક્ષણ માટે જો ઘટતા ચાપતા ઈલાજો લેવા જોઈએ તે લેવા માગે છે. કારણકે સ્વરાજ્ય માટેના આદોલનો કરતાં આપણે આર્થ સંસ્કૃતિનો નાશ કરી બેસીએ અને વીલાયતી મોહમા ન કસાઈએ તે જોવાનું છે.

આ ઉપરાંત દરેક સનાતની સંસ્થાઓના સંગઠન વિષે પણ ઊઠાપોઠ થયો હતો અને મુંબઈમાં વિશાળ સભાઓ ભરીને ધર્મના રક્ષણપૂર્વક આર્થ સંસ્કૃતિના રક્ષણપૂર્વક સ્વરાજ્ય પ્રાપ્ત કરવાના કેવા માર્ગ હોય તેના આદર્શો રજુ કરવાનું ઠરાવ્યું હતું. છેવટે સાગ્ર પાંચસો માણસ દૂરથી મોટા ખર્ચ કરીને અહીં પધારવા માટે સભાપતિશ્રીનો ઉપકાર માન્યો હતો અને

એઓશ્રીએ બેહારગામથી આવેલા પ્રતિનિધિઓને ધન્યવાદ આપીને રાત્રે ૧૦૧ વાગે સભા બરખાસ્ત કરી હતી.

માધવળાગમાં ગંભીર સભા.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક પછી મુંબાઈમાં જાહેર સભાઓ ભરવાનો કાર્યક્રમ ચરૂ થયો. ચેત્ર વદ ૧૦ ને રવિવારે માધવળાગના ભવ્ય યોગાનામાં સભા ભરવામાં આવી, જેનાં દરેયો આ પુસ્તકમાં છાપ્યાં પશુ છે. આજે પ્રારંભમાં સંધના મંત્રી મંડળના એક ઉત્સાહી કાર્યકર્તા અને કુરંધર શ્રીરામાનુજય વૈષ્ણવ વિદ્વાન્ શ્રીદેવનાયકાચાર્યજી તથા મહામંત્રી સ્વામીજી દ્વાનંદજી બી. એ. સંધના ઉદ્દેશો ઉપર લંબાણથી બોલ્યા. સભા સમજી ચાડી કે સંધ કેમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહ્યો છે અને કરવા માગે છે ? આ શાંત, વિરોધીઓ ઉપરના હુમલાઓથી-રહિત અને સ્વધર્મનું રહસ્ય સમજવનારું બ્યાખ્યાન ધણું જ ફતેહમંદ નિવડ્યું તે પછી શ્રીમાને નીચે મુજબ પ્રવચન કર્યું.

સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયનું ભાષણ.

સમ્યક્દ એવં વિદ્વદ્વદ ! આજનો કાર્યક્રમ શો છે તે સર્વને વિદિત જ છે. વર્ણોત્તમ સ્વરાજ્યસંધ જેવી મહાસંસ્થા ચા ઉદ્દેશથી રચવાયલી છે અને તે કેવાં લોકોપયોગી કાર્યો કરી રહી છે અને કરવા માગે છે તે અહીંની જનતાને સમજાવવા માટે જ આ સભા ભરવામાં આવી છે. સમય ધણો યત્ર ગયો છે. જનતા હવે સભા છોડવાને લેતુક બની ગયલી દેખાય છે. તેમાં એ અહીંની પ્રવૃત્તિવાળી અશાંત જનતા પાસેથી વધુ ધૈર્યની આશા રાખી ન જ શકાય. કાંઈ આદિ રથોમાં તો પગીસ હજારની સંખ્યા પશુ સાંતિથી ધૈર્ય રાખીને બ્યાખ્યાન સાંભળતી હતી. ધર્મનું પાલન સાધારણ નથી. આ દેશમાં એવા ધાર્મિક જનો થયા છે કે જેમણે ધર્મ માટે વહેલી આગમાં પોતાનું જીવન હોમી દીધું છે. આવા ધાર્મિક નરોને જ ઇતિ-હાસ રમરે છે. તેથી દેશની જનતા ધર્મપ્રધાન હતી અને રહેશે. (તાળાઓ.) બીજા દેશો માત્ર ઉદ્યોગ-બ્યાપારમાં જ મગ્યા રહીને દુન્યવી સુખ માટે જ તલ્લસી રહે છે. તેમનામાં ધર્મરચિ દશે કે કેમ તેની શંકા છે. પણ ભારતવર્ષ તો ધર્મપ્રધાન દેશ છે. આ દેશ કેવલ ઔદિક સુખ માટે જ સ્વચક્રિતો સર્વ વ્યય કરશે જ નહિ.

આજે વિદ્વાન્ વક્તાઓ કહી ચુક્યા કે ધર્મ વિના દેશોર્જન નથી. ખોચત જ નથી, નથી. ને નથી જ. આ જ વિષય હું ફરીને કહીશ કે દેશોર્જન ત પશુ વર્ણોત્તમધર્મથી જ છે. (તાળાઓ.) ધર્મ વિનાનું જીવન તે જીવન જ ન ગણાય. એ તો પશુજીવન યરો ધર્મમર્યાદા છોડીને ઉત્ત-તિની આશા વ્યર્થ જ છે. બીજા દેશો આપણી વર્ણોત્તમની બ્યવસ્થાની તારીફ કરી રહ્યા છે. આપણા દેશનું ધાર્મિક સંગઠન જગતને આશ્ચર્યચકિત કરી રહ્યું છે. આપણા કેટલાક દેશીઓ હવે તેને તોડવા માગે છે. જેમકે આ દેશને માથે ચારદા એકટ ટોકાયો છે. એ કાયદો સમજાવે છે કે લગ્ન જલદી કરવાથી નિર્જલ પ્રજા યરો, માટે મોટી ઉંમરે પરણાવો. કેવી બેબુદા દલીલ છે ? લગ્નની બારનાને કેવી કચરી નાંખવામાં આવી છે ? આપણે ત્યાં લગ્ન જલદી થાય છે. તે લગ્ન થયા પછી કન્યા જ્યાં સુધી જબહારણ કરવાને લાયક ન થાય ત્યાં સુધી પતિના ગૃહમાં મોકલ-વામાં આવતી નથી. હવે લગ્ન થયા પછી આ એવી જ ભાવના રાખે છે કે, મારો આજ પતિ છે, સંસાર ચકટનો આથી છે. એમ પાતિવ્રત્યના અંકુરો જામે છે. તેવા જ સંસ્કારો પતિના હૃદયમાં પશુ થાય છે, આ જીવન એક આદર્શ જીવન બને છે. આપણાં શાસ્ત્રો કહી અદિત-કારકે આગા ફરમાવતાં નથી. પશુ તેનું રહસ્ય કોને સમજવું છે ? આપણા દેશનું ધન પાતિ-વ્રત્ય છે, અને તે આપણાં શાસ્ત્રો જે આગા કરે છે તે પ્રમાણે વર્તવાથી જ દૃઢ થાય છે.

મોટી ઉમરનાં લગ્નો પાતિમત્સ્યનો નાશ કરનારાં છે. આવા કાયદા અને ચળવળો સામે આ સંઘની પ્રવૃત્તિ છે. તે પછી સભાપતિનો ઉપકાર માનીને સભા ખરખારત કરવામાં આવી.

શ્રીમદ્વાચાર્યમહોત્સવં.

ચૈત્ર વદ ૧૧ એટલે તો વિશ્વોદ્ધારક જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણનો પ્રાદુર્ભાવ મહા-મહોત્સવ. આજે તો વૈષ્ણવોના આનંદની સીમાજ ન હોય. દરેક વૈષ્ણવ ગૃહમાં જન્મશ્તબ્ધીથીએ અધિક આનંદ પ્રસરે. મંદિરોની તો વાતજ શી ? આજે મુંબાઈમાં મોટા મંદિરમાં પણ સભા હતી. તે સાંજના હતી અને માધવબાગની મહાસભા રાત્રે આઠ વાગે રાખી હતી. આજની સભામાં મોટા મંદિરવાળા ગો. શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીના દ્વિતીય આત્મજ શ્રીદીક્ષિત ભગવાન વક્તા હતા. પણ મોટા મંદિરની સભા કાંઈ વધારે ચાલી, તેથી તેઓશ્રી માધવબાગમાં સમયસર પધારી ચક્રા નહિ. શ્રીમાન સભાપતિ તો ખરોખર નિશ્ચિત સમયેજ પધાર્યો. ઘુસ્તજ સભાનો કાર્યક્રમ શરૂ થયો. વધાઈઓ ગવાઈ અને એક વિવાર્યાંએ ગઝલ ગાઈ. તે પછી મને બોલવાની આજ્ઞા થઈ. પ્રારંભમાં સભા બોલાવવાનો ઉદ્દેશ કહીને, શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના વિશ્વોદ્ધારક આદર્શોનો પરિચય કરાવ્યો અને આપશ્રીના પ્રાકટય-સમયની દેશની રિયતિની ભયંકરતા અને તે સમયે નાશ પામતી આર્ય સંસ્કૃતિનું રક્ષણ કરવામાં ખતાવેલી ઈશ્વરતા વિષે એક ટુંકું વિવેચન કર્યું. તેટલામાં શ્રીદીક્ષિત ભગવાન પધાર્યા, એટલે મેં આખ્યાન પૂર્ણ કરી દીધું. આજના મહોત્સવ ઉપર શ્રીવલ્લભવંશના વચનામૃતોનીજ પિપાસા હોય.

શ્રીદીક્ષિત ભગવાને તો આજે કાંઈ અદ્ભુત વિષય કહ્યો. “ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય શા માટે ?” એ ઉપર આપશ્રીએ અર્ધા કલાક સુધી મનનીય વ્યાખ્યાન કર્યું. પણ ઘોંઘાટ ધણો હોવાથી તે ખરોખર સંભળાયું નહિ. તેમાંએ આપશ્રીનો અવાજ આજે કાંઈક બેસી ગયેલો હતો. ત્યારબાદ સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયે એ જ વિષય ઉપર શુસંદ અવાજે પ્રવચન કર્યું.

શ્રીમાન સભાપતિનું વ્યાખ્યાન.

આજનો વિષય ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ છે ? એ છે. ભારતવર્ષમાં અનેક આચાર્યો થયા છે. બધા આચાર્યોએ પુરુષોનીજ સુક્તિ વર્ણવી છે. કારણ કે વેદ તો દ્વિજની તેમાંએ પુરુષદેહનીજ સુક્તિ કહે છે. આ કારણથી શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે પ્રકટ થઈને ‘પુષ્ટિમાર્ગ’ કયો. ‘પુષ્ટિ’ એટલે અનુગ્રહ કૃપા. આ માર્ગમાં સ્વકૃતિની જીવના પોતાનાં સાધનોની દરકાર નથી અને તે સાધનોથી આ માર્ગ સિદ્ધ થતો નથી. અહીં તો અનુગ્રહ ચતાંજ સર્વદેહની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ ‘પુષ્ટિમાર્ગ’માં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ ?” આ પ્રશ્ન છે. આપણે શાસ્ત્રદષ્ટિએ સમજી ચક્રીએ છીએ કે પુરુષ તો શાસ્ત્રોમા કહેલાં કર્મો કરી શકે છે. પુરુષો માટે કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિના ત્રણ મહાન માર્ગો શાસ્ત્રમાં ખતાવેલા છે. પણ સ્ત્રીએ શું કરવું ? સ્ત્રી કાંઈ એ ત્રણે માર્ગમાંથી એકેયનું અવલંબન કરી ચક્રતી નથી. નાનો બાલક જેમ પોતાની મેળે ખાઈ શકતો નથી, તેમ સ્ત્રીઓ પોતાની સ્વતંત્રતાથી કાંઈ કરી ચક્રતી નથી. શાસ્ત્ર મુજબ તો તે માત્ર પતિકૃત સાધનોપર જ આધાર રાખે છે. અને સ્ત્રીજન્મમાં મોક્ષ તો સર્વથા નથી. તેથી સ્ત્રી શક્ત્રોના ઉદ્ધાર માટે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણે પ્રકટ થયા છે. આપશ્રીનું નામ તો “સ્ત્રીશ્રદ્ધાણુદ્ધૃતિશ્લમ” છે. બળવાન કે શક્તિ-સામર્થ્ય-વાળો તો નોકરી વગેરે સાધન કરી શકે, સ્ત્રીશક્ત્રો પ્રત્યુપાસિનાં શાં સાધનો કરે ? આવા નિઃસાધનોનો ઉદ્ધાર અનુપ્રદમાર્ગદ્વારા શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે કયો છે. વળી શાસ્ત્રોમાં શ્રીગોપીજનોનોજ ભક્તિમાર્ગમાં મુખ્ય માન્યાં છે. લૌકિકમાં પણ તેમની મુખ્યતા છે. પુરુષ તો માત્ર પ્રેરકજ છે, પણ વિકાસ તો સ્ત્રીદ્વારાજ થાય છે. પુરુષ શક્તિનો વિકાસ પણ

શ્રીઓના હાથમાં જ છે. સાંખ્યમાં તો પુરુષ માત્ર ચેતન અર્થાં અલગ રહે છે, અને બધું કાર્ય પ્રકૃતિ જ કરે છે. હવે આપણે જોઈએ છીએ કે, પ્રેરણા મને તે કરે, પણ જે કાર્ય કરે તે જ સુખ્ય ગણાય છે. તેથી શાસ્ત્ર અને લોકદૃષ્ટિએ શ્રીઓની સુખ્યતા છે તો બક્ષિમાર્ગમાં તેમનું પ્રાધાન્ય કેમ નહિ ?

ગોપીજનો પુષ્ટિમાર્ગમાં ગુરુરૂપે મનાય છે. તેઓ કોઈ સામાન્ય શ્રીઓ ન હતાં, પણ શ્રુતિ રૂપા હતાં. વેદની યાનોપદેશિકા ઋચાઓ તે જ ધીગોપીજનો હતાં ! વળા ઋષિરૂપા હતાં. શ્રીમદ્ ભાગવતમાં તેમની વિષયવાસનાનું એક પણ પ્રમાણ મળતું નથી. તેઓ ઋષિમુનિ ન કરી શકે એવો સર્વસ્વનો ત્યાગ કરી દેહ વસ્ત્રનું પણ ભાન રાખ્યા વિના પ્રજુના ચરણારવિંદને પ્રાપ્ત થયેલાં હતાં. મારેજ તેઓનું સ્થાન પુષ્ટિમાર્ગમાં ઉંચું છે. સંન્યાસ એટલે સારી રીતે ત્યાગ, માત્ર મુઠ સુંઝાવી બગવા પહેરવા અને અંતરમાં તમામ વાસનાઓ એવવી એ મંન્યાસ નથી. ઉદવજીને બગવાનું પોતાના સમાન ગણતા તે ઉદવજી પણ પોતાને ગોપીજનોની પગની રમ્મથી પવિત્ર થયેલા માને છે. રાગ પરિક્ષિતને ધીશુકલ્પલ બહુ માનથી સંબોધના, પણ જ્યારે પરિક્ષિતે ગોપીજનોના ચારિત્ર્ય વિશે શંકા ઉઠાવી ત્યારે શ્રીશુકદેવજીએ તું ચમ્પદથી સંબોધી તિરસ્કાર કરેલો છે. બાધુનિક સમયમા કેટલાક શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનો ઉપર વ્યભિચારનો આરોપ મૂકે છે. તેઓનું ભયંકર અચાન તથા કમળાવાળો જેમ સર્વત્ર પીડું જુએ તેના જેવું છે. લોકમા કુમારિકાઓ અને શ્રીઓ ગણપતિ, ગોરી અને શંકર, સૂર્ય તથા અગ્નિની પૂજા કરે છે તો શું ગણપતિ શંકર સૂર્ય અને અગ્નિમાં પુરુષત્વ નથી કે ? જો છે તો શું પૂજન કરનારી શ્રીઓ તથા કુમારિકાઓને વ્યભિચારી ગણવી ? હમેશાં શંકરની તો ધિંગની પૂજા થાય છે, તે શું વ્યભિચાર છે ? અર્થાત્ આ આરોપ તદ્દન ખોટો છે, પ્રજુ તેવાઓને પણ રૂપા કરી સદૃશ્ય અર્પે.

ઘાટકોપરમાં વૈષ્ણવોની ગંજવર સભા.

નવયુવકોનાં દૃઢયોમાં સળગતા સવાલો.

વૈષ્ણવ ધર્મ શેમાં સમાયલો છે ?

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરકૃમાર અને વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ આપેલા સચોટ જવાબો.

ઘાટકોપરમાં અનેરો આનંદ.

(તા. ૨૨-૪-૩૧ના “સાજ વર્તમાન” પરથી.)

ઘાટકોપર, ૧૪મી એપ્રિલ—આજનો દિવસ ઘાટકોપરના ધાર્મિક જીવનમાં એક યાદગાર દિવસ તરીકે ઇતિહાસમાં નોંધાયેલો રહેશે. ઘાટકોપર જેમ રાજકીય હાલતનું એક મદાન કેન્દ્ર છે તેમ આર્થ સંસ્કૃતિનું રક્ષણ ચલાનારા અનેક ધર્મનિષ્ઠ સનાતની વૈષ્ણવોની બડોળા વસ્તી ધરાવનારું છે. આવા કોતિના સમયમાં ધાર્મિક ઉપદેશો બાએજ થાય છે અને તેમાંએ ધર્મચાર્યો તો જવલેજ ઉપદેશ આપવા બહાર પડે છે. મહોમ ધર્મનિષ્ઠ ચતુર્થજી જીવજીવસના ગંગાસ્વરૂપ ધર્મપત્ની બહેન મહિમહેને અહીં ધીનવતીનલાવજીનું એક મંદિર સ્થાપ્યા પછી ઘાટકોપરમાં

ધર્મચર્યા વારંવાર થતી રહે છે. એક કરોડ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોના પરમપૂજ્ય અને પવિત્ર રૂ શ્રીનાથદારાની ગાદીવાલા ઉત્તમ વિદ્વાન્ આચાર્ય પૂજ્યપાદ ગોસ્વામીશ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલા મહોદય મુખપ્રમાં પધારતાં અહીંના વૈષ્ણવ સદ્ગૃહસ્થો તરફથી ધર્મનિક રા. રા. જગન્નાથ પુરુષોત્તમદાસ મહેતાએ ધાટકોપરના ધાર્મિક જનસમૂહને સદુપદેશ આપવા માટે શ્રીમાન્ આચાર્ય શ્રીને આગ્રહથી વિનંતિ કરી હતી અને કૃપા કરીને તેઓ શ્રીમાને તેનો સ્વીકાર કર્યો. શ્રીનાથદારાના પીઠાધિપતિ બાએજ બહારગામ પધારે છે અને ધાટકોપર જેવાં નાનાં ગામોને તેમના ઉપદેશામૃતનો લાભ મળવો એ તો એક દુર્લભ ઘટનાજ ગણાય.

અસાધારણ સન્મીન.

આચાર્યશ્રીને માન આપવા માટે મોટા પાયા પર તૈયારી થઇ હતી. સ્થળે સ્થળે માગાં તોરણો શાબી ગલા હતા. સભાસ્થાન તો વિવિધ ઉપદેશોના સંસ્કૃત તેમજ અન્યે ભાષા વાક્યોવાળા તોરણો તેમજ દુલહારના તોરણોથી તેમજ અનેક વીજળીના દીવાઓથી અદ્ભૂત રીતે અલંકૃત કર્યું હતું. આચાર્યશ્રીને ખીરાજવા માટેનું વ્યાસપીઠ તો મધ્યમધતા દુલોનાં તોરણે ખુબ શણગારી દીધું હતું. ચાંદીની આકર્ષક ખુરસી રાખવામા આવી હતી. બરોબર નવ મોટરમાં આચાર્યશ્રી પધારતાં બંદુકના અવાજોથી તેમજ હોંદુ મહાસભાના નેશનલ રંગ બેંડના મુંદર સ્વરોથી અને ભાટીયા વાલંટીયર કોરે પુષ્પથી વધાવી લઇને જયનાદથી મ ગજવી મુક્યો હતો. શ્રીમાનને હારતોરા પહેરાવીને પછીથી એક બધ સરપસ કાઢવામાં આ હતું. ઠેર ઠેર રસ્તાઓમાં મહારાજશ્રી પર પુષ્પવૃષ્ટિ થઇ રહી. તે બજારમાં ફરીને શ્રીનવની લાલજના મંદિરના બધ યોગાનમાં સભાસ્થાનમા આવ્યું હતુ. વિશાલ રસાન પશુ જનસમૂહ ખુબ ભરાઇ ગયું હતું. મહારાજશ્રી સાથે એમના વિદ્યાવિભાગના મુખ્ય નેતા શ્રીયુન રમાનાથ સાસ્ત્રીજી પશુ આવ્યા હતા. ઉપરાંત મહારાજશ્રીના ખાનગી મંત્રી શેઠ રજુભાઈદાસ વરજીવનદ શ્રી તથા 'શુદ્ધા ત'ના ત'ત્રી વસંતરામ સાસ્ત્રી પશુ હાજર થયા હતા. ધાટકોપરના વૈષ્ણ સિવાય બીજી કોમના ગૃહસ્થોએ એટા પ્રમાણમાં હાજરી આપી હતી.

આચાર્યશ્રીએ પ્રમુખસ્થાન લીધા પછી મંદિરના મુખ્યાલ શ્રી. જમનાદાસ નાનજીએ પ્રસ પુષ્પમાળા શ્રીમાનને પહેરાવી હતી. તેમજ શ્રીનવનીતલાલજીના મંદિર તરફથી શેઠ હરગોવંદ જીવજીદાસ અને છોટાલાલ કાનજીએ તથા સ્વાગતસમિતિ તરફથી શેઠ જીવજીદાસ ભાણજી આચાર્યશ્રીનું સ્વાગત કર્યું હતું. તે પછી અહીંના વૈષ્ણવ યુવક વર્ગના આગેવાન શેઠ જમનાદાસ મેઘજી કપાડીએ સમિતિ તરફથી આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

યુવક હૃદયનો પડો.

હું સમિતિ તરફથી પૂજ્યપાદ આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરું છું. (તાળીઓ) આજ કાલ એ આશ્વેષો કરવામાં આવે છે કે ધર્મચર્યા ઉપદેશ આપના નથી, પણ આચાર્યશ્રીએ અહીં પધારી ઉપદેશ આપવાનું કલુષીને આશ્વેષ ઉડાવી દીધો છે. (જોશભર તાળીઓ) આજનો વિશ્વ પહેલેથીજ નક્કી કરી દીધેલો છે. 'ભક્તિ' વિષય પર આચાર્યશ્રી આજે બોલવાના છે. પણ તે પહેલાં એક વાતનો ખુલાસો કરું છું. હું વૈષ્ણવ કુટુંબનો છું. તેમજ અનેક યુવકો વૈષ્ણ કુટુંબના છે. અમને બધાને વૈષ્ણવ ધર્મના આદર્શોને શુદ્ધ ખ્યાલ આવ્યો નથી. હું પુછું છું વૈષ્ણવ ધર્મના ખ્યાલ શો ? અમારા વડીલો તો અમને નહાવા ધોવામાંજ તેમજ રસોડાને નાં અડકવામાંજ વૈષ્ણવ ધર્મ સમાઈ ગયેલો સમજાવે છે. આજે વૈષ્ણવ યુવકો આ વિષે ખુલાસે

સાંભળવા ઇચ્છે છે. હું આચાર્યશ્રીનો સ્વાગતસમિતિ તરફથી ઉપદેશ આપવાનું કથુબવા બદલ ઉપકાર માની બેસી જવાની રત્ન લઉં છું.

પ્રશ્નનો આશય શો ?

આચાર્યશ્રીએ મંજલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે સમ્યક્દં તથા સ્ત્રીદં, આજનો વ્યાખ્યાનનો વિષય 'ભક્તિ' એ રાખેલો હતો, છતાં અહીં વૈષ્ણવ ધર્મ વિષે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે. એટલે પ્રશ્નનો મુદ્દો બરાબર રજુ કરવાની જરૂર જણાય છે. ખરું જોનાં 'ભક્તિ' અને વૈષ્ણવ ધર્મ એ બંને જુદા નથી. 'ભક્તિ' ની પણ ઘણી કક્ષાઓ છે. ધીરે ધીરે ઉચી ઉચી સીડીએ ચડી શકાય છે. નાના બાળકોને પહેલાં અક્ષરો ધુટવાનું શીખવાય છે. તે પછી તે ઉંચી અભ્યાસ કરીને ઉન્નત બને છે. તેમ 'ભક્તિ'ની સર્વ કક્ષાઓનું વર્ણન કર્યા પછી ચંકાને સ્થાન નજર રહે. સ્વાગતના વ્યાખ્યાનકર્તાએ જે પ્રશ્ન કર્યો છે તેની છણાવટ થતી જોઈએ. તેમનો આશય શો છે ? રસોમાં કે નદાવા ધોવામાં ધર્મ એમ જે કહેવાયું છે તેનો મુદ્દો શો છે ? પ્રશ્નકર્તાએ પોતાનો પ્રશ્ન વિશેષ ખુલાસાવાર રજુ કરવો ધોર છે.

ગાંધી યુગ અને વૈષ્ણવ યુવકો,

અત્રે પ્રશ્નકર્તા શેઠ જમનાદાસ કપાડીએ જણાવ્યું કે—અમારા વહીવે એમજ કહે છે કે એ ચાર વખત નહાવું અને કોઈનું ખાવું નહી, કોઈનું પાણી પીવું નહી એનું નામ ધર્મ છે. શું ધર્મ એટલે ખાવાપીવામાં બાધ માનવો અને વારંવાર નહાવું ધોવું એજ કે કાંઈ બીજું ? શું એ આચાર્યમાં જ ધર્મ સમાઈ ગયેલો છે ? આવા ખાનપાનના બાધમાં ધર્મ સમાયેલો છે એવા વહીવેના સંસ્કારોથી હવે યુવકોની શ્રદ્ધા કમી થતી જાય છે. આ ગાંધીયુગમાં કેવળ સંકુચિત વિચારોથી હવે યુવક વર્ગ આકર્ષીત નહી. વેપારમાં કાળાધોળા કરવાથી ધર્મ જતો નથી, પણ ખાનપાન કે નહાવાધોવામાં બૂલ થવાથી ધર્મ નાશ પામે છે એ વિષે સ્પષ્ટ ખુલાસો થવાની જરૂર છે.

આચાર્યશ્રીનો સંગીત જ ૧૫.

ઉપરના પ્રશ્નનો જવાબ આપતાં આચાર્યશ્રીએ જણાવ્યું કે પ્રશ્નકર્તાનો આશય હાલમાં જે જનસમૂહની પ્રવૃત્તિ ચાલુ છે તે ધર્મ સાથે કેટલો સંબંધ ધરાવે છે તે વિષે છે. આપણા દેશમાં પણ ભિન્ન ભિન્ન સ્થિતિ છે. દરેક વસ્તુ ત્રણ દૃષ્ટિએ જોઈ શકાય એવો શ્રીવદ્ધલાચાર્યચરણનો સિદ્ધાન્ત છે. ૧ આધિભૌતિક, ૨ આધ્યાત્મિક અને ૩ આધિદેવિક. આ ત્રણ શક્તિઓ છે. આપણા દેશમાં પણ આ ત્રણ સ્થિતિ છે. આપણો દેશ આધિભૌતિક છે, આત્મા આધ્યાત્મિક છે અને પ્રભુ આધિદેવિક છે. આ ત્રણે વસ્તુનું રક્ષણ કરવું રહ્યું. શરીરમાં માંસનીજ શુદ્ધિ કામ ન આવે, રહિર પણ રહેવું જ જોઈએ. એ રીતે ચાત્રાચ નિયમો મુજબ ઉક્ત સર્વ વસ્તુની શુદ્ધતા જોઈએ.

પ્રશ્નને પ્રાપ્ત કરવાના માર્ગ ત્રણ છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ. કર્મમાર્ગ એટલે કર્મ કરવું એમ નહિ, કારણ કે તેવો અર્થ લેતાં તો કોઈને મારી નાખવું એ પણ કર્મ જની જાય. તેથી એમ સમજવું કે શાસ્ત્રોક્ત જે કર્મો છે તેજ કર્મ ગણાય. બીજા નહી. જે કર્મથી અધોગતિ થાય તે કર્મ ન કહેવાય. તેથી જ કલિવર્ચમાં યદયાગાદિમાં ચતો પશુવધ બંધ કરવાનું કહ્યું છે, અને યદ જપયદ છે એમ ગીતામાં પ્રભુ શ્રીમુખે આગ કહે છે. જપયદ એટલે ગોમુખીમાં હાથ નાખીને માળાના મણકા ફેરવવા એ નથી, પણ ભગવાનમાં પોતાનું મન કેન્દ્રિત કરી દેવું, એ જપયદ છે. (તાળાઓ.) ઈશ્વરમાં મન લગાવવું એજ ખરો માનસિક જપયદ છે. જપ કરતાં પ્રભુમાં મન લાગે છે. જેમ કોઈનું ચિત્ર જોવાથી તેનામાં મન કેન્દ્રિત થાય છે, તેમ, અહર્નિશ

શુભગાનથી પ્રભુ હૃદયમાં બિરાજે છે અને મનોવૃત્તિ તે તરફ ઝુકે છે. તેજ ખરો જપ છે. કેટલીક વખતે સ્થૂલ બાબત સૂક્ષ્મ કરતાં વધી જાય છે તેથીજ કર્મયોગ પણ મુખ્ય ગણાય છે. ચિત્તની વૃત્તિઓ અંચલ હોય છે તેને જપમગ્નરૂપ કર્મયોગથી વશ કરી શકાય છે અને ભક્તિમાર્ગમાં તો કર્મમાત્ર ઇશ્વરાપહૃષ્ટિથીજ થાય છે. તેથીજ કર્મ પણ નિસ્સ્વાર્થ બને છે. એવી વૃત્તિથી કર્મ થાય તોજ તેનું ઉત્તમોત્તમ ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. સર્વ રથને ઇશ્વરભુદ્ધિથી જુઓ. જે કંઈ કરે તે ભગવદર્થ કરે. ખાઓ, પીઓ, પહેરો ઝોટો, નાસિકાથી સુગે, નેત્રથી જુઓ, એ બધાં કર્મ નિષ્કામ ભાવે ભગવદપહૃષ્ટિથી કરો. આ આધ્યાત્મિક વ્યવસ્થા છે.

હાલમાં શાસ્ત્રીય આચારોના પ્રત્યેક થાય છે, પણ શાસ્ત્રોના અભ્યાસ કેટલા કરે છે ? શાસ્ત્રની બાબત પુછો તો તેના અભ્યાસ કરીને પુછો. ધર્મનું સ્વરૂપ ગહન છે. આપણા બહારના આચારવિચારોમાં ધર્મ છે. જુઓ, આપણે ભોજન ન કરીએ તો શક્તિ ઘટી જાય છે, અને ભોજન કરવાથી શક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે, અને શરીરમાં વીજળીક બળ આવે છે. તે બળ જમીન પર ભેસવાથી જમીનમાં ચાલ્યું જાય છે. તેથી આપણે ત્યાં લાકડાના પાટલા પર ભેસવાની રીત છે. તેમ સ્પર્શસ્પર્શમાં પણ ઉત્તમ વિજ્ઞાન છે. હવે મોટા મોટા ડાકતરો એકદમ હાથ મીઠાવી લેવાની પણ ના પાડતા થયા છે. બધાને એકાકાર કરવાથી ફાયદો નથી. વીજળીના તાર ભુદા રહીને ડેવા સુદર પ્રકાશ આપે છે ? તેમજ આપણે અલગ રહીને પણ એક ઉત્તમ કાર્ય કરીએ.

અંત્યજ્ઞેના ઘણા ઉપકારો છે. તેમના તરફ રૂ દષ્ટિ રાખી શકાયજ નહીં. આપણે તો સર્વ પ્રાણી માત્ર તરફ તેવી દષ્ટિ ન રાખી શકીએ તો પછી અંત્યજ્ઞેની તો વાતજ શી ? કેટલાકો અંત્યજ્ઞે મનુષ્યજ નથી તેવા વર્તોવ કરતા હશે તો તે યોગ્ય નથી. જ્યાં એકજ કુવે હોય ત્યાં તેમને માટે પાણીના બટેાબરત કરી આપવાનું ધર્મશાસ્ત્રનું ફરમાન છે. તેમ તે આપણા મંદિરોમાં ચાલ્યા જાય એ પણ ઉચિત નથી. ભગવાનનાં વિરાટ શરીરમાં મુખપર બાહ્યો છે. અંત્યજ્ઞે શુદ્ધરથાને છે. શુદ્ધાનું કાર્ય મુખ કરે તો સંનિપાતની ઉલટી યદ કહેવાય. તેથી પોત-પોતાના કર્મમાં રહેવાથી શ્રેય છે. આપણે બહારથી ભણે લિજ દેખાઈએ, પણ સમષ્ટિમાં એકજ છીએ. મન દેહથી અલગ નથી. દેહની અપવિત્રતાની અસર મનપર થાય છે.

શાસ્ત્રીજી રમાનાથજી.

આચાર્યશ્રીનું વ્યાખ્યાન યતા શાસ્ત્રીજી રમાનાથજીને આગ્રહ થવાથી તેમણે છટાદાર દોંગી ભાષામાં વિવેચન કરીને, શાસ્ત્રને ઠોકરે મારીને મનઃકરિપત આચાર્યવચારો સ્થાપવાથી કેવી ગેરવ્યવસ્થા થાય છે તેનો આબેહુબ ચિતાર આપ્યો હતો અને ધર્મ અને અધર્મની વ્યવસ્થામાં તો શાસ્ત્રો વિના બીજો કોઈ ઇલાજ નથી એવું ભાર દઈને જણાવ્યું હતું.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

તે પછી આગ્રહ યતા વસંતરામ શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે શેઠ જમનાદાસ ક્યાલીનો પ્રશ્ન નવો નથી. વૈષ્ણવ યુવક હૃદયોમાં સળગી રહેલા સવાલોનું તે પ્રતિબિંબજ છે. ગાંધીજી તો એક મહાન ભક્ત છે. મીઠાનો કાયદો તોડવા માટે નીકળ્યા ત્યારે ‘અબકી ટેક હમારી’ એ શ્રીમુરદાસજીનું પદ ગાતા નીકળ્યા હતા. આજના યુવકો તે વાત જીવનમાં મુકવા તૈયાર નથી. ગાંધી યુગમાં ‘ભક્તિ’ ને મુખ્ય સ્થાન હોયજ, જેમ સમજીનેજ આજનો વિષય રાખ્યો હતો, પણ અર્થો ઘણી સુંદર યદ. ગુરુદેવ પધારે ત્યારે આવા ઉભરાઓ ફાલવવાજ ધરે. વૈષ્ણવ ધર્મ બેધારી તલવાર છે. આચાર્યશ્રીનું કડક પાલન કરીને વેપાર ધંધામાં ભુલું બોલે અને કોઈને ગરદન મારે તો તે વૈષ્ણવ નથી, તેમ નીનિનું પાલન કરીને આચાર્યવિચારોના સંશુભેગ કરે તો તે પણ વૈષ્ણવ નથી. અહીં તો બધી તરફથી વૈષ્ણવતા જળવવી રહી.

શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધાભાઈ મોદી.

શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધાભાઈ મોદીએ લાગણી ભર્યું જુસ્સાદાર વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે આપણા સંસાર ઉપર ધર્મની સત્તા મોટી છે. તેનું કારણ એ છે કે સંસારની ચક્ષુષ્યવસ્તુઓ આધાર મોટે ભાગે ધર્મ ઉપર રહેલો છે. મનુ આદિ આપણા ધર્મશાસ્ત્રોમાં દરેક વર્ણના લોકો માટે જુદા જુદા આશ્રમોના નિયમો દર્શાવવામાં આવેલા છે. એ નિયમોને આધારે જ આપણું સંસારી જીવન ચલાવવું છે, પણ આપણા લોકોની અંદર અધર્મશક્તિ મિથ્યા વહેમો અને ધોર અજ્ઞાનતાને લીધે પાખંડ વધતું ગયું છે. તે પાખંડ દૂર કરવાનો વખત હવે આવી લાગ્યો છે. દેશની મુક્તિ માટેનાં યુદ્ધમાં મહાત્મા ગાંધીજીએ ધર્મભાવના દાખલ કરી છે અને આપણે આપણી પૂર્વની સંસ્કૃતિએ જાળવી રાખી આગળ વધીશું તોજ આપણું કલ્યાણ થશે ની. પ્રભુદાસે એ પછી કેટલુંક વિવેચન કરી ગોસ્વામી શ્રીદામોદરલાલજીને યોગ્ય દિશાએ વૈષ્ણવોને દોરવવાની વિનંતિ કરી હતી અને પાખંડ અને ખરાબ શ્રદ્ધાઓનો નાશ કરી આર્ય સંસ્કૃતિનું વૈષ્ણવ ધર્મના મહાન આચાર્ય શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ખરેખરા સિદ્ધાંતોનું પાલન કરવાની મજબુત હિમાયત કરી, આચાર્યશ્રી તથા પંડિતોનો આભાર માનવાની દરખાસ્ત મુકી હતી જેને કપોળ ન્યાતના પ્રમુખ શેઠ જીવજીદાસ ભાણુજીએ ટેકા આપતા કહ્યું કે મહારાજશ્રીએ આટલે લાંબે મોટી રાત્રિના અહીં પધારી ધાટકોપરના વૈષ્ણવોપર ખારે આભાર કર્યો છે. તેઓનાં વચનામૃતનો આપણને અમૂલ્ય લાભ મળ્યો છે તે માટે તેઓશ્રીને જોડલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે.

ઉપસંહાર.

છેવટે આચાર્યશ્રી તથા ખંને વિદ્વાનોને હારતોરા અર્પણ કરીને આચાર્યશ્રીને શ્રીનવનીત-લાલજીનું મંદિર જોવા પધરાવ્યા હતા. તેઓશ્રી મંદિર જોઈને ધણા પ્રસન્ન થયા હતા અને ગોલોકવાસી શેઠ ચત્રજીજી જીવજીદાસના ધર્મપરાયણ ધર્મપત્ની ગં. સ્વ. મણિજીદેવ તેમજ ગોલોકવાસી શેઠ નારણદાસ દેવીદાસનાં ધર્મપરાયણ પત્ની ગંગાસ્વરૂપ સંતોકબાઈને મંદિરની સુંદર વ્યવસ્થા માટે ધન્યવાદ આપી આશીર્વાદ આપ્યા હતા.

શ્રીમાન જાવાસાહજના ધન્યવાદ તથા આશીર્વાદને પ્રણામ મસ્તકે ગ્રહણ કરીને, એક સહૃદય વૈષ્ણવને યોગ્ય દીનતાથી ગં. સ્વ. મણિજીદેવ તથા ગં. સ્વ. સંતોકજીદેવને વિનંતિ કરી કે; આ મંદિર કે તેની આ વ્યવસ્થાને માટે અમને કાંઈ પણ ધન્યવાદ ઘટતો નથી. મંદિરની આ બાબતો અને આકર્ષક સુંદરતા તેમ જ સુખ્યવસ્થા માટે જે કોઈને સુખ આપવામાં આવે તો અમારાં મહારાણીસ્વરૂપ શ્રીમાતાજી ગોસ્વામિની શ્રીભાગીરથી માતાજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના કુમાર ચતુર્થપંચમપ્રીદાધીધર ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીને જ ધટે છે. આજે ધાટકોપરના વૈષ્ણવોને સ્વપ્નમાં પણ ન મળે તેવો જે અણુધાર્યો આનંદ મળ્યો તેમ બીજી વખતે જે કાંઈ અલૌકિક આનંદ મળે છે તે પણ એઓશ્રીની કૃપાથી જ મળે છે એમ અમે માનીએ છીએ. ” તે પછી સ્વયંસેવકોના બેન્ડની સજામી તથા ‘જયનાદ’ વચ્ચે મોટી રાત્રે શ્રીમાન મોદરમાં ગુલામ પધાર્યો હતા.

કાવસજી જહાંગીર હોલમાં જાહેર સભા.

આપણાં સાપ્રદાયિક વ્યાખ્યાનો માત્ર આપણાં મંદિરોમાં અથવા તો વંગા બીજા કોઈ ધર્મસ્થાનોમાં થતાં હતાં ! પણ જે સ્થાન જાહેર કહેવાય છે, જે સ્થાનોમાં આજકાલના રાષ્ટ્રીય નેતાઓ ગર્જના કરવામાં ગૌરવ સમજે છે, જે સ્થાનમાં સભા ઘટી હોય તો ત્યાં રંગમંચ

એસવામાં અને ખોલવામાં માન મથ્યું મનાય છે તે જાહેર સ્થાનોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો થાય એ તો યુગનો પલ્લોજ ગણાય. પણ હા, તે યુગપલ્લો મહાસમર્થ આચાર્યસમ્રાટ શ્રીદામોદર સાહેબ બાવાસાહેબે કરી દીધો છે. મુંબાઈમાં ટાઉન હોલમાં આપત્રીએ સભા કરીને એક ઐતિહાસિક દૃષ્ટાંત ધાર્મિક ઇતિહાસમાં આલેખાવી દીધું છે. એ સભાનું દરમિયાન તો મુંબાઈ કદી નહિ જૂઠું. ત્યારપછી જેટલીવાર આપત્રી મુંબાઈ પધાર્યા તેટલીવાર જાહેર સ્થાનોમાં સભામાં બાપણું કરવા માટે સદૈવ ઉત્સાહિતજ રહ્યા છે. મુંબાઈમાંજ નહિ પણ અમદાવાદ આદિના ટાઉન હોલમાં પણ પહેલી પહેલ આપત્રીએજ કરી છે. આ વખતે પણ વૈષ્ણવપરિપક્વના મંત્રીઓ શ. ત્રીકમદાસ ચક્રભાર્તી તથા શ. નારણજી દયાલે એવી સભા કાવસજી જહાંગીર હોલમાં ગોઠવી. એ ત્રણ વર્ષ ૧૩ ને છુપવારે સાંજે એ હોલ આગળનું દરમિયાન અદ્યતન હતું. મોટરો તથા ગાડીઓ તથા વૈષ્ણવ સમૂહથી હોલ ઘેરાઈ ગયો હતો. મુંબાઈના ધનાઢ્ય શ્રીમંતો મોટી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. સભારથાનની કાંઈ અદ્યતન શોભા બની હતી. આજે મુંબાઈમાં ગિરાજતા બધા શ્રીવક્ત્રવરંધ્ર શ્રીગોસ્વામી આચાર્યશ્રીઓ આ સભામાં પધાર્યા હતા.

પ્રારંભમાં મુંબાઈના આગેવાન વૈષ્ણવ વ્યાપારી તથા એક કેળવણીના વિદ્વાન શેઠ મધુરાદાસ મટાણીએ જણાવ્યું કે, વંદાયલા હસ્તપત્રો પ્રમાણે શીમાન બાવાસાહેબ આજે આ જાહેર હોલમાં વ્યાખ્યાન આપનાર છે. જાહેર સ્થાનોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો આપવાની પહેલ આપત્રીએ જ કરેલી છે. આજે પણ કૃપા કરીને “સર્વત્રેષ્ઠ ભક્તિમાર્ગ” એ વિષય ઉપર કહેશે.

ત્યાર બાદ શીમાન બાવાસાહેબે મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે:—

આજે યાવન્માત્ર સાધનોમાં ઉત્કૃષ્ટ સાધન ભક્તિમાર્ગજ છે તે વિષે કહ્યું હતું. પ્રચલે મળવાનાં અનેક સાધનો છે. વેદ તો તવસા ઘણ વિજિજ્ઞાસાય કહીને તપને સાધન બતાવે છે. વળી કેટલાક અંશોમાં યજુર્વાગદિ પણ પ્રાપ્તિમાં સાધન છે એમ પણ વેદજ કહે છે. મનુસ્મૃતિ તો આ લોકમાં કર્મની જ મુખ્યતા કહે છે. પુરાણોમાં ધણી સાધનો વર્ણવ્યાં છે, પણ બધાથી મુખ્ય સાધન તો ભક્તિજ છે એમ કહ્યું છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ; એ ત્રણમાં મુખ્યતા ભક્તિની જ છે, છાંચોના પ્રમાણે તો મુખ્ય ભક્તિજ છે એમ કહે છે, પણ આજકાલના તકના જમાનામાં સવાલ થશે કે તેજ મુખ્ય કેમ છે? એવો સવાલ થશે તેને માટે યુક્તિવાદથી એ વાત સિદ્ધ કરીશ.

સૂક્ષ્મ વિચાર—ભક્તિની ઉત્કૃષ્ટતા કેમ છે તે જાણો. વેદમાં બતાવેલા કર્મ જ્ઞાન, અને ભક્તિનાં સ્વરૂપ શાં છે તે હું બતાવું છું. કર્મ તો કેવલ કૃતિસાધ્ય છે. આ પાંચમહાભૂતિક દેહથી જ થઈ શકે છે. જ્ઞાન ઇન્દ્રિયસાધ્ય છે, સૂક્ષ્મ છે. ભક્તિ મન:સાધ્ય છે. હવે જાણો કે ઉત્કૃષ્ટ કેણું છે? જેનું રૂપ જેમ વધુ સૂક્ષ્મ તેમ તેનામાં વધુ શક્તિ હોય છે. તેમ જેનું રૂપ વધુ સૂક્ષ્મ તેમ તેનામાં શક્તિ થોડી હોય છે. અતિ સૂક્ષ્મ પદાર્થમાં તો શક્તિ કેટલી તેની ઈષિતા માપજ ન હોય, જેમ વધારે શક્તિ તેમ વધારે કામ આપે છે. હવે જાણો કે બધાથી વધારે તાકાત શેમાં છે? હું આપણા દેહમાં-વધારે તાકાત છે કે, ઇન્દ્રિયોમાં કે મનમાં? એ ત્રણેમાં વધારે શક્તિ શેમાં છે? વિજ્ઞાનશાસ્ત્રીઓ પણ કહી ચકશે કે, લોહ, સોનું, અને રેડીયમ; એ બધામાં સૂક્ષ્મ કેણું અને તાકાત-સામર્થ્ય શેમાં વધારે છે? તો સાદું કહેશે કે સૂક્ષ્મ રેડીયમ જેટલી શક્તિ કોષનામાં નથી. જેમ શક્તિ વધારે તેમ તેનું મૂલ્ય પણ વધારે અંકાય. જેમ વધારે સૂક્ષ્મ તેમ તે અતિશય વ્યાપક બને. સૂક્ષ્મની ગતિ શક્તિનાં વાર ન લાગે. ટાંકણી કે ખીસા યમમાં પેસી જાય, પણ જાડી લાડી પગમાં પેસીજ ન શકે! તેવી જ રીતે દેહ સૂક્ષ્મ છે, ઇન્દ્રિય

તેથી સૂક્ષ્મ છે અને મન તો અતિસૂક્ષ્મ છે. દેહમાં, કેટલી તાકાત ? ઇન્દ્રિયોમાં કેટલી શક્તિ ? મનમાં કેટલું સામર્થ્ય ? જેમ ૧૦ હોર્સના પાવરવાળા ઇન્જિનમાં, ૨૦ હોર્સ પાવરવાળા ઇન્જિન વગેરેમાં ઘટતી વધતી તાકાત હોય છે તેમ અહીં પણ સમજવું રહ્યું. દેહની તાકાત તો અમુક હદમાં ફેલાય છે. આપણા હાયપગ કાંઈ એક નાનીથી કેટલીમાં પણ બધે રથને ફેલાવી ચકાશે નહિ. ઇન્દ્રિયોમાં આંખ, કાન, નાક વગેરેની શક્તિ વધારે છે, કેમકે તે સૂક્ષ્મ છે. દૂરથી આંખ જોઈ શકે, કાન સાંભળી શકે, નાક સુગંધ લઈ શકે. આ ઇન્દ્રિયોથી પણ કર્મ જ્ઞાનભક્તિદ્વારા ભગવાનને પ્રાપ્ત કરવાનો જ ઉદ્દેશ છે. છતાં એ ઇન્દ્રિયોને તો અંતરાય પણ નડે. દૃષ્ટિમાં આંખ આવે, કાનનાકે બહેરા થઈ જાય, પણ મન, તે તો અતિસૂક્ષ્મ છે. તેથી જ તેની શક્તિની હદ નથી. અરે ઇન્દ્રિયોથી તો પ્રાણુની અતિ સૂક્ષ્મ છે. એક કાચના શીશામાં મરવા પડેલા માણસને નાંખીને અનુભવ કરતાં તેના પ્રાણુ ક્યાંથી ગયા તેના વિચાર અંગ્રેજોને યથ પડ્યો હતો. તો મનની તો વાતજ શી કરવી ? તો દેહથી સિદ્ધ થતા કર્મો-યજુષ્યાગાદિમા તાકાત પણ થોડી જ છે. ઇન્દ્રિયોથી પ્રાપ્ત થતા જ્ઞાનમાં મણુ શક્તિ વધારે ક્યાંથી હોય ? અને મન જેવા પ્રજ્ઞ પદાર્થથી મેળવાતી ભક્તિની શક્તિ કાણુ વર્ણવી શકે ? (તાળાઓ).

ભક્તિની ઉત્તમતા—દેહથી ચતાં સાધનો કમજોર હોય છે, તેમાં શક્તિ અમુક જ પ્રમાણમાં હોય છે. ઇન્દ્રિયોથી થતું જ્ઞાન પણ વિશેષ બળ નજર ધરાવી શકે. અને ભક્તિ અને પ્રેમ, અને તે દેહ કે ઇન્દ્રિયોથી સિદ્ધ થતો નથી. પ્રેમ તો તો માત્ર મનનો જ ધર્મ છે, મન વિશાળ અને સૂક્ષ્મ છે. શ્રવણકર્ત્રનાદિ નવધાભક્તિ તો બીજી ઇન્દ્રિયોથી થઈ શકે છે, પ્રેમભક્તિ તો મનના જ હાયમાં છે. પ્રભુનું સ્વરૂપ અતિસૂક્ષ્મમા સૂક્ષ્મ છે. તો તે પ્રભુને પ્રાપ્ત કરવા માટે મન જેવું અતિસૂક્ષ્મ સાધન જોઈએ. પ્રેમ પણ સૂક્ષ્મ છે તેથી પ્રભુને મેળવી શકે છે. એ પ્રેમયક્ષણુ ભક્તિ પણ બે પ્રકારની છે, એક તો જીવકૃતિથી સિદ્ધ થાય છે અને બીજી ભક્તિ પ્રભુના અનુગ્રહથી મેળવી શકાય છે. જીવકૃતિવાળી ભક્તિ રમણીયા ગાડા જેવી ધીમી છે અને અનુગ્રહસાધ્ય ભક્તિ તો વિમાનની પેઠે એકદમ ઉચ્ચે લઈ જાય છે. અહીં આ વિષય પૂર્ણ થાય છે.

પ્રેમભક્તિની પરાકાષ્ઠા ! જેમ આપણે પ્રભુને મળવા ઇચ્છીએ છીએ તેમ ઇશ્વર ભક્ત-જીવને મળવા તલસે એ ઇશ્વરકૃતિસાધ્ય અનુગ્રહાત્મક ભક્તિ કહેવાય. વધુ તો શું પણ પ્રભુ ભક્તને સેવવા તૈયાર થાય. આત્મ જ નામ ભક્તિની પરાકાષ્ઠા છે. આ વખતે ઇશ્વરના ધર્મો જીવમાં આવે છે. શ્રીનંદયશોદાજી શું કરતા હતા ? મર્તો ઇન્દ્રિયમાણો વિમર્શિ એમ ભગવતી શ્રુતિ કહે છે, તેનું રહસ્ય એ છે કે જગનનું ભરણપોષણ કરનાર પ્રભુ છે છતાં ભક્તોવડે તેમનું ભરણપોષણ થાય છે, શ્રીનંદયશોદા એ પ્રભુનું પાલન-પોષણ કરે છે, આ બાદભાવનાની સેવાનું રહસ્ય છે. શ્રીયશોદાજી પ્રભુને ધમકાવે છે અને પ્રભુ ભયમીન બને છે. વાત્સલ્યસ્નેહમાં ઇશ્વરના ધર્મ-શિક્ષા કરવારૂપ ધર્મ-શ્રીયશોદાજીમાં આવ્યા અને ડરવારૂપ ધર્મ જીવ ધર્મ પ્રભુમાં ગયા. આમ અદ્વાનંદજી યથ ગઈ. (ઈશ્વરે તાળાઓ.) ગોવાળીઆઓ પોતાણુ ઉમ્મિજીટ પ્રભુને ખવરાવે છે અને પ્રભુ તે આરામે છે. શ્રીગોપીજન કહે છે કે મજા મજાવ અમારી સેવા કરો; પ્રભુ ભક્તપરાધીન થઈને તેમ કરે છે.

ઉપરનાં વિવેચન પછી શ્રામુખેધિનીજનાં રહસ્યનું વર્ણન કરતાં શ્રોતાઓમાં ભક્તિરસ ઊલકાઈ ગયો હતો, અને વ્યાખ્યાનની કાંઈ અનેરી અસર જુમી હતી. તે પછી શ્રીમાને વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારબાદ બૃહ-મંદિરાધીશ્વર પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ષ ગોસ્વામી શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ કરતલધ્વનિ વચ્ચે એક હતાદાર વ્યાખ્યાન કર્યું —

“આજના વ્યાખ્યાનથી મને પ્રભો આનંદ થાય છે. આપશ્રી જે સ્થાનપર બિરાજે છે તે સ્થાન સંપ્રદાયમાં શિરોમણિરૂપ છે. વળી એ સ્થાનનું ઔરવ આપશ્રી આવા ઉપદેશોદારા, ધર્મ-રક્ષણાર્થ બદ્ધપરિકર યહને જાળવી રહ્યા છે. (તાળાઓ) તેથી વિશેષ આનંદ થાય છે.” ત્યારનાં આધુનિક આલેપકર્તાઓને સર્જક જવાબ આપીને આપશ્રીએ વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું. હવે શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશી જે. પી. એ ઉપકાર માનીને સભા બરખાસ કરી હતી.

વીલે પારલેમાં સભા—તા. ૧૬ મીને ચુરુવારે રાત્રે વીલે પારલેમાં સભા રાખી હતી. ત્યાં એક સંસ્કૃત પાઠશાળા સ્થાપીને બ્રાહ્મણગણોને વિદ્યાદાનની સેવક કરવા માટે ખૂબ મત્ત કરી રહેલા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણ મોહનલાલ દવેએ આ યોજના કરી હતી. અહીં પણ રાત્રે ૮-વાગે સભા યજ્ઞ, અને મ. મ. પંડિત શ્રીચિરિદરં ચર્મા આદિનાં વ્યાખ્યાનો પછી શ્રીમાને પણ શોધ પ્રાસંગિક પ્રવચન કર્યું.

માધવમાગની બીજી ગંજવર સભા.

ઐત્ર વદ અમાવાસ્યાના રોજ માધવમાગમાં બીજી ગંજવર સભા મળી હતી. આજે મુખા-હતા બધા ધનાઢ્ય શ્રીમતેએ હાજરી આપી હતી. શરૂઆતમાં શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશીએ ઉપક્રમ કરતા શ્રીમાનને વિનંતિ કરી હતી કે, અમારા વૈષ્ણવોમાં એક ત્રમ છે કે, આપણને કંઈ વર્ણોત્તમધર્મ સાથે લેવા દેવા નથી. તો તે વિને સ્પષ્ટાકરણ આજ શીશુએ જ આપશ્રી કરો તેની વિનંતિ છે. આ વિનંતિ મુજબ શ્રીમાને એજ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું.

ઉપરિચિત સમ્બંધ, આજનો આ વિષય વર્ણોત્તમધર્મ સાથે પુષ્ટિમાર્ગનો શો સંબંધ છે તે છે. પુષ્ટિ એટલે અનુગ્રહ તેનું વિવેચન ખૂબ કરી ચુક્યો છું. અનુગ્રહમાર્ગમાં વર્ણોત્તમની શી જરૂર છે ? જગત્કૃતિસાધ્ય છે, તેમાં કાંઈ જરૂર નથી. જગત્કૃતિસાધ્યમાં વર્ણોત્તમની જરૂર છે પ્રમાણમાં તો જરૂર છે. એક મહેલ છે, તેમાં અવધિરહિત આનંદ છે. તેની પ્રાપ્તિ થવા માટે અનુગ્રહજ મુખ્ય પણ મહેલમાં જવા માટે દાર-સીડીઓ હોય છે. લીફટથી જલદી જવાય છે, વેદાંતમાં ભગવાનને પશ્ચિરૂપ કલા છે, જે એરોપ્લેનની પેઠે સીધું જવાય છે. તેમાં ગત માટે પ્રાથમિક ઉદ્દેશની જરૂર છે. અનુગ્રહમાર્ગમાં પ્રાપ્ત્ય રસરૂપ પ્રભુજ છે, રસ પાત્ર વિના કરી શકેનો નથી, અહીં સાધારણ પાત્ર નથી, તેના પાત્ર તો શ્રુતિજ છે. અર્થાત્ પ્રમેયજ છે. પ્રમેય ઉત્તમ પણ તેની સાથે પ્રમાણની જરૂર છેજ, તે કેમ ? વાસ્તવિક છે. જ્યાંસુધી પ્રમેય સિદ્ધ નથી; પ્રમાણથી અગ્રાજ બ્રહ્મ છે, તો અનુગ્રહથીજ ગ્રાહ્ય છે. શાસ્ત્રો કિસ્સો છે, એક છોકરો ઇચ્છે કે વિદ્વાન્ બની જાઉં, પણ તેમ થતું નથી, વિદ્યાભ્યાસથી જ થવાય છે. સર્વધર્મોનમાં, ધર્મમાત્રનો ત્યાગ નહોં થઈ શકેતો. દેહ છે ત્યાં સુધી એક પ્રકારના ધર્મો છે, પણ તે મર્યાદા છે. જો તેનો કુરુપયોગ થાય છે, તેથી અવનતિજ થાય છે. ચક્રિન મર્યાદિત કરવામાજ્ઞાનિમદર્પિઓએ આદિક રચ્યું છે, એનું સૂક્ષ્મ દષ્ટિએ નિરીક્ષણ કરો ત્યારેજ તત્ત્વ સમગ્રશે. ધાર્મિક જનતાએ બીજી નકલ કરવાની નથી. વર્ણોત્તમધર્મ એ કિશાનું કામ કરે છે, તેથી વર્ણોત્તમધર્મથી ભણ થતું એ લક્ષ્યમુત થવા જેવું છે. શરણાગતિ પણ શાસ્ત્રોજ કહે છે, તેથી ધર્મચારુનો ત્યાગ ન જ કરવો જો કે ઉત્તમ કક્ષામાં-પુષ્ટિમાર્ગમાં તેની બહુ જરૂર નથી, એ તો હું કહું છું. પણ તેમાં પહોંચતું અનુગ્રહ સાધ્યજ છે. ત્યાં પહોંચ્યા વિના વર્ણોત્તમયોદા પામેજ છુટકો છે. તેમાંએ આક્રમણકાવમાં કીશાનું નક્ષ કરવું રહ્યું. તેના માધીક શ્રીકૃષ્ણ વર્ણોત્તમ કિશાનું રક્ષણ કરો એવી પ્રાર્થના છે, તે પછી



यज्ञमंडप

Photo R V Shroff



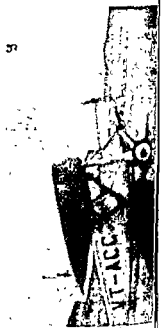
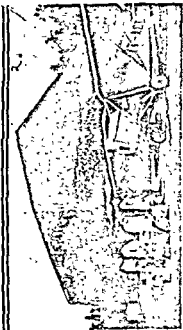
म. म. अनंतकृष्ण शास्त्री.



पंडितवर्य श्रीदेवनायकाचार्यजी



दानवीर शेठ लच्छीरामजी.



યાદગાર વિમાનયાત્રા,

નવ વર ૧૪ વાં પ્રામાન્ય દરરોજ સાજના શ્રીગોપીગીત ઉપરના શ્રીસુભોધિનીજી ઉપર એકાદ કલાક વચનામૃત કરતા હતા. મોટા મંદિરનો ખગીયો તે વખતે શ્રોતાઓથી ઉમરાણ જતો હતો. ધણીએ અભ્યાસીઓ તો હાથમાં ગ્રંથ લઈને જલ્દી અભ્યાસ જ કરતા ન હોયને શું ! તેમ શ્રવણ કરતા હતા. શ્રીમાને મુખામુખ પહેલાં ધણી વાર શ્રીસુભોધિનીસુધ શ્રીવાક-પતિવાકસુધાનું પાન કરાવ્યું છે તેમ શ્રીનાથદ્વારા આદિમાં પણ ધણી વાર પ્રવચન કર્યું છે. પણ આ વખતે તો કોઈ ઓર જ રસવર્ષા કરી હતી આવો મોટો જનસમૂહ સાત રીતે એકીટસે શ્રીમાનના મુખારવિન્દમાંથી પ્રકટ થતાં શ્રીઅનન્દારયારવિન્દના મકરરંદસનું પાન કરતો હતો. આપશ્રીએ તો આ વખતે અદ્ભુત કૃપા કરી હતી. ગુપ્તમાં ગુપ્ત રહસ્ય પ્રકટ રીતે વર્ણન કરના હતા. એવી રીતે પ્રતિદિન કથારસોદધિ ઉમડતો હતો, તેટલામાં વૈશાખ સુદ ૧ પ્રતિપદાના રોજ આગા કરી કે, વૈશાખ સુદ બીજના રોજ કથા નહિ થાય; પણ અક્ષય તૃતીયાના રોજ થશે. વૈશ્યવો તો આ નિર્ન સંદેન કરવા તૈયાર ન હતા, પણ ત્યારે એક ખુરો ત્યારે આશ્ચર્યમાં ગરકાવે બની ગયા.

અક્ષયતૃતીયાનો ઉત્સવ આવી પહોંચ્યો. હતો શ્રીમાનની પ્રમુખ ઇચ્છા થઈ કે રસેશ શ્રીજીએ પ્રેરણા કરી કે શું થયું કે આપશ્રી વૈશાખ સુદ બીજના રોજ બપોરે ૧૧ વાગે મુખામુખી ૧૨ માંધસ દૂર આવેલાં ભુલુ પધાર્યાં. ભુલુ પાસે જ વિમાન [એરોપ્લેન] નું રહેશન છે. શ્રીમાન આજે વિમાનમાં શ્રીનાથદ્વારા પધારવાના હતા । ભગવદીય ધર્મપરાયણ શેઠ વલ્લભદાસ ચતુર્થજી શિવજી જે. પી તથા શેઠ દેવજીભાઈ પણ શ્રીમાનને વિદા કરવા આવ્યા હતા. આ એક વિવક્ષણ સાહસ હતું. આ સાહસ માટે વાતસંવ્યવસ્થિવાળા કદી રમ નજ આવે. મુંગામુખા વૃદ્ધ વર્ગે તો આ સાહસ ન કરવા પ્રાર્થના પણ કરી હતી. કેમકે વિલાપતમાં થયેલો ૧૦૧ નંબરના જંગી વિમાનનો અકસ્માત કોઈ બૂધી ગયું નહતું. નવયુવક વર્ગે તો શ્રીમાનના આ સાહસથી રાજરાજ થતો હતો, બરોબર ૧૧-૨૦ મિનિટે પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી શેઠ રણુઝોડદાસ પેટલાદી તથા શ્રીમાન વિમાનમાં બિરાજ્યા અને વિમાન ચાલુ કરવામાં આવ્યું. આ વખતના ફોટાઓ શેઠ વલ્લભદાસ ના સંતુષ્ટ શેઠ ક.કુભાઈએ લીધેલા છે. તે પરથી આ પુસ્તકમાં છાપ્યા છે. પહેલાં નંબરના ફોટામાં શ્રીમાન વિમાન તરફ જવા પધારે છે. સાહેબ જેની હેટ (ટોપી) વાલા શેઠ રણુઝોડદાસમાં છે. નં. બીજના ફોટામાં શ્રીમાન વિમાન પાસે પધાર્યાં તેનું દર્શન છે. નં. ત્રીજામાં વિમાનની અંદર બિરાજવાનો પોષાક ધરી રહ્યા છે. નં. ૪ માં વિમાનની અંદર બિરાજતી વખતનો દેખાવ છે. નં. ૫ માં વિમાન ઉડતી વખતનો દેખાવ છે. નં. ૬ વિમાન આકાશના અનંત અવકાશમાં દષ્ટિપથથી સુદૂર યવા લાગ્યું તેનું ચિત્ર છે. તે પછી બરોબર બે કલાકે શ્રીમાન અમદાવાદ પધાર્યાં. વિમાન બરોબર દરિયા કિનારે આશ્વું જતું હતું. ખંભાત સુધી તો સમુદ્રતટેજ આશ્વું પછીથી સીધું અમદાવાદ આવ્યું. અમદાવાદના એરોમ ઉપર વિમાન ઉતર્યું ત્યાંથી મુદરથેને ટેલીફોન કરીને બોલાવ્યા. પરમ ભગવદીય શેઠ બાલાભાઈ તથા બીજા મુદરથે આવી પહોંચ્યા. દોઢ કલાક લગભગ નીકળી ગયો. તે પછી પાંચું એરોપ્લેન ઉડ્યું તે ૧૧ કલાકે શ્રીનાથદ્વારા તરફ જઈ પહોંચ્યું. વિમાન અગાવતાર (પાઇલેટ) એક કાળેજી લઈકરી

માટે બહુજ સાવધાન રહેવાનું હતું. શ્રીનાથદ્વારા તાર ગયો હતો, શ્રીમાન્ તિલકાચિત્રથી તે મોટરમાં બિરાજીને લાલ બાગમાં પધાર્યો હતા. વિમાન જેવાને દૂરદૂરથી અસંખ્ય જનસમૂહ એકઠો થયો હતો. લાલબાગનું મેદાન નાનું પણ એટલે જુદાવન 'બાગમાં' વિમાન ઉતારવામાં આવ્યું. શ્રીમાને શ્રીપિતૃચરણરવિન્દમાં ફડવત પ્રણામ કર્યો. શ્રીમાન્ શયનાર્તિમાં સેરામાં પધાર્યો. મેવાડના ઇતિહાસમાં આ વીસમી સદીની નવીનતા સુવર્ણાક્ષરે આલેખાઈ ગઈ. અક્ષયતૃતીયાનો મહોત્સવ કરી, શ્રીને ચંદનાદિ સમર્પણે ભોજન પછી લગભગ એક વાગે શ્રીમાન્ પાછા વિમાનમાં પધાર્યો. આ જગીર વિમાનને ઉડવા યોગ્ય ન હતી તેથી શેઠ રણુછોડદાસ બાંધને શ્રીનાથદ્વારાજ ઊડવા પડ્યા. સુખાઈ પાછા ફરતી વખતે તે સવા કલાકે વિમાન અમદાવાદ આવી પહોંચ્યું. અમદાવાદમાં તે આજે સેંકડો વૈષ્ણવો કેંપ ઉપર ઉભા થઈ ગયા હતા. દર્શનચરણરવિન્દમાં લગભગ કલાક નિકળી ગયા. અમદાવાદથી શેઠ જયંતિલાલ અમૃતલાલ દામોદરદાસને શ્રીમાને સાથે લીધા. બરાબર એ કલાકે વિમાન મુંબઈ (ભુલુ) આવી પહોંચ્યું અને સાંજે તે મોટા મંદિરના બગીચામાં શ્રીમાને શ્રીસુખેાધીની કથારસનું પાન કરાવ્યું.

જોરાઈ વગેરે—શ્રીમાન્ના આ ઐતિહાસિક સાહસને નવીન જનસમૂહે વધારી લીધું. વૃદ્ધવર્ગ આશ્ચર્યચકિત થઈને શ્રીમાન્ના સામર્થ્યનો અનુભવ કરવા લાગ્યો. પણ પેલા નિંદા-ખોરાને નવો ખોરાક મળી ગયો. જે જગાના પ્રમાણે ન આવે તે કહેશે કે, આ વિમાનના જગાનામાં (વીસમી સદીમાં) ધર્મચરુએ ૧૬ મી સદી જેવા જ રજા! જે હવે આવાં સાહસ કરે તે કહેશે કે પૈસાનો ધુમાડો કર્યો. ખરી રીતે જેનાં વિમાનયાત્રામાં શ્રીમાન્ને ચારસો રૂપિયાથી વધુ ખર્ચ થયું નથી. તે શ્રીજીની સેવા પાસે તુચ્છમાં તુચ્છ ગણાય. બીજી ગપ મારી કે, મહારાજશ્રીએ અઠાર હજાર રૂપિયા ખર્ચાને વિમાન ખરીદ્યું. આ બધી ગણના જવાબજ નહોતી. એ નિંદાખોર કીડાએને નિંદા-વિષ્ણમાં જ મજાદ પડે છે એટલે બિચારને બીજું શું સજે? અરુ જેતાં આપશ્રીએ વિમાન ખરીદેલું જ નહોતું. વળી ગપ ઉઠી કે ઉદેપુર રાજ્યે શ્રીમાન્ સામે પગલાં લીધાં, આ બધી ઉડાઉ ગપજ છ, એ અહીં

ધાર્મિક જનતા અને ગોળમેજી.

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર વાઠસિરોયની મુલાકાતે.

ધર્મ અને રાજસત્તા—ધર્મ એ ભારતવર્ષનું જીવન—સર્વસ્વ છે. જગત્પત્ની સંસ્કૃતિઓમાં આર્ય સંસ્કૃતિનું જે ભગ્વ સ્થાન છે તેનું કારણ ધર્મજ છે. હિન્દમાં ધર્મી સાર્વભૌમ રાજસત્તાઓ સ્થપાઈ અને કાલના અનંત ગર્ભમાં સમાઈ ગઈ. પણ એ રાજસત્તાઓએ હિન્દના પ્રાણરૂપ ધર્મનું અખંડ ગૌરવ જાળવવામાજ પોતાનું ચિરસ્થાયિત્વ અને કલ્યાણ માન્યું હતું આર્ય સંસ્કૃતિના કોઈપણ અંગને અંધું પાડવા માટે કોઈ પણ રાજસત્તાએ રાસતાનો દુરુપયોગ કર્યો નથી. ભારતીય સમ્રાટોએ તો જગન્મૂર્ધન્ય આર્ય સંસ્કૃતિના મહામંદિરને આંગણે પોતાના રાજમુકુટ હંમેશાં નમના જ રાખ્યા છે. વિદેશી અને વિધર્મી રાજસત્તાઓએ પણ એનું જ અનુકરણ કરવામાં પોતાની સહીસલામતી સમજ લીધી છે. છતાં જે રાજસત્તાઓએ સત્તામંદી અધી જનીને હિન્દના મહાન પવિત્ર અને જોજરવી આત્મા સાથે થોડી પણ અટકચાળા કરી છે તે રાજસત્તાઓએ પોતાનાં જ અસ્તિત્વ પર, પોતાની જાહોજલાલી અને સુખશાંતિ ઉપર કુકારાધાત જ કર્યો છે. એ પ્રજવલિત સત્ય દતિદાસની મુવર્ણભૂમિકાપર અત્યારે પણ પ્રકાશી રહેલું છે. આર્યસંસ્કૃતિની લોકાત્તર ભગ્વ ભૂમિકા લેણ પણ ગાખી પડી નથી અને પડશે નહિ જ.

રાજકારણમાં ધર્મ—રાજસત્તા, ધર્મ અને સમાજ એ ત્રણેય વસ્તુ એવી સંગઠિત થયેલી છે, તેને અલગ કરતાં રાષ્ટ્ર જેવી કોઈ વસ્તુ જ રહેવી અમભવિન થઈ પડે. બીજા દેશો ભણે તે ત્રણેનાં પૃથક્કરણ કરીને પોતાના રાજકીય જીવનનો નિર્વાહ કરવાનું જણાવે, પણ આ ધર્મભૂમિમાં તેમ થયું જ મુશ્કેલ છે. આર્ય સંસ્કૃતિની અનંતકાલીન ભાગ્યતા અને સર્વોચ્ચતાનું કારણ ઉકાત ત્રણ વસ્તુઓનાં સંગઠનમા સમાયલું છે. ધર્મ અને સમાજની ઉચ્ચતા જાળવવાની જોખમદારી રાજસત્તાપર રહેલી છે અને એમ કરીને જ કોઈપણ રાજસત્તા પોતાનાં અસ્તિત્વને પણ સુરક્ષિત રાખી શકે છે. એ ત્રણે વસ્તુઓના સંગઠનમાં લેણ પણ વૈમનસ્ય પેના થાય તો ભારતીય જીવનગાંથી રસકસ કાયમનો આસ્થો જાય અને સ્થલે સ્થલે દુઃખના દાવાનજોગ સળગી રહે. આનો અનુભવ અત્યારે આપણે સારી પેઠે કરી રહેલા છીએ. રાજસત્તાના કલ્પિત ખ્યાલમાં સમાજ અને ધર્મની સંસ્કૃતિ સાથે અટકચાળા કરીને આપણે ઉન્નતિના સ્વપ્ના પણ જોઈ શકવાના નથી. ભૂતકાલ તેનો સાક્ષી છે અને વર્તમાન તો ચેતાવી રહ્યો છે. ભવિષ્ય તો પ્રશ્ન જ બનેલું છે. આપણે તો ભવિષ્યમા ભયચિહ્નો જ જોવાં રહ્યાં!

રાજસત્તાનું પુનર્વિધાન—હાલમા હિન્દથી ૭-૦૦ સાત લગર માઇલ દૂર રાજકીય પુનર્વિધાન થઈ રહ્યું છે. દેશમાં ક્રાંતિયુગના રણદુર્દ્ભિ વાગી રહ્યા છે. જડવાદનું વાતાવરણ જોશવેર ધસમસી રહ્યું છે. વિદેશી શિક્ષાના ચોગેર પ્રસરના ચળકાટમાં અંતયલી આંખો પોતાના વ્યક્તિત્વને, દેશની સંસ્કૃતિની સર્વોચ્ચતાને નિહાળવા અસમર્થ બનવા લાગી છે. દેશ, ધર્મ અને સમાજના રક્ષણને બદલે જાણે અજાણે ભણણ થયું હોય તેના ભણકારા થાય છે. હિન્દમાં પ્રાણરૂપ ધર્મની તો ડગલે પગલે અવહેવના જ થતી જાય છે. ધર્મ અને ધર્મદાર એ જન્મે જીવનની વિશ્વતાનું રક્ષણ કરનારા અજેડ દુર્ગ છે, તેને ઉન્નતિની આડે આવનારા પ્રતિપક્ષ

લોડ વિલિંગ્ડન ન્યારે મુમાઈના ગવર્નર હતા ત્યારે પણ મહાખલેશ્વરમા આચાર્યશ્રી મર્યા હતા ફરીથી આ મુલાકાત પણ સંતોષજનક રીતે થઇ હતી. આચાર્યશ્રી સાથે સીમલામાં મોટા સ્ટાફ હતો. પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી તરીકે શેઠ રણછોડદાસ હરજીવનદાસ પેટલાદીએ ધણીજ કુશલતા સાથે કાર્ય બજાવ્યું હતું. તે ઉપરાંત એ. ડી. સી. લાલા હરસ્વરૂપરાય તથા શ્રીનાથદાસના કમાન્ડર ઇન્ ચીફ તથા વસંતરામ શાસ્ત્રી વગેરે હતા.

સીમલાથી આચાર્યશ્રી તા. ૧૦ મીએ દીલ્હી પધાયો હતા અને બે લાખ પ્રેક્ષકો ભેગા ભાગ લે છે, તેવી રામચીલામાં તેના નેનાઓની વિનિતિથી સલાપતિ ગોસ્વામી શ્રીદામોદરલાલજીએ એક સચોટ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું આ પ્રમાણે ધર્મને માટે તનમન અને ધનનો ભોગ આપીને જે શ્રમ આચાર્યશ્રીઓએ લીધો છે તેને માટે સનાતની પ્રજા તેમની ઋણી બની છે. આથી પણ વિશેષ ઉત્સાહથી તેઓશ્રી ધર્મરક્ષણાર્થે બદ્ધપરિશ્કર અને એજ આગિલાયા છે.



નાંધી લો !

ઉત્સાહી બનો !

સાહિત્યવિલાસી વૈષ્ણવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સંગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠયા જ પુસ્તકો મળતાં હોતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા અંધો પ્રકટ થઇ ગયા છે કે એક જીવંતીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, ગ્રંથ, હીંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા અંધો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોંધાવર લઇને મોકલી આપે છે. નહિ મળતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી. સ્વીયમ્ મંગાવી લો.

ડૉ. શ્રીપુટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નડિયાદ, (જી. એસ),

એક કરોડ વૈષ્ણવોનું

આ એક જ

શું?

હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામાં પ્રકટ થતું

અપ્રતિમ સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તણ્ડ

(વાર્ષિક લવાજમ માત્ર બે રૂપીઆ)

ઉત્તમોત્તમ સામ્રદાયિક સરકૃત્ર અથો તથા તેના અનુવાદો, પ્રાચીન-
અપ્રસિદ્ધ કીર્તનો, ભાવનાઓ, પ્રાચીન સાંપ્રદાયિક ભાષા અથો
ઉપરાત સુદર ત્રિરંગી ચિત્રો.

આલું માસિક સંપ્રદાયમાં એક જ છે.

જલદી ગ્રાહક થાઓ.

તંત્રી—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી,

ધર નંબર ૧૭૮૮, રાજમહેતાની પોળ,

અમદાવાદ નં. ૧.

તમારા બાળકોને વારસામાં શું આપશો ?

ધર્મના ઉદયમાં શ્રીવૈષ્ણવયુગ્મમંડળ તરફથી છપાએલા નાના બાલકો પશુ સમજ્યા તેવાં સરળ ભાષામાં લખાયેલાં નીચેના પુસ્તકો આપશો તોજ ઉન્નતિ છે.

પુસ્તકો.	પ્રથમ કીંમત.	ઘટાડેલી કીંમત.
શ્રીવૈષ્ણવબાલપોથી	૦-૨-૦	૦-૧-૬
પ્રથમપાઠાવથી	૦-૪-૦	૦-૨-૦
રાજા આશકરજી	...	૦-૧-૩
શ્રીવલ્લભચરિત્ર	...	૦-૨-૦
શ્રીનારાયણદાસ બ્રહ્મચારી	...	અમૂલ્ય
શ્રીપદ્મનાભદ્રાસંજી	...	૦-૧-૩

તા. ક.—ઘટાડેલી કીંમત ઉપરાંત પાઠશાળાઓ વગેરે માટે ૫૦ થી વધુ કોપી મંગાવનારને કૃપીકૃત આપવામાં આવશે.

લખો:—

મણિલાલ ત્રિલુવનદાસ સરૈયા, મંત્રી: શ્રીવૈષ્ણવયુગ્મમંડળ-નડીઆદ

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કીંમત ઘટાડીને અઢી આના કર્યા, ટપાલ અર્થ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઈ, ધોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજી એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૬ પદો, શ્રીદ્રારિકેશજીના એક સો પચીસ પદો, આ પ્રાચીન સાહિત્ય ઉપરાંત શ્રીગોકુલનાથજી, શ્રીરઘુનાથજી તેમજ શ્રીઆચાર્યગોપેશજી એ ત્રણે મહાત્માભાવીઓની સંસ્કૃત ટીકાઓનું સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ સુંદર ચિત્રો. આનું સાહિત્ય કદી ગહાર પડ્યું નથી, ઉચ્ચ કાગળો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તીનોનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી પેદાડવા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમજે વર્ષોગણ શીતંગ્રહ, ઉજ્જ્વલાદિ, ઉત્સવોની પ્રજ્વાલિકા સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા ખારમાસી ઉત્સવના પદો, દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ. ધોળ પદો, નિત્યપાઠો.

ખીજાં પુસ્તકોની જરૂર નહિ પડે. અક્ષરો ગોઠા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સંપ્રદાયમાં પહેલો છે. અપ્રાસદ પદોનો તો લગ્ન છે. થોડાજ સમયમાં બહાર પડશે. નોંધાવર દરે પછી

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રામમહેતાની ધોળ—અમદાવાદ.

विद्यया तारुण्यद्वारं श्रीमद्भगवत्पुत्रना विद्योद्वारक सिद्धिंतिना

अथार कर्तुं सवित्र भासिक

शुद्धाद्वैत-ભકિતમાર્તંડ.

પુસ્તક ૬૬]

માર્ગશીર્ષ, સં. ૧૯૮૮.

[અંક ૬.

દેવદીપોત્સવાંકનો સત્કાર.

ગયા વીંતના ખાત્ર અંક સાથે ચિત્રોના ખાત્રમાં એવી પરી
જલો ગત દેવદીપોત્સવાંક વંધુવાએ વધારી હીયો કે એ માત્ર મનેની
સાર્થકના માત્રુ છ. ભકિતભાવંથી અપોવની અણુમા અણુ વસ્તુને પ્રભુ
નદાનમાં મદાન માત્રી તે છે તે પછી ભગવંતે કેમ ન મને કે તે
એમની મદત્તા છે. ખાત્રી હીસાનો ધોટામાં, કાપોલવની ગેરવ્યવસ્થા,
અધોધુધી, નાણાંની ઉચાપન વગેરેમાં અને એ ખાત્ર અંક લખવા-
પાવવાની મદુનનમાં ગતદિનસના ઉગારા થયા છે-પણ એ અંકનો
સત્કાર થયો એ જ સંભોષણ કારણ છે.

દપાવ ખાત્રુ ખર્ચોગ અનુ છે એટલે આદરોએ લવાજમ અમવાદમાં
કાંઈની મારફત વાતાવનુ. અથવા તે પોતે ભરી જનું કાપોલવ ગળ
મહેતાની પોગમાં છે, પણ ને મોગી હોવાથી તેતજાણ માતાની પાનેનો
અથો પૂજાથી મુગશે પણ નીચેના જાહેર દેકણે લવાજમ ભરી મકામે-

૧. ગુજરાતી પંચમોશીમ, કે પાનકુવા, ચારરસના, રીચીરાડ ૨. વાદુ
ભામ પ્રગતલાલ દેસાઈની દુગને, કે ૧૦ રીચીરાડ ૩. ગાંધી પ્રાણલાલ
અમૃતલાલ, દીકરા મોહી પાસે, કે રીચીરાડની ગોળ બહાર જગલા દાયની
દુકાનાની દારમાં

૧ ૧૯૮૮, ૦ નમદેવોની પોળ }
અમદાવાદ,

તરી અને પ્રકાશક
વગંતરામ હર્ષિજી શાસ્ત્રી.

नाम नोधावो !!

सुप्रोधिनीजनो संपूर्ण अनुवाद

विवेचन साथे.

सिक्कर श्रीगुरुजी कावात्मक दीवाओतुं पान करतुं होय, श्रीमद्भागवततुं महत्त्व होय, दार्शनिक विषयतुं स्पष्टीकरतुं समजतुं होय तो आग्नेय नाम नोधावो.

श्रीसुप्रोधिनीजनो सरस कावान्तर अने विषय पदार्थोतुं स्पष्टीकरतुं करतार आ अनुवाद छे अम पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ अनिरुद्धदायल महाराज आगा करे पम विद्वान् अे उलयने समान रीते आ कावान्तर अने उपकारक छे.

आखडेने नाम नोधाववाना स्थणोः—

१. श्रीपुष्टिभार्गीय पुस्तकालय—नडियाद. २. सरैया मखिलाल त्रिभुवनदास—
रदास चकवाधुवा—नडियाद. ३. जेपी दामोदर लक्ष्मीराम मोटी डबेडी—
गर. ४. शुद्धादित्त कार्यालय, रातभडेतानी पोण—अमदावाद.

श्रीगुरुणाय नमः ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः)

विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषद्श्रुतिः)

विज्ञापनम् ।

लुप्तप्राय प्राचीन संस्कृत साहित्य, एव राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुप्रोधिनीजी एवं यजी—आदिके ग्रन्थो का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामक मासिक पत्रिका विद्वत्केसरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी एवं विद्वद्वन गोस्वामी श्री ६ श्रीमजरानलालजी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई।

एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा । सर्वसाधारण के हितार्थ मूल्य केवल तीन रुपया है । बाज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये ।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायता संस्कृत पाठशाला—नडियाद, हरिशङ्कर बडामदिर—नडियाद, शुद्धादित्त कार्यालय—अमदावाद

નબળાં શરીરને બળવાન, કાંતિમય બનાવવાના મનોરથ પૂર્ણ કરવા માટે
અમોઝે આપને પ્રથમથીજ રાખ્યું છે કે:-



(સ્ફુર્તિદાયક કુધાવર્ધક બલકારક)

શિઆગાની ઋતુમા આપને બળવાન અને
વન્દુરત રહેવાની છત્તા હોય તો આજેજ
અગ્રી દ્રાક્ષથી બનાવેલો મધુર, સ્વાદદષ્ટ, લઘુ
જનદાર મુખ મચારક દ્રાક્ષાસ્રવ મગારી તેનું
સેવન કરો. જેથી શરીરમા રક્ત માસ વધે છે.
ચહેરાપર રોનક અને સુખી આવે છે. કબજ-
યા દૂર કરી દસ્ત સાફ લાવે છે. શરીરમા નવું
ચેતન આવી કામમા મન લાગે છે. એક વખત
સેવન કરી પરીક્ષા કરી જુઓ. કિં. નાની
ખાટલીને રૂ. ૧) મોટી ખાટલીના રૂ. ૨)
નમુનો. મફત મોકલવામાં આવે છે, દરેક દવા વેચનારાઓ પાસે મળશે.

(અષ્ટવર્ગ ઔષધી મીશ્રીત.)

આ અવલેહ રોગી, નીરોગી, બાળક, બ-
સ્ત્રી, પુરુષ દરેકના માટે દરેક વખતે એકસાદ
ઉપયોગી છે.

આયુષ્ય વધારનાર અને નવું જીવન આપ-
નાર છે, આનાજ સેવનથી મહર્ષી અમર અવિએ
પુનઃ યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી હતી. વીર્ય વિકાર,
નબળાઈ, ખાસી, રસાસ, અને ફેફસાની કમ-
બેસી માટે રામબાણુ છે. આનાથી રમુતિ, કાંતિ
વધે છે. દિવિઓમા બળ આવી મસ્તિષ્ક દુષ્કિ
વધારે છે. કિં. તોલા ૨૦ ને. રૂ. ૧૧).
વધારે છે. કિં. તોલા ૨૦ ને. રૂ. ૧૧).

મળવાનું ડેંગણું:-મુખ સંચારક કંપની, -મથુરા.

અણધાર્યા વખતે સારા ડોક્ટરની જરૂરત પૂરી પાડનાર દરેક ઋતુમાં
ઉપયોગી ૪૧ વર્ષોથી અચલિત સંસાર પ્રસિદ્ધ અનુપાન વગરની

મશાહુર દવા



કફ, ખાંસી, દમ, ગૂળ, સંઘકણી, આઠા, કોલેરા, પેટનો દુઃખાવો,
અતિસાર, મોળ આવવી, ઉલટી ચવી, મુંઝારો. વગેરે એવાજ રોગો
તાત્કાળીક નાશુદ કરનારી ખાસ દવા છે.

કિં. ખા. એકના ૮ આના.

ડેંગણું:-મુખસંચારક કંપની-મથુરા.

॥ श्रीरूप ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं विसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥

“श्रीभक्तिमार्गीय—साहित्यमन्दिर”

(वैष्णवधर्मना सधणां, पुस्तको. અને સુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અમદારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—ગુજ, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલાં (મુદ્રિત થયેલાં) પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની હિન્દી કીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુન્દર અને મનોહર વર્ણવિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીયુસાંધજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ. પા. જો. બાલકોના રંગબેરંગી સુન્દર ફ્રેટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગબેરંગી ફ્રેન્સી કાર્ડ, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેડો તથા પેકેટકાપરી, ગીતાકાપરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોજાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છબીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફ્રેમો મઢાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી આઈર્ડિંગ (અર્ધ) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“શ્રીભક્તિમર્ગીય—પુસ્તકાલય.”

(વાચન—વિભાગ)

મુંબઈ તથા આલુઆલુના પરાંઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરખેલાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફ્રી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ તહેનાં ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસર કોઈ પણ ધર્મજીવાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એડ્રેસ લખો યા મળો:—

મળવાનો સમય:—	{ ગિરિધરલાલ જ. શાહ, બુકસેલર, વ્યવસ્થાપક.— ‘ભક્તિમર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’ દે. શ્રીલાલજીવાનું મન્દિર, ભુવેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.
સવારના ૭ થી ૧૨ (રટા. ટા.)	
સાંજના ૪ થી ૮ „	

તા. કં:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી વખતે પોતાનું નામ તથા એડ્રેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપિયાની અંદરની કિંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ રટાંપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુત્તર માટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટરટાંપ બીજા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેર્વિસ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના:—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરના ટેકાએ ભરી શકાશે.

હાસ્ટરિયાદ વાતરોગ દર્શન.

બ્લોક ૩૦ હાસ્ટરિયા, મૂછાં, ચકરી, ફેફસે, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અમોરકન છેલી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાચેથી ઘણી રાહત મળશે. કિંમત ૧-૪-૦ પૌ. જુદું, દેરીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના બા. શાળા માટે નવું મજુર કી. બા. પૌ ૦)૨.

હાસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણુ,

પેટન્ટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદીમા ૨૪ કલાકમા ફાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રશુન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજને હુદથી મંગાવે છે. દવા મહિનાની, કિંમત રૂ. ૫) પૌ. જુદું

છગનલાલ લલુભાઈ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ્ય ડોક્ટરોની દવા ખાત્ર કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળણી), મુંઝામના ઝાડા, અતિસાર અને આતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણુ દવા માટે રૂબરૂ મળેા યા સવાલપત્ર મંગાવેા. પત્રવ્યવહાર નીચેના સંજ્ઞામે કરવેા —

માસ્તર કે. જે. પટેલ એન્ડ સન્સ, રુપુ સ્પેસીઆલીસ્ટ-માણુસાવાળા.

ફક્ત મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાદીગરાની પોળમા તંબુગરાની ખાડકી પર નં. ૩૫૬.

અમારૂં બાલાનદ બન્ધ્યાઓને હુદ પુદ આનદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુદું.

અધ્યાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ કેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું સિદ્ધાંત લાગશે. શરીરની પાચમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પાચમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો સુઝશે.

કિંમત કે પોસ્ટ ટાઈ પણ નહિ, માત્ર તમારૂં પુરૂં સરનામું મોકલી મંગાવે

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔપચાલય—જમનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

નેંધી લો !

ઉત્સાહી બનો !

સાહિત્યવિદ્યારી વૈજ્ઞાનિક વાંચકો માટે -

ખાસ નવી સુગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠ્યા જ પુસ્તકો મળતા હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા ગ્રંથો પ્રકટ થઈ ગયા છે કે એક જીવનમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એક જ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિદ્યાગ્રીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સંરક્ષતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, મજ, હિંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા ગ્રંથો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોંધાવર લઈને મોકલી આપે છે નહિ મળતા પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એટલે જાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી સ્વીચન મળાવી લો.

ઠે. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નડિયાદ, (જી. ગેડા),

અનેક રોગની એક જ દવા !!

જીવન ધારા !!

જાડા, ઉલ્હી, ચુક, શરદી, સુગ, અજીર્ણ દાઘ-પગ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, દાંત-ઢાઢની પીડા, સંધીસ, તાવ, પાણીવીકાર, ઝરી ડંબ, પ્રમેદ, પ્રદર, અસકતી, ખાસી, હમ, શ્વાસ, ગડગમડ, ઘા, લોહી નીકળતું, હરસ, મોઢાની તથા ખાજકવાની દુરગંધ, ચાચક-માકડની પીડા ઇત્યાદિ અનેક રોગોની ખાત્રીપૂર્વક દવા.

ટી. મોટી બા. રૂ. ૧૫ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૦૫.

જેનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દૂર કરનાર અતુલવર્ણી ઉપાય છે. રક્તસ્વચ્છતા તકલીફ, સુસારોગનો ખાસ, નેત્ર યા રક્ત પ્રદર, કમ્બવાડ, પેટ તથા પેટુ-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણવર, બદન ફીકું, જેચેની, દુખાવો, ઇત્યાદિ અનેક અગ્રચણો દૂર કરી બદન તાકાદથી લરપુર અને ગર્ભ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂ. ૨) બે,

દરેક દવાનું ટપાલ ખર્ચ જુદું. રજીસ્ટર્ડ ડમાર્ક "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો દરેક ડેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝીથી લરપુર

‘ઝંડુ’ ડ્રાક્ષાસવ

મૃદિકારિષ્ટ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

તાકત તાકત-તાઝી મેળવવા

શરદી મટાડનાર

થાક ઉતારનાર

ઉંઘ લાવનાર

ફરત સાફ લાવનાર

છુબ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝી બદનાર

ક્ષય, ખાંસી, મૂર્છા અને સાધારણ
તબીબીયામાં તાકતે આરામ આપનાર

લઝઝતદાર દવા

‘ઝંડુ’ ડ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ નમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ લીમ્-મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એન્ટ-ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

સ્તંભ આધીના તેર આના; સ્તંભ એકનો રૂપિયો દોઢ; સ્તંભ દોઢના રૂપિયા એ

પ્રકટ થઈ ગયો !

અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યનીસારથ ગોરનામી શ્રીઃ શ્રીજીવનેશાયાર્પણ મહારાજે આ સરસમા સરવ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના “ ઉપદેશવિપયકશંકાનિરાસવાદ ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમા છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમા રજુ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિષે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમા છે. આ ગ્રંથ વાંચ્યા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન રા. રા. હરિકૃષ્ણ વીરજીભાઈએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

આ ઉપરાંત વૈષ્ણવ દિગ્ને માટે (યજ્ઞોપવીત ધારણ કરનારા માટે) સવારથી સાંજ સુધીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા જે પુસ્તકો વૈષ્ણવ દિગ્નદિક દીદીમા તથા ગુજરાતીમાં તૈયાર છે.

દીદી મૂલ્ય—આઠ આના.

ગુજરાતી મૂલ્ય—એક રૂપીઆ.

ડેકાણુ:—શ્રીલાલબાવાનું મંદિર.

બૃહસ્વર, મુખ્યાર્થ નં ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર જો બધાંના ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશેનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી લાવામાં સવિસ્તર સમજાવું પાડી છે. નોંધાવર જે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના

ડે. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધંધુકા. (જ. અમદાવાદ.)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા, નો. ર. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીમત અંક દોઢ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સંતીક્રમા દરો તેના અંક દોઢ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા ર. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દોઢ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દોઢ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દોઢ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાર્યોલયમાં.

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા ગૃહ રસ ગ્રંથ—‘શુદ્ધાદૈત’ માં પ્રકટ થઈ ગયેલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી સુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ટ. ખ. ૧૦ આનો.

૨. ભાવભાવના—(ભા. ૧લો) શ્રીહારિકેશવજીત આ ગ્રંથ એક અદ્વર્નિશ વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોંધાવર પાંચીજી જણાવશે.

૩. પંદરમો અધ્યાય—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૃહ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક રસોક પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોનાં મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ટ. ખ. ૧૦ આનો.

૪. આટલું તો કરજો જ—નિયમનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઈ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧ આનો, ટ. ખ. ૧૦ આનો.

૫. ‘લક્ષ્મીપોષણ’—કવિશ્રી દયારામભાઈનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કી. ૧ આનો, ટ. ખ. ૧૦ આનો.

૬. ભક્તવાણી—ડોક્ટરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. હજારામ ભટ્ટજી સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવરનામૃત—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર પછીથી.

૮. ચોરાશી પ્રગ્નના પ્રત્યુત્તરો—છપાય છે. વાચવાલાયક ગ્રંથ. નોંધાવર પછીથી

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી થણી દોવાયી આ સાદસ ખેડ્યું છે. મૂલ ત્રણ આના, ટપાવ ખર્ચ એક આનો.

ર. ૧૭૪૮, ગળમહેતા ચોળ—અમદાવાદ.

સંન્યાસીએ વેદશાસ્ત્રવિરુદ્ધ સિદ્ધાંત રાજને ળતાવીને એનાં મનને બ્રમ ઉપજાવ્યો તે વિષેનું કારણ હવે ળતાવીએ ળીએ.

લક્ષમણનાથ સંન્યાસી, જેણે વેદશાસ્ત્રને બાણુએ સુક્રીને પોતાની સુક્તિથી વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર પ્રનોમાં દૂપણ દેખડાવ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે કે પ્રાચીનશાસ્ત્ર મનુસ્મૃતિ છે, ળધા વર્ણને વર્ણશ્રમધર્મમાં ચાલવાનું મનુએ કહ્યું છે. તેથી વર્ણ-શ્રમધર્મથીજ સર્વે વર્ણનો મોક્ષ છે. એ મનુસ્મૃતિમાં વૈષ્ણવી દીક્ષાનાં આચરણ કોઇ કંકાણે કહેલાં નથી, તેથી એ દીક્ષા કલિયુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવી ચલાવી છે. માટે શાસ્ત્રપ્રમાણ નથી. એ રીતે બીજા પ્રમાણમાં ળતાવ્યું છે. એ રીતે બીજા પણ કેટલાંક દૂપણ પ્રનોમાં ળતાવ્યા છે ત ઉપરથી એવું દેખાય છે કે એજ ઉપ-દેશ સંન્યાસીએ રાજાજને ળતાવીને રાજાજનાં મનને વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં બ્રમ ઉપ-જાવ્યો છે. પણ એ રાજાને શાસ્ત્રનું શ્રવણ પઠન નહિ હોય તેથી રાજાજ શું જાણે કે મનુસ્મૃતિમાં વેદના ક્રીયા કાંડનું પ્રકરણ છે? અને વર્ણશ્રમધર્મ થકી સર્વે જાતનો મોક્ષ કહેલો છે કે નથી કહ્યો? ઇત્યાદિ સર્વ વાતથી રાજાજ અજાણ હશે, તેથી સંન્યાસીની વાત ખરી માનીને સંન્યાસીએ લખી આપેલા પ્રશ્ન પ્રમાણે વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર એ પ્રશ્ન કરવાની આજ્ઞા આપી. તેનો ઉત્તર શ્રીગોકુલચંદ્રમાજની માત્રીના ટીકેત શ્રીવલ્લભજ મહારાજના લાલજ શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીગોવિંદરાયજ મહારાજે વેદશાસ્ત્રનાં વચનસહિત ટુંકામાં લખી આપ્યા છે, તથા રામાનુજ મતના સઘળા આચાર્યોયે પણ લખી આપ્યા છે. પણ રાજાજ શાસ્ત્રમાં જાણીતા નહિ તેથી સંન્યાસીએ તેના ઉત્તર વિષે રાજાજને ન જાણે કે શું સમજાવ્યું હશે? તેથી રાજા-જએ તે ઉત્તરની વાત કાન ઉપર ન લીધી, અને સંન્યાસીના કહ્યા પ્રમાણે તેઓને તથા ળધી પજને ચાલવાનો આચર ક્રીધા કે જેની મરજ એ પ્રમાણે ચાલવાની ન હોય તેણે ળમ મૂકી અન્યત્ર જવું. એ રીતે રાજાનો શાસ્ત્રવિરુદ્ધ આચર જોઇને શ્રીગોવિંદરાયજ મહારાજ પોતાના સેવ્ય શ્રીકાકુરજ શ્રીગોકુલચંદ્રમાજ તથા તેમની સાથે શ્રીમદનમોહનજ પણ શ્રીબીકાનેરના રાજાજના આચરથકી શ્રીબીકાનેર હાલમાં પધાર્યા છે. આ સમયમાં ધન્ય છે કે શ્રીગોવિંદરાયજ મહારાજને કે વેદધર્મનું રક્ષણ કરવા સાદુ લાજો રૂપીયાની પોતાની મીલકત છોડી દીધી, પણ પોતાનો વેદોક્તધર્મ ન છોડયો.

વૈષ્ણવ ધર્મ વેદમાં સ્મૃતિયોમાં ગીતાજ તથા ભાગવતાદિ શાસ્ત્રોમાં પ્રસિદ્ધ રીતે વિસ્તારથી કહેલો છે, અને બ્રાહ્મણ ક્ષત્રિય વૈશ્ય શૂદ્ર અને આંકાલ ઇત્યાદિક સર્વે જાત વાજાનો મોક્ષ એજ ધર્મથી કહેલ છે. વર્ણશ્રમધર્મથી મનુસ્મૃતિમાં અને વેદાદિ સર્વ શાસ્ત્રમાં એક બ્રાહ્મણદેહવાજા સંન્યાસીને અનંત જન્મે કરીને મોક્ષ કહ્યો છે. બીજા કોઇ જાતને એ વર્ણશ્રમધર્મથકી મોક્ષ કહ્યો નથી. તેમ વર્ણશ્રમના ધર્મ ફક્ત એક સત્યયુગમાંજ સદુથી બની શક્યા. ત્રેતા-યુગથી એ ધર્મનો લોપ થવા લાગ્યો. એ રીતે ભારતાદિકના ઇતિહાસોમાં કહેવું છે. અને ત્રેતાજુગમાં એ ધર્મ કોઇથી ન બની શક્યા તો કલિયુગમાં ક્યાંથી બની શકે? કદાચ કોઇએક વાજે તો તેને એ ધર્મથી મોક્ષ તો શાસ્ત્રમાં કહેલોજ

નથી. પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ કહી છે અને તે લોકથી પુણ્ય ક્ષીણ થતાં તેનો પાછો જન્મ થાય છે. એ રીતે સર્વ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. તે છતાં સંન્યાસીએ એ ધર્મને પ્રશ્નમાં મોક્ષકર્તા બતાવ્યો છે, એ કેટલી વિરુદ્ધતા વેદશાસ્ત્રથી બતાવી છે? અને વેદ-શાસ્ત્રમાં શિવજીનું પ્રાકટ્ય લગવાનથી બતાવેલું છે અને શિવજીની ગણના લગવાનના ભક્તોમાં કરેલી છે. શિવજીના સ્વામી ને લગવાન, તેને મૂકીને એકલા શિવજીની ઉપાસના કરવી શ્રેષ્ઠ છે એમ સંન્યાસી બતાવે છે. એ વાર્તા પણ વેદશાસ્ત્રથી કેટલી વિરુદ્ધ છે? એ સર્વે શાસ્ત્રની વાત બ્યારે રાજજી સાંભળશે ત્યારે એને પોતાને વૈષ્ણવ માર્ગની ખબર પડશે કે વૈષ્ણવ માર્ગમાં અને સંન્યાસીના બતાવેલા માર્ગમાં કેટલો તફાવત છે? સંન્યાસીના પ્રશ્નના ઉત્તર અને વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણના શ્લોકસહિત લખીને આપ્યા છે. તેનો અર્થ મનભાષામાં લખેલો છે. કદાચ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર સંસ્કૃતમાં લખત તો રાજજી મોટે ભીજી રાજજી પોતે વાંચીને સમજી શકત નહિ અને સંન્યાસી રાજજીને તેનો ઉત્તર ચાહે તેમ સમજતી દેત, અને સંસ્કૃત ગ્રંથ સારા વિદ્વાન પંડિતની સહાયતા વગર કોઈ પુરુષથી સમજાઈ શકત નહિ. એટલા સાડે રાજવંશી પુરુષોને સમજવા સાડે મનભાષામાં કરેલો છે. અને ગુજરાતી ભાષા જાણનારા પુરુષોને સાડે ગુજરાતીમાં કરીને છપાવેલો છે. એ સંન્યાસીએ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ પ્રશ્ન કર્યો તેથી એના મતમાં અમને સંદેહ ઉત્પન્ન થયો, તેથી પ્રશ્નના ઉત્તર લખ્યા પછી એના મત ઉપર અને થોડાએક પ્રશ્ન કરેલા છે. જો એને મત વેદથી સાચો હશે તો અમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણ સહિત સર્વે રાજવંશીઓને સમજવા સાડે ભાષામાં છપાવીને પ્રકટ કરશે અને વેદથી અપ્રમાણ હશે તો ટારો દઇ બેસી રહેશે! એજ એની પરીક્ષા સર્વ પુરુષોએ સમજી લવી.

ગ્રંથપ્રસ્તાવના.-કર્મમાર્ગીઓનો બળાપો.

૧. કર્મમાર્ગી લોકો શાસ્ત્ર વિષે અજાણ એવા ને વૈષ્ણવો તેના મનને આ રીતે ભ્રમ ઉપજાવે છે કે વૈષ્ણવ માર્ગ વેદ તથા સ્મૃતિમાં નથી. એ માર્ગ કલિયુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવો ચલાવેલો છે. એ માર્ગ શુદ્ધાદિક હીન જાતવાળાને આચરણ કરવા યોગ્ય છે. બ્રાહ્મણોને આચરણ કરવા લાયક નથી. બ્રાહ્મણોને તો સૂર્ય પિતૃ તથા ગાયત્રી ઉપાસના વેદ તથા સ્મૃતિઓમાં કરવી કહી છે અને ભસ્મ તથા રુદ્રાક્ષની માલા ધારણ કરવા કદમાં છે, ઉભું તિલક તુલસીની માલા અને શંકયકાદિ મુદ્રા ધારણ કરવાનું બ્રાહ્મણને વેદમાં કહ્યું નથી, એ રીતે વેદ શાસ્ત્રથી ઉલટો સિદ્ધાંત વૈષ્ણવ માર્ગના અજાણ પુરુષોને બતાવીને સર્વ દેવતાના સ્વામી એવા ને લગવાન તેમની ભક્તિ કરવા થકી વિમુખ કરે છે. એજ સિદ્ધાંત સંન્યાસીએ પ્રશ્નોમાં બતાવેલો છે.

કર્મમાર્ગ કેને માટે છે?

વેદશાસ્ત્રમાં કર્મમાર્ગને કનિષ્ઠ માર્ગમાં ગણેલો છે. લગવજ્ઞાન અને ભક્તિ-માર્ગને શ્રેષ્ઠ માર્ગ ગણેલો છે. એજ માર્ગ થકી સર્વે વર્ણનો મોક્ષ કહેલો છે. કર્મ માર્ગ થકી પિતૃસ્થાનની પ્રાપ્તિ કહી છે અને ત્યાંથી પુણ્ય ક્ષીણ થયે તે જીવનો

પૃથ્વીમાં જન્મ કહેલો છે. એ સર્વ વાત અમે પ્રશ્નના ઉત્તરમાં વેદના પ્રમાણસહિત બતાવી છે, પણ વેદાદિકમાં કર્મમાર્ગ કયા જીવો સારૂ કહ્યો છે ? તે કહીએ છીએ.

સદિની ઉપત્તિના પ્રસંગમાં પ્રજ્ઞાજીના અંગ થકી પહેલાં આસુરી, પછી દેવી સદિ અકસ્માત નીકળી છે, એ રીતે બે પ્રકારના જીવ નીકળ્યા કહ્યા છે. તેમાં આસુરીને અવિદ્યાસહિત પાપી સંસાર આપી છે. માટે એ જીવાને પ્રથમ થકી ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર નથી, તેથી તેઓને પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ સૂર્ય ચંદ્ર પિતૃ એવા દેવતાઓની ઉપાસના વેદમાં બતાવી છે. દેવી જીવોને ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર પ્રથમથી છે; તેઓને સારૂ ભગવાનનું સેવન સ્મરણ વેદમાં બતાવ્યું છે. પણ પૂર્વના કનિષ્ઠ સંસ્કાર થકી કર્મમાર્ગી લોકોને એ વાતની સમજણ પડતી નથી. માટે ભગવાનની ભક્તિ વેદમાં શ્રેષ્ઠ કહી ને, તો પણ તે મૂકીને સૂર્ય દેવતાની ભક્તિને શ્રેષ્ઠ જાણે છે. એવા જીવોને કર્મજગતની સંસાર શાસ્ત્રમાં આપેલી છે.

શાસ્ત્રાર્થ એટલો શું ?

તેમાંએ વળી એ લોકોનો શાસ્ત્રાર્થ વેદના એક પ્રકરણને પકડીને છે, માટે વેદના બીજાં ઘણાં પ્રકરણોથી તે શાસ્ત્રાર્થ વિરુદ્ધ પડે છે. એવા શાસ્ત્રાર્થને અધહસ્તિ-ન્યાયની સંસાર શાસ્ત્રમાં આપેલી છે. અધહસ્તિન્યાય એ કે-કેટલાએક આંધળાઓએ હાથીના જુદા જુદા અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યો. જે અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યા તે તે અંગ જેવો હાથી છે એમ તે આંધળા કહેવા લાગ્યા, પણ બધા અંગ મલીને એક હાથી તે વાતને તેઓ જાણતા નથી માટે એક પક્ષ પકડીને વેદાર્થ કરવો તે અધ-હસ્તિન્યાયવત્ કહેવાય છે. વેદનાં બધાં પ્રકરણો સાથે મેળવીને વેદનો અર્થ કરવો એવો અર્થ જે કરે તેને દેખતો પુરુષ શાસ્ત્રમાં કહેલો છે.

૨. શ્રીમદ્ભક્ષાચાર્યજીના માર્ગમાં વેદના સર્વપ્રશ્નો સાથે મેળવીને શાસ્ત્રાર્થ કરવાની રીત છે. તેજ પ્રમાણે અમે પ્રશ્નોના ઉત્તર લખેલા છે, માટે આ પુસ્તકનો જે કોઈ વૈષ્ણવ પોતાના ઘરમાં સંઘ્રહ કરશે તેના મનને અન્યમાર્ગી લોકો કદિ બ્રમ ઉપજાવી શકશે નહિ. અને બીજા માર્ગનાં ફલનું તથા ભક્તિમાર્ગના ફલનું તેઓને જ્ઞાન થશે માટે આ પુસ્તક સર્વ વૈષ્ણવોએ જરૂર સંઘ્રહ કરવા જેવું છે.

૩. આ પુસ્તક બીજાંથી છપાવેલું છે. પણ જેવા જોઈએ તેવા મોહટા અક્ષર મહેલો નથી, કાના માત્રાની ભૂલ થઈ હશે. તે સુર પુરુષોએ સંબંધ બેસાડીને વાંચવું. જ્યાં અર્થ ફેરફાર છાપેલો છે, તેનું શુદ્ધિપત્રક આ પુસ્તકમાં ટાંકેલું છે, ત્યાં જોવું, અને તે ઉપરથી પુસ્તકમાં જ્યાં ચૂક હોય ત્યાં શાહીથી ઠીક કરવું એજ વિનંતિ.

૪. આ પુસ્તકમાં વેદના અર્થ લખ્યા છે, પણ વચન લખ્યાં નથી. કેમકે આ પુસ્તક શૂદ્રના વાચકોમાં આવશે માટે એ વચનનો સંઘ્રહ અમે એક જુદા પુસ્તકમાં કરેલો છે. તેની યોગ્યતા જેને હશે તે પત્ર લખશે તો તેને મોકલીશું.

૫. આ પુસ્તક સુરતના મોટા મંદિરમાં લાલાજી શ્રીરણદાસજી હસ્તક મલશે. જેની મરજી જે ગ્રામ મંચાળાની હશે તેણે પત્ર લખવો અને પોસ્ટ અર્થના ખાર આના અને પુસ્તકનો ખર્ચ મોકલશે તો તેને કોઈ પણ દેશમાં મોકલીશું.

॥ श्री हरिः ॥

चासठ प्रश्नोना प्रत्युत्तरो.

भંગलाચરણ.

અથ અંધમારણે મંગલાચરણમાં પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીએ છીએ. શ્રીભાગવત એકાદશ સ્કંધના પાંચમા અધ્યાયમાં નવ યોગેશ્વરે શ્રીકૃષ્ણનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોક:—

ध्येयं सदा परिभवन्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् ॥

भृत्यातिहन् प्रणतपालभवाग्धिपोतं वंदे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१॥

હે કૃષ્ણ ! તમારાં ચરણકમલ ભક્તોને સદા ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે. જે ધ્યાન અગ્યારે ઇન્દ્રિયોનાં જે વિદ્ય છે, તેને તુરત દૂર કરે છે, અને મનવાંછિત કુળને આપે છે. તીર્થાદિકને પવિત્ર કરવાવાળાં છે. શિવબ્રહ્માદિક દેવતાઓને આશ્રયરૂપ છે, અને તે સર્વને નમન કરવા યોગ્ય છે. ભક્તોનાં સર્વ દુઃખ દૂર કરીને પાલન કરવાવાળાં છે. આ સંસારસમુદ્ર તરવાને નૌકારૂપ છે. એવાં જે તમારા ચરણકમલ તેને અમે નમન કરીએ છીએ. હવે આ વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી તેમને સાષ્ટાંગ દંડવત કરીએ છીએ. ભાગવત દશમ સ્કંધ પૂર્વાર્ધમાં ગર્ભસ્તુતિ પ્રહ્લાદિ દેવતાએ કરી છે, તે શ્લોક:—

स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं शुभम् भवार्णवं भीममद्भ्रसौहृदाः ॥

भवत्पदांभोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥૨॥

પ્રહ્લાદ કહે છે હે શ્રીકૃષ્ણ ! આપની ભક્તિના મૃતાપથી મોટા પુરુષો પૂર્વ-કાળમાં આ સંસારસમુદ્રને ગાયત્રી ખુરી પ્રમાણે કરીને ચરણકમલના આશ્રયરૂપી નૌકાથી પાર ઉતરી ગયા, અને સર્વે પ્રાણી માત્રના હિતને સાડ આશ્રયરૂપ નૌકા એટલે વહાણરૂપી સંપ્રદાય અહીં મૂકી ગયા. તે સંપ્રદાયરૂપી વહાણ ચક્રી આપની કૃપાથી તેમના આશ્રય કરનારા પણ આ ભયાનક સમુદ્રની પાર ઉતરી જાય છે. એ રીતે વૈષ્ણવમાર્ગપ્રવર્તક આચાર્યોનું સ્વરૂપ કહ્યું છે. આ સંપ્રદાય વિના બીજા વર્ણશ્રમાદિક સંપ્રદાયોના ધર્મવાળાઓને તે સંપ્રદાય ચક્રી તેમની ગતિ પ્રહ્લાદ કહે આ શ્લોકમાં કહે છે:—

येऽन्येऽरविंदाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥

आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतंत्यद्योऽनादृत्युष्मदंक्षयः ॥૩॥

હે ભગવાન ! તમારી ભક્તિના સંપ્રદાય વિનાનાં જે બીજાં જ્ઞાનવર્ણશ્રમાદિ સાધન કરનારા જે પુરુષો છે, તે જ્ઞાનાદિક સાધન-યેકી મોતાને મુક્ત થયલા માને છે, પણ તમારા ચરણકમલના આશ્રય વગર તે મુક્તિસ્થાન થકી પાછા પડે છે એટલે પાછા જન્મ પામે છે. ભક્તિ વગર તે કદી મુક્ત થતા નથી. એ રીતે

જ્યુવ સપ્રદાય વગર ખીજાં સાધનોના સંપ્રદાયથી ભગવાનનાં સ્થાનની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ આ શ્લોકમાં પ્રજ્ઞાજ્ઞાને વેદનો સિદ્ધાંત બતાવ્યો છે. તે યજ્ઞ વૈષ્ણવસંપ્રદાયપ્રવર્તક આચાર્યોની કૃપાથી મોક્ષાદિક મલે છે. તેથી અમે તેમને સાદાંગ દંડવત કરીએ છીએ. હવે ધર્મસ્કંધ ભાગવતના ત્રીજા અધ્યાયમાં ધર્મરાજે પોતાના યમદૂતોને ધર્મનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોક:—

ધર્મૈ તુ સાક્ષાત્ ભગવત્પ્રમણીતં ન વૈ વિદ્ ઋષયો નાપિ દેવાઃ ॥

નસિદ્ધસુખ્યા અમુર મનુષ્યાઃ કુતરચ વિદ્યાધરચારણાદયઃ ? ॥૪॥

ધર્મ ને છે તે સાક્ષાત્ ભગવાનનો કહેલો છે, તેથી ધર્મનું બરાબર સ્વરૂપ એક ભગવાનજ નાજી છે. દેવતા, તથા ઋષિઓ, મનુષ્યો, દૈત્યો, કોઈ નાજીતા નથી. તો વિદ્યાધર ચારણ ક્યાંથી નાજી ? એ રીતે ધર્મનું સ્વરૂપ દેવતા તથા ઋષિઓને નાજીવામાં આવતું નથી, એ રીતે કહ્યું છે. તો અમારા સરખા શાસ્ત્રોમાં જ્યુત્પન્ન નહિ તેને ક્યાંથી નાજીવામાં આવે ? તથાપિ શ્રીશુરના પ્રતાપ યજ્ઞ યથાશ્રુત યથાશુદ્ધિ અમે કહીએ છીએ તેથી એમાં ને અજ્ઞાનપણાથી કહેવાયું હોય તે અમારા સ્વામી શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર અને સુરા લક્ષ્મણન અમને ક્ષમા કરો.

દેવનકો દુર્ગોધ વેદ અન્યકો સુગોધ કેસે ? તથાપિ શ્રીશુરજુગ્મ ચરણ હૃદય ધારિકે, યથાશ્રુત યથામતિ પ્રજ્ઞોત્તરકે ગતિ દીને પતિ કૃષ્ણ વેદતા વેદપારકે. યા મેં જહાં વ્યક્તીક હોય, ક્ષમા કીને પ્રભુ સોય, હમ તો હેં અત્પ જીવ, કહા જાને સારકે. શ્રીમદ્ભગવાચાર્યપદાધ્ય નૌકા હમે મહાશયાનક સિધુ દીજીયે તારકે.

અથ પ્રશ્નો તથા ઉત્તરોના પ્રારંભ કરીએ છીએ.

પ્રશ્ન પહેલો:—સંપ્રદાય એટલે શું ?

૧ પ્રશ્ન—સપ્રદાયશબ્દસ્ય કોર્થઃ ? સપ્રદાય શબ્દનો શો અર્થ છે.

ઉત્તર: સંપ્રદાયશબ્દનો રૂઢ અર્થ તો એ છે કે સદિના આરંભ થકી આજ પર્વત ચાલી આવેલી ને રીત, તે રીતનું નામ સંપ્રદાય છે. તે રીત-સદિને કહેનારા પ્રજ્ઞાજ્ઞ છે. તેમજ સદિના આરંભમાં વેદ કહેલો છે. તે વેદમાં વર્ણ આશ્રમના ધર્મ તથા કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ, યોગમાર્ગ એ પાંચ માર્ગની રીત કહી છે. તેમાંથી પોતપોતાની રુચિ પ્રમાણે તથા યોગ્યતા પ્રમાણે સદિના પુરુષોએ એક માર્ગનું ચઢણ કર્યું છે, એ રીતે એ પાંચ માર્ગની રીત પરંપરાથી આજ પર્વત સદિમાં ચાલી આવે છે તેથી વેદમાં નેટલા માર્ગ પ્રજ્ઞાજ્ઞએ કહ્યા છે, તેટલા સંપ્રદાય સદિમાં છે. એ રીતે સંપ્રદાયશબ્દને બહુપણું આવે છે. પણ પ્રજ્ઞાજ્ઞને વેદના કહેનાર ભગવાન છે, તે એકાદશસ્કંધ ભાગવતમાં ભગવાને પોતે ઉદ્ધવજીને કહ્યું છે તે શ્લોક:—

કાલેન નષ્ટા મલયે વાણીયં વેદસંજિતા । મયાદૌ વ્રજ્જણે મોક્તા

ધર્મો યસ્માં મદાન્મયકઃ ? તેન મોક્તા ચ પુનાય મનયે પૂર્વજાય રા ॥

પ્રલયકાળમાં આ વેદવાણી અંતર્ધ્યાન થઇ હતી તે ઉત્પત્તિકાળમાં એ વેદ-
વાણી મેં પ્રધાને કહી. કેમકે ધર્મ છે, તે માટે આત્મા છે. એ ધર્મયત્રી મારી
પ્રાપ્તિ જીવોને થાય છે. એ વેદવાણી પ્રધાને પોતાના મન્વાદિક પુત્રોને કહી છે,
એ પુત્રો થકી એ વેદવાણી સર્વ સૃષ્ટિમાં પ્રવૃત્ત થઇ છે. એ રીતે વેદના કહેનારા
ભગવાન છે, અને સર્વ ધર્મનું મૂળ પોતે છે. તેથી જ્યાં સંપ્રદાયનું મૂલ ભગવાન
છે, એ વાત આ શ્લોકમાં નિશ્ચય કરીને કહી છે. એ રીતે વેદમાં પણ કશું છે.
તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો જે સંપ્રદાય છે, તેજ સંપ્રદાય મુખ્ય છે. બીજા
સંપ્રદાયો ગૌણ છે, તે ગૌણ એટલે ઉતરતા છે, એ રીતે સંપ્રદાય શબ્દના રૂઢ
અર્થથી પણ એજ વાત સિદ્ધ થઈ.

વેદાદિમાં ઘણા સંપ્રદાયો શા માટે ?

એ દેકાણે કોઇ એવો પ્રશ્ન કરશે કે વેદમાં મુખ્ય અને ગૌણ એ રીતે બે
સંપ્રદાય છે કે એક સંપ્રદાય છે ? બે બે સંપ્રદાય કહેશે તો તે બે સંપ્રદાય
પ્રકટ થવાનું કારણ શું ? તે બતાવો.

એ પ્રશ્નનો ઉત્તર કે વેદમાં વર્ણશ્રમધર્મનો માર્ગ અને કર્મમાર્ગ, જ્ઞાન-
માર્ગ, યોગમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ; એ પાંચ માર્ગના સંપ્રદાયની રીત જુદી જુદી કહી
છે, અને એ પાંચ સંપ્રદાયનાં ફક્ત પણ જુદાં જુદાં વેદપુરાણોમાં કહેલાં છે. તેથી
પાંચ સંપ્રદાય ભગવાને પ્રધાન દ્વારા જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. કેમકે એ
પાંચ સંપ્રદાયના ફલનું શ્રદ્ધા કરનારા જીવ તે પણ જુદી જુદી પ્રકારના પ્રધા
યત્રી પ્રકટ કરાવ્યા છે, તે વાત તૃતીય સ્કંધ ભાગવતના બારમા અધ્યાયમાં સૃષ્ટિની
ઉત્પત્તિના પ્રસંગમાં કહી છે તે શ્લોક:-

સસર્ગાગ્રેન્યતામિથમથ તામિથમાદિકૃત્ ॥ મહામોહં ચ મોહં ચ તમશ્ચાજ્ઞાનવૃત્તયઃ ॥૧॥
દ્રષ્ટ્વા પાપીયસીં સૃષ્ટિં નાત્માનં વહ્વમન્યત ॥ ભગવદ્ધ્યાનપૂતેન મનસાન્યાં તતોષ્જન્ત્ ॥૨॥

ભિન્ન ભિન્ન સૃષ્ટિના પ્રકારો.

ચોકાતુર, કોથી, વિપયો, અહંકારી, અજ્ઞાની એ પાંચ પ્રકારની અવિદ્યાસ-
હિત એવી પાપી સૃષ્ટિ પ્રધાને પોતાના અંગમાંથી નીકળેલી જ્ઞેષ્ઠ, પછી ભગવાનનું
ધ્યાન કરીને પોતાના મનને પવિત્ર કરીને તે શુદ્ધ મન થકી ફરી સૃષ્ટિ કરતા
થયા. તેમાંથી નારદાદિક ભગવાનના ભક્ત મહાજ્ઞાની જીવ નીકળ્યા. એ રીતે વિદ્યા
સહિત દેવી જીવ પ્રકટ થયા અને અવિદ્યાસહિત આમુરી જીવ પ્રકટ થયા. એ
રીતે બે પ્રકારની સૃષ્ટિ પ્રધાનથી નીકળી છે. એ બે પ્રકારની સૃષ્ટિની પ્રકૃતિમાં
સાત્ત્વિક, રાજસ, તામસ, એ ત્રણ ગુણ ભગવાને મૂકેલા છે. તેથી બે પ્રકારની સૃષ્ટિ
ત્રણ ગુણની પ્રકૃતિથી છ પ્રકારની થઈ. એ રીતે સૃષ્ટિ બહુ પ્રકારની સજી છે.
તેથી એ બધાની રચિ જુદી જુદી પ્રકારની છે, અને સાધન કરવામાં અધિકાર
જુદા જુદા છે. તેમ સર્વેને જુદાં જુદાં ફલ આપવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે, તેથી

સંપ્રદાય પણ બ્રહ્માજીથી જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા સંપ્રદાયનું કારણ સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિથી તથા તે સંપ્રદાયનાં સાધન તથા ફલ વેદશાસ્ત્ર માં જુદા કહેલાં છે તેથી સિદ્ધ થાય છે.

પણ સર્વ શાસ્ત્રમાં સદૃશી ઉત્તમ ફલરૂપ ભગવાનની પ્રાપ્તિ ગતાવી છે. એ ઉપરાંત બીજા સર્વે ફલ ગોણુ ગતાવે છે, તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો સંપ્રદાય ઉત્તમ છે. એ વાત બધા શાસકથી સિદ્ધ છે. આસુરી જીવ છે, તેનો અધિકાર પ્રથમથી ભગવાનની ભક્તિ કરવામાં નથી અને તે જીવોની પ્રીત પણ ધન, સ્ત્રી, પુત્ર, રાજ્ય, સ્વર્ગ ઇત્યાદિકમાં છે, તેથી વર્ણશ્રમકર્મના દેવતા જે ચંદ્ર, અગ્નિ, સૂરજ, પિતૃ ઇત્યાદિકની ઉપાસના એમને ગતાવી, તેથી વર્ણશ્રમનાં કર્મોના સંપ્રદાય અવિદ્યાસંહિત જીવોને સ્વર્ગાદિક સ્થાનની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ કહ્યો છે. એથી વેદમાં તથા મનુસ્મૃતિમાં મુક્તિ કહી નથી. એ વર્ણશ્રમી સ્વર્ગમાંથી પુણ્ય ક્ષીણ થવાથી પૃથ્વીમાં જન્મ પામે છે. તેથી એ વર્ણશ્રમી આ સંપ્રદાયથી કદી મુક્ત થતા નથી દૈવી સૃષ્ટિ જ્ઞાનસંહિત સજી છે, તેથી એની રુચિ ભગવાન ઉપર છે, તથા મુક્ત થવા ઉપર છે, એને સારૂ જ્ઞાન તથા ભક્તિ તથા યોગ એ ત્રણ માર્ગ. સંપ્રદાય બ્રહ્માજીએ કહ્યા છે, પણ દૈવી જીવોમાં સાત્ત્વિક, રાજસ, તામસ; એ ત્રણ શુણના સ્વભાવવાળા જીવ સંન્યા છે, તેથી શુદ્ધ સાત્ત્વિક શુણવાળાઓની રુચિ એક ભગવાન ઉપર જ છે, તેને સારૂ ભગવાનની ભક્તિ કરવાનો સંપ્રદાય બ્રહ્માજીએ કહ્યો છે, અને સાત્ત્વિક, રાજસ, મિશ્ર શુણની પ્રકૃતિનાં જે દૈવી જીવ છે, તેને સંસાર થકી મુક્ત થવા ઉપરજ રુચિ છે તેમને સારૂ જ્ઞાન તથા યોગ એ માર્ગના સંપ્રદાય બ્રહ્માજીએ કહ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા પ્રકારના જીવોની રુચિ પ્રમાણે તેઓને ફલ મલવા સારૂ બધા સંપ્રદાય જુદા જુદા કહ્યાં છે.

એમાં કોઈ એવી આશંકા લાવશે કે દૈવી અને આસુરી બે પ્રકારની સૃષ્ટિ ભગવાને શા સારૂ કરી અને સર્વેને એલું જુદું જુદું ફળ આપવાની ઇચ્છા કેમ કરી ? એવો પ્રશ્ન કોઈ કરશે તો તેનો ઉત્તર કહીએ છીએ. જો સર્વે જીવ જ્ઞાનીજ ઉત્પન્ન કરતા તો તે આ સૃષ્ટિમાંથી તરત બધાનો મોક્ષ થઈ જાત. ત્યારે બ્રહ્માંડમાંથી સૃષ્ટિ સદૃષ્ટ બાકી પડી જાત. ત્યારે સૃષ્ટિ કરી, તે ન કર્યા જેવી થઈ જાત. તેથી અજ્ઞાની સૃષ્ટિ પણ કરી, એને ધીરે ધીરે મુક્ત કરવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે. તેમાં કારણ એ છે કે બ્રહ્માજીનું આયુષ્ય ન્યાં સુધી છે, ત્યાં સુધી આ સૃષ્ટિની સ્થિતિ પૃથ્વી ઉપર રાખવી છે. તેથી સૃષ્ટિમાં જે ભેદ કર્યા. એ એનું કારણ વેદશાસ્ત્ર થકી સિદ્ધ થાય છે તેથી ભગવાનની ભક્તિના સંપ્રદાય વગર બીજા સંપ્રદાય સર્વે ગોણુ છે, અને તુચ્છ ફલ આપવાવાળા છે. તથા એ સર્વે સંપ્રદાયો સાધના મનુષ્યોએ કેમ ચલાવ્યા છે તે વાત ભગવાને ઉદ્ધવજીને કહી છે, તે એકાદશસ્કંધના યૌદ્ધમા અધ્યાય વિષે ગતાવી છે.

शुद्धद्वैत-सङ्कितमार्तः.

पृष्ठ ६.]

भाग ११५, श्रीवत्सला ७४ ४५३.

[अंक ८.]

प्राचीन कीर्तन.

(संमहकर्ता:—भगवद्गीय वेलजीभाई नथुभाई.)

चलो री बहिनां गोरस बेचन क्यों एती करत अवार ॥ मोय ग्रह काज योंही पर्यो हे,
 लोटेंगी फिर करूं सवार ॥१॥ कोन पेंडो परही सूधो, नाहि मिळे नटवार ॥ ताजको प्रभू तुरत
 दिखायो आयो कहि ठाडी रहे अवार ॥२॥ पद ॥१॥ एडी टेडी झुकत जात हँसत हँसत नवेली
 कहां ते आई ॥ में बरसानेकी लाला, रानी कीरतजुकी जाई ॥१॥ काहुतें काहु बेर नांहीं
 सुनी हे । राजा शृगुभानजुकी नवाई ॥ ना जानु तुं कोहे शम-रंगभीनो, रसीलो नैन मन
 हरखाई ॥२॥ अरी मृगछोनीसी बाल में नंदको लाल, जसुदा जीवन सुखदाई ॥ तेरी निकाई
 नांहीं त्रिभुवनमें जगन्नाथ जिन जग दूँडे सो रखो तेरे रूप लुभाई ॥३॥ पद ॥२॥ एसो निटुर
 दानी सचपें मागत दान ॥ पराई बैठी चलत पेंडे करत ताई अचगरी कहान ॥१॥ काहुकी न
 राखत फान । कहत तेरी नीकी उठान ॥ हित हरिवंश कहत लाडली, चवाई करत लगत तेरी
 मीठी बान ॥२॥ पद ॥३॥ में कहा चबाव करं जानत सच ब्रज ॥ तोही नंदको बहुत सयानो,
 खोलत पट झुवत उरज ॥१॥ मो सरिखी मिथी नां कोउ देवेंगी सुधी समज ॥ मेहा तुं मत जाने
 काहुने काढी तेरी करज ॥२॥ पद ॥४॥ एसी चतुराई ठान काहेकुं निकसत गेठ ॥ गेठ कहा
 सोई बाबाकी हम निकसे कहुं पहेल पहेल ॥१॥ यह पेंडो सच चलिबेको काहेकुं तु रोक्त
 छेले ॥ कही रसखान सूधो चल जैयो देहुं उरानो नदमहेल ॥२॥ पद ॥५॥ अरि गोपाल
 गोरसकी तोही शक परिरी ॥ देखत तरसत सरसत मनमन, रोमरोम प्रति अंग महिरी ॥१॥
 दोर दोर मटुकी मुख मांडत कर नांहीं छांडत उरज अरिरी ॥ शामदास प्रभु तुंही रसीलो तेरी
 लीय कहु लखी न परीरी ॥१॥ पद ॥६॥ आजु अचानक देख्यो लला ॥ खल खल चन्यो जात
 आलीरी, मेने कही जानी तेरी कला ॥१॥ करत सेन सुपर जाही पर मेरी देवेंगी जु बला ॥ कही
 द्वारकेश दिखाय अंगुठा लेले गोरस तुंही मलय ॥२॥ पद ॥१॥ गात्री खनेगे मेरी गैवार ॥ एसी
 कोन सिखई तोही पकरत आय पराई नार ॥१॥ जा जा गोरसके पिबैया तु कोन हे रोमनहार ॥
 एती बरजोरी ना कीजे मोहन, सिख दई तोही सतवार ॥२॥ सीज मटुकियां शटक पटकी बयो

વહો ગોરસ ચઢી પનાર ॥ કહિ રસસ્થાન આજ મોઈ જાન દે ફલ આઝંબી હોં મુકાર ॥૩॥
છોટીં સી વઠેન વેસો મુરાર ॥ મેં જાન્યો હે કોટ પંચી નિકટ દેલ્યો નંદકુમાર ॥૧॥ મેરે સિર
ગોરસકી મટુકી દાદિ પરિ વાહી ચિત્તવાર ॥ નેક આઈ કહિ ગોરસ દેરી પિછે ચલિ જા ધૂંધટ
માર ॥૨॥ શામદાસ પ્રમુ બ્દે રંગ રસિઆ મટુકી લીની સીસ ઉતાર ॥૩॥ પદ ॥૧॥ સલિરી એસે
કહોનાં કહત કહ્યુ સમજત ઓરા ॥ મેહું નિપટ મોરો હુંહી વરી મોરી સૂષો દેત ના કરું વરજોરા ॥૧॥
મેં ગોરસકી બહુત રસિયા યાતે માગત હાથ જોર ॥ મુરારી દાસ મો માગી ન મિલેરી, તો દેહું
મટુકીયાં અવાર ફોર ॥૨॥ પદ ॥૧૦॥

શ્રીવલ્લભ એકરૂપ દ્વે દરસેં ॥ ગોવર્ધન પર્વતકે હૃત ચાંદની ઉત અગ વરસે ॥૧॥ હૃત તો
રાજત ત્યામ ધટા જુરિ જિમિ દામિની આકરસે ॥ મંદ મંદ મુસક્યાત મનોહર કર કપોલ દે
પરસે ॥૨॥ યહ સોમાકી ઉપમા નહીં નીરવ દુહન મન હરસે ॥ માધોદાસ દાસ હિતકારન માન-
દેવી વ્રજ સરસે ॥૩॥ (યહ પદ અડેલસું ભગવદીય માધવદાસજીને લિખ્યો હૈ.)

ચાલવોધ.

(લેખક:—દેસાઈ ભગવતીપ્રસાદ ગોવિંદલાલ,)

નત્વા હરિં સદાનન્દં સર્વસિદ્ધાંતસંગ્રહમ્ ।

ચાલમવોધનાર્થાય વદામિ સુવિનિશ્ચિતમ્ ॥

સદા આનન્દરૂપ હરિને નમન કરીને, સારી રીતે વિશેષે કરીને નિશ્ચય કરેલા સર્વ
સિદ્ધાંતના સંગ્રહને, બાળકોને બોધ થાય તેને માટે કહું છું.

ઉપર બધાં બધાં પ્રમાણે શ્રીમદ્દામૃતસુત્રે પહેલવહેલાં સદાનન્દ હરિ ભગવાનને નમન
કર્યું છે. આ શ્લોકમાં સંક્રાંતિ ઉપરિધત થાય કે “સિદ્ધાંતમુક્તાવલી” “જલ્દનેદ” માં અનુક્રમે
“નત્વા હરિ” “નમસ્કલ હરિ” એમ કહેલ છે; પણ અંત “સદાનન્દ હરિ.” કહેવાનો
આશય શો હશે? આ સંક્રાંતિ નિવારણમાં આશ્ચર્યજનક કહે છે કે, આ બાલબોધ અંથ
શ્રીમદ્દામૃતસુત્રે અન્યના પુરુષાર્થો સમજાવવાને માટે રચ્યો છે. તેથી પુષ્ટિમાર્ગીય જીવ તે
અન્યના પુરુષાર્થો વાચતા પણ પોતાના જે “સદાનન્દ પ્રમુ” તેને ન બૂલે તે માટે “સદાનન્દ
હરિ” કહેલ છે. એટલે કે ભક્તિમાર્ગીય જીવનના તે પુરુષાર્થો નથી. અને તેની સાથે એટલો
બંધો સંબંધ પણ નથી. તેનો સંબંધ તો “સદાનન્દ” હરિ સાથેજ છે. એટલે તેણે સદાનન્દને
ન ચૂકવા એજ શ્રીમદ્દામૃતસુત્રનો આશય છે.

“સદાનન્દનો” સિદ્ધાંત પ્રમાણે એવો આશય છે કે સદા એટલે સાચો અને જ્ઞાનન્દ એટલે
ભગવાનન્દ બન્ને મળીને સાચો ભગવાનન્દ એમ થાય છે. તેમજ પ્રમુ આનન્દધન છે. માયા-
વાદી વગેરે કહે છે કે પ્રમુ નિરાકાર છે. ત્યારે બાપણા ભક્તિમાર્ગમાં બાપણે શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર
પ્રમુને નિરાકાર તેમજ સાકાર પણ કહીએ છીએ. આમાં સંક્રાંતિ થશે કે કાંઈ પ્રમુ સાકાર અને
નિરાકાર બન્ને હોય? તેને માટે સિદ્ધાંત કહે છે કે પ્રમુને નિરાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે

પ્રભુને આપણા જેવો પ્રાકૃત આકાર નથી. તેમજ પ્રાકૃત મનુષ્યની અંદર આપણે જોઈ શકીએ છીએ કે; પહેલવહેલાં માણસ જન્મે છે પછી અસ્તિત્વમાં આવે છે. પછી વધે છે. યુવાન અવસ્થામાં આવે છે, ધસાય છે, વૃદ્ધ થાય છે, અને પછી તેનો આકાર પણ હ્રુત થઈ જાય છે. એ પ્રમાણે જ વિકારો પ્રાકૃત દેહમાં થાય છે. ત્યારે તેમાંનો એક પણ વિકાર અપ્રાકૃત પ્રભુની અંદર નથી. તેથીજ તેને નિરાકાર કહેવા છે.

ત્યાર પછી પ્રભુને સાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ આનન્દરૂપ છે. પ્રભુના દરેક અવયવો આનન્દરૂપ છે. તેને માટે શ્રુતિ સ્મૃતિ કહે છે કે જ્ઞાનન્દનાત્રકરપાદમુલોદરાદેઃ ॥ પ્રભુના ક્ષીઠસ્ત, ચરણ, અને સુખારવિન્દ વગેરે સર્વ આનન્દરૂપજ છે. તેમજ કહે છે કે વ્રજવાદે જ્ઞાનન્દ એવ આકારસમર્પકઃ બ્રહ્મવાદમાં આનન્દજ આકાર આપનાર છે. એ પ્રમાણે પ્રભુ આનન્દરૂપ છે. જેમ એક સાકારની પુતલી બનાવી હોય તો તેનો કયો ભાગ સાકાર વિનાનો હોય ? તેજ પ્રમાણે પ્રભુનો કયો ભાગ આનન્દ વિનાનો હોય બધા ? તેમજ ક્ષીઠપ્રયુજ્યે કૃષ્ણાશ્રય ગ્રંથમાં બધા શાસ્ત્રોનો સાર કાઢીને કહ્યું છે કે પ્રાકૃતાઃ સકલા દેવાં ગણિતાનન્દકં વૃદ્ધ વૃર્ગાનન્દો હરિત્વસ્માત્ રૂપ એવ ગતિર્મમ ॥ બધા દેવો પ્રાકૃત છે, અક્ષર બ્રહ્મ (પ્રભુનું ધામ) ગણિતાનન્દ છે. એટલે તેના આનન્દની ગણતરી થઈ શકે એમ છે. હરિ તો પૂર્ણાનન્દ છે. તેથી કૃષ્ણજ મારી ગતિ હો. આમાં પ્રભુને પૂર્ણાનન્દ કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ અગણિતાનન્દ છે. તેના આનન્દની ગણતરી થઈ શકતીજ નથી તેને માટે ઉપનિષદમાં બે ઠેકાણે એક મનુષ્યથી આરંભી અક્ષર બ્રહ્મ સુધી આનન્દની ગણતરી કરેલ છે, તે આ પ્રમાણે છે-એક માણસ યુવાન, સુંદર, પુષ્ટ, ચક્રવર્તી હોય તેના ધરમાં પણ કોઈ પણ જાતની કમી ન હોય, કહોને કે બધે વાતે આનન્દી હોય, તો તેના આનન્દનો પારજ ન હોય. (૨) એ મનુષ્યના ૧૦૦ (સો) આનન્દ બેળા મળીને મનુષ્ય ગન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ ઓત્રિયોનો આનન્દ થાય છે (૩) મનુષ્ય ગન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ ઓત્રિયોના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે દેવગન્ધર્વનો આનન્દ થાય છે. (૪) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે પિતૃઓનો આનન્દ થાય છે. (૫) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે અજનનજ દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૬) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે કમદેવોનો એક આનન્દ થાય છે. (૭) કમદેવના ૧૦૦ આનન્દ બેળા મળે ત્યારે દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૮) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે ઇન્દ્રનો એક આનન્દ થાય છે. (૯) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે બૃહસ્પતિનો એક આનન્દ થાય છે. (૧૦) બૃહસ્પતિના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે પ્રજાપતિનો એક આનન્દ થાય છે. પ્રજાપતિના ૧૦૦ આનન્દ બેળા મળે ત્યારે અક્ષર બ્રહ્મનો એક આનન્દ થાય છે. ત્યારે મનુષ્ય એ અક્ષર બ્રહ્મને પાળી પછી અજમય પુરુષને પછી પ્રાણમયને, મનોમય અને પછી વિદ્યાનમયને પામે છે. અને પછી આનન્દમય પ્રભુને પામે છે. એ આનન્દમયની ગણતરી થઈ શકતીજ નથી કારણ કે શ્રુતિ કહે છે કે; ચતો વાવો નિવર્તન્તે અગ્રાપ્ય મનસા સદા મનસહિન વાણી ત્યાં પહોંચી શકતીજ નથી. એટલે મન અને વાણી ત્યાં પહોંચતાજ નથી. તેથી વેદમાં અક્ષરબ્રહ્મ પર્યંત આનન્દની ગણતરી ક્યાં પછી નેતિ નેતિ કહે છે. હવે નીચે અજમય વગેરે કહ્યું તે શું તે જાણવું જોઈએ. અજમય એટલે જગત્ પ્રાણમય એટલે જીવ, મનોમય એટલે વેદનામાત્રક સૃષ્ટિ અને વિદ્યાનમય એટલે અક્ષર બ્રહ્મ અને આનન્દમય એટલે રસેશ શ્રીકૃષ્ણ રસો વૈ સઃ પ્રભુરસ રૂપ છે. અરે પ્રભુ એકલાજ રસરૂપ છે એટલુંજ નહિ પણ તેની દરેક લીલા પણ રસ (આનન્દ) રૂપ છે. આ ઉપરથી એવી એક સંકા થશે કે પ્રભુની દરેક લીલા ક્યાં રસરૂપ હતી ? અમુકજ રસરૂપ હતી એવી સંકા થશે.

કારણ કે શ્રીકૃષ્ણે પૂતના [(આવધા) નો નાશ કર્યો ધેનુક (દેહાધ્યાસ) નો નાશ કર્યો કાલીયનાગને નાધ્યા. કુખ્જ ઉપર પ્રસન્નતા દેખાડી. દ્વારકાની અંદર ગૃહસ્થાશ્રમ ધર્મ બાધે તેમજ નલકુળર મણિગ્રીવ વગેરેનો ઉદ્ધાર કર્યો એ લીલાઓ આનન્દમય ક્યાં હતી ?

આને માટે શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધના પહેલા જ ચાર અધ્યાયો જે જન્મપ્રકરણના છે તે વાચવાથી જોટલે તેનું રહસ્ય ઉપર ઉપરથી વાંચી જવાથી સમજાય તેમ નથી. પણ તેની ઉપર જે શ્રીમદ્ભાગવતની સુભોધિનીજી વાંચવાથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાશે કે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર સાથે ચાર વ્યૂહોનું પ્રાકટ્ય હતું. સંકર્ષણ, પ્રહુન્ન, અનિરુદ્ધ અને વાસુદેવ આ ચાર વ્યૂહોને પ્રભુએ જુદી જુદી લીલા કરવા સાથે રાખ્યા હતા. જ્યાં કોઇને હણવાનું જેમકે પૂતના, બકાસુર ધેનુક, અધાસુર વગેરેનો વધ કરવો એ સંકર્ષણ વ્યૂહનું કામ હતું. જ્યાં વ્યવહાર બતાવવો હોય જેમકે કુખ્જ તેમજ દ્વારકામાં ગૃહસ્થાશ્રમી થવું હોય ત્યારે પ્રહુન્ન વ્યૂહથી તે કામ થાય છે જ્યાં ધર્મરક્ષાનું કામ કરવું હોય જેમકે નલકુળર મણિગ્રીવ વગેરેનો જ્યારે ઉદ્ધાર કરવો હોય ત્યારે પ્રભુ અનિરુદ્ધ વ્યૂહથી કામ લેય છે અને જ્યારે મોક્ષ આપવાનું જોટલું પૂતના વગેરેના વધ પછી તેમને મુક્તિ આપવાનું કામ વાસુદેવ વ્યૂહથી થયું છે. પણ સાક્ષાત લોકવેદાતીત પુરુષોત્તમનું કાર્ય તો જ્યાં રસ પ્રકટ કરવો હોય જેમકે ગુરુરાસમાં રસેશ શ્રી કૃષ્ણજ છે, આ પ્રમાણે પ્રભુ તેમજ તેમની લીલા આનન્દરૂપ છે. તેથી પણ શ્રીમદ્ભાગવતજીએ આનન્દરૂપ દરિને નમન કર્યું છે.

આ પ્રમાણે ઘણે દેકાણે શ્રીમદ્ભાગવતજીએ પહેલ વહેલાં શ્રીબાલબોધ, શ્રીસિદ્ધાંતમુક્તાવલી, જલમેદ વગેરે દેકાણે નમનજ કર્યું છે. તેનું કારણ કહે છે કે લક્ષ્મીજી જેમનાં કલ્પન છે એવા પ્રશ્ને છવ શું આપી શકવાનો હતો વાર? તેમજ પ્રભુ જોટલા નમનથી રનેહયુક્ત થાય છે તેટલા બીજા કોઇ પણ સાધનથી નથી થતા. માટે પહેલવહેલા નમન કર્યું છે.

હવે આ સ્લોકમાં કહ્યું છે કે “વાલપ્રવેશનાર્ચાય” આમાં બાલક કેને કહેવા? આમાં બાલકો એને કહેવા કે જેને જે બાળતવું જ્ઞાન ન હોય તેને. જેમકે એક માણસને એક કલા આવડે છે અને તેજ કલા બીજા માણસને નથી આવડતી. આમાં જેને આવડે છે તે મોટો અને નથી આવડતી તે નહાનો કહેવાય. બીજું એક ૧૦ વર્ષનો બાલક છોકરો હોય તેને અમુક જાતનો ઉલોગ આવડે છે અને તેજ ઉલોગ (૫૦) પચાસ વર્ષના માણસને નથી આવડતો આમાં પણ (૧૦) દશ વર્ષનાને મોટો કહેવો અને (૫૦) વર્ષનાને નાનો કહેવો એ આશય શ્રીમદ્ભાગવતજીના છે.

જુઓને આપણે બધા સિદ્ધાંતના સારથી અજાન છીએ તેથીજ આપણને ઉદેશી શ્રીમદ્ભાગવતજી બાલક કહેલ છે. ઉપરના લખાણમાં મારી નાની જુદી પ્રમાણે ઘણી જૂલો દર્શો. તે વેળાએ સુધારીને વાચી મને ક્ષમા આપશે એજ વિનંતિ કરી હું આ લખાણથી વિરમું છું.^૧

જગત તે મિથ્યા હોય ?

(લેખક:—રા. રા. હિંમતલાલ ભોગીલાલ શાહ, મુ. સાવલી.)

(ગતિકથી ચાલુ.)

કૃષ્ણદાસ—ભાઈ ઘટ અને દેહનો તમે નાશ માનો છો, પણ તેવું નથી. વસ્તુતઃ આ દેહ તથા સઘળું જગત એ પ્રભુના સદૃશમાંથી બનેલું હોઇ અલ્પકાર્ય હોવાથી સત્ય છે તેથી ઘટ અને દેહનો નાશ થતો નથી. પણ તે પોતપોતાના મૂળ કારણતત્ત્વમાં બળી જાય છે. દેહમાં જીવાત્મા હોય ત્યાં સુધી હલનચલન સર્વ ક્રિયા થાય છે, આ દેહમાંથી જીવાત્મા જતાં દેહ પંચતત્ત્વમાં ભળે છે. અને ઘટ ભાંગી જતાં મૃત્તિકા રૂપ મૂળ તત્ત્વમાં ભળે છે. તેથી કંઈ પોતાનું અસલ તત્ત્વ કંઈ નાશ પામતું નથી. એટલે જેમ મૃત્તિકાઓ ઘટ અને ઘટમા મૃત્તિકા રહેલી છે, તેવીજ રીતે આ જગતમાં અહા અને અહામાં જગત રહેલું છે. નામરૂપાદિ એ પણ સૃષ્ટિ કાર્યની અંદરજ છે.

હરિપ્રસાદ—અહા નિર્ગુણ અને નિર્ધર્મક છે તો પછી આ જગત તેનું કાર્ય કેમ ?

કૃષ્ણદાસ—નિર્ગુણ એટલે પ્રાકૃત ધર્મોથી રહિત શુદ્ધ આનંદમય અહા નિર્ધર્મક નથી. પણ અહા સર્વધર્મયુક્ત છે ને તે વિરુદ્ધધર્મોત્તર છે. અહા નિર્ધર્મક હોય તો ગાન શી રીતે સંભવે ? અહાના તમામ ગુણો આનંદમય અને અસૈદ્ધિક હોઇ તે સંયુક્ત અને સાકાર છે. તે મહાનમાં મહાન અને અધુમાં અધુ જેવું છે. હાય નથી છતાં વગર પ્રદણ કરે છે અને પગ નથી છતાં દોડે છે. એવાં અનેક ગુણયુક્ત હોઇ અહા વિરુદ્ધધર્મોત્તર છે.

હરિપ્રસાદ—તમારા કહેવા મુજબ જગતનો કર્તા અહા છે એમ કદાચ માનીએ પણ જગત કાર્યરૂપે બહાર પડ્યા પછી પાછું કારણ રૂપમાં શી રીતે આવી શકે ? ઘટ જાણે માટીનો બનેલો હોવાથી તે ભાગી જતાં માટી રૂપ રહે છે, એ ઠીક છે, પણ આ જગત કાર્ય અસલ રૂપમાં કેવી રીતે જઈ શકે ! જેમ હૃદયનું દહીં બન્યા પછી અસલ રૂપમાં જઈ શકતું નથી તેમ આના સંબંધમાં કેમ ન માનવું ?

કૃષ્ણદાસ—દરેક વસ્તુના એ પરિણામ હોય છે, એક અવિદ્યુત અને બીજું વિદ્યુત પરિણામ. અવિદ્યુત એટલે મૂળ કારણજ સર્વ કાર્યરૂપ થાય છતાં પણ કારણમાં કોઈપણ પ્રકારનો વિકાર ન થાય કે ફેરફાર ન થાય અને અસલ સ્થિતિમા આવે તેને અવિદ્યુત પરિણામ કહે છે. અને વિદ્યુત એટલે તમે કહો છો તે પ્રમાણે કોઈ વસ્તુનો ફેરફાર થયા પછી કાર્ય મૂળ કારણમાં ન આવે તેને વિદ્યુત પરિણામ કહે છે. જેમ સુર્વજ્વાળા કુડકામાંથી અનેક કુંડળ આભરણ બનાવ્યા છતાં તે કાર્ય મટી અસલ કારણમાં આવી શકે છે. તેવીજ રીતે આ જગત કાર્ય એ પોતાના અસલ કારણ અહામાં આવી શકતું હોવાથી કાર્ય કારણને બાધ આવતો નથી, કે જગત અને અહાની સત્યતામાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી. આને અવિદ્યુત પરિણામ કહે છે. સુર્વજ્વાળા કુંડળ અને કુંડળમાં સુર્વજ્વાળા, પાણીમાં બરફ અને બરફમા પાણી, માટીમાં ઘટ અને ઘટમા મૃત્તિકા કાર્ય કારણરૂપે પ્રથમથી રહેલા છે. તેવીજ રીતે અહામાં જગત અને જગતમાં અહા કારણરૂપે રહેલું છે એટલે કાર્ય અને કારણ એક હોઇ તેને સમવાયિકારણ કહે છે.

હરિપ્રસાદ—મૃત્તિકા કારણ અને ઘટ કાર્ય એ બન્ને સમવાયિકારણ હોવા છતાં અને કુંભાર, ચક્ર, દંડ એ અંગજૂત કારણો હોઇ જેમ ઘટ બનાવવામાં તે નિમિત્તકારણ કર્તા (કુંભાર) ની જરૂર પડે છે તેમ જગત અને અહા સમવાયિકારણ માનીએ તો પણ તેને ઘટ માફક

લુહું નિમિત્ત કારણ હોયું જોઈએ ને તે નિમિત્ત કારણ એટલે કર્તા સિવાય જગત નહું કાર્ય બનવું અશક્ય છે.

કૃષ્ણપ્રસાદ—તમારું કહેવું ખરું છે, જેમ ઘટ કુંડલ આભરણાદિક તેમ છતર કાર્ય બનવાને લૌકિક નિમિત્ત કારણ અને સમવાયિકારણ બુદ્ધિ હોય છે. એટલે કર્તા બુદ્ધિ હોય છે. એ ખરું પણ બ્રહ્મ અને જગતના સંબંધમાં તેવું નથી, કારણ બ્રહ્મ એ અચિંત્ય અને અનંત-શક્તિયુક્ત છે. તેથીજ તેના શુભોનું વર્ણન કરતાં શ્રુતિ નેતિ, નેતિ બોલી અટકી જાય છે. કારણ બ્રહ્મ ઝીણું મજ્જર સમાન નાનામાં નાનું અને હાથી જેવું મોટામાં મોટું હોઈ અનંતશુભયુક્ત છે. એટલે બ્રહ્મની સ્વમજ્જા થતા તે બની શકે છે. ઘટ કુંડલની માફક તેને નિમિત્ત કારણોની જરૂર નથી. પોતેજ નિમિત્ત કારણ (કર્તા) તેમ સમવાયિકારણ પણ પોતેજ છે એટલે જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે અભિજાતા હોઈ જગતનું કાર્ય કારણ અને કર્તા પણ પોતેજ છે.

હરિપ્રસાદ—ઘટ અને મૃતિકાનો દાખલો આપી આપ જગત અને બ્રહ્મની અભિજાતા બતાવો છો. પણ મારું માનવું માટીમાં બીજાં તરવો મળવાથી જેમ ઘટ ઉત્પન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે કુદરતી તરવો બેગાં મળવાથી જગત આપોઆપ ઉત્પન્ન થાય છે. એટલે જગત અનિર્વચનીય છે, એ ખરું, પણ તે મિથ્યા છે. ફક્ત બ્રહ્મ એક ખરું છે.

કૃષ્ણદાસ—જે વસ્તુ સત્ય હોય તેનો નાશ પણ ન થાય અને મિથ્યા માનતા હોય તો તેને અનિર્વચનીય શી રીતે કહી શકો? આપ જગતને અનિર્વચનીય કહો છો તો તેની સત્યતાજ હરી. આપ બ્રહ્મને માનો છો અને જગત એ બ્રહ્મનું કાર્ય છે. બ્રહ્મ સત્ય વસ્તુમાંથી તે ઉત્પન્ન થયું છે. હવે જો તેને અસત્ય માનશો તો બ્રહ્મ પણ અસત્ય ઠરશે! માટે જગતને મિથ્યા કહી શકાય નહીં. એ પ્રશ્નકૃત્ય હોઈ સત્ય છે અને જીવ ઉપાધિએ રચાએલો સંસાર મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગત અને સંસાર એકજ છે. તેને આપ બુદ્ધિ કેમ બતાવો છો?

કૃષ્ણદાસ—અહીંજ તમે બૂલતા લાગો છો. જગત અને સંસાર વચ્ચે મોટા કાંસો છે. જગત એ બ્રહ્મકૃત્ય છે, અને સંસાર એ જીવ અવિદ્યારૂપી ઉપાધિથીજ રચેલો છે. તેને જગતની સત્યતા સાથે કંઈ સંબંધ ન હોઈ સંસાર જીવકૃત હોવાથી મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગતને બ્રહ્મકૃત કહો છો એ દીક પણ જ્યારે જગત અને જીવ એનું કૃત છે તો પછી-જીવના જેવી ઉપાધિ એને કેમ ન લાગે? કારણ? કાર્ય કરનારજ ઉપાધિપાત્ર થાય પછી સંસાર જીવ કૃત કેમ કહો છો?

કૃષ્ણદાસ—બ્રહ્મમાંથી જીવ, જગત ઉત્પન્ન થયું છે. (સદૃશ ધર્મમાંથી જગત અને સત્ય ચિત્ત ધર્મમાંથી જીવ) જીવમાં આનંદ તિરોહિત છે. જીવ અવિદ્યાએ કરી પોતાના સ્વરૂપની વિસ્મૃતિ પામી જવાથી અને દેહ તથા સંસારનેજ ખરા સમજી તેમાં યંયાયા કરે છે અને હું અને મારું આ વાસનાથી જન્મ-મરણરૂપ સંસાર થાય છે. જેમ સૂર્યપ્રકાશથી અંધકાર દૂર થઈ સર્વ વસ્તુ પ્રકટરૂપે દેખાય છે. તેમ જીવને પોતાના આત્મસ્વરૂપનું જ્ઞાન થતાં અવિદ્યાનો નાશ થાય છે ને પોતાના ખરા સ્વરૂપને જાણે છે. હારે સંસાર માયા રહિતો આપોઆપ નાશ થાય છે. માયા જેવી ઉપાધિ બ્રહ્મને લાગે તો તેને સ્વનંતતા રહી ક્યાં? એટલે આપું કંઈ બ્રહ્મના સંબંધમાં નથી. પોતે તો સ્વઆનંદી છે. જેમ કરોડીયો જળ કાઢી તેમાં રમણ કરે છે. પણ તેમાં તે લપટાતો નથી. તેમ સંસાર માયા સાથે બ્રહ્મને કંઈ સંબંધ નથી. કારણ બ્રહ્મ આમંદસ્વરૂપ છે. પોતે સર્વ કરવાને સમર્થ છે. આ પ્રમાણે જગત કાર્ય અને સંસારમાં બેઠે હોઈ જગત સત્ય છે અને સંસાર એજ મિથ્યા છે.

હારમસાદ—ધારો કે જગત સત્ય છે પણ તેવું જગત કાર્ય કરવાનું બ્રહ્મને શું પ્રયોજન ? બ્રહ્મ તો સ્વઆનંદી છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—બ્રહ્મ પોતે સ્વઆનંદી હોવા છતાં પોતાને બદ્ધરૂપ થઈ જગદ્ગુરૂપ બનવાની ઇચ્છા થતાં, જીવ, જગત રૂપે થયા. આપણે એકલા બેસી રહીએ તે કરતાં પાંચ મનુષ્યો વચ્ચે બેસવાથી વધારે આનંદ લાગે છે. અને આપણું મન કેવું પ્રવૃત્તિ રહે છે ? તેનો તમો અનુભવ કરશો તો જરૂર આ રહસ્ય સમજાશે. બ્રહ્મ જો કે સ્વઆનંદી છે પણ પોતાને જીવો સાથે લીલા કરવાની તેમ પોતાનું માહાત્મ્ય જાણાવવાની ઇચ્છા થતાં પોતાના ખીચોના રૂપી જીવ જગતને ઉત્પન્ન કરી તેમાં પોતે રમણુ કરે છે. પોતાની આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા જગતને પ્રકટ કરે છે અને તિરોભાવશક્તિથી લય કરે છે. સુવર્ણનાં કડાં કુંડળ વગેરે અનેક આભરણુ કરવામાં આવે છે છતાં તેને એકરૂપ કરતાં સુવર્ણરૂપ બને છે. ને તેથી કરી સુવર્ણ કારણ કે કુંડળકાર્યમાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી તેમ જગત કાર્યરૂપી થયાં છતાં બ્રહ્મને પોતાની સ્વતંત્રતા કે સત્યતામાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી. જેમ કરોળાઓ પોતે જાળ કાઢી તેની રચના કરે છે અને તેની ઇચ્છા થતાં તે પોતે ગળા જાય છે. તેવીજ રીતે બ્રહ્મ પોતાની રમણુ કરવાની ઇચ્છા થતા જીવ, જગતને ઉત્પન્ન કરે છે અને પાછું પોતાનામાં લય પશુ કરે છે.

હારમસાદ—શું ત્યારે આ જગત બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—હા, જગત એ પ્રથમે બનાવેલું ક્રીડાભાગ છે. પ્રભુને લીલા કરવાનું સ્થાન છે. અને તે પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. જેમ ઘટ બનાવનાર મૃત્તિકાનેજ લે છે, પટ બનાવનાર તંતુઓને ગ્રહણુ કરે છે, દહીંની ઇચ્છા રાખનાર દૂધને મેળવે છે, કુંડળ બનાવનાર સુવર્ણ લે છે. એટલે સુવર્ણ મૃત્તિકા વગેરે કારણુમાં યુક્ત રીતે કાર્ય અવરચ્યા પહેલાં કાર્ય વિદ્યમાનજ હોય છે, તે કર્તાનો વ્યવહાર થયા બાદ પુર્વજ કાર્યરૂપે સ્પષ્ટ જણાવા લાગે છે. તે પહેલાં કારણુમાં લીન હોય છે. જેમ લાકડામાં અગ્નિ, તલમાં તેલ, દૂધમાં દહીં અને તેમાં ધ્રુત પ્રથમથીજ વિદ્યમાન હોવા છતાં કાર્યના અભાવે તેમાં યુક્ત વસ્તુ રહેતી છે. તેવીજ રીતે કારણુ બ્રહ્મમાં કાર્યરૂપ જગત અવ્યાકૃત અવસ્થામાં તિરોહિત હોય છે. તે બ્રહ્મની ઇચ્છા થતાં આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા કાર્યરૂપે જગત પ્રકટ કરે છે. એટલે આ સર્વ બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. વસ્તુતઃ જગતનો નીશ તથા મિથ્યા કહેવામાં આવે છે તે મૂર્ખતા છે. પૈશુ ખરી રીતે જગત એ ભગવતકાર્ય હોવાથી બ્રહ્મથી અભિન્ન છે અને તે આવિર્ભાવતિરોભાવાત્મક હોવાથી જગત નિત્ય અને સત્ય છે.

ઉપસંહાર—એક બ્રહ્મજ સ્વેચ્છાથી નાના પ્રકારે જગદ્ગુરૂપે થયું. અહીં જ્યાં નીચ થવામાં પોતાની ઇચ્છાજ કારણુ છે. આમાં ધર્મિરૂપે બ્રહ્મ આનંદમય, ઇચ્છારૂપ નિજ ધર્મથી પરિણામ પામે છે. કાળ એ ભગવાનની એટા છે અને એનાથી સમગ્ર વિશ્વ એટાને પામે છે. એ કાળથી વાયુ વાય છે, સૂર્ય તપે છે, મેઘ વરસે છે. જગત બ્રહ્મમાંથી ઉત્પન્ન થયું છે અને જગતનું કારણુ બ્રહ્મ છે. આથી જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે ભેદ છે. બ્રહ્મના સત, ચિત, આનંદ એ ધર્મો છે. એમાંથી સત ધર્મોનો આવિર્ભાવ થાય તેને જગત કહેવાય છે. બ્રહ્મના આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદેવિક ત્રણ સ્વરૂપો છે તેમાં જગત એ આધિભૌતિક રૂપ છે. આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને આધિદેવિક સ્વરૂપ પરબ્રહ્મ છે, અક્ષરબ્રહ્મ પોતાનું ધામ છે અને તે અક્ષરબ્રહ્મ અનેક કર, ચરણ, મસ્તક, મુખ, નેત્રવાળું છે. એજ અક્ષરબ્રહ્મ આ જગદ્ગુરૂપતાને પામે છે. તિરોભાવ થતાં જગતરૂપ ક્ષરબ્રહ્મ અક્ષરબ્રહ્મમાં અને અક્ષરબ્રહ્મ પરબ્રહ્મ પૂર્ણાનંદ

સ્વરૂપમાં સાચુજ્ય પામે છે. શ્રીભગવાનના ધર્મસ્વરૂપ, ધર્મસ્વરૂપ અને કાર્યસ્વરૂપ આ પ્રમાણે ત્રણ અનિર્લક સ્વરૂપ છે. તેમાં ધર્મસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન પરબ્રહ્મ છે અને સત, ચિત્ અને આનંદ એ ધર્મસ્વરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને સદ્સ્વરૂપ આ સદ્ગુણ જગત ક્ષરબ્રહ્મ કહેવાય છે.

હરિપ્રસાદ—ભાઈ કૃષ્ણદાસ, આજે તમે મારા જીવનમાં નવો પ્રકાશ નાખ્યો ને આપના વિચાર મારા હૃદયમાં દંડતા પામ્યાથી મારા હૃદયમાં કંઈ અનેરી આનંદલહેરો ઉડી રહી છે. જ્યશ્રીકૃષ્ણ જંયશ્રીકૃષ્ણ કહી જાને સુવકો છુટા પડે છે.

ટેક રાખો.

(“ પરજ્યા એટલે પ્યારા લાડી, ચાલો આપણે ઘેર રે. ” એ રાગ.)

- | | | |
|----------------------------|-------------------------|----|
| હું રે તમને વિનવું મ્હારા, | જ્ઞાલા શ્રીમજનાથજી; | |
| અપરાધી છઉં શ્રી વલ્લભનો, | લેટાડો શ્રી નાથજી. | ૧ |
| વલ્લભકુળના બાલક સઘળા, | ધીવલ્લભનું રૂપજી; | |
| અપરાધીને શરણે લઇને, | આપે અદકી હુંકજી. | ૨ |
| આ ભારતમાં ભાવે પ્રગટયા, | “વલ્લભ વિઠ્ઠલ” દેવજી; | |
| વલ્લભ વિઠ્ઠલ શ્રીજી અમને, | આપજ શરણે લેવજી, | ૩ |
| આ ભારતનાં ભાગ્યજ મ્હોટાં, | લેટે છે ભગવાનજી; | |
| ભારત વિણ કોઇ ભૂ નહીં એવી, | જ્યહાં ખેડ્યા એ સ્થાનજી | ૪ |
| ધન્ય ધન્ય એ મજની ભૂમિ, | જ્યાં-કીડે ધનરથામજી; | |
| ધન્ય ધન્ય ગોકુળના જન, | ખોલે રાધે રથામજી. | ૫ |
| રથામ સ્વરૂપે ધેન ચરાવી, | જમનાજીને તીરજી; | |
| કદમ વૃક્ષ પર આરૂઢ થઇને, | ચોર્યા જેણે ચીરજી. | ૬ |
| રાધાજીની સાથે રમીયા, | જ્યાં એ નૌતમ રાસજી | |
| બે ગોપીની વચ્ચે પ્રગટી, | પુરી મનગી આશજી. | ૭ |
| જેવી આશા મજવનિતાની, | પુરી હે મજનાથજી ! | |
| તેવી આશા લકત જનોની, | પુરો મ્હારા નાથજી. | ૮ |
| લકતોને ભણકારા વાગે, | આવ્યા શ્રીનંદલાલજી; | |
| એક ખીજને ક્યારે કહેશે ? | બહેલો ભેવા ચાલજી. | ૯ |
| કૃષ્ણ કનૈયે કામણ કીધું, | ખોલી દીધા કાનજી; | |
| શરણે લઇને નિજ લકતોને, | આપી નવલી સાનજી. | ૧૦ |
| સુંદર વરથી સગપણ સાંધી, | સોપી દીધો હાથજી; | |
| જીવ હૃદને પતિતજ દેખી, | આપ્યો પ્રભુનો સાથજી. | ૧૧ |
| વલ્લભ વિનવે વારે વારે, | વાણી વિરમે છેકજી; | |
| વાણીથી પર શ્રી વનમાળી, | રાખો અંતે ટેકજી. | ૧૨ |

લેખક:—વિઠ્ઠલદાસ લાલદાસ રોહાવાળા.

પ્રકાશક:—નગીનદાસ માતીલાલ થાણાવાળાના જ્યશ્રી કૃષ્ણ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખક—રા. રા. રામલાલ શુનીલાલ માલી.)

પ્રથમો વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા સ્વતંત્રતા હેતુ ચરણના આરંભમા એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. આધીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યપ્રીય અને ભારત-ચાપી હતો. જ્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મધુ-રાની આસપાસના વજ્રમઝગમા જ ફેલાયો હતો. વળી એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક-એક જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના સ્વરૂપ હતો, જ્યારે આ રાજ્યપ્રીય સત્યાગ્રહમા ભગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતાં પણ બંને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી જોવામા આવે છે. બંને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રજાજી રાજ્યમત્તાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજ્યમત્તાના અને હાલની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમા ફેર છે. હાલની રાજ્યસત્તા ખરે તેના પણ કાયદાથી નિર્ધારિત છે અને તેને જગતના અનુકૂળ અને હિતજનક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખતી પડે છે. અત્યારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારના જેવા વિષય સાધનો છે, તેવા પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતા તે વખતે બાદશાહનો શબ્દ તે જ કાયદો ગણાતો અને તેને જગતના અભિપ્રાયની દરકાર નહોતી તેમા પણ એ સત્યાગ્રહ જહાગીર જેવા મમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. જોઈ પણ સત્યાગ્રહના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુમાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો. આધીજી કહે છે કે પ્રજાજી પ્રજાજી સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિર્દોષ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે.

આ સત્યાગ્રહની દખીલત ટૂંકામા આ પ્રમાણે છે. ચિદ્રૂપ નામના મન્યાસીના ઉપદેશથી જહાગીર બાદશાહે એવો હુકમ કર્યો હતો કે કોણે જીવસીની માળા પહેરતી નહિ. જીવસીની માળા વૈષ્ણવ સંપ્રદાયોનું આવરણક ચિહ્ન ગણાય છે. એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયોને વિષાદક હતો. પરંતુ જહાગીરી હુકમની માએ કોણ ચર્ચ કરે? તે સમયે નજમઝગમા શ્રીવલ્લાયાચ-જીના શુદ્ધાદિત અને શ્રીહિતદરિયજીના રાધાવલ્લભી સંપ્રદાયનું પ્રામત્ય હતું તેમના ધણા અનુ-યાયીઓએ જીવસીમાળાનો ત્યાગ કર્યો, પણ શ્રીવલ્લાયાચજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુળનાથજી (સં. ૧૬૦૮-૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ. જહાગીરના હુકમનો અમલ કરાવવા ચિદ્રૂપ ઉજ્જૈનથી મધુરામા આવીને રહ્યો હતો અને જહાગીરે તેને એ બાબતમા સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ધણી ધણી લાલચો અને ધમકીઓ આપી, પણ તેને વચ્ચે થયા નહિ. ઉંચે પોતાના હુકમના અનાદર માટે જહાગીરે તેમને કાસ્ટીયર જેવા દૂર અને વિકટ માગવાળા પ્રદેશમાં જોમાસાની નકલમા જોલાવ્યા અને તેઓ ગીતેર વર્ષની ઉંમર છતાં પ્રવાસના અનેક કષ્ટો જોમવી સાં ગયા ત્યાં પણ માળા ઉતારવાને તેમણે સાફ ના પાડી. એ ઉપરથી જહાગીરે તેમને ધરખાર ત્યજવાનો હુકમ કર્યો તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને સોરમમા જઈ રહ્યા, પણ માળા ત્યજી નહિ. પાછળથી જહાગીરને પોતાની બૂન સમજાઈ અને તેનું ચિદ્રૂપ પ્રત્યેનું માન ધરી ગયું, ત્યારે તેણે પોતાનો હુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમા આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ બ્યારના રહેવાસી વૈષ્ણવ કવિ જોપાળદાસે 'માલોદાર' એ નામના મઝમિશ્વિત ગુજરાતી શાપાના વિસ્તૃત કાવ્યમા વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૬૬ માં રચાયું હતું. આ

કાવ્ય આપું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો હુંકો સાર નહીંઆદના સ્વ. લક્ષ્યભાષ પારખે સં ૧૯૬૪ મા પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઈક લાખો સાર મોડાસાના શ્રી. મગનલાલ ગોધીએ લખેલા શ્રીગોકુલ નાયજના જીવનચરિત્રમા આપેલો છે. એ પછી એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઈ છે

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત કાશ્મીર પ્રદેશમા નોર્થવેસ્ટી જોવામા આવતી નથી, તેથી ઘણાને તેની ઐતિહાસિકતા વિષે શંકા ઉત્પન્ન થઈ છે. એ શંકાનું નિવારણ કરવું, એ આ લેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર વીસ વર્ષમા જ રચાયું હતું, અને શ્રીગોકુલનાયજના લીલામા પ્રવેશ પછી બે જ વરસમા રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દર્શને જ ઐતિહાસિક હોવામા શંકા ઉત્પન્ન થાય તેવું નથી, છતાં પણ તેને બારીકાઈથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશું. આ પ્રથમા કેટલીક બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબૂલ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-માર્મિક કાવ્ય-છે એ વાત બૂલવી જોઈએ નહિ છતાં પણ એમાની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતા જે મને સત્ય જણી છે, એમા એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે જે ઇતિહાસવિરોધી હોય ?

કોઈ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામા આ ત્રણ બાબતો સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ મળે છે કે કેમ તે જોવું જોઈએ — (૧) સ્થળો, (૨) મનુષ્યો અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ

સ્થળો:

આ કાવ્યમા શ્રીગોકુલનાયજના કાશ્મીરના પ્રવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાના સ્થળો કાવ્યનિક નથી. કેટલાક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીના જહાગીરના પ્રવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુશરના બળવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કાશ્મીરના પ્રથમ પ્રવાસે તે જાય છે એ પ્રવાસોમા કરેલા મુકામના જે નામ આપ્યા છે તે શ્રીગોકુલનાયજના પ્રવાસના સ્થળ સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમા ગોકુળથી કાશ્મીરનું અંતર-શ્રીનગર સુધીનું-૪૪૪ કોશ જણાવ્યું છે જહાગીર આગ્રાથી કાશ્મીરનું અંતર ૩૭૬ કોશ લખે છે. પરંતુ આમા બે બાબતો વિચારવાની છે જહાગીરે કાશ્મીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યું છે, એટલે કાશ્મીરની હદથી શ્રીનગર સુધીનું ચાળીસેક કોશનું અંતર કાવ્યમા અંતરમાથી બાદ કરવું જોઈએ વળી શ્રીગોકુલનાયજ કાશ્મીર જતા નિમ્બ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામા ત્યાંના હાકેમ લઈકરખાનને મળવા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૦ કોશનું અંતર પણ તેમાથી બાદ કરવું જોઈએ એ બે અંતર બાદ કરીશું તો બને આઠકડા સરખાજ થશે.

કાશ્મીરના વર્ણનમા ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસંબંધી કાવ્યમા આ પ્રમાણે લખ્યું છે —

“હિંદાં વિદ્યા તો હે બહોત, ચે” નહિ કહ્યું આચાર,

બ્રાહ્મણ અઠ નામ મ્હેચ્છો તેસોઈ વિદવાર

(૬,૪૭૨)

આ સંબંધી જહાંગીર વૃત્તિકે જહાંગીરીમાં આ પ્રમાણે લખે છે:—

“Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, books in Sanskrit language and read them.”

—રોજર્સ અને ગિલરિજકૃત અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૪૮ અને ૧૫૦.^૧

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલા મનુષ્યો પણ ઐતિ-
સિક છે, તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના કુટુંબના માણસો અને સરદારોનાં નામ ઇસ્ટીમિયોમાં
આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા હિપર હતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસનાં
માં લાગે છે, તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે
તે કે ખુશરુ, ખુર્રમ નુરજહાન, અસફખાન—તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય
તેહાસનાં પુસ્તકોમાં જોવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉલજેનનો હાકેમ મહમ્મદ તરી.

જહાંગીરે તેને સં. ૧૬૭૧ માં માર્ક મોક્લેયો હતો (વૃત્તિક, ભા. ૧ પૃ. ૨૫૮) માર્ક
ખવાના સૂચનાં મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉલજેન તેના તાત્કાલિક હતું.

(૨) આમનો મુબેદાર લરકરખાન.

સં. ૧૬૭૬ માં જ્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જતા નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બોલાવી
આમનો હાકેમ નીમ્યો હતો. (વૃ. ૨, પૃ. ૮૧.)

(૩) ચિદ્રૂપનું અપમાન કરનાર ખૂરજહાનો બનેલી હાકેમ બેગ.

ખૂરજહાની બેન ખાદીખ બેગમને તે પરણ્યો હતો. (વૃ. ૨, પૃ. ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુળનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંજાબના કોઈ ગામનો જાગીરદાર અને જહાંગીરનો ખીલમતગાર હતો. (વૃ. ૨, પૃ. ૧૮૨).

(૫) શ્રીગોકુળનાથજીને સોરઠમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું

આમંત્રણ આપનાર રાય રતન હાડો.

એ જુદીના રાજ બોજ હાડોનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર જુલ્હારાજનો ઇલ્કામ
આપ્યો હતો. (વૃ. ૧, પૃ. ૧૩૧.)

(૬) જહાંગીરની મહેતારી મરીઅમ ઝમાની.

અકબર બાદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજ લખવાનહાસની બેન (વૃ. ૨, પૃ. ૬૪).

(૭) રાયસંગ જુરદીઆની દીકરી અને જહાંગીરની, બેગમ માનીબાઈ.

ગિહાનેરના રાજ રાય, હમ્પાજીમહતા પુત્ર રાય રાયસિંહ, એ જુરદીઆ કહેવાતો. (વૃ. ૧,

૧. આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં વૃત્તિકે જહાંગીર (અલિશ વૃત્તિક)નાં નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અનુવાદનું
જ સૂચન સમાવ્યું.

૨. ૧૫. હલ્દુઆર, પાંચે મહેતારીનો અર્થ જતાનખાનની જગતી એ અમજાતરબેગો હતાં છે.
(વૃ. ૧૮) એ શબ્દ છે. તેનો અર્થ માં ચોંટ છે.

પૃ. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (પૃ. ૧, પૃ. ૧૩૨) આ બેનમતુ નામ ફારસી મંથામાં નથી, આ કાવ્ય તે નામ પૂરું પાડે છે.

(૮) બેના આથા ઉપર જહાંગીરે ચિદ્રૂપનો હાથ મુકાવ્યો હતો તે ખુલાસી.^૨

જહાંગીરના પાટકુંવર ખુદરનો પુત્ર, જેને અસાધ્યને જહાંગીરના મરણ બાદ થોડા દિવસ માટે દાવરજી નામથી બાદશાહ બનાવ્યો હતો, પણ પાછળથી શાહજહાંના ફરમાન પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ ઘણે જહાંગીરીમાં નથી,^૨ પણ Peter Mundy ના પ્રવાસવૃત્તાન્તમાં (History of Jahangir by Beni Prased. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમાં (પૃ. ૧૬૦) છે. કલ્કોલમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાંને તેના ઠરાવેલા ખૂનની નોંધ તેમાં છે. (જ. ૨૦).

પ્રસંગો.

રચણ અને મનુષ્યોના નામ કરતા, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિપાદનમાં પ્રસંગોની સત્યતા અને તેમનું કાલાનુસંધાન વધારે મહત્ત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ માં જહાંગીર ગુજરાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિદ્રૂપને ઉજ્જૈન આગળ એક ગ્રામમાં મળ્યો હતો હતો.

“એહેવે સંવત સોળ આહોતેરે યમ એક વાત,
જહાંગીર નૃપ આગરેથી જતો હતો ગુજરાત.

અવંતી જમ ઊતર્યો નૃપ જોવાને કરી ખાંત,
પૂછ્યું તે વળતું તેહને ‘ક્યાં રહે છે મહાંત ?’

ગ્રામ માંહાં દેખાડીઓ ત્યાંહા ગયો તેણી વાર.”

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાવ્યમાં જણાવેલાં વપ અને માસ ઉત્તર હિંદની મથુના અનુસાર છે; એટલે સંવત ચૈત્રમાં બદલાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત્ વદમાં માસારંભ થાય છે. જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેમ્બરની દશમી તારીખે નીકળી (પૃ. ૧, પૃ. ૩૪૦) માહું તથા ખંભાત યમ ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદમાં ઇ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાંચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પૌષ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાવ્યમાં આપેલા સંવત ખરોખર છે.^૩

૧. ૨૫. લલ્લુભાઈ પારેખ જુલાઈ એટલે નાહની વાળી એ ૭૫૨થી જુલાઈ એટલે નાહમાં વાળી પહેરનાર જહાંગીરનો કાઠ મંત્રી એવો તર્ક કરે છે. (પૃ. ૧૮), પણ એ ધટિત નથી, તેમ તેને માટે કોઈ આધાર વજૂ નથી.

૨. ઘણે જહાંગીરના અનુવાદક રોજર્સ અને બિલ્લિંગ તેની સચિમાં કાનીઆબની પુત્રીનું નામ જુલાઈ હતું એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમાં તેમણે એ નામ કાંસમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તર્ક હતો. તે વાત સત્ય હોય તો પણ ખુદરના પુત્રનું નામ જુલાઈ હતું એ ચોક્કસ છે, અને ગાદી વારસ તરીકે જ તેને ચિદ્રૂપ પાસે આવીવાંદ આપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

૩. શ્રીગણેશનાયકજ્ઞાનો ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ ક્ષા આધારે તે સમ-ર્થનું નથી. સ્વ. લલ્લુભાઈ સં. ૧૬૭૪ નું વર્ષ આપે છે અને એ જોએથી હાથપ્રતમાં પણ એ જ વર્ષ છે. સંસ્કૃત કલ્કોલમાં પણ બૂલ ન થાય તેવા અક્ષરાનુક્રમમાં સં. ૧૬૭૪ નું જ વર્ષ સ્પષ્ટ રીતે છે.

૪. ૧૭૬૧
હરપાંચમુનિરસેન્દુમિતે વર્ષે (૧૬૭૪) જહાંગીરો યવનનામધિકાનો દાર્વમીમો નિજામપદાં.
ગુર્જરેષે.....૪૦ ૭, તં ૧).

ઉજ્જૈન આગળની યુદ્ધમાં જહાંગીરની ચિદ્રૂપ સાથે મુલાકાત યદ્ય હતી, એ ઐતિહાસિક ખીના છે. તેનું વિસ્તૃત વર્ણન વૃણુક બા. ૧ માં પૃ. ૩૫૫ થી ૩૫૯ સુધીમાં આપેલું છે. વૃણુકમાં નામ 'જદ્રૂપ' છે, એ ફારસી લિપિને લીધે દર્શે. માસિરુલ હિમરામાં અને ઇકબાલ નામામાં 'અચદ્રૂપ' નામ છે, એટલે મૂળ શુદ્ધ નામ 'ચિદ્રૂપ' હોવામાં શંકાને સ્થાન નથી.

(૨) જહાંગીર યુજરાતથી ફાગણ માસમાં ફતેહપુર સીકરી યદ્ય, આગરે સં. ૧૬૭૫ માં પાછો આવ્યો હતો.

“ સંવત સોળ પંચોતેર યુજરાતથી જહાંગીર,
ફાગણે આવ્યો આગરે, ત્યારે મારગમાં મહાધીર.
શ્રીજી અ તે શીકરી લગી દેવાને આશીર્વાદ
પધાયો સાદામા ત્યાં, રાખવાને મર્જદ. ”

જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૯ ની વસંત ઋતુમાં યુજરાતથી પાછો આવ્યો હતો, પણ આગ-રામાં ખેગ હોવાથી સીકરીમાં થોડો વખત રહ્યો હતો. આ માટે જુઓ શ્રી, વેણીપ્રસાદના શબ્દો:—

“ Owing to the prevalence of plague at Agra, Jahangir passed the spring of 1619 at Fatehpur Sikri and entered the metropolis in the middle of April ” (p. 300)

ઈ. સ. ૧૬૧૯ ની વસંત ઋતુ, એટલે સં. ૧૬૭૫ નો ફાગણ માસ.

(૩) જહાંગીર કારમીર જવાનો છે, એ વાત સાંભળીને ચિદ્રૂપ ઉજ્જૈનથી નીકળી સં ૧૬૭૬ ના આસો સુદ દશમે મથુરા આવ્યો હતો.

“ લીધું કોઈ એક દિવસ પછી કરગરનું મુદ્દત,
તે સંન્યાસીએ સાંભળીને વિચારી મન વ્રત;
‘આગળ પેટે જઈને હું રહું મથુરા માંહે,
દેશાધિપતિ સું નિર્ધાર કરવા ત્યાંહે. ’
x x x x
પછે સંવત સોળસે છોતરે આશ્વિન સુદ દશમી
ચિદ્રૂપ આવ્યો એણી ગમે સહુ દેશમા ભમીય. ”

જહાગાર ઇ. સ. ૧૬૧૯ ના દશરાના દિવસે આગરેથી કારમીર જવા નીકળ્યો હતો (વૃ. ૨, પૃ. ૧૦૧), તેથી ઉત્તર હિંદની વર્ષગણના પ્રમાણે વિક્રમ સંવત ૧૬૭૬ હતો, એ સ્પષ્ટ છે. તેના ચિદ્રૂપની સાથેના મથુરાના મેળાપ માટે વૃણુક બા. ૨, પૃ. ૧૦૪ થી ૧૦૭ જોવાં. એમાં એ મેળાપનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન છે.

(૪) મથુરામાં ચિદ્રૂપની સલાહથી જહાંગીરે ખુશરને નજરકેદમાંથી મુક્ત કર્યો હતો.

“ સુલતાન ખુશરો બંધાયે, જાહ્યો તખતિ છતકે કહે. ”

મથુરાથી ઉપડ્યા પછી વૃન્દાવન મુકામે ખુશરને છોડવાનો જહાંગીરે હુકમ કર્યો હતો, એ વાત ખરી છે. (વૃ. ૨, પૃ. ૧૦૭). જહાંગીર પોતે તો ચિદ્રૂપના ઉપદેશની વાત લખતો નથી, તો પણ ખીજા અંચનાં પ્રમાણે એનું સમર્થન કરે છે. Gladwinના અંધમાં એ વાત સ્પષ્ટ રૂપે જણાવી છે. ઇકબાલનામામાં લખ્યું છે કે ખુશરના સસરા ખાન બાઝમના કહેવાથી ચિદ્રૂપે ખુશરને છોડાવ્યો હતો.

“ The Iqbal-nama, 128, calls him Achadrup and says that Khan Azam went privately to him and begged him to use his influence

with Jahangir for the release of Khusrav Achadrup spoke accordingly and Khusrav was released "

(Tuz. II, p. 104, foot-note)

કલ્લોભા પશુ આ વાત નોંધેલી છે

(૫) શ્રીગોકુળનાથજી સં ૧૬૭૭ ના શ્રાવણ (શુકરાતી આષાઢ) વદ ૯ ના રોજ ૧૭મી નીકળી કારમીર બાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા અને આસો વદ ૨ (શ્રાવણ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન જહાંગીર કારમીરમાં હતો કે નહિ? વૃણુકે ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ધ સ ૧૬૨૦ ના મિહિર હીનાની ૧૩ તારીખે કારમીરમાં દશરતો તહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહીનાની ૨૭ મી તારીખે ત્યાંથી આવ્યા જવા નીકળ્યો હતો ધ. સ ૧૬૨૦ એટલે બાદરવા-આસોમાં ચૈત્રી વંત ૧૬૭૭ હતો

(૬) બાદશાહે કારમીરથી પાછા આવતા ગોકુળમાં મુકામ કર્યો હતો અને માંખાનિવેધનો ક્રમ રફ કર્યો હતો. આથી શ્રીગોકુળનાથજી સ ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (અ કાગણ) વદ ૫ મેારમથી ૧૩મી વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા

“ ચૈત્ર વદિ પચમી શુક્રવારે સૂર્ય નજી ધરી વ્યતે
વિજય કર્યો સોરમથી મહા સુજશ નગારા ધતે

x x x x x x

સવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી સુધવાર રે,
શ્રીગોકુલેશ ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચઢેલ દિન ધરી ચાર રે.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે કાગણ સુદમાં હુકમ રફ કર્યો હશે જહાંગીરે કારમીરથી આવતા ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો વૃણુકમાં ૨૫૬ નિર્દેશ છે —

“ Next day Gokul was the place of encampment ”

(Tuz. II, p 196)

સમય માટે નીચેની હકીકત જ્ઞાનમાં લેવાની છે. કારમીરથી આવ્યા પછી ઘુરત તેણે ઇ. સ. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજ્યાલોકનું સોળમું વર્ષ ઉજવ્યું હતું (વૃ ૨, ૫ ૧૯૯) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મહા કે કાગણમાં (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમાં હતા એ ૨૫૬ છે

મૂળ પ્રસંગ.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમાં જણાવેલા રથગો, અનુષ્ઠો અને પ્રસંગો બધાજ ઐતિહાસિક રી છે, તેથી તે કાવ્ય કાવ્યનિક નથી તો પછી માંખાનિવેધનો પ્રસંગ ફારસી પ્રથોમાં કેમ નથી? આના ઉત્તરમાં જણાવવાનું કે જહાંગીરના સમયના બધાજ ફારસી ઇતિહાસના પ્રથોના અનુવાદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર વૃણુકે જહાંગીરનો અનુવાદજ પ્રકટ થયો છે તેથી બધાજ પ્રથોમાં નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય આ પ્રસંગ કાવ્યનિક ઉગ્રો કરવાને કશુંજ કારણ નથી કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુલનાથજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉગ્રો કર્યો છે, પણ તેની અદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જો એ બતાવવી હોત તો તેમાં કાબજ કરવામાં આવતજ નહિ શ્રીગોકુલનાથજી ચિદ્રૂપ પાસે વારવાર જાય, જહાંગીરને

એવું લખી આપે કે ચિદ્રૂપ, ધર્મોત્સાર જે હૃદયે તે કળ્પ કરીશું. તેમના મોટા લાઘવી આપ્તાને અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી ખીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ગૌરવ વધતું નથી. વળી, જે પ્રસંગ કાવ્યનિકજ ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુલનાંયજ્ઞ એજ આદરાહના તોડાવ્યા કાશ્મીર સુધી ગયા એમ થા માટે લખાયે? પોતાના ચમત્કારી પ્રભાવથી આદરશાહ પાસે ગોકુલમાંજ હુકમ રદ કરાવ્યો એમ કેમ ન ગોઠવી શકાય? કાશ્મીરમાં જઈને પણ મૂળ હુકમ તદ્દન રદ ન કરાવ્યો અને દેશવટાતું ફરમાન મેળવ્યું એમાં પણ માનહાનિ જેવું નથી શું? આ વિગતો એવી છે કે જે પ્રસંગ મિથ્યાજન કલ્પવો હોત તો આવી વિગતો અંદર દાખલજ કરવામાં ન આવત. મૂળ પ્રસંગના સંબંધમાં એક પણ ચમત્કારિક વાત નથી, એજ તેની ઐતિહાસિકતાનો પુરાવો છે. કાશ્મીર પહોંચવામાં તેમને દોઢ માસ થયો હતો, એને બદલે એમજ લખત કે પોતાના પ્રભાવથી રાજ કક્ષકમાં પહોંચી ગયા. જે આવું કંઈક લખ્યું હોત તો તેને માટે શંકા લેવાને કારણ મળે.

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો આ છે.

કાશ્મી અંથમાં આ પ્રસંગનો ઉલ્લેખ ન હોય તેથી કરીને તેની ઐતિહાસિકતા ધટતી નથી. એકપક્ષી પુરાવો પણ જે વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં ગ્રાહ્ય થઈ શકે છે. એનાં ઇતિહાસમાં ધણું દષ્ટિતો છે. મહાન સિકંદરની હિંદની ચલાઇ સંબંધી કોઇ પણ હિંદી લેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં પણ ગ્રીક લેખકોના પુરાવા ઉપરથી એ ખીના ઐતિહાસિક કરી છે. મહમ્મદ ગઝનવીની સોમનાથની સ્વારી સંબંધી કોઇ પણ બ્રાહ્મણ કે જૈન ગ્રંથમાં નિર્દેશ નથી, એથી એ બનાવની સત્યતા માટે રવ. મણિલાલ નશુભાઈએ એક વખતે શંકા ઉઠાવી હતી, પરંતુ એને કોઇ તરફથી અનુભાદન મળ્યું નથી કાશ્મી અંથના પુરાવા ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમા આદર થયો છે. અલ્લાઉદ્દી ખુતીને કરણનો પ્રધાન માધવ સુજરાતમાં લાવ્યો હતો એ માટે મુસલમાન લેખકોએ કંઈ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મારણ્ય અને કાન્હાદે પ્રમુખ એ બ્રાહ્મણગ્રંથો ઉપરથી અને વિચારશ્રેણી અને તીર્થસ્થ એ તાત્કાલીન જૈન ગ્રંથો ઉપરથી એ વાત સિદ્ધ થઈ ચૂકી છે. રત્નપુતાનાના ઇતિહાસમાં પણ એવી ઘણી બાબતો છે કે જે કાશ્મી અંથમાં ખોટી રીતે નોંધાય છે. બધી બાબતો લખવાથી વિસ્તાર થાય તેમ છે, તેથી માત્ર અકબર અને જહાંગીર સંબંધી વાતોનોજ વિચાર કરીશું.

અણ્ણજલે અકબરનાંમાં લખ્યું છે કે અકબરે મોકલેલો પોપાક સ્વીકારી પ્રતાપે અકબરની અધીનતા પ્રથમ સ્વીકારી હતી અને કુવર અમરસિંહને અકબરના દરબારમાં મોકલ્યો હતો; પણ આ વાત પંડિત ગીરીશંકર ઝોઝાએ જૂઠ્ઠી સાબીત કરી છે. નૌરાઝના મીના બજારની અનીતિ માટે કોઇ પણ કાશ્મી અંથમાં ઉલ્લેખ નથી, છતાં પણ બિકાનેરના રામ પૃથ્વીસિંહના રચેલા દ્વારગોમાં તે સ્પષ્ટ છે. એથી કવિશ્રી નાનાલાલે એ વાત સાબીત માની છે.

૧. અકબરનું પોતાનું એક મુગ બાધાનું કવિત મિત્રવન્ધુવિનોદમાં આપ્યું છે. તેમાં એક રમણીનું ચિત્ર છે. તે રમણીને મીના બજારમાંથી બોળવીને ઉપાડી લાવેલી હોય એમ લાગે છે. એ પ્રમાણે તે પ્રથમના સંપાદકોનું માનવું છે. એ કવિત નીચે આપ્યું છે.—

છાદિ શકર ચાલકી માંહ અચિત ગઈ ચલિ મીતર મીને ।

મુન્દરિ દ્વારિ દીઠિ ટગાયકે માગિવેકો અમ પાવત મીને ॥

ચોક તસી ચહું બાર વિલોકન ચંક સુકોચ રહી મુલ મીને ।

મેં છાવિ નૈવ છાવિલોકે છાજત મારોં વિહોહ પરિ મુગ છીને ॥

અકબરના જૂદા જૂદા ધર્મે પ્રત્યેના વસણોની વિગતો ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, એ ધર્મોનાં લખાણો-
માથી જ મળી આવે છે. અકબરના વૈષ્ણવધર્મ પ્રત્યેના વસણની હકીકત પણ આદર્શોદી
ફરમાનોમાંથી મળે છે.^૧

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે ઇસુક્રમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના મુઢની સે-
આતમાં જ નથી પડ્યો હતો અને તેના પુત્ર વાઘસિંહને પોતાના દરબારમાં મોકલ્યો હતો આ
ખીના પણ ખીન્ન પ્રમાણોના આધારે પંડિત ગૌરીશંકરે નાપાયાદાર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે
ખીજી ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તો જ્ઞાન સેવ્યું છે અગર તો તે પાઠકેર લખી છે.
ઇસુક્રનો તરજુમો કરનાર બિવરિજ લખે છે કે જહાંગીરે પોતાના આપ સમિતેના બળવાની
બાબતમાં અને શેર અફઘાનના મૃત્યુના સંજોગોની હકીકતમાં ઠાંકપીડોડો કર્યો છે:—

“Jahangir has glossed over his rebellion against his father and
the circumstances of Sher Afghan's death”—Preface to Tuzuk.

તેણે નરજહાનના પૂર્વપ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અક્ષર
પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુરાશની આખો ફોડાવી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું
હતુ એ સંબંધી ખીન્ન સ્વતંત્ર પ્રમાણો મળે છે, છતાં પણ જહાંગીરે તો તે બાબતમાં જ્ઞાન
જ સેવ્યું છે. આપણે આગળ જોઈએ કે ચિદ્રૂપના કહેવાથી ખુરાશને છોડ્યો હતો, છતાં પણ તેણે
પોતાનું મદત્ત ઘટે તેથી ચિદ્રૂપની દરમ્યાનગીરીનો સ્વીકાર કર્યો નથી. શ્રી. વેણીપ્રસાદ જહાંગીરના
મથંસક હોવા છતાં લખે છે કે જે બાબતમાં પોતાના ઉપર મહેજ પણ જવાબદારી આવે તેવા
પણ પ્રસંગ જહાંગીરે નોંધ્યો નથી:—

૧. આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ ઝવેરીએ સંપાદિત કર્યા છે, પણ હજી પ્રકટ થયા
નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોઈ શક્યો છું, તેમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ગોકુળ અને જતીપુરા ગામની
જમીન આપ્યાનું, (એ ગામે હાલ પણ તેમના વંશજોના તાબામાં છે) તેની હદમાં સિંકાર ન કરવાનું
અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાનું, તેમને કોષ પણ પ્રકારે સત્તામણી
ન કરવાનું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ‘માફત-આગા’ એટલે
ઈશ્વરી રાનના રાતા જણાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની માતા હમીદા
બેગમના નામનું છે, જે મુગલ ઇતિહાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બ. કૃષ્ણલાલભાઈનું ધારણું છે.
મધુસૂદનમહદંત વશાવલિમાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ માં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી અને અકબરનો મેળાપ
થયો હતો અને તેણે હાલનું ગોકુળ જે જગ્યાએ છે એ જમીન આપી હતી, ત્યાં કને ગામ
વસાવી, શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી મથુરાથી આવી રહ્યા હતા. હાલ પણ એ નવા ગોકુળના નામે જ પ્રસિદ્ધ
છે. કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરશાહ નાટકમાં ‘ગોકુળ યુસાંઈજીને આપ્યું’ એમ લખ્યું છે, પણ
પાછળથી ‘નજ મનરામને આપ્યું’ એમ શુદ્ધિપત્રકમાં સુધાર્યું છે. તેમને જે આ હકીકતની ખબર
હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

૨. આ ફરમાનોમાં જહાંગીરનું મોલાપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ
નથી, કેમકે જહાંગીરે મોલાના હુકમો કર્યા હતા, લેખી ફરમાન એ સંબંધી કાઢ્યું ન હોતું,
એમ કાબ્ય વાંચતાં જણાય છે.

“The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible.”

(History of Jahangir, p. 336)

આના અપવાદરૂપે અશુદ્ધકલના ખૂનનો પ્રસંગ ગણવેા પડે.

સર ટોમસ રોની મુલાકાત.

૫૨-૬૦ સૌથી વધારે અગત્યની બાબત તો સર ટોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઇસ્લાંના રાજના એકથી તરીકે હિંદુસ્તાનમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અજમેર મુકામે ઇ. સ. ૧૬૧૬ના જાનેવારીની ૧૦ મી તારીખે બર ઇસ્ખારમાં મળ્યો હતો. એટલું જ નહિ પણ તે અજમેરમાં નવેબર સુધી રહ્યો હતો અને જહાંગીર યુગરાત આવવા નીકળ્યો ત્યારે તેની હાવણીમાં છેક માંડું સુધી સાથે હતો. છતાં પણ જહાંગીરે ઘુઝુકમાં એ સંબંધી ઈશારો સરખોએ કર્યો નથી. તો શું એ મુલાકાત કપોલકલ્પિત માનીશું ? રો અને તેના સાથીદારોએ એ મુલાકાત સંબંધી એટલું તો વિગતવાર લખ્યું છે કે તે ઐતિહાસિક ખીના તરીકે ઇતિહાસમાં સ્થાન પામી ચૂકી છે અને તે વિષે સહેજ પણ શંકા દર્શાવવાની કોઇએ હિંમત કરી નથી. આ સંબંધી જહાંગીરનું મૈન હોવા છતાં પણ ખીજ પક્ષના પુરાવાથી આ વાત ઇતિહાસસિદ્ધ માનવામાં આવે, તો માળાપ્રસંગ સંબંધી જહાંગીરનું મૈન હોવા છતાં ખીજ પ્રમાણથી તે ઇતિહાસસિદ્ધ કેમ ન ગણાય, તે સમજાવ્યું પડતી નથી.

જહાંગીરના મૈનનો ખુલાસો.

સર ટોમસ રોની મુલાકાતનો જહાંગીરે ઉદ્દેશ્ય ન કર્યો તેનું કારણ એવું છે કે એ મુલાકાત સફળ નહોતી થઈ. તેણે ઇસ્ટ ઇન્ડીયા કંપની માટે જે વહેપારી લાગોની માગણી કરી હતી તે જહાંગીરે કબૂલ રાખી નહતી. આથી આ નિષ્ફળ મુલાકાતનો ઉદ્દેશ્ય કરવો જહાંગીરે ઇચ્છિત નહિ માન્યો હોય. એ પ્રમાણે માળાનિષેધનો હુકમ તેણે પાછળથી ૨૬ કર્યો તેથી એ નિષ્ફળ હુકમની નોંધ લેવાની જરૂર તેણે નહિ જોઈ હોય. પોતાનો હુકમ ૨૬ કર્યો એમ જણાવતા તેને માનહાનિ પણ જણાઈ હોય. વળી, શ્રીગોકુલનાયજી પ્રત્યેનું તેનું વલણ પાછળથી બદલાયું અને ચિદંપની વાતો પોકળ જણાઈ, એ કારણથી પણ મૂળ વાત દાખી રાખવામાજ તેણે ડહાપણ જોયું હોય. નરજહાં અને આસફખાનનું વલણ શ્રીગોકુલનાયજી પ્રત્યે મૂળથી હતું તેથી તેમણે પણ એ પ્રસંગ ઘુઝુકમાં ન દાખવ કરવાને આમદ કર્યો હોય. ઘુઝુક કંઈ રોજનિસિ જેવું યુસ્તક નથી, તેમાં પ્રત્યેક દિવસની હકીકત નોંધાઈ નથી. વચમાં દિવસોના દિવસો અને કોય વાર તો મહીનાના મહીના કોરા જણાય છે. અને જહાંગીર પોતે કંઈ રોજ ને રોજ લખતો નહિ. મૂળ હકીકતો તેના વાકાનવિશેષ (વૃતાન્તલેખકો) લખી રાખતા અને અવકાશ મળે ત્યારે એ સાંલળાને પછી પોતે લખતો. તે પ્રમાણે લખતાં એ હકીકત લખવી રહી ગઈ હોય અગર તો તેના વાકાનવિશેષ બલભર અને ગોવિંદાસનું વલણ શ્રીગોકુલનાયજી તરફ હતું, તેથી તેમણે પણ હકીકત લખાવતાં એ ખીના યુગ રાખી હોય. અમે તે કારણ હોય, પણ જહાંગીરે માત્ર તે ખીના ન લખી, એટલા જ ઉપરથી તેની ઐતિહાસિકતા સાબીત થતી નથી.

વિશેષ પ્રમાણો.

હા, જો આ પ્રસંગ માટે ખીજ પ્રમાણો ન હોત તો તે વિષે શંકા લેવાને કારણ ગણાય ખરું. પણ ખીજનું પણ પ્રમાણ તો સંબંધી મળે છે તેનો વિચાર દેવે કરીએ. આ પ્રમાણોના બે વિભાગ કરી શકાય છે—પરોક્ષ અને પ્રત્યક્ષ. પ્રથમ પરોક્ષ પ્રમાણો જોઈને પછી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો વિચારીશું.

પરોક્ષ પ્રમાણ.

આ પ્રસંગ સંબંધી વૃત્તિક્તી એક જે આડકતરી બાબતો ઉપરથી કંઈક પ્રકાશ મળે છે. તેમાંની એક એ બાબત છે કે ચિદ્રૂપનાં કેટલાંક કાર્યોથી જહાંગીરનું મન કાશ્મીર ગયા પછી ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી મધું હતું. આ વાતને એ બાબતથી ટેકા મળે છે કે કાશ્મીરથી આવતાં તે ચિદ્રૂપને મળવા જતો નથી. પ્રથમ જ્યારે જ્યારે તેના પ્રવાસમાં ચિદ્રૂપનો મુકામ આવતો ત્યારે ત્યારે તેને મળવા જતો. શુભરાત આવતાં અને ત્યાંથી પાછા જતાં ઉજ્જૈનમાં અને કાશ્મીર જતાં મથુરામાં તેની મુલાકાત લેવા બંધ છે અને કાશ્મીરથી આવતાં ગોકુલમાં મુકામ કરે છે છતાં પણ મથુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો ? આ શું તેનું મન ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું, એમ નથી જણાવતું ? બીજું, ઇકલાંબનામામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાદુ હાકિમબેગે નિર્દય માર માથો હતો:—

“He was Cruelly beaten by Hakim Beg”.

(Tuz. II, p. 104-foot-note).

જે ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો અભાવ થયો ન હોત તો હાકિમ બેગ આટલી બધી હિંમત કરે ખરો કે ? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કાશ્મીર જતાં મથુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમ બેગે ચિદ્રૂપની શુકામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો. એટલા નજીવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી ખુશરના કહેવાથી તેને સગ્ન કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. ચિદ્રૂપે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતો; એ વાતનું વેર લેવાને જ કદાચ હાકિમ બેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે અભાવ ચંપાથી તેને માથો હશે, જે આ પ્રમાણે અભાવ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત જોતી જણાતાં માલાનિષેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઈ આશ્ચર્ય નથી.

પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઈએ: ‘માલોદાર’ કાવ્ય સંબંધી તો આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવલોકીશું.

૧. કલ્યાણુ ભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાયકના સેવકે શ્રીગોકુલસાલોચારસાગિષે નોંધનું બહુ વિસ્તૃત સંસ્કૃત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાયકનું ચરિત્ર વર્ણવેલું છે. એના કલ્લોલ નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક કલ્લોલમાં તરંગ નામના અધ્યાય છે. તેમાં કલ્લોલ ૭, ૮, ૯, માં માલા-પ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ ભટ્ટની કૃપાથી ક. ૭, ૮ ગ્રેવાંચ્યા છે. જહાંગીર સાથેના શ્રીગોકુળનાયકના કાશ્મીરની અંદર યજ્ઞેશ સંવાદ ત્રણ તરંગોમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં આદ્યજ્ઞાન ગદ્યએ આબ્યાનો નિર્દેશ છે અને હમોહરના “પાખંડપ્રકાશ”માં કલ્યાણુ ભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે. તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં યજ્ઞેશી એમ હું માનું છું.

૨. શિશ્યાવ્રત ગ્રંથથી જોએ સંપ્રદાયમાં પ્રસિદ્ધ છે. અને જોએ શ્રીગોકુળનાયકના ભગીન હતો, તે આચાર્ય શ્રીહરિરાયજીએ શ્રીગોકુળનાયકની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ માં શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છે:—

તાત્ત્વજ્ઞેકપર: પરાશયવિદાં વર્ય: પરાનન્દદો માલ યેન સુરક્ષિતા નિજમહાયત્નેન કપ્ઠે સતાં ।

ધર્મો યેન વિવર્ધિત: વિત્તપદાચારપ્રચાર: સદા સ શ્રીગોકુલનાયક: કરુણ્યા મૃયાદરો સેવિનામ્ ॥

૧. માલોદારકાવ્યમાં આ બાબતમાં એમ લખ્યું છે કે હાકિમ બેગે દારૂ પીને હાથમાં દારૂનો પ્લાસો લેધને શુકામાં પેસવા પ્રયત્ન કર્યો હતો. આ વાત અતિશયોક્તિભરેલી જણાય છે; કલ્લોલની વાત માનવા લાયક છે.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક

પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગણ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુના જુના ગામેના લેવામા આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ તેજજ નિર્ણય કરેલું પારિતોષિક નીચે મુજબ છે -

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામા આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા ને વિશિષ્ટ)

માર્ક મુજબ , પરીક્ષણું નામ. જામ ગ્રંથાંક ઈનામની રકમ.

વિશિષ્ટ વર્ષ ૧ હું.

૧	સરૈયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	સુવર્ણ પદક તથા પુસ્તકો મળી રૂ. ૫૦)
---	---------------------------	-------	----	------------------------------------

ઉત્તમા પરીક્ષા.

૧	ચીમનલાલ કીશોરદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૯	૧૦
૨	શાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૨	૮
૩	દેશાધ નંદલાલ ત્રીકમવાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	વ્યાસ રતિલાલ પુરુષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામચંદર જ્યેષ્ઠારામ	"	૫૨	૫
૬	પંડ્યા કુર્માચંદર દામોદર	"	૫૦	૫
૭	શા. જીસીલાલ અમૃતલાલ	"	૪૬	૫

મધ્યમા પરીક્ષા.

૧	રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રી	કોમરેડ	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૦	૬
૩	મેઠ હરિલાલ જેઠાલાલ	"	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	હરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩

પ્રવેશ.

૧	પુરુષોત્તમ નાથારામ શાસ્ત્રી	પેટલાદ	૯૧	૧૦
૨	ધનરયામ મણિલાલ શાહ	"	૮૯	૬
૩	તારા બહેન ગિરિધરલાલ	"	૮૪	૬
૪	લીલાવતી	"	૮૪	૬
૫	મદનલાલ	"	૮૩	૬
૬	હીરાદાદમી ગોરધનદાસ	"	૮૨	૬
૭	ચંદ્રાદાબહેન ચુનીલાલ	"	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	"	૭૭	૩
૯	કાકીવા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાઠીલાલ ચુનીલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૬	૩

દાસિક કાવ્ય સં. ૧૭૧૮ માં રચેલું છે. તેમાં પણ આ પ્રસંગનો ઉલ્લેખ હોવાનો સંભવ છે. આ કાવ્યની પ્રત મેં મેળવવા પ્રયત્ન કર્યો હતો, પણ મળી શકી નથી, તેથી તેનું પ્રમાણ આમાં દાખલ કરી શક્યો નથી.^૧

ધણાક ઐતિહાસિક પ્રસંગો માત્ર એક કાવ્યથી રચાવિત થઈ શક્યા છે, તે આટલા બધા પ્રમાણે હોવાથી માળાપ્રસંગ ઐતિહાસિક ગણાવાને ઠાક પણ જાતની દરકત આવતી જોઈએ નહિ.

૧. આ મનુસૂત્રન ભટ્ટના પુત્ર રણછોડ ભટ્ટે કાકરોલીના રાજસાગર ઉપરના નવ ચોડીમાં પત્થરો ઉપર કાતરેલું પચીસ સર્જનું 'રાજપ્રશસ્તિ' નામનું મહાકાવ્ય રચેલું છે. તેમાં ઉપરના રાજ્યોનો ઇતિહાસ છે. એવડું લાણુ શિલાકાવ્ય આખા જગતમાં નથી.

શ્રીગોપીચંદ્રનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર આરસો પાનાંથી પણ વધારે કાંઈ જુ' રા. હલ્લુભાઈ જનનલાલ રેસાઈએ છપાવેલું, તેમને ત્યાંથી જ (કે ૧૧૦, રીચાર્ડ-અમદાવાદ) મળે છે.

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કૌંભત ઘટાડીને અઢી આના કર્યા, ટપાલ ખર્ચ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઈ, ઘોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજીનું એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૬ પદો, શ્રીદારિકેશજીના એકસો પચીસ દ્વંદ્વા, આ પ્રાચીને સાહિત્ય ઉપરાંત શ્રીગોકુલતાથજી, ચીરધુનાથજી તેમજ શ્રીચાચાગોપેશજી એ ત્રણે મહાનુભાવીઓની સંસ્કૃત ટીકાઓનું સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ સુંદર ચિત્રો. આવું સાહિત્ય કદી બહાર પડ્યું નથી, ઉચ્ચા કાગળો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તનોનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી ચોદાડવા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમાંએ વધોન્નતુ રીતકાલ, ઉષ્ણકાલ, ઉત્તરેણી પ્રણાલિકા સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા ખારમાસી ઉત્સવના પદો. દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ. ઘોળ પદો, નિત્યપાઠો.

ખીર્ન પુસ્તકોની જરૂર નહિ પડે. અક્ષરો મોટા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સપ્રદાયમાં પહેલોજ અપ્રસિદ્ધ પદોનો તો ભંડાર છે. થોડાજ સમયમાં બહાર પડશે. નોંધવર હવે પેછી. નામ નોંધાવો.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રાજમહેતાની યોજા—અમદાવાદ.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગઈ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુદા જુદા ગ્રામોમાં લેવામાં આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ તેમજ નિર્ણીત કરેલું પારિતોષિક નીચે મુજબ છે —

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામાં આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા ને વિશિષ્ટ)

માર્ક મુજબ નંબર	પરીક્ષકનું નામ.	ગામ.	ગ્રાંથાંક	ઈનામની રકમ.
-----------------	-----------------	------	-----------	-------------

વિશિષ્ટ વર્ગ ૧ હું.

૧	સરૈયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	સુવર્ણ પદક તથા પુસ્તકો મળી રૂ. ૫૦)
---	---------------------------	-------	----	------------------------------------

ઉત્તમા પરીક્ષા.

૧	ચીમનલાલ હીરોદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૯	૧૦
૨	શાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૧	૮
૩	દેશાઈ નંદલાલ ત્રીકમલાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	બ્યાસ રતિલાલ પુરુષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામચંદ્ર જ્યેષ્ઠારામ	"	૫૧	૫
૬	પંડ્યા કુર્મચંદ્ર દામોદર	"	૫૦	૫
૭	શા. જંસીલાલ અમૃતલાલ	"	૪૬	૫

મધ્યમા પરીક્ષા.

૧	રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રી	કુમરેડ	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૭	૬
૩	શેઠ દરિલાલ જ્ઞાલાલ	"	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	દરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩

પ્રવેશ.

૧	પુરુષોત્તમ નાથારામ શાસ્ત્રી	પેટલાદ	૯૧	૧૦
૨	ધનરથામ ગણિયાલ શાહ	"	૮૯	૬
૩	તારા બહેન ગિરિધરલાલ	"	૮૪	૬
૪	લીલાવતી	"	૮૪	૬
૫	મહનલાલ	"	૮૩	૬
૬	હીરાદાદમી ગોરધનદાસ	"	૮૨	૬
૭	યશોદાબહેન સુનીલાલ	"	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	"	૭૭	૩
૯	ગડગીયા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાઠીલાલ સુનીલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૬	૩
૧૧	યશોદાબહેન મોતીરામ	"	૭૩	૩

૧૨	ગાંધી ચંદુલાલ પ્રેમચંદ	બાકોર	૭૩	૩
૧૩	પ્રભુલાલ મનલાલ ચાહ	પેટલાદ	૭૧	૩
૧૪	ચા. ઓચ્છવાલ સોમચંદ	બાકોર	૭૧	૩
૧૫	મહેતા વલ્લભદાસ મુલાબચંદ	પાંડરવાડા	૭૧	૩
૧૬	સુરા મણીલાલ કોદરલાલ	વીરપુર	૭૧	૩
૧૭	દેસાઈ કાન્તીલાલ બાળકૃષ્ણ	"	૭૧	૩
૧૮	હર્ષકેશ ભુગલભાઈ	પેટલાદ	૭૦	૨
૧૯	ગાંધી અમરચંદ ભોગીલાલ	બાકોર	૬૮	૨
૨૦	ગૌરીનાથ મોતીરામ શુક્લ	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૧	રમણલાલ મોતીરામ પુરોહિત	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૨	ધર્મોદા બેન બાઈલાલ ગાંધી	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૩	દેસાઈ ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ	ભાગરોળ	૬૪	૨
૨૪	ગાંધી જીવીલદાસ સામગામ	બાકોર	૬૪	૨
૨૫	મોદી લક્ષ્મદાસ કુમેરદાસ	પાંડરવાડા	૬૪	૨
૨૬	કડકીયા મણીલાલ ચંદુલાલ	વીરપુર	૬૪	૨
૨૭	ગાંધી ચતુરલાલ મનલાલ	વડોદરા	૬૨	૨
૨૮	કલાવતી બહેન બાઈનાલ	પેટલાદ	૬૧	૨
૨૯	સરેયા નગીનદાસ પુરુષોત્તમદાસ	નડીયાદ	૬૧	૨
૩૦	ગાંધી મણીલાલ દલસુખભાઈ	બાકોર	૬૧	૨
૩૧	શેઠ ગોપુળદાસ મનલાલ	દાહોદ	૬૧	૨
૩૨	ચાતિલાલ મનસુખલાલ દેસાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૩	દેસાઈ ચાતિલાલ મનસુખલાલ બીન લેલાદાસ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૪	કડકીયા ચાતિલાલ લલ્લુભાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૫	સુરા ઓચ્છવાલ મનલાલ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૬	ગાંધી ચંદરલાલ સાકળચંદ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૭	ચા. ગોવિંદલાલ મજબૂબજીદાસ	દાસોલ	૬૧	૨
૩૮	ચા. મણીલાલ યુનીલાલ	પાંડરવાડા	૫૯	૨
૩૯	દેસાઈ રમણલાલ મનસુખલાલ	વીરપુર	૫૯	૨
૪૦	દેસાઈ અંબાલાલ રણકોડકર્તી	વીરપુર	૫૯	૨
૪૧	કમલાબેન ભોગીલાલ	પેટલાદ	૫૮	૨
૪૨	મૂળચંદર નાગજી રાજપુરુ	ભાગરોળ	૫૮	૨
૪૩	મહેતા ચંદુલાલ દલસુખભાઈ	બાકોર	૫૮	૨
૪૪	ચા. ગીરધરલાલ છાટાલાલ	દાહોદ	૫૭	૨
૪૫	શેઠ કમ્બલાલ મનલાલ	દાસોલ	૫૭	૨
૪૬	ચંદ્રકાન્તાબેન ગોવિંદલાલ	પેટલાદ	૫૬	૨
૪૭	ચાન્તાબેન દામનલાલ શેઠ	દાસોલ	૫૬	૨
૪૮	ચોકસી અમરતલાલ ભોગીલાલ	જામનર	૫૫	૨
૪૯	શેઠ દરીલાલ ગઢાલાલ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૦	ચાહ વલ્લભદાસ મનલાલ	જામનર	૫૫	૨

પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

૫૧	જ્યોત્સનાબેન મગનલાલ શેઠ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૨	દેશાઈ રમણલાલ લક્ષ્મીભાઈ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૩	સુરા. ઝોત્સનાલાલ જોશલાલ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૪	ગાંધી રમણલાલ પ્રેમચંદ	કલોલ	૫૫	૨
૫૫	હાંમતલાલ મણીલાલ શાહ	પેટલાદ	૫૨	૨
૫૬	ગાંધી લક્ષ્મીચંદ અમરચંદ	ખાકોર	૫૨	૨
૫૭	ગાંધી પુનમચંદ અમરચંદ	ખાકોર	૫૨	૨
૫૮	સરસ્વતીબેન જનલાલ દેસાઈ	દાહોદ	૫૨	૨
૫૯	ગાંધી પુનમચંદ ગુલાબચંદ	ખાકોર	૫૨	૨
૬૦	દેશાઈ કાંતિલાલ લક્ષ્મીભાઈ	વીરપુર	૫૨	૨
૬૧	મધુવનદાસ સુનીલાલ શાહ	હાલોલ	૫૨	૨
૬૨	દેશાઈ શાંતિલાલ લક્ષ્મીભાઈ	વીરપુર	૫૨	૨
૬૩	ચંદનબેન મીઠાલાલ	દાહોદ	૪૮	૧
૬૪	શાહ ડાહાલાલ હીરાલાલ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૫	શાહ રમણલાલ સાંકળચંદ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૬	પરીખ નટવરલાલ ભીખાભાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૭	દેશાઈ ગીરધરદાસ વિઠ્ઠલદાસ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૮	ચંદનબેન જનલાલ દેશાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૯	સરદેકાન્તા મણીલાલ	હાલોલ	૪૭	૧
૭૦	શેઠ સાકરલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૧	દેશાઈ પુરુષોત્તમદાસ ચામળદાસ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૨	શાન્તાબેન જોશલાલ શાહ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૩	ગાંધી મણીલાલ પુનમચંદ	વીરપુર	૪૫	૧
૭૪	પરીખ શાંતિલાલ મનસુખરામ	હાલોલ	૪૫	૧
૭૫	સુતાર વલ્લભજી ગોવિંદજી	ધોરાજી	૪૫	૧
૭૬	રતીલાલ મગનલાલ	વડોદરા	૪૪	૧
૭૭	દેશાઈ જીવીલાલ ચંડુલાલ	વીરપુર	૪૩	૧
૭૮	શેઠ રતનલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૨	૧
૭૯	શાહ રણજીદાસ મુળજીભાઈ	હાલોલ	૪૨	૧
૮૦	દરજી હરિદાસ દેવસી	ધોરાજી	૪૩	૧
૮૧	ગાંધી રમણલાલ હોટાલાલ	કલોલ	૪૨	૧
૮૨	હીલાવતી સુનીલાલ	પેટલાદ	૪૦	૧
૮૩	મહેતા મગનલાલ પાનાચંદ	પાંડરવાડા	૩૯	૧
૮૪	શાહ ગોવિંદલાલ નારણદાસ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૫	શેઠ કૃષ્ણદાસ મણીલાલ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૬	હરજીવનદાસ ડાહાભાઈ	ધારી	૩૯	૧
૮૭	મહેતા જીવીલાલ માણેકલાલ	ખાકોર	૨૭	૧

૮૮	હાડીઆ બાલુબાઇ લલ્લુબાઇ	વીરપુર	૩૭	૧
૮૯	સુરા હીરાબાઇ કેશવલાલ	વીરપુર	૩૭	૧
૯૦	મંગલાગૌડરી કાલીદાસ	કલોલ	૩૭	૧
૯૧	શાહ વલ્લભદાસ વિઠ્ઠલદાસ	હાલોદ	૩૫	૧
૯૨	શાહ પુરુષોત્તમદાસ રામચંદ	ગોડાવા	૩૫	૧
૯૩	સરસ્વતીબેન છોટાલાલ	ગેટલાદ	૩૩	૧
૯૪	બાલચંદર જયવંતરામ	તડોદરા	૩૩	૧
૯૫	શાહ રસિકલાલ સાકરલાલ	હાલોદ	૩૩	૧
૯૬	સુરા મણિલાલ મનસુખરામ	હાલોદ	૩૩	૧
૯૭	રોઠ ગોરધનદાસ હીમતલાલ	હાલોલ	૩૩	૧
૯૮	રોઠ કચનલાલ કેશવલાલ	હાલોલ	૩૩	૧
૯૯	પરિખ રસિકલાલ કુમરલાલ	હાલોદ	૩૩	૧
૧૦૦	હરીલાલ નંદલાલ	ધારી	૩૩	૧
૧૦૧	ગાંધી નંદલાલ પ્રેમચંદ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૨	ગાંધી ચંબાલાલ મોહનલાલ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૩	ગાંધી જમનાલાલ જુઠાલાલ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૪	જુઠાલાલ શામળદાસ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૫	ગાંધી મુળચંદ લલ્લુબાઇ	કલોલ	૩૩	૧
૧૦૬	ગાંધી જયંતીલાલ મણીલાલ	પાંડરવાડા	૩૩	૧

વિશિષ્ટ પરીક્ષાના પ્રથમ વર્ષમાં વિદ્યાર્થી એક બેઠા છે તે તે પાસ થયા છે પરિણામ સો ટકા.

ઉત્તમા પરીક્ષામાં ૮ વિદ્યાર્થી બેઠા છે તેમાં ૭ પાસ થયા છે. પરિણામ ૮૭-૫ ટકા છે.

મધ્યમા પરીક્ષામાં વિદ્યાર્થી ૭ બેઠા છે તેમાં ૬ પાસ થયા છે પરિણામ ૮૫-૫ ટકા છે.

પ્રવેશ પરીક્ષામાં એકંદર વિદ્યાર્થી ૧૪૩ બેઠા જેમાં ૧૦૬ વિદ્યાર્થી પાસ થયા છે પ્રમાણ ૭૪-૧ ટકા પાસ છે.

બી પરીક્ષાઓમાં વિદ્યાર્થી ૨૪૯ ની અરજીઓ આવેલી પરંતુ, તાવ વિગેરેની બીમારી તેમજ બીજી અડચણોને લીધે માત્ર ૧૪૯ વિદ્યાર્થીઓ પરીક્ષામાં બેસી શક્યા છે જેમાં કુલ ૧૨૦ પાસ થયા છે.

ઉપર પ્રમાણે આ વર્ષે પારિતોષિક પરીક્ષાઓમાં વૈજ્ઞવ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે. હવે પછીના વર્ષોમાં વધુ વિદ્યાર્થીઓ ભાગ લેશે એવી આશા છે.

પરીક્ષકો—વેંકટવિયારુ યાત્રી હરિચંદર ઝાંકારજી, યાત્રી જ્યેષ્ઠરામજી, રા. રા. વિઠ્ઠલદાસ મોહનલાલ ગાંધી બી. એ. એવ. બી., તથા રા. જયંતીલાલ પરીખ દતા.

મુચના:—જે રૂપીઆથી વધારે ધનામવાળાઓ પોતાની પસંદગીનાં સાંપ્રદાયિક પુસ્તકો જ મંગલો તે પૂજ પાઠનામાં આવશે ધનામ શેકડાં નહિ મળે. સાંપ્રદાયિક મંથોના રૂપમાં અપાશે.

મંત્રીઓ પરીક્ષા સમિતિ,
શીવુષ્ટિમાર્ગે વૈજ્ઞવ મંથાસભા ડે. ૧૧૦, ગાંધીરોડ-અમદાવાદ.

शुद्धादित



श्रीगोकुलनाथजीनुं प्राचीन चित्र.

(काश्मीरमा, तिलकमालात्रिजय समयनु)

શુદ્ધાદિત



ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમદનિરૂદ્ધાચાર્યજી.

(નડીઆદ)

(શુદ્ધાદિનકેમરી-શુદ્ધાદિતબૂપણ-શુદ્ધાદિતસહસ્ત્રાંશુ-શુદ્ધાદિતવાચપતિ-
વેાન્તમુખાકર વેાન્તવિદ્યાય કાર-પણિતમણ્ડલેશ્વર પણિતે-૬)

॥ विजयते श्रीमदनमोहनारख्यो रसः ॥

॥ विजयते श्रीबालकृष्णमयः ॥

पદવી-સમર્પણ-સમારંભ.

સાક્ષરજન્મભૂમિ નડિયાદમાં એક અદિતીય વિદ્વત્સભા, શ્રીવલ્લભકુલના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વદ્રત આચાર્યશ્રીનું મહાસન્માન, વિદ્વાનોનાં સંસ્કૃત ભાષામાં થયેલાં પ્રવચનો; ગ્રેજ્યુએટ વર્ગે આચાર્યશ્રીની વિદ્વત્તાની કરેલી પ્રશંસા, “પણ્ડિતેન્દ્ર” અને “પણ્ડિતમણ્ડલેશ્વર”ની મહાપદવીઓનું સુવર્ણચંદ્રક સાથે સમર્પણ અને સ્તુતિપત્રનું નિવેદન, આચાર્યશ્રીનો વિદ્વત્તાપૂર્ણ વિનયયુક્ત જવાબ.

સં. ૧૯૮૮ ના કાર્તિક વદ ૭ તા. ૨-૧૨-૭૧ નો દિવસ તો નદીયાદના વિદ્વત્સન્માનના ક્રતિદાસમાં સુવર્ણોક્ષરે કોતરાર્થ રહેશે, ચિરસ્મરણીય બનશે. હાલ જૂતા ઉપર બિરાજતા શ્રીવલ્લભકુલના સર્વ આચાર્યશ્રીઓમાં મન્થકાર-ભાષ્યકાર તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, નદીયાદ અને ભગનગરનાં અલંકારરૂપ એક સમર્થ મહાનું પંડિત આચાર્ય ગોસ્વામી શ્રી ક શ્રીઅનિરુદ્ધ-આચાર્ય મહારાજશ્રીને મહાગૌરવપૂર્ણ પદવીઓથી સન્માનવા માટે જે અપૂર્વ વિદ્વત્સભા મળી, જે મહાનું સમારંભ થયો તે બડભાગી દિવસ કાર્તિક વદ ૭ મીના જ છે. મહારાજશ્રીને આ કાંઈ નવીન પદવીઓ પ્રાપ્ત થઈ નથી. આનાથી પહેલાં પણ આપશ્રીને વિદ્વાનોએ અનેક ગૌરવ-પૂર્ણ ઇરકાઓ અર્પણ કરેલા છે. એ સર્વ પદવીઓને આચાર્યશ્રીએ ઉપનિષદો ઉપર ભાષ્ય લખીને અસૌકિક જોય ચઢાવ્યો છે, એમાં લેશ પણ અતિશયોક્તિ નથી. આપશ્રીએ વિશ્વધર્મરૂપ પુષ્ટિમાર્ગની આ એક વિનયપતાકા આચાર્યવર્તમા ફરકાવી છે. આર્ચસંસ્કૃતિના ભવ્ય, દિવ્ય મહામંદિર ઉપર દિવ્ય રત્નજડિત દેહીધ્મમાન કલશ ચઢાવ્યો છે! આ યુગ ધણી વર્ષો પછી જોવાનો વૈષ્ણવ વિદ્વાનોને એ યુગ પ્રત્યક્ષ કરવાનો-સુમંગલ અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. આજથી પચાસ વર્ષ પહેલાં તો આવા સ્મરણીય અવસરો ધણી વાર પ્રાપ્ત થતા, પણ છેલ્લા પચાસ વર્ષમાં તો આ સુદિન દમણું જ સાંપડ્યો છે.

આજે શ્રીવલ્લભકુલ ઉપર આલેખાત્મક લેખો લખવા ધણી અશિક્ષિત અથવા પાશ્ચાત્ય-શિક્ષાદીક્ષિત હૃદયો તવપાપડ હશે! પણ તે તંત્ર હૃદયો આવા સૂચકમા પ્રકાશને પણ નિરખી નહિ શકે તો તેમનાં દત્તભાગ્યની સીમાજ્ઞ ગણવી રહી! ઉક્ત આલેખ-આકોશકો માટે આજથી આઠ વર્ષ પહેલાં ગુજરાતના ટાંગેર સભા કવિસમ્રાટ શ્રીયુત નાનાલાલભાઈ કવિ એમ. એ. એ ગ્રેક સચોટ અને પ્રખય યુક્તિપૂર્ણ પ્રત્યુત્તરરૂપ દિવાસો આપ્યો હતો. આ રજા તે સ્મરણીય સંજોગો:—

“વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં ધર્મશિલ્પસૂત્રીના ઊંડાં ઉમઠાં વિચારણીય સાદિત્યશાસ્ત્ર નથી એવો કદમ નવયુગના નવમંરકારીઓ-મોટે ભાજે સંઘનતા આવ્યા છે; ને પોતાના અજ્ઞાનની મૂર્તિ

ધરીને એને જ્ઞાનમૂર્તિ માનીને પૂજતા આવ્યા છે. હવે તો ધણું પુસ્તકો પ્રસિદ્ધ થયાં છે જનાં પોતાના પ્રમાણે જ્ઞાનની પરિસ્થિતિ માનવાની આ નવશુભની ટેવ સુધરી છે. વૈષ્ણવી સાહિત્યના આપણા ટીકાકારો સ્વર્ગે લણી આંખડીયે ઉઘાડવાની ના પાડે છે, ને કહે છે કે સ્વર્ગે જ નહીં.

...એ સર્વ વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવકપરંપરા એક સાક્ષરકુલની સાહિત્યસેવાની જગતમાંની અબ્બેડ જાહેરાતલાલી છે. પૃથ્વીના પ્રયોધારનેકાળે લગીરથપ્રયત્ને લાગીરથીજ એમણે વહેવાડી છે.

...અને એ સૌએ એ લગીરથ સાહિત્યસેવા ક્રિયા યુગમાં કીધી છે ! ભારતવર્ષમાં સ્વાસ્થ્ય હતું ત્યારે ? સ્વાસ્થ્યમાં સાહિત્ય પાંગરે; ને મુગલવંશના મહારાજાઓના સુવર્ણ સમયમાં ભારતમાં સ્વાસ્થ્ય હતું. પણ તે પહેલાં ને તે પછી, ઈ. સ. ૧૫૨૬ ની પૂર્વેને 'ઈ. સ. ૧૭૦૭ પછી ભારત એકમકથન્ય ને અસ્વસ્થ હતો; ત્યારે જે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા જમનાનાં જલની પેઠે, અવિરત ને અખંડવાદિની હતી. માત્ર ભારત વર્ષમાંજ નહીં, જગતના ઇતિહાસમાં એક સાક્ષરકુલ તરીકે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા અદ્વિતીય છે. યુરોપમાં અમેરિકામાં આફ્રિકામાં એશિયામાં-પૃથ્વીના ૫૪ ઉપર કોઈ દેશને એક જ વંશના વંશજો વલ્લભકુલે કીધા છે એવી ને એટલીજ સાહિત્યસેવા કીધી હોય તો વિકર્ણને આનંદાતા ઇતિહાસની એ નવકથા જાણીને શીવલભકુલ પણ આનંદશે. ”

ઉપરનું સત્ય ઓળખીને ભાષામાં મૂકીને કવિશ્રીએ સંપ્રદાયને ન્યાય આપવામાં જે ઔદાર્ય બતાવ્યું છે તે ચિરસ્મરણીય જ છે. કવિવર નાનાલાલભાઈ તો પ્રાર્થનાસમાજના સભ્ય છે, સુધારક ગણાય છે, છતાં એમના નિર્મલસર અને સત્યનાં ઓળખથી ભરેલા હૃદયમાં ઉક્ત સત્ય ઇતિહાસના શુદ્ધ પ્રતિબિંબો પડ્યાં છે અને તેમાંથી ઉપરનો સુંદર કર્ણપ્રિય મધુર શ્વનિ ઉદ્ભવ્યો છે. આ સત્યનો સાક્ષાદનુભવ નડિયાદની એ યાદગાર સભામાં સાક્ષરોને થયો.

મહાન સમારંભ.

કાર્નિક વદ ૭ મીના રોજ નડિયાદની સુપ્રસિદ્ધ શીસાતત્ત્વરૂપની હવેલીને મધ્યએક સુશોભિત રીતે શણગાર્યો હતો. આ પ્રસંગે નવે જ મંડપ બાંધવામાં આવ્યો હતો. બેરોબર સાંજના પાંચ વાગ્યાનો સભાનો સમય નિયત થયો હતો, પણ શ્રોતા ગણુ તો અગાઉથી ઉપરિચિત થતો હતો. મહારાજશ્રી પધારતાં સર્વ સભ્યોએ ઉભા થઈને વંદન કર્યા હતાં, અને જ્યનાદથી સભા-રચાન ગાણુ ઉઠ્યુ હતું. સંસ્કૃત અને ગુજરાતી માનપત્રોમાં હસ્તાક્ષર કરનારા વ્યાકરણચાર્ય આદિ પદવીધારી વિદ્વાન શાસ્ત્રીઓ, શ્રેણ્યુઓ અને સહગૃહસ્થો હાજર થયા હતા. એમ. એ. ખી. એ. તથા એલએલ. ખી. આદિ પદવીધારી શ્રેણ્યુઓ તથા સરકારી સેવામાં નિયુક્ત યુવા વિદ્વાનો અને તે ઉપરાંત સુપ્રસિદ્ધ દેશભક્ત શ્રીયુત દાદુભાઈ દેસાઈ, કવિચિત્રકાર અને ભક્તરાજ કૃત્યંદલાઈ, કોર્ટના મુનસફ સાહેબ અને સુપ્રસિદ્ધ વયોજીવ સરદાર શ્રીયુત નાનાસાહબ વગેરેની હાજરી ખાસ ધ્યાન ખેંચતી હતી.

પ્રારંભમાં ભગવદીય કવિ પુરોગામમહારો મંગલ મંગલ એ સંસ્કૃત અષ્ટપદી સુંદર સ્વરથી કન્યાશુ રાગમાં ગાઈને મંજવાચરણ કર્યું હતું. તે પછી પ્રજિમાર્ગ ઉપર આલેખ કરનાર આધુનિક વિદ્વાનો સાથે બાખડીને તેમને જ હાથે સંપ્રદાયને ઇન્સાફ અપાવવામાં ફતેહમંદ થયલા અને ખાસ તો “વિકુન્થાનના ઇતિહાસ” માંથી સંપ્રદાયને આંખપ લગાડનારો ફકરો કમી કરાવીને, તેમના લેખક અને હાલ વિદ્યાધનમાં રહેતા ઈ. માર્ડેન સાહેબ પાસે મારી મંગાવનાર એક સંપ્રદાયિક યોદ્ધાસમા ભગવદીય મોહનલાલ લક્ષ્મીભાઈ રાહે (હાલકુલના અધ્યાપક) ધીમદ્-વન્દાવનેન્દુ એ રલોકથી મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે:—“વિદ્યાવિવાસી મહારાજશ્રી અને

વિદ્વદ્ગર્ભ! જગત્માં વિદ્યા એ એક અમૂલ્ય વસ્તુ છે. વિદ્યા એ મનુષ્યનું ભૂષણ છે, ખૂબસૂરત સ્વરૂપ છે, ગુપ્ત ધન છે. વિદેશમાં પણ વિદ્યા એક સાથીતી ગરજ સારે છે. વિદ્યા એ પરમ દેવતા છે. રાજ્યમાં સન્માન પ્રાપ્ત કરાવનારી પણ વિદ્યા છે. એ વિદ્યા મેળવનાર વિદ્વાન જગત્માં પૂજ્ય છે. એ વિદ્યા સંપાદન કરવાનું કર્તવ્ય મનુષ્યમાનનું છે. અમારૂં આ નડિયાદ સમગ્ર ગુજરાતમાં વિદ્યાનું કેન્દ્ર ગણાય છે. સદગત સાક્ષર ગોવર્ધનરામભાઈ, કવિ બાલાશંકર આદિ આ જ ભૂમિમાં જન્મ્યા હતા. સંસ્કૃત ભાષાના વિદ્વાનો પણ નડિયાદમાં થોડા નથી વસતુનઃ કવચિત્વાઢિત્ય એ શ્લોકમાં કહ્યા મુજબ ખરૂં પાંડિત્ય, વેદગતિ, વૈદિક ક્રિયા, ભગવત્-માર્ગનો પરિચય, શ્રીકૃષ્ણમાં પ્રીતિ આદિ સર્વ ગુણો શ્રીવક્ષભાષીધરમાં છે અને આપણા આજના સભાપતિ મહારાજશ્રીએ એ સર્વ ગુણોનો સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો છે. (તાળીઓ.) આજે એ સદ્ગુણોથી આકર્ષાઈને વિદ્વત્સન્માન અહીં ઉપરિચિત થયો છે. આજે શ્રીમાન મહારાજશ્રીને સન્માનપત્ર તથા પદવીસમર્પણ કરવાનાં છે. આ સમાના ઉદ્દેશ પુરતું ટુંકું વિવેચન કરીને ખેસી જવાની રજા લઇશ.”

મુનસંદ સાહેબનું સંભાષણ.

ત્યારબાદ નડિયાદની ઠાટનાં મુનસંદ સાહેબ પરમ ભગવદીય રા. રા. સુનીલાલ લલ્લુભાઈ માળવીએ ટુંકું પણ મુદ્દાસર નીચે મુજબ વિવેચન કયું:—

“મહારાજશ્રી તથા ભાઈઓ, આજે આપણે મહારાજ શ્રીમદ્નિરંજલાયજીને અભિનંદન આપવા બેગા થયા છીએ. મહારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીમદ્દાપ્રજુજીના વંશમાંના હોઇ આપણે સર્વને ગુરુ તથા આચાર્ય તરીકે વંદનીય છે. મહારાજશ્રી રહેણીમાં સાદા છે. એમનો સ્વભાવ વિનયી વિવેચી, હસમુખો ને મળતાવડો છે; અને ધર્મસંબંધી અનેક કાર્યો પાર પાડવાની શુદ્ધ મનીષા ધરાવે છે. એક મહાપુરુષ વિષે બોલીએ તો મહાપુરુષ રૂપે દૃઢ નિશ્ચયવાળા, પુષ્કળ તર્કશક્તિવાળા, મનહરણ કરે તેવા એ મહારાજશ્રી છે. ધમના ગુરુ તરીકે જોઈશું તો, શાન્ત, ધર્મ કાર્યમાં ઉત્સાહી, વિદ્યાચતુર, ધર્મી, ધ્યાની ને મતાગ્રહી છે. દેવદરબારને દેવદરબાર જેવા કરવાનો એમનો ઉત્સાહ સતેજ પ્રકાશે છે. ધર્મવૃદ્ધિ સાથે વિદ્યાવૃદ્ધિનો ઉચ્ચો લોક રાખે છે. શુદ્ધાદૈત સંપ્રદાયના સર્વ ગ્રંથો પ્રકટ થઈ વૈષ્ણવોમાં વંચાય એ એમની મહાઅભિલાષા છે તેઓ શુદ્ધાદૈત સંપ્રદાયનો વિજય, અદ્વૈત પ્રગલ્ભ અને સતેજ કરવાને સદ્દાદિત ઉમંગી જણાય છે. એમનો જય ભક્તિભર્યો પ્રકાર્યો છે, સર્વની પ્રાર્થના એ જ હોઇ શકે કે:—શુદ્ધ ભક્તિ ધર્મની સંવૃદ્ધિ હજો, શ્રીકૃષ્ણપ્રેમમાં લીન થજો.

મહારાજશ્રીને એક જ વિનંતિ કરવાની છે, તે એ કે એઓશ્રીએ ગામના શિક્ષિત વૈષ્ણવો પૈકી ત્રણ ચારને દર આઠવાડીએ આપશીની રૂબરૂ બોલાવવા તથા તેઓ જાતે સેવા કરે એવી તેમના ઉપર છાપ પાડવી. સેવાની રીત સમજાવવી. જરૂર લાગે તો શ્રીકાકોરજીને એમને માથે પધરાવવા. અવારનવાર તેમની જોડે સંપ્રદાયના રહસ્ય આખત વાતચીત કરવી. આ પ્રમાણે આ ધર્મની જ્યાં સુધી લગતી લગાડવામાં આવશે નહિ ત્યાં સુધી જેટલો જોઇએ તેટલો ધાર્મિક ફેલાવો થશે નહિ. જેમ ૮૪ તથા ૨૫૨ વૈષ્ણવો આશ્રયે લેવાયા હતા તે પ્રમાણે હાલના વૈષ્ણવોમાં ભાવ ભક્તિ તથા પ્રેમ જાગૃત કરવાની જરૂર છે.

ત્યારબાદ કાર્યક્રમ મુજબ બે શબ્દ મારે બોલવાના આવ્યા. હું શું બોલું? જે વારંવાર કહેવાયલું તે જ ફરી કહેવું રહ્યું:—“આજે આપણે મહાગુજરાતના એક વિદ્વાન આચાર્યશ્રીને સન્માનવા એકદા થયા છીએ. શ્રીમાન આચાર્યશ્રી શ્રીવક્ષભકુલના એક અવંધાર છે. જન્મદુરુ

શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના એ મહાન્ વંશમાં કેવા અદિતીય વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીઓ પ્રકટ થયા છે એ વાન હવે છુપી રહી નથી. જગતમાં એવો કોઇ પણ વંશ નહિ જ હોય; કે જે મહાપુરુષોના વંશ સાગરમાં વર્ષ સુધી અધિકાધિક જહોજલાલી સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરીને, દેશને ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વજ્ઞાનનું સાહિત્ય-દેવભાષામય સંસ્કૃત સાહિત્ય-અર્પો રજો હોય. શ્રીવલ્લભવંશ તો જગતમાં અનેક જ છે અને રહેશે. વિદેશી અને વિધર્મીઓના પ્રહારો ઝીલતાં, અત્યંત અશાંતિના સમયમાં એ મહાન્ વંશે લાખો સ્તોકનું તત્ત્વજ્ઞાનનું સાહિત્ય ભારતવર્ષને આપ્યું છે. આ ઉપકાર દેશ કદી નહિ જ વિસરે. ઔરંગઝેબના જુલમોના સમયમાં નવ લોખ સ્તોકનું (નવ મહાભારત જેટલું) મહાસાહિત્ય શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજને જ આપ્યું! આવા વિકટ સમયમાં આ કાર્ય દોષ્ટ કરી શકે? સો વર્ષમાં શ્રીવલ્લભવંશના અંચકર્તા આચાર્યશ્રીઓમાં કાશીવાળા નિત્યસીંધાસ્થ શ્રીગિરિ-ધરજી મહારાજ અને કોટાવાળા નિ. લી. શ્રીકન્દેલાલાજી મહારાજ સ્મૃતિપથ થશે. તે પછી શ્રીવલ્લભવંશમાં અન્યકર્તા ઉપનિષદ્વાળ્યકાર તરીકેનું મહાગૌરવ પૂર્ણ સ્થાન આપણા આજના સભાપતિશ્રીએ પ્રાપ્ત કર્યું છે. (તાળીઓ) તેમ જ આપશ્રીના ક્ષાસ્ત્રીજી શ્રીયુન હરિશંકર શાસ્ત્રીએ પણ તત્ત્વજ્ઞાનના મહાભાષ્યો જેવા અથો ઉપર ટિપ્પણ તથા ટીકાઓ લખી તે ગૌરવ સંપાદન કર્યું છે. આચાર્યશ્રી મહાયુજરાતના જ એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી ગણાય. ગુજરાત હવે વિદ્વાનોનું સન્માન કરવા લાગ્યું છે. કવિવર નાનાલાલભાઈને સન્માન્યા, હમણાં જ કવિ જગજીવનનો કનકોત્સવ ઉજવ્યો. તેમાંએ સાક્ષરભૂમિ તરીકે પંકાતી આ નદીયાદનગરીએ આવા એક સમર્થ વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીને સન્માનીને પોતાની વિદ્યાગ્રિયતાનો મળ્બૂત પુરાવો આપ્યો છે. બાકી આ માનપત્રાદિ તો સૂર્યને દીપક દેખાડવા જેવાં જ ગણાય.”

અન્ય વિદ્વાનોનાં વિવેચનો.

વડોદરાવાળા રા. રા. સાકરલાલ શાસ્ત્રીએ સાહિત્યમય સંસ્કૃત ભાષામાં વિવેચન જણાવ્યું કે:—“તમે બધા આ દેવવાણીને મૃતભાષા કહો છો, પણ તે મૃત ભાષા નથી. જ્યાં સુધી વિદ્વાનો જે સંસ્કૃતમાં બોલે છે, લખે છે, તે સંસ્કૃત ભાષાને મૃત ભાષા કેમ કહેવાય? મહારાજશ્રી પોતે વિદ્વાન્ છે તેથી જ આટલી મોટી વિદ્વાનોની મંડળી અત્રે આવી છે. મહારાજશ્રીએ વિદ્યા-ધ્યયન કરેલું છે, વિદ્વાનોના પરિશ્રમને પણ જાણે છે. વળી વિદ્વાનો ખીજને માનતા નથી; તેઓ તો વિદ્વાનોને જ સતકારે છે. આ કાંઈ મૂર્ખોની સલા નથી; પણ વિદ્વાનોની સલા છે. આજે આ સલા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રીનો સમાદર કરે છે.”

ત્યારબાદ વડોદરાના શ્રીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના વિદ્વાન્ શ્રીયુત વિદ્વલભાઈએ વિવેચન કર્યું અને કહ્યું કે:—“મહારાજશ્રી એક વિદ્વાન્ આચાર્ય તરીકે આ સન્માન પ્રાપ્ત કરે છે. સમય ધણેજ વિકટ આવેલો છે. હાલમાં ધર્મનો હાર થતો જાય છે. હાલમાં જ અમારા ગાયકવાડ નરેશ એક હુકમ કાઢીને ટેલંગીના છોકરાંઓને ઉચ્ચ વર્ણના છોકરાંઓની સાથે નિરાળમાં બેસાડવાની જખરદસ્તી કરવા માંડી છે. હાલના સ્વરાજ્યવાદીઓ પણ આવીજ ધર્મ નાશ કરી રહ્યા છે. આવા સમયમાં આવા વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી જે નેતા બને અને જનસમૂહને ધર્મ માર્ગે દોરવે તો અમારા વિદ્વાનો ઉપર ધણે જ ઉપકાર થાય. (અત્રે મહારાજશ્રીએ સંસ્કૃત ભાષામાં કહ્યું કે ધર્મસાહિત જ સ્વરાજ્ય ભગવાન્ શ્રીનંદનંદન ભારતવર્ષને આપશે જ!) (જોશભેર તાળીઓ!) આવા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રી અગારા આ ધાર્મિક અદિલના નેતા બને એવી પ્રાર્થના સાથે વિરમું છું.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ सम्मानपत्रम् ॥

श्रीमन्नन्दनन्दनपादारविन्दमुग्धमधुपायमानाः श्रीमत्पुरुषोत्तमवदनवैश्वानरा-
वतारश्रीश्रीवल्लभाचार्यवंशजोद्गुणे मुधांशुतां विभ्राणाः शुद्धाद्वैतकेसरि-शुद्धाद्वैत-
भूषण-शुद्धाद्वैतसहस्रांशु-शुद्धाद्वैतवाचस्पति-वेदान्तमुधाकर-वेदान्तविद्यालङ्कारे-
त्यादिविविधविरुदावलिसमलङ्कृताः श्रीमदनिरुद्धाचार्याः !

श्रीमत्सकलश्रुतिसीमन्तिनीवृन्दवन्दनीयपादाम्बुजस्य क्षराभरातीतस्य प्रधान-
पुरुषयोर्नियामकस्य योगिभिरचिन्त्यवैभवस्य कर्मभिर्दुराराध्यस्य माहात्म्यज्ञानपूर्वक-
सुदृढस्नेहाख्ययाऽव्यभिचारिण्या भक्त्यैकलभ्यस्यानन्दमयस्य भगवतो गोपीजन-
वल्लभस्य पादारविन्दपरिचरणपरायणैकव्रतानां तात्कालिकसम्प्राप्तमुपलब्धगोस्वामि-
विरुदानां कविकुलकुमुदकलाधराणां श्रीमद्विठ्ठलनाथदीक्षितमहाभागानां प्रथमकुमार-
विठ्ठलमण्डनप्रणयनहेतुभूतश्रीगिरिधराणां कुले जनिमतां तत्कुलप्राप्तपरिपाटीमनुसरतां
श्रीमतां निरन्तरं भगवत्सेवापरायणान्तःकरणमालोकमालोकं भृशं सन्तुष्यते चेत् ।

श्रीमतां निखिलशास्त्रकलावगाहिनीं बुद्धिः, सर्वतन्त्रेष्वदादरः, श्रीशङ्कररागा-
नुजमध्वनिम्बार्कशिवभिक्षुभास्करादिपरस्परविभिन्नमतेषु समानः परिशीलनादरः,
बौद्धजैनयवनस्त्रिस्तादिवेदवाद्यमतखण्डनप्रवृत्तिः, सततं विद्याध्यवसायः, विद्वत्सु
श्रद्धातिशयः, तत्त्वविचारणभ्रमत्वं चेति गुणगणैराकृष्यन्ते विदुषां मानसानि ।

श्रीमतां प्रतिभाशालि पाण्डित्यं विनयं भाग्यानुत्सेकं निरर्थकवाक्कलहपरा-
डमुखीमनवरतग्रन्थरचनव्यापृतिं च दृष्ट्वा सज्जातमनोमहोत्सवैरस्माभिः “पाण्डित्ये”
पदेन विभूष्यन्तेऽनभवन्तः श्रीमन्तः । सम्प्रार्थयामहे च भगवन्तं यदनेन पदाकल्पेन
विभूषिताः श्रीमन्तश्चिरं विद्योतिष्यन्ते विद्योतायिष्यन्ते च स्वधर्मभाषितान्तरां
पाण्डितमण्डलीमिति शम् ।

श्रीमतां वरं वदाः

नटपत्तनम् कार्तिककृष्ण सन्म्यां सौम्ये १९८८.

वाल्लशास्त्री वासुदेवशास्त्री तैलङ्गः

विठ्ठलराम छल्लुराम शास्त्री

पं. ओङ्कारेश्वरः स्मृतितीर्थः

महाशङ्कर हिम्मतराम शास्त्री

महादेव प्रभाशङ्कर जोशी

हिम्मतराम मूलजीभाई भट्ट

हरिकृष्णात्मजवसन्तरामशास्त्री,

शुद्धाद्वैतसम्पादकः

चन्द्रनाथ काशीनाथ शास्त्री

मणिशङ्कर व. उपाध्यायः

शास्त्री साकरलालशर्मा यशेश्वरतनुजन्मा

वल्लोदरा संस्तुतमहाविद्यालयाध्यापकः

गोचर्वन्दनशास्त्री (संस्तुतमण्डलम् नडियाद)

याशिककेसरी शास्त्री अमृतरामोपाध्यायः

हरिभाज नन्दलाल शास्त्री

शास्त्री हीरालाल शर्मा

नाथालालात्मजो भाईलाल आयुर्वेदविशाखः

मोहनलाल काशीराम शास्त्री

हरिदाश्वरः

॥ श्रीवाल्क्यो विजयते ॥

શુદ્ધાદ્વૈતકેસરિશુદ્ધાદ્વૈતવાચસ્પતિશુદ્ધાદ્વૈતમૂળશુદ્ધાદ્વૈતસહસ્રાંશુવેદાન્તસુધાકર
વેદાન્તવિચારલક્ષ્યાદિવિરુદ્ધાવલિખિતમૂલ—
ગોસ્વામિશ્રીમદનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીને

॥ અમિનંદન ॥

શ્રીમદ્બુદ્ધમુખમુક્તાચાર્યલગ્નદ્વંદ્વનવૈધાનરાવતારશ્રીવલ્લભાચાર્યમહાપ્ર-
ભુપૂજ્યપાદવંશાવતંસ વિદ્વત્કેસરી ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહા-
રાજશ્રીના પરમપવિત્રપાદપદ્મમાં પ્રણામપૂર્વક વિનંતિ—

આપશ્રીએ આજ્ઞાસુધી અનેક કષ્ટો સહન કરીને પણ શ્રીમદ્વલ્લભવાક્યસુધામાંભી-
યંતા અવધારણુ માટે તલસ્પર્શી અવગાહન કર્યું છે, એટલું જ નહિ પણ વૈષ્ણવચર-
ઉપર અનુગ્રહ કરી તે સુધાસાગરના નવનીતસારને પ્રાઠવિચારપૂર્ણ અન્યથે પ્રકટાવી
સમ્પ્રતિ વિરાજમાન ગોસ્વામી આચાર્યોમાં એક પ્રતિભાસમ્પન્ન અન્યકાર તરીકેનું અનેક
આઘ માન મેળવ્યું છે.

આપશ્રીએ વારંવાર પ્રવચનો, શાસ્ત્રાર્થો અને ગ્રંથોદ્ધાર સમ્પ્રદાય ઉપર થતા
આક્ષેપોના સચોટ પ્રત્યુત્તરો અત્યંત સરલતા અને આચાર્યને યોગ્ય એવી પદ્ધતિપૂર્વક
આપીને, વૈષ્ણવચરિત્રે ઉપકૃત બનાવી છે; છતાં આવા અનુકરણીય કાર્યો આચાર્યપદને
અનુરૂપજ હોવાથી તે વિરે આપશ્રીના પ્રત્યે માનભરી લાગણી જ દર્શાવી શકાય; કેઈ
પણ વૈષ્ણવ આપશ્રીના આ ઉપકારનું સ્મરણ શબ્દદ્વારા તો નજ કરી શકે.

આપશ્રી આચાર્યભિરુદ્ધને અનુરૂપ સૌહાર્દ, કાર્યક્ષતા, ગુણપ્રાદકતા, ચારિત્ર્ય,
આત્મબલ, અને પ્રપંચવિરમ્ભિતપૂર્વક ભગવદ્ભક્તિરૂપ નિરોધ વગેરે ગુણોનું અધિષ્ઠાન
સ્વરૂપ જ છે.

અમે નદીઆદવાસી વૈષ્ણુઓએ પત્નીસ વર્ષ પહેલાં જે આશા ધરાવી હતી, તે
સમ્પૂર્ણરીતે ફલીભૂત થયેલી દૃષ્ટિગોચર થાય છે.

આપશ્રીએ ગ્રંથો રચી આધુનિક આચાર્યો અને પણ્ડિતોને આ દિશામાં પ્રેરણા
કરી કહેવાય. આપશ્રીનો ઔપનિષદસાહિત્યપ્રતિ કરવાનો શુભ મનોરથ જાણીને આનંદ
થાય છે. અમે આપશ્રીના વિદ્યાભ્યસનને અન્વર્થ થાય એવા “વાણકમળદેશ્વર” પદ્ધતી
સુવલ્લુપદક ગ્રંથ ધરી આપશ્રીનું આ વિદ્યાહોતસવ પ્રસંગે પૂજન કરીએ છીએ.

આપ દમ્પતી શ્રીબાલકૃષ્ણપ્રભુની સેવોમાં તત્પર રહીને ધણાં વર્ષો સુધી વૈષ્ણવ
પંથને સુખ આપો, એમ તેમના ચરણકમલમાં પ્રાર્થના છે.

નરીઆદ.
કાર્તિક કૃષ્ણપક્ષ
સંવત ૧૯૮૮

અમે જીએ આપશ્રીના સેવક,
નદીઆદના સમસ્ત વૈષ્ણુઓ તરફથી

દેસાઇ ગોપાલદાસ વિદ્યારીદાસ પરી. હોટાતાલ સુનીતાલ
દેસાઇ ગિરધરદાસ મંગડદાસ પરી. બડદેવદાસ મથુરદાસ
પરીખ ત્રિકમજી સાંકળચંદ સાહ મગનજી ભાઈજીભાઈ
સુનીતાલ લક્ષ્મણભાઈ માલવી તલાટી હરગોવિંદદાસ પુરુષોત્તમદાસ
વૈષ્ણવ સુખ મંડળ તરફથી

હવે પુરુષોત્તમદાસ ત્રિભુવનદાસ

તે પછી વડોદરાના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન અને 'લક્ષિતસાત્રાન્ધ'ના સંપાદક રા. રા. બ્રહ્મનાથ શાસ્ત્રીજીએ બોલનાં જણાવ્યું કે:—

મહારાજશ્રીનાં પાંડિત્ય અને પ્રાગજ્ઞ, વિદ્વત્તા આદિનો પરિચય બીજાં કરતાં અમને વિદ્વાનોને વધારે હોય. અમે એઓશ્રીના વધુ સમાગમમાં આવ્યા ન હોઈએ તો પણ ઘોડા જ સમયના સમાગમથી એઓશ્રી પાસેથી ઘણું મેળવી શકીએ. અમે જૂની શૈલીના વિદ્વાનો છીએ. એક પુરતક વાંચીએ, તે પછી વાંચીએ. વર્તમાનપત્રોની અમને દરકાર નથી. બ્યારે બીજાં જનસમૂહ છાપાંઓ વાંચવા માટે વર્તમાનપત્રો શોધતો ફરે ત્યારે અમે છાપાંઓની સામુંએ ન જોઈએ. ડોહ છાપાંઓ લાવીને અમારૂં ધ્યાન ખેંચે તો જ વાંચીએ. મતલબકે છાપાંઓને ગરજ હોય તો અમને શોધતાં આવે ! (હસાદસ !) અને છાપાંઓ પણ વાંચીએ તો માત્ર ઉપરચોટીયાં હેડિંગો જ ન વાંચીએ, પણ પહેલેથી છેલ્લે સુધી વાંચી જઈએ; તેમાંની 'શુંદરી સાધી'ની જાહેર ખબર પણ છોડીએ નહિ ! (વધુ હસાદસ.) આવી પ્રકૃતિના અમે વિદ્વાનો છીએ. અમારો વ્યાસંગ માત્ર વિદ્વાનો જ છે. તેથી જ આજે એક વિદ્વાન આચાર્યશ્રીનાં સન્માનાર્થે ઉપસ્થિત થયા છીએ. મહારાજશ્રીમાં વિદ્વત્તા, શુદ્ધિઆપુર્ણ, આયુરુક્તિવ આદિ સમધુર ગુણોનો સંયોગ થયેલો છે. મધ, દૂધ, સાકર, અને દ્રાક્ષ; એ મધુર પદાર્થોની જેમ મધુર ગુણો આપશ્રીમાં અતુલવાય છે. આ માનપત્ર તો કાગળમાં લખાયલું છે, પણ ખરૂં જોનાં તો તે માનપત્ર અમારાં હૃદયમાં લખાયલું છે. ”

તે પછી વક્તાએ સંસ્કૃત માનપત્ર સંસ્કૃતમાં વાચ્યું હતું:—

ત્યારબાદ ગુજરાતની કાશીપુરીસમાન વડોદરાના ગૌરવાવશેષ તૈલગંદેશના મહાન પંડિત વયોવૃદ્ધ શાસ્ત્રીજી બાલશાસ્ત્રીજીએ ઉપરનું માનપત્ર અર્પણ કરતાં જણાવ્યું કે:—ઈંદાવનવિહારી રાધારમજી શ્રીકૃષ્ણના પ્રતિબિંબરૂપ-ભગવતપ્રતિબિંબરૂપ-આપ ગૌરવામી છે. અમે આપશ્રીના ચરણમાં માનપત્ર અર્પણ કરવા મળ્યા છીએ. આ માનપત્ર તો પહેલાં એક વક્તાએ કહ્યું 'તેમ સર્વને દીપક દેખાડવા સમાન છે. દેવાનાપ્રિયોએ પંડિતોનું ગૌરવ કરવા જેવું છે. સંસ્કૃત સાહિત્યના ઇતિહાસમાં માનપત્ર શબ્દ જ નથી. અહીં તો સ્તુતિપત્ર શબ્દ યોગ્ય ગણાય [તાળાઓ.] વાછડાંઓ, ગોવાળાઓ વગેરેને સંતાડનાર બ્રહ્માજીએ બ્યારે પ્રભુનો પ્રતાપ પેખ્યો ત્યારે નૌમીચ એ બ્રહ્મસ્તુતિ કરી. તેવી જ રીતનું આ 'સ્તુતિપત્ર' છે. એ સ્તુતિથી જ ભક્તિ તથા આપશ્રીની કૃપાનો સંબંધ સધાય છે. તેથી આનંદપૂર્વક આ સ્તુતિપત્ર આપના ચરણારવિંદમાં સમર્પણ કરીએ છીએ અને આશીર્વાદ આપીએ છીએ કે આપ ચિરંજીવ રહે ! (તાળાઓ) એ પ્રમાણે સંસ્કૃત માનપત્ર અર્પણ થયા બાદ બ્યારણાઆચાર્ય કીમલાલ શાસ્ત્રીએ સંસ્કૃતમાં મહારાજશ્રીના ગુણગાનનો આશીર્વાદાત્મક શ્લોક વિવેચન સાથે સંભળાવ્યો. ત્યારબાદ ભગવદીય કવિ પુરુષોત્તમદાસજીએ ગુજરાતી માનપત્ર વાંચ્યું:—

ગુજરાતી માનપત્ર રેશમી શાટીનમાં મુંદર રીતે છપાયું હતું, તે નહિવાદના સુપ્રસિદ્ધ સદ્-ગૃહસ્થ રા. રા. છોટાલાલ પારેએ મહારાજશ્રીને અર્પણ કર્યું. અને “પંડિતમંડલેશ્વર” નો સોનાનો આંદ અર્પણ કરવા મથકુર અગ્રેસર સરદાર નાનાસાહેબ શ્રીયુત ગોપાલદાસ વિહારીદાસ દેસાઇ ઉભા થયા. તેમણે કહ્યું કે:—પ્રભુએ અમને કર્મેન્દ્રિયો આપેલી છે તેની આજે સાર્યકના થાય છે. આ હાથથી આચાર્યશ્રીને સુવર્ણપદક અર્પણ કરું છું. વાગ્નિન્દ્રિયથી આપશ્રીની સ્તુતિ કરીને સ્તુતિપત્ર અર્પું છે. અમારામાં કાંઈ યોગ્યતા નથી. માત્ર આપશ્રીના શુભ ગુણોની સ્તુતિ

કરી શકીએ, આમારા હૃદયમાં આપશ્રી મારે જે ભાવ, ભક્તિ, પ્રેમ આદિ છે તેનું આ પ્રતિબિંબરૂપ સુવર્ણપદક આપશ્રીના ચરણમાં સર્પાઈ પડું.”

તદનંતર નડિયાદના નાગરિક અને શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલયના બંધીતા મંત્રી શેઠ મગનલાલ ભાઈભાઈએ હુંકું વિવેચન કરીને મહારાજશ્રીને પુષ્પમાળા ધરાવી હતી.

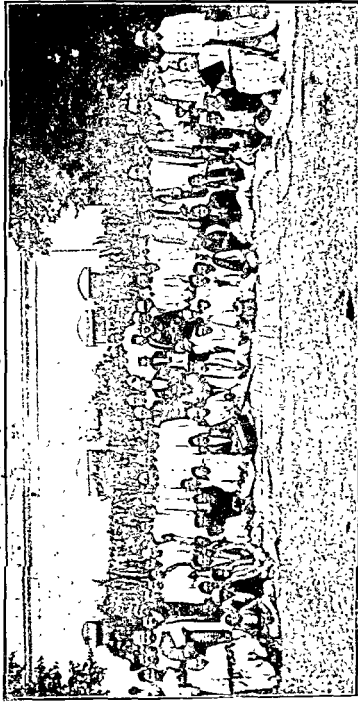
આચાર્યશ્રીનું વવેચન.

આપશ્રીએ છટાદાર મંરૂત બાષામાં વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે;—

વિદ્વાનો, વૈષ્ણવો અને શ્રોતાઓ ! “ પંડિતમણ્ડલેશ્વર ” અને “ પંડિતેન્દ્ર ” નામની જે મહાપદવીથી મને તમે અલંકૃત કરો છો, તેમાં કારણ તમારું સૌજન્ય અને વિદ્યાપ્રિયત્વ જ છે. હું તેવો નથી. હું તો શ્રીવાગીશવાગ્ધારાનિધિ (શ્રીમહાપ્રભુજીની વાણીરૂપ મહાન્ સમુદ્ર) માં માત્ર અવગાહન કરનારો છું. આજે વિદ્વાનોની મંડળીનાં દર્શનથી મહાન્ આનંદ થયો છે. આટલું સંસ્કૃત બાષામાં બોલીને હવે ગુજરાતીમાં દહીંશ. કેમકે અહીં વિદ્વાનો ઘોડા છે જ્યારે સંસ્કૃત બાષા નહિ સમજનાર વર્ગ ઘણો છે. એની વચ્ચે સંસ્કૃતમાં બોલતાં વેરચ્ચ પ્રાપ્ત થાય. તેથી ગુજરાતીમાં બોલવું અનુચિત નહિ જ ગણાય. હું પ્રભુને પ્રાર્થના કરીશ કે આતું વિદ્વત્સંભવન વારંવાર યાઓ. (ગુજરાતીમાં) આજે વિશેષ હું શું કહી શકું ? પરંતુ એટલું તો નિઃસંશય જ છે કે નડિયાદની જેવી પ્રાંતિ પહેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ હું જોઉં છું. આ સમારંભ એ તેનું પ્રત્યક્ષ ચિહ્ન છે. હું કાંઈ તેવો વિદ્વાન નથી. તો પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાથી તેઓશ્રીની વાણીનો આનંદ પ્રાપ્ત કરું છું. આપ સર્વનો મારા ઉપર જે પ્રેમ છે તેમાં પણ કારણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપા જ છે. વળી જ્યાં સ્વાર્થ હોય ત્યાં પ્રીતિ ન્યૂન તથા અધિક થાય, અહીં તેવો સ્વાર્થ સંબંધ નથી. તેથી જેવી પ્રીતિ પડેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ છે. વળી મારા ઉપર આપ લોકોની પ્રસન્નતા જે દેખાય છે તેનું કારણ પણ આપ લોકોમાં શ્રીમદ્વાચાર્યચરણ-કમલમાં અને ધર્મશાસ્ત્રમાં સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા છે તે જ છે. આજ કારણથી મારા તરફ આંટલો પ્રેમ તમે દર્શાવ્યો છે. કાલ કેવો કરાલ છે તે આપ જાણો છો. આવા સમયમાં ધર્મ તથા ધર્મોચરણાદિમાં આપ સર્વની સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા પ્રભુ રાખે એવી પ્રાર્થના છે. સાંપ્રદાયિક ગ્રંથોનું પદનુંપાઠન પ્રચલિત યાઓ. સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતો તરફ અભિરુચિમાં અભિગ્રહિ યાઓ અને વાણીના પંતિની (શ્રીમહાપ્રભુજીની) વાણીનું રદચ્ચ જાણવા અને સ્વકર્તવ્યપરોપણ થવા છુદિને પ્રશ્ન પ્રેરો એ જ અભિલાષ છે. ”

તે પછી જાણીતા વૈષ્ણવ વહીશ અને સદ્ગત તેવીવાલાના મિત્ર રા. રા. બહેચરદાસ વહીશ ખી એ. એચ.એચ. ખી. એ મહારાજશ્રીનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત રજૂ કરી હતી, અને આપશ્રીની વિદ્વાતાને લાભ અર્દીના કેળવણી વર્ગને મળે તેવી વિનંતિ કરી હતી. (આ સમયે મહારાજશ્રી સાથે વિદ્વાનો વાર્તાલાપ કરી રહ્યા હતા તેથી વક્તાએ આ વિનંતિપર આપશ્રીનું ફરી પાન જેમ્થું હતું !) મહારાજશ્રીએ આ વિનંતિ સ્વીકારી હતી. તે પછી એક યુવક વૈષ્ણવ અભ્યાસી ભાઈ ગિરિધરલાલે યુવક બંધુઓ તથા અન્ય તરફથી આજના મહાન્ સમારંભમાં કાંઈ ટુટી થઈ હોય તો તે ક્ષમા કરવાની વિનંતિ કરી હતી. હતી તે પછી મહારાજશ્રીના ‘ જય ’ ઘોષ વચ્ચે સભા વિસર્જન થઈ હતી.

गुजरात



श्री कन्द्या प्रभुना प्राकृत्य भडोलस्य प्रसंगे नंदीयामां लघवदीप्य शैव मोहनदास आपादावना अंगदामां देवायलु
गुजरातना वैजययामाजन्तु विम.

વૈદક-વિજ્ઞાન.

(આપ સંસ્કૃતિમાંના આયુર્વેદવિજ્ઞાને જગતમાં જે સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે, તે સ્થાન કોઈ પણ સંસ્કૃતિતનું તે વિજ્ઞાન પ્રાપ્ત નહિ જ કરી શકે. પણ હાલમાં વિદેશી સત્તા, વિદેશી શિક્ષાના પ્રભાવે દેશનું પ્રાણસમ એ વિજ્ઞાન હુતપ્રાય થવા લાગ્યું છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં તો એનાં રક્ષણ માટે વૈષ્ણવ જીવનજ એવું વ્યવસ્થિત કર્યું છે કે સદજમાં જ એ વિજ્ઞાન સુરક્ષિત રહે. કોઈ પણ સુસ્ત વૈષ્ણવ પ્રાણુનું પણ વિદેશી દવાઓનો સ્પર્શ પણ નહિજ કરે. આપણા ઘરનાં તો ડોસી-ડગરા પાઈ એ પાછની દવામાં મોટાં મોટાં દર્દો દૂર કરતાં હતાં ! પણ હાલમાં તે સ્થિતિ નથી. તેથી આ વિભાગ શરૂ કર્યો છે, જાણીતા જાગવદીય મોતીભાઈ (મોતીદાસ) આ વિષય પર અવારનવાર લખશે. તેઓ વંશપરંપરાના વૈદ છે. તેમની દવાઓ, તુરખાઓ અનેકવાર અતુલવેદા છે. આશા છે, કે 'શુદ્ધાદૈત'ના વાયકોને આ વસ્તુ રુચ્યા વિના નહિ જ રહે તંત્રી.]

અશક્તિ—આજકાલ કુનિયા શેની માજણી કરી રહી છે ? નિર્જાતા, અશક્તિ, વીર્યદોષ, ક્ષીણતા વગેરે નષ્ટ થઈ શરીરમાં સારામાં સારી શક્તિ માગે છે, માટે નીચે પ્રમાણે તુરખા આપ્યા છે.

૧. માજળી ગોખર, એખરો, જેડીમ્બ, ગંજેડી, આહન, યુમળી, કેત્યા, સર્વ સમલાગે લઈ તેનું ચૂર્ણ કરી તેના બરાબર ઘીમાં શેકી તેથી આઠ ધણા કુદમાં માવો કરી, સર્વથી જમણી સાકર નાંખી લાકુ બનાવી ખાવાથી ઉપરની ફરિયાદ બંધ થાય છે.

૨. અકચગરો, સુંક, લર્વીંગ, કેસર, પીપર, જામ્બુજ, જાવંત્રી, સુખડ દરેક એકેક તોસો લઈ તેનું ચૂર્ણ કરી તેમાં ૪ તોલાબાર ચોખું અરીણી નાંખી તેની પાંચ પાંચ રૂતીઆરતી ગોળા વાળી રાખવી. તેમાંથી હમેશાં ૧ ગોળા રાતે મધ સાથે ખાવાથી વીર્ય સ્તંભન થાય છે.

૩. વડના દૂધને પતાસામાં સાત દીપાં નાંખી સાત દિવસ ખાવાથી શુદ્ધિ થાય છે.

૪. સુંક તો. ૧, આહન તો. ૨, વરધારો તો. ૩નું ચૂર્ણ કરી એ આનીઆરથી પાવથીઆર સુધી ફાકી મધમાં લઈ ઉપર દૂધ પીવાથી ધાતુપુષ્ટિ થાય છે.

નપુંસકત્વ માટે—૧. ઘોળા કરેણના મૂળને ગધેડાના મૂત્રમાં ધસી તેનો લેપ કરવાથી પુરુષત્વ પ્રાપ્ત થાય છે. આ લેપ પ્રથમ ઘી ચોપડી કરવો અને લેપ ઘોવા પછી ઘી ચોપડવું.

ઘોળા કુંગરીના રસમાં અજમો પલાળી તે દરરોજ ૧ તોલો, સાકર ૨ તોલા એ પ્રમાણે ૨૧ દિવસ પીવાથી નપુંસકત્વ દૂર થાય છે.

અગ્રેજી ઉપચારો—મેઝેશ્યા સલ્વાસ ૩ ગ્રામ, દીંચર જીંજર ૫ દીપાં, દીંચર સેનાકો ૧ ગ્રામ, દીંચર કારકમકો ૫ દીપાં, સોડા સલ્વાસ ૩ ગ્રામ, પાણી ૧ ઓસ. મિક્સ કરી એકી વખતે પી જવું. ત્યારબાદ સાત દિવસ પછી નીચેનું મિશ્રણ પીવું.

એસીડ નાઇટ્રો હાઇડ્રોક્લોરીક ડીસ્યુટ ૧૫ દીપાં, દીંચર નક્સલોંગીકો ૨૦ દીપાં, દીંચર કેથેલા ૧૫, એકેલા મેન્થા પીપરેટા ૩ ઓસ મિક્સ કરી દિવસમાં ત્રણ વખત થઈ પીવું.

સાધારણ પ્રકારના નપુંસકત્વપણામાં આહારવિહાર અતિશય કરવાથી થયેલા નપુંસકત્વને દૂર કરે છે. બ્રહ્મચર્ય પાળવું. યોરાક હલકો ને પોષણકારક લેવો.

યુનાની તુરખા—તુખમરીદાન (તકમરીયા) તેની ઝીણી છુકી કરીને તેમાં તેના બરાબર વજનને ગોળ મેળવી એકેક પૈસાભારની ગોળા હંમેશાં ખાવાથી બદન મોટું થાય તથા ધાતુ સ્તંભન થઈ શકતી આવે છે.

અરીણી, જામ્બુજ, જાવંત્રી, ખપૂર ચાર સરખે ભાગે લઈ તેને ખારીક વાટી નાગરવેલના પાનના રસમાં ઘુંટી ૧ વાલની ગોળા કરવી. રોજ એક ગોળા લઈ દૂધમાં પીવાથી શક્તિ આવે છે.

પ્રમેહ માટે—ગળા, ગોખરૂં, આંમળાંને સરખે બાગે લઘુ પાણી સાથે અગર ઉઠાળીને પીવાથી પ્રમેહ મટે છે.

કંપાલના કીડા—કુકડવેલાના પાનના રસનું નરસ્ય (સુંઘવાથી) આપવાથી પીડા દૂર થાય છે. ગર્ભધારણુ પ્રયોગ—ગાભણી ભેંસના દૂધમાં બકરીનું મૂત્ર નાંખી પીવાથી મર્ભ રહે છે. રજસ્વલા થયેલી નારી વડની વડવાઘને ગાયના ઘીમાં પીએ તો ગર્ભધારણુ થાય છે.

વંધ્યત્વના ઉપાય—આંબાહળદર, સૈંધવ, તથા ખાંડનું છુરૂ આ ત્રણે તોલો તોલો લઘુ ખાંડી વચ્ચેગાળ કરી સ્ત્રી રજસ્વલા થાય એટલે પહેલા દિવસથી ત્રીજા દિવસ સુધી સવારમાંજ પાણી સાથે તો. ૦ા ફાટી જવી. (દર દૈનિક ૦ા તોલો એટલે ૭ દૈનિકમાં ત્રણ તોલા ફાટી ત્રણ દિવસમાં લેવી. ચોથા દિવસે સ્નાન શુદ્ધિ કરી નીચેનું ઔષધ લેવું. સાચાં મોતી દાણા ૭, શિવલિંગી દાણા ૭, શંખાવળી (શંખપુષ્પી) માસા ૭, મીથી (સાકર) માસા ૭, સફેદ શર માસા ૭, ઘોળી રીંગણીનાં બીજ માસા ૭. શિવલિંગી તથા મોતી સિવાયની ચીજોને ખાંડી વચ્ચેગાળ કરી ૭ પરીકાં કરવાં અને મોતીને લીંબુમાં પલાળી ગુલાબ જળથી વાટી પિષ્ટ છુરૂ વારંવાર ચાળી રાખવાં. પછી પતિપરાયણુ અને સંતતિ માટે આપુર એવી સ્ત્રીએ પતિની આગળ લઘુ પ્રથમ સુચ સામે મુખ રાખી પ્રથમ શિવલિંગીનાં દાણા ૭ ગળી જઈ ઉપર મોતીનો પિષ્ટ તથા તૈયાર કરી રાખેલી સાત પરીકામાંથી એક લઘુ ગાયના ઠંડા દૂધ સાથે પીવું. પથ્થ-તેલ, મરચું, ખટાસ બંધ. દૂધ સાકર ધીવાળે સાત્ત્વિક ખોરાક ખાવો. આ પ્રમાણે ત્રણ માસ સુધી કરવું એટલે દરેક માસે ઋતુના ત્રણ દિવસ આંબાહળદરવાળી છુરૂ અને ચોથા દિવસથી નંનર બીજવાળી દવા લેવી. વધુ ખુલાસા માટે નીચેને ઠંકાણે લખેા.

દૂરસ માને મસા, હીસ્ટીરીઆ, સંગ્રહણી, ધાતુક્ષય તથા સ્ત્રીઓના મર્ભાશય સંબંધી તમામ દરદો માટે અક્ષરી દવાની શોધમાં નિરાશ થયેલાને જણાવવાનું કે તેવાં દરદો મધ્યમ તથા ગરીબ વર્ગના માણુમે માર્તે શ્રીમાં ધણીજ રહેઘીયત રાખી મટાડવામાં આવે છે અને શીઆળાની અજ્ઞ મત્રાઓ અમારે સાં મળે છે. શીઆળામાં શોખીનો માટે અંબર કરતૂરી-વાળા અમીરી મત્રાઓ અમારે સાંથી લઈ એક વખત વાપરી ખાત્રી કરો. ચાલુ ઋતુમાં નીચે પ્રમાણે નિયમે પાળવાથી તનદુરસ્તી મેળવી શકાશે. કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ એ બે માસને હેમંત ઋતુ કહે છે, આ ઋતુ માણુસના શરીરમાં બળતી વૃદ્ધિ કરે છે. આ ઋતુમાં મધુર એટલે ગળપણવાળા તથા ખાટા અને ખારા પદાર્થો ખાવા. મધુર રસ કફને વધારે છે અને કફ વધે તોજ પ્રવળ થયેવ જઠરાગ્નિનું અરાખર પોષણુ થાય. મધુર રસની રુચિ ઉત્પન્ન કરવા માટે ખાટા અને ખારા રસવાળા પદાર્થો ખાવાની જરૂર છે. વળી બીજી રીત એમ પણ છે કે હેમંત ઋતુના ૬૦ દિવસોમાના પ્રથમ ૨૦ દિવસોમાં મધુર રસવાળા પદાર્થો વધારે પ્રમાણમાં ખાવા. તે પછીના ૨૦ દિવસોમાં ખાટા રસવાળા અને છેવટના ૨૦ દિવસોમાં ખારા રસવાળા પદાર્થો વિશેષ ખાવા. હમેશા ત્રણેય રસવાળા પદાર્થોને ઉપયોગ કરનારે બોજનમાં પ્રથમ મધુર પછી ખાટા અને પછી ખારા રસવાળા પદાર્થો લેવા. એટલે કે પ્રથમ મિષ્ટાન્નને કોળીએ પછી લીંબુ, કેકમ કે રાઇ અગ્નેય દાળ, શાક, રાયતું કે ખાંડું અથાણું હોય તેના એક હાથ લેવો અને ચટણી પાપડ વગેરે પદાર્થો છેદ્ને ખાવા. , બે આ ક્રમને લાગ કરી વિપરીત ક્રમમાં ખાનારને નુકશાન થાય છે. સામાન્ય રીતે લીખા અને દુરા પદાર્થોનું સેવન, ખુદ્ધી જગ્યામાં સૂવું, ઠંડા પાણીએ ન્હાવું, દિનને મન, અને જુલાબ એ આ ઋતુમાં નુકશાનકારક છે માટે તેના લાગ કરવા.

૨. સારી રીતે પોષણ કરે એવો પુષ્ટિકારક ખોરાક, પૌષ્ટિક ઔષધો, પૌષ્ટિક પાકો, ગરમ કપડાં અને સખ્ત તાદ વખતે સગડી, સીસેવન, તેલાબગ, કસરત એ આ ઋતુમાં શાયદકારક છે.

ઉપર બતાવેલ પૌષ્ટિક ઔષધોમાં અંબર કસ્તૂરીવાળી રાજવંશી માત્રાઓ અમારી પાસેથી કીકાયતે મળી શકશે, કેમકે એવી માત્રાઓ વંશપરંપરાથી અમારા ઘરમાં બનતી આવે છે અને તે માટે અમને મોટી જગીર મળેલી છે માટે નીચેને ટેકાણે મળે અથવા લખો. અમને મળેલ અનેક સદીશીકેટાં પૌષ્ટિક ખંડવાના પ્રખ્યાત શેઠ મોહનલાલ પ્રાગજી લખે છે કે “અમારા ઘરમાંથી નામે અ. સૌ. જેઠુંવરને લોહીવા તથા ધાતુલક્ષ્મી બીમારી લાગેલી હતી જેને માટે ખંડવા, ઇંદોર, મીરજ વગેરે રથો પ્રખ્યાત દાકરો તથા વૈદોની દવા કરાવવા છતાં આરામ ન થયેલો પછી અમદાવાદવાળા વૈદરાજ મોતીલાલ મહાશંકર પાસે દવા કરાવવાથી સદરહુ બાકને તદ્દન આરામ થઈ ગયો અને પ્રજ્ઞક્રપાથી પુત્રની પ્રાપ્તિ થઈ છે.”

ડે. સારંગપુર, કોઠડીઆની પોળ સામે, } વૈદરાજ મોતીલાલ મહાશંકર L. W. T.
અમદાવાદ. } (સંપ્રદાયીના ખાસ વૈદ-રાજકાવાળા)

મહાન પરોપકાર—એક વખત રૂ. ૫) ભરવાથી હીરદીરીઆ જેવા બચકર દરહ માટે મદત દવા આપવામાં આવે છે.

હમની સાકર.

મોરસ ખાંડથી આપણે અભગ્રામ્ય છીએ. આચારવિચારોમાં આપણે ઉત્તમ સ્થાન મેળવ્યું છે અને અત્યારે પણ તે સ્થાન શોભાવી રહેલા છીએ. આર્યસંસ્કૃતિમાંની ઉત્તમોત્તમ સ્વદેશી ભાવનાનાં દરેક અંગનો વિકાસ કરવાનો દાવો અત્યારે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવો જ કરી શકે. તે વખતે “સોનાની યાળામાં લોહાની મેખ” ની માફક આપણે ત્યાં જે મહાન ભ્રષ્ટાચાર ચાલી રહેલો છે, તે તરફ શા માટે આંખમીચામણ ચાપ છે? ચીન દેશમાં, ગોમાંસભક્ષક ચીના લોકોને હાથે બનેલી હમની સાકર આપણે શા માટે વાપરીએ? આપણા મંદિરોમાં શા માટે તે ધર કરી રહી છે? જે મોરસ ખાંડ છોડવા માટે બરાબ પાઠનારા આપણે એજ મોરસ-માંથી બનેલી હમની સાકર શા માટે વાપરીએ? જે હમની સાકર આપણા બધા મંદિરોમાં વપરાય તો પછી મોરસ ખાંડ શા માટે ન વાપરવી? આશા છે કે શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર આદિ શ્રીગોસ્વામિબાળકો આ વિકટ સમસ્યા વિષે વિચાર કરશે અને આપણાં બધાં મંદિરોમાં પેટેલા આ પ્રલંભ ભ્રષ્ટાચારને બંધ કરવા આદા કરાવશે.

આ વિષે ઉજ્જૈનવાળા મુખસિદ્ધ હાધિકાર્ટ વકીલ શ્રીયુત જમનાદાસજી ગ્રાહાની એમ. એ. એલ.એલ. બી. લખે છે કે:—

एक आवश्यक बातकी तरफ आपका ध्यान आकर्षण करनेकी परवानगी लेता हूं.

गये सालमें घम्बई गया, तो मेरे एक सगे रामानुज सम्प्रदायके यहां रहते हैं, उन्होंने मुझसे कहा कि आपके सम्प्रदायमें जहां आचार—विचार आदर्शरूपमें हैं, इतनी बड़ी मोल है कि परदेसी मिश्री मंदिरोंमें, अंगीकार होती है। इसको आपने बन्द करना चाहिये, मैंने इस बातको सचा नहीं माना तो वे बोले कि आपके मालवेकी तरफ न आती होगी, परन्तु यहां आप तलाश करना। डोमकी मिश्री नामकी मिश्री सेकड़ो हजारों मन आपके साम्प्रदायिक मंदिरोंमें जाती है. मैंने श्रीमद् गोस्वामीश्री १०८ श्रीगोकुलनाथजी महाराजसे रूबरूमें विनति की तो आपधर्मे स्वीकार किया कि यह मिश्री तो बहोत वर्षोंसे आती है. और चीन देशमें पेड़ रससे बनती है

तो मुना है. मैंने विनंति की कि इसको बन्द करना आवश्यक है. वहां बम्बई में तो किसी वैष्णव मंदिरमें सामग्री पहुंचाना हो तो अमुक सेर मिश्री भेजनेका रिवाज है. आपश्रीने आज्ञा की कि हमारे यहां से अधिकी तो श्रीनाथद्वारमें अंगीकार होती है. हमारा बन्द कर देना तो कुंजर-स्नानवत् निष्फल है। मैंने विनति की कि श्रीनाथद्वारमें भी बन्द कराना चाहिये; क्योंकि आठ मूमफली जैसे कंद भी भारतवर्षमें आ जानेके सेकड़ों वर्ष बाद बड़ी छानबीन तपास होकर अब थोड़े वर्षसे अंगीकार होने लगे हैं, वहां प्रत्यक्ष विदेशी शकरकी बनी हुई मिश्री कैसे ली जा सकती है? फिर भी आपश्रीने बराबर ध्यान नहीं दिया. मुस्त उतरा, तो वहां श्री१०८ श्रीवज्रल-खलजी महाराजने स्वीकार तो किया, परन्तु आगे क्या व्यवस्था की गई इसका पता नहीं है. श्रीजीद्वार तो अब तक नहीं आ सका, परन्तु बम्बई फिर भी विनतिपत्र लिखा तो श्रीगोकुलनाथजी महाराजका आज्ञापत्र आया कि यह मिश्री अशुद्ध है, इसका प्रमाण क्या है सो लिखो.

प्रमाण तो मुझे नहीं मिला परन्तु यह मिश्री चीनसे बनकर आती है; यह सब व्यापारी जानते हैं. मैंने केतकरके मराठी विधकोषमें देखा था, और आखिसे देखकर आये हुये कुछ लोग भी विश्वासपूर्वक कहते हैं कि जावा शकर शुद्ध होती है. पहले किसी जमानेमें जो अशुद्ध वस्तुओं-द्वारा शुद्ध की जाती थी. वैसा अब नहीं होता अब दूसरी विधिसे शुद्ध होता है, जिसमें कोई अशुद्ध पदार्थ नहीं लिया जाता, परन्तु इस कारणसे भी जावा शकर हमारे यहां स्वीकार नहीं की जा सकती, फिर परदेशी मिश्री कैसे ली जानी चाहिये.

मंदिरोंमें अन्य सामग्री सिद्ध होनेके लिये शकर गलाकर चासनी करनी पड़ती है ऐसे मिश्री क्यों नहीं सिद्ध की जाती है? यहां कुछ मंदिरोंमें तथा ग्रामाणिक वैष्णवोंके घरमें यही होता है. कुछ ठिकाने बनारस शकरकी मिश्री बनानेवालेके यहांसे विश्वासकी मिश्री मंगाई जाती है, जैसे मधुरा, छखनड, काशी पुष्करमें मैंने देखा है. सामग्री पहुंचानेवाले यहां शकर पहुंचाते हैं, मिश्री नहीं पहुंचाते.

तत्पर्य यह कि परदेशी मिश्री एकदम बन्दकर देनेसे कोई कार्य रुक नहीं सकेगा.

आशा है आप स्वतः तथा अपने मासिकद्वारा इसके बन्द करानेका प्रयत्न करेंगे. क्योंकि अन्यमार्गीय लोग निन्दा करते हैं और बड़ा भारी अनाचार फैलता है.

પ્રાસંગિક નોંધ.

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુપ્રાકટયોત્સવ.

નિત્યધીલસ્ય રસિકચિરોગણિ શ્રીગોકુલચરવરપ ગો. શ્રીકૃષ્ણદાસજી મહારાજશ્રીએ પંચમહાલમાના વૈષ્ણવો પર જે રસવર્ષા કરી છે તેનાં ફલનો અનુસર આપશ્રીના પ્રાકટયોત્સવના રોજ અમદાવાદમાં થયો. ગોલોકવાસી રોક અચાલાઈએ આવોજ આનંદ અહીંના વૈષ્ણવોને ફેલવાક વધે પહેલા આપેયો, પણ ધનાઢય વૈષ્ણુર્વાણી ભરેલા આ શહેરમાં આવા ભજનાનંદનો રસોરવાદ લેવા કોણ તલપાપડ છે ? ભજનલ-દારાનંદ પાસે ભજનાનંદને કોણ સંભારે ? છતાં પરમ ભજવદીય રોક મોહનદાસ આપાદાસ તથા અહીંના શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરના મુખ્યાજી શ્રીયુત દાદાજી એ જાનેની વિત્તજ-તનુજ સેવાના અસાધારણ સંયોગથી અણધાર્યો અદ્ભુત આનંદ જાન્યો. શ્રીકૃષ્ણપ્રભુનું પ્રાકટય તેા જન્માષ્ટમીને મહામંજલમય દિનેજ છે, પણ ૩ માસની નાની વયમાંજ આપશ્રી શ્રીગોકુલજીના ધરમાં ગોદ બિરાજ્યા. તેને પ્રાગટ્ય મહામહોત્સવ કાર્તિક વદ ૧૧ નો મનાય છે. શ્રીગોકુલજીની અનન્ય સન્મુખ સૃષ્ટિમા આજે વેળેર આનંદ પ્રસરી રહે છે. આ ઉત્સવ ઉપર મુખ્યાજી દાદાજીએ ગામેગામથી વૈષ્ણવોને કુંકુમપત્રિકા લખીને તેડાવ્યા હતા. હાલોલ, ગોધરા, દેવજડભારીઆ, દાહોદ, હાલોદ, નડીયાદ, આદિ અનેક રચળેથી વૈષ્ણવો મોટી સંખ્યામાં અહીં આવ્યા હતા. લગભગ આ ઉત્સવ માટે એક માસથી તૈયારીએ ચાલી રહી હતી. ઉત્સવના ચાર દિન પહેલેથીજ વૈષ્ણવો અહીં આવવા લાગ્યા હતા. તેમને હતરવા વગેરેની બચરયા હતમ હતી, અને આવા સમાજસભ્યે કેવો સત્કાર કરવો એ રીખવા જેવું હતું. પ્રતિદિન રાત્રિના જો-ત્રણ વાગ્યા સુધી ભજનાનંદના મહારસસાગરમા ભરતી આવતી હતી. અહીં બિરાજતા શ્રીગોરવામી બાલકોં પણ પધાર્યા હતા. પ્રભુ પાસે મહાદેવલીલા, દાટીલીલા આદિ લીલાઓ ચલી હતી. ઉત્સવના રોજ નંદમહોત્સવનો આનંદ તેા અવર્ણનીય હતો. નંદમહોત્સવના મહારસની જગ્યાવટ કરનાર ગો. શ્રીમંતુસૂદનદાસજી મહારાજશ્રી પણ પધાર્યા હતા. આજ દિવસે દાટીલીલા તથા મહાદેવલીલા પણ ચલ હતી. રાત્રે કીર્તનસમાજ મંદિરમાં તથા ભજવદીય મોહનદાસજીને ત્યાં થયો હતો. એ રીતે ઉત્સવના દિવસો ચિરમરણીય જાન્યા હતા. કાર્તિક વદ ૧૨ ના રોજ નરોડાની શ્રીવલ્લભાધીશ્વરની જોડકમા પલ્લનાનો મનોરમ થયો હતો. આજે બધાએ અહીંજ મહાપ્રસાદ લીધો અને સમાજ થયો. સાંજે રોક મોહનદાસજીના જન્મવામાં સર્વ ભજવદીયના ફેટા પડાયા. જે આ અંકમાં જાણ્યા છે. એ રીતે આ મહોત્સવ-સમારભના સુમંતુર રમણેા દુહ્યમાંથી કદી વિસરાયે નહીં. ભજવદીય મોહનદાસજી તથા મુખ્યાજી દાદાજી આવોજ આનંદ વૈષ્ણવોને આપે એ અશિલાપા સાથે વિરમીશ.

કરનાર દેશસંકત વહનસાધ પટેલને મરનહીના વૈશ્વવેના ઠાકરા ઠેરવી અને તેમની અહિંસાની નીતિ સાથે શ્રીમદ્દામ્રજીના સિદ્ધાંતોના સંબંધ ડોઝા બેસાડીને તેમણે પોતાની પાટીદારશાહીની સીમા બતાવી નાંખી । અલગત, તેઓ ગમે તેવા મહાન દેશનેતાઓ હશે, પણ ધર્મની દૃષ્ટિએ તો તેઓ હોંદુ નજ ગણાય. વળી શ્રીમદ્દામ્રજીએ જેન તથા બૌદ્ધ જેવી અહિંસા માની પણ નથી. રજી ચડતા ક્ષત્રિય રાજ્યોને પ્રસાદી ઉપરણા બેસાડીને શત્રુદેવનો સંહાર કરવા વિદાય કરનારા આચાર્યશ્રીના સંપ્રદાયમાં હાલની અહિંસા જેવું તત્ત્વ હોય ન નહિ. અત્યારની અહિંસા તે ધર્મના અંગરૂપ નથી, પણ કૃત રાજનીતિરૂપ છે. આવા સંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોનું ખૂન કરનારા લેખો માટે પણ દીનકિંકરને જે કષ્ટકો આપ્યો, પણ એઓ તો સર્વજ્ઞ (૧) બની ગયા છે । તેમના ગળામાં એ વાત ઉતરી નહિ. હું શ્રીનંદમહોત્સવ કાંકરેલીમાં કરીને ૭ મારે અમદાવાદમાં આવ્યો. તે પછી કાર્યાલયની ગેરવ્યવસ્થા ઉપર ૨૫કે જેઈ, ઘણેજાં જેઠ થયા, તે માટે તેમને સખત કષ્ટકો આપ્યો. તે પછી હું સીમલા ગયો, એટલે પાછળથી તેઓ કાર્યાલયમાંથી નદારી ગયા તે હાલ સુધી મને ગદાં બતાવતા નથી । જે તેમનાં હાથેના લખેલા ૭ માસનો ચોપડો ભેંચો. વી. પી. તથા મનીઓડરોની કાપલીઓ, નોંધ અને શાહકોના કાગળો વગેરે મેળવ્યાં. દિવસો સુધી ઉભચાં ક્યાં અને તળીયત ખજાણ કરી । આખરે લવાજમો તથા ભદેર ખજારોનાં નાણાં, તે પણ પાંચ રૂા રૂપિયા ન નહિ પણ લગભગ સો ગરો રૂપિયા ઉચાપત કરેલા ભેંચા. વળી ચોપડામાં એમ લખેલું કે “રૂા ૫૧) લવાજમના જમા” પણ તે કાના ? તેનો ખુલાસા લખવાની કુરસલ તેમને ક્યાંપી હોય ? છતાં મહાન પ્રયાસે તે મેળવ્યાં. પછી લવાજમ નહિ ભરનાર છસો શાહકોને જે ‘પોસ્ટ કાર્ડ’ મોકલ્યાં. તેમાંથી કેટલાકના જવાબો મળ્યા કે, અમે દીનકિંકરને પૈસા આપ્યા છે. આ ઉપરાંત કાર્યાલયમાંથી પુરતકો તથા ચિત્રો વગેરેનો પણ હીસાબ મલ્યો નથી. આ પ્રમાણે પોતાની ખેસવાની ડાળ ઉપર કુવાડો મારવાની તેમની વર્તણૂકથી હું હેમતાઈ ગયો, મને સહન શરસો આવ્યો અને તેમને પોલીસ કાર્ટમાં ધસડીને સત્ત કરાવવાનો નિશ્ચય કર્યો, પણ મિત્રોએ દલ્લ રોક્યો છે. દલ્લ તો નવાનવા ગોડાળા નીકળતાજ નય છે. ગયા કાર્તિક વદ ૬ ના તેઓ અમદાવાદમાં આવ્યા અને જેમને ત્યાં ઉતર્યા, તે ભગવદીય મૂળજીસાથ પ્રાંતીજવાળા મારી પાસે આવી ગયા. તેમણે તથા નડીઆદના ખીલ બંધુઓએ દીનકિંકરના ચોપડા અને ગોડાળા ભેંધને તાલુખીજ બતાવી છે. બાઈ મૂળજીસાથએ દીનકિંકરને ધણું કહ્યું, પણ તેઓ ગદાં બતાવે ન ચાના કે હવે તો નહાસતાજ ફરે છે । મહામુસીબતે પાંચ વર્ષના સતત પ્રયાસ પછી પ્રભુકૃપાએ આ કાર્યાલય કાંઈક ઠેકણે આવ્યું, ત્યાં આ હાલત યદ્ય છે. દીપોત્સવાંકને પણ શી રીતે શબ્દમારી રાકું ? રંગીમ ચિત્રોનું ખર્ચ ક્યાંથી કફે ? આ મારી કછણ કહાણી છે. દીનકિંકરને પરમભગવદીય માનનારાઓ મારા પર નારાજ થયા છે. તેમને વિનતિ છે કે, તેઓ કૃપા કરીને કાર્યાલયમાં પધારે, જો ઇચ્છા હશે તો હું ગાડીવાડું પણ તેમને આપીશ. એલતા કાગળો ઉપરથી દીનકિંકરના આ ગોડાળા લુએ. દલુએ દીનકિંકરના મિત્રો તથા પ્રશંસકોએ વચ્ચે પડીને દીનકિંકરને સમલવવાની જરૂર છે. મારો હોય મને ન જણાય. છતાં જો મારો હોય લાગે તો મને પણ શિક્ષા કરવાનો તેમનો અધિકાર છે એમ ભદેરમાં કબૂલું છું. દલુ દીનકિંકરને હીસાબ પૂરો થયો નથી. પૂરો થયેથી કેટલાં નાણાં બોળ્યાં તે ભદેરમાં મૂકજા છુટકો છે.

વડોદરાની ઔરંગઝેબશાહી—વડોદરા રાજ્યની કાળી નોકરશાહીએ ઇતિહાસમાંની વિદેશી વિધર્મી ઔરંગઝેબશાહીને હવે પ્રભને નજરોતજર દેખાડવાના અજવરા કરવા માંડ્યા છે. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રભ આધારે ભયમાં છે. સાવલીવાળા ધર્મપરાયણ સદૃશદરય ભગવદીય દેસાહ જસભાઈ જીજીસાહના પત્ર ઉપરથી જે વડોદરાના ન્યારે હાંપાંઓ વાંચ્યા ત્યારે ઉક્ત વસ્તુચિતિ પ્રત્યક્ષ થય. એક તરફથી દેશની પ્રતિનિધિ ગણાતી મહાસભા ધર્મવિધર્મમાં વટરથતા ભળવવાના પવિત્ર કોલને ડોકરે મારી ડેકમંગીઓને મંદિરોમાં જગરદરવીથી ધુસાડવાની અગવળ કરીને, સત્તા હાથમાં આવે તો અત્યારની ગોરી નોકરશાહી કરતાંએ કેવા ભયાનક અત્યાચારો તે કરે તેનો પ્રત્યક્ષ પૂરાવો આપી રહી છે, તો વડોદરા જેવા દેશી રાજ્યની નોકરશાહીનો શા માટે કોડો અગવળ નહિ ? તેમની આ યેઠજા તથા વિદેશીઓ અને વિધર્મીઓની ભળમાં ફસાઈને કરવા માંડેલું અંધ અનુકરણ અધોમતિના ખાડામાં ન દેશને ધસડશે એમાં લેશ પણ સંશય નથી. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રભએ નોકરશાહીના દોરની લેશ પણ પરવા ન કરતાં જેવું મક્કમપણું બતાવ્યું છે તેવુંજ બતાવવું રહ્યું. ડેડ લાંબીઓના ભાગડોને જગરદરવીથી નિરાળોમાં ધાલવાના હુકમોને

ધાર્મિક પ્રભ છે એક બંધ કરશે અને નોકરરાહીની વિદેશી અને વિદર્શી રીતસાતને એક નબળા ફટકો લગાવશે એવા વિશ્વાસ છે. અત્યારે ડેરડેર નવી નિયામો રચપાઠ છે. સરકારી નીસાળોનો ત્યાગ થઈ ચુક્યો છે. વિરોધસભાઓ લગાય છે. પાદરામાં તે ચળવળને અંગે મુંબાઈથી પૂન્યપાઠ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીગોકુલનાથજી મદારાજશ્રી પણ પધાર્યાનું સાંભળ્યું છે. આ બધાં સુસચિન્દ છે. 'નવ ગુજરાત' તા. ૧૪-૧૨-૩૧ ના અંકનો એક વધારો એક ભાષ્ય એ મોકલ્યો છે. એના લેખક પોતાની ભત્રી અને પોતાના કુટુંબને બહો લાગવાના ડરથી તે લેખની નીચે પોતાનું નામ લખે પણ છાપ્યું નથી. તેમાંની બધી દલીલોના જવાબો સંક્રોત્તર આપાઈ ચુકેલા છે. દ્વિતીયત પાદરીઓની દલીલોને સખ્તડખર અને ફલ પાપ'કોનો એક ચઢાવીને પોતે જ ભણે શાસ્ત્ર ભણતો હોય તેવા રોજ કરીને આર્થસંરક્ષિતનું ખૂન કરનાર તે લેખકના આવાં ચીંધરાઓની સાથું જોવાનું નથી. આમેશામ પ્રચંડ દીકરાલ ઉપાડી લેવાની છે.

તેરસી હામણની 'કું.' ની કૂદાકૂદ—શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીશમોદરાલજી બાવાસાહબ મુંબઈથી શ્રીનાથદ્વારા એરોપ્લેનમાં પધાર્યાં તે બદલ જો તેવા ગળગોળા છાપાંઓમાં ફેંકનાર, સત્ય પ્રવાસો ભંડેરમાં થશે છતાં પોતાનાં અસત્ય લખાણો લખવાના પાપ માટે પ્રાયશ્ચિત્તને એક સખ્ત પણ ન લખનાર જેમના લેખકો સાથે ચર્ચામાં ઉતરતું એ એક અર્થ એ છે અથવા ગુનાહ છે. આવી ચર્ચામાં જે વૈષ્ણવ'ભાટીઆ ભાઈએ ભાગ લીધો તે લેવાની જરૂર જ ન હતી. નિંદા-વિદ્વાના કાંડાઓને તે ખોરાક વિના મલક જ પડતી નથી ! એટલામાં વળી ભાઈ તેરસી ફરી પડયા ! શ્રીયુત રોહાવાળાને તેમણે જવાબ આપના જે ભાષા વાપરી છે તે પરથી એમ કાં ન કહેવું કે એવી ભાષા લખનાર કોઈ સચ્ચ ખાનદાન તો ન જ હોય ! તેમની દલીલ તે જુગલદની દલીલ, જેનો હલરો વાર જવાબ આપાઈ ગયેલા છે અને પ્રાચીન તથા નવીન પદ્ધતિધર વિદ્વાનોએ તેના કુરચે કુરચા કાઢી ત્યાજ્યા છે ! હું તો મી. તેરસીને કહી રાહ કે પુષ્ટિમાર્ગમાં તમને જે 'નાલાયક તત્ત્વો'ની તથા "વેશ્યા તથા પિસાચ" પછાંની બંધ આવે છે તેના કાઢ પુરાવા છે ? પોલપત્રને મદદ કરીને, પ્રવાસી પાગલ ઉપરના તમામ કેસોમાં હલરો રૂપીઆની મદદ કરી કરાવીને તમે શું પરિણામ કાઢ્યું ? કયા કેસમાં તમે જીત્યા ? પાગલને કયા કેસમાં સજ ન થય ? મુંબઈના મોટા મદિરાવાળા ઉત્તમ આદિત્ય ધરાવનારા એક મહાન્ વિદ્યાવિદ્યાસી આચાર્યશ્રીના બદનશીના કેસ વખતે તો તમે હાંમનસેર બોલતા હતા કે આ કેસમાં તો એ મદારાજશ્રીને જરૂર કલક લગાડીયું, એમ સાંભળ્યું હતું. પણ તેમાં તો પાગલને સત્તાવીસ માસની સજ થઈ ! મી. તેરસી ! તમે તો કોઈ ધર્મમાં માનતા નથી, તો આ ધર્મની ચર્ચામાં શા માટે ફટી પડો છો ! તમારો ભત્રી અનુભવ થોડો પણ ન છતાં કોઈ વ્યક્તિના કહેવાતાં કષ્ટેલાં ખરાબ આવરણોનો ટોપલો સંપ્રદાયને માથે ઝોરાડોવા જે ક્યાનો ન્યાય ? જે તમારો ન્યાય બ્યાજી હોય તો કાનજી મારતર જેવા સેતાનેને લઈને, મુંબઈની સૂઢ કમીટી, કોરપોરેશન અને કોમિસ જેવી સંસ્થાઓને શા માટે 'વેશ્યા' એ તથા પિંચાચો સાથે તમે સરખાવતા નથી ? પ્રશ્ન તમને સદ્ગુણિ આપો અને મદારાજ લાયજલ કેસમાં થયેલા ન્યાય માટે હાલતા કેળવાયેલા પુષ્ટિમાર્ગના વિદ્વાન એમ. એ. આદિ પદરીધરા અને કવિ રાગેરના શાંતિનિકેતનવાળા શ્રીયુત વિયુસેખર ભટ્ટાચાર્ય જેવા બીજા સંપ્રદાયનાઓએ શા અભિપ્રાય આપ્યા છે તે તમે જુઓ. બીજી વાત તો જવા દો, પણ હાલતા તમારી કોમના જ વિદ્વાન એમ્યુએટો આ સંપ્રદાયની કેવી મુંદર સાદિલસેવા કરી રહ્યા છે ? તેઓ આ સંપ્રદાયના હોવા માટે કેવી મગરની ધરાવે છે ? તમારાં ધર્મપત્ની અખંડસોશાયવતા પૂજ્ય બહેનનો સંપ્રદાયમાં જેવા પ્રેમ છે ? તમારા જેવા અરિયર મજનના અંબાને તો અરણ્યકદન કરતા ભાગ્યે જ વધારે વળનદાર બહારો !

ઉપકાર—આ વર્ષના દીપોત્સવાકથી અને મુદ્દે સંતોષ થયો નથી. દીનકિરે નુકસાનીના ચાક્ષી કથાથી તેમજ જાહકો એકદમ ધટી ગયાના સળંગે ચાહ વર્ષમાં જે નુકસાન આવશે તે ખમી ચકારો કે કેમ ! એ સવાલના ઉચાટમાં ગતાક કેવી રીતે આર્થિક પ્રકટ થઈ રાકે ? છતાં કદરદાન માહકોએ મારી તુચ્છ સેવાને ઉચ્ચ માની લીધી અને મુંદર અભિપ્રાય લખી મોકલ્યા તેમાં તેમની મોટાઈ છે. તેને માટે તેમને હું ઉપકાર માનું છું. દેવદીવાળી 'અંકનું કદ તથા વળન વધી જવાથી કેટલાંક છાપેલાં પાના સીલીકમાં રાખવાં પડ્યાં, તેમાંના ૮ પૃષ્ઠ આ અંકમાં સામેલ કર્યાં છે. તે જમ્પુરના રામના અખિત સંન્યાસીના ૬૪ પ્રશ્નોના જવાબમાં શ્રીમદ્નાથજી મદારાજશ્રીએ લખેલા એક સચોટ પ્રત્યુત્તરની પુનરાવૃત્તિ છે.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સાહિત્ય—‘પીયૂષપત્રિકા’નો દ્વિતીયાંક પ્રગટ થયો. શ્રીસુભાષિનીજીને અનુવાદ ધમ્મોક્ષર છપાય છે. શ્રીસુભાષિનીના ઉત્સવ સુધીમા કે તે પછી પહેલો જામ બહાર પડે જશે. એક ઉત્તમ સાહિત્ય છપાઇ પ્રકટ થયું, તે શ્રીસુભાષિનીજી દ્વિતીય રક ધનેા પ્રકાર છે. પ્રથમ, દ્વિતીય અને તૃતીય રક ધનેા શ્રી સુભાષિનીજી પ્રગટ થઇ નથી છે. પણ એકલા શ્રીસુભાષિનીજીથી સંતોષ થતો નથી. દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ હૃત પ્રકાશથી શ્રીસુભાષિનીજીને રસારવાદ કાષ્ઠક આપે છે. દ્વિતીય રક ધનેા પ્રકાર પ્રકટ થયા ન હોતો, તે શ્રીયુત નીમનવાલ સાક્ષીજીએ અનેક પ્રતો પરથી શોધીને બહાર પાડ્યા છે. એવા સમાચાર મળ્યા છે અને માટે સાક્ષીજીને ધન્યવાદ ધરે છે. શુદ્ધાદિતમાર્ગવિય તરફથી ‘ચિત્ર રત્નાવલી’ પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે. પહેલું આજ્ઞામ આવતા માસમા પ્રકટ થશે. તેમા પ્રથમ શુદ્ધના તિલકાચિતોના ચિત્રો છે. ક્ષેત્ર બાર ચિત્રો છે. શ્રીમદ્દાપ્રભુજી, શ્રીગુરુજી, શ્રીગિરિધરજી, શ્રીજીજી, દાદજી (કાલાવાળા) શ્રીગિરિધરજી (દાદની તિલકાચિત) શ્રીનટવરવાલ (અમદાવાદમા બિરાજતું સ્વરૂપ) શ્રીજીજી મહારાજ, શ્રીમન્નરાયજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના બે લાલજી, શ્રીમદ્દુસૂનવાલજી મહારાજ અને શ્રીબાવાસાહેબ, એ પ્રમાણે બાર સુર ચિત્રો છે. આજ પ્રમાણે સાત શુદ્ધોના જુદા જુદા સુર આજ્ઞામો, વશાવતી, ટુક પરિચય સાથે બહાર પાડવાની યોજના કરી છે.

સોદી મારકથી વૈષ્ણવ વિકલ્પભાષા લખે છે કે, અગ્રે પોરબ દરવાજા આયુષ્માન ગોરવામી શીક શ્રીદ્વારકેશવાલ બાવા કાર્તિક વદ ૦)ના રોજ ધોરાજીથી પધાર્યા હતા. અહીં દહેડીમા મુકામ કર્યો હતો. રાત્રે તેમના સાક્ષીજી લલ્લવજીભાષાએ કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ, એ વિષય ઉપર બસોધી ત્રણસો શ્રોતાઓ સમક્ષ વિવેચન કર્યું હતું. વ્યાખ્યાનની ઘણીજ સારી અસર થઈ હતી. અહીંનું વૈષ્ણવ મંડળ પલ્લવ ભાગ્ય દોષ સિદ્ધાંતોના જ્ઞાનમા પહોંચી રસ લે છે. શ્રીમાન બાવાસાહેબ માર્ગશીર્ષ સુદ ૨ ના રોજ અહીંથી બીજા ગામ પધાર્યા હતા.

શુદ્ધિપત્રક—અત્ર શ્રીપુરુષોત્તમમાકમા દીનકરે પુરુષારાજજીનું હોદી ભાષાનું ચરિત્ર છાપ્યું તેમા પછી અશુદ્ધિઓ રહેલી છે, તે તેના લેખક શ્રીયુત પડિત કાશીનાથજી લખે છે—

પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.	પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૧૬૧	૧૦	સોચે	સાચે	”	૧૫	કરાદિયી	કરાદિયે
”	૧૨	અમિ	રામિ	૧૬૩	૨૧	જાય	જામું
”	૨૯	સેવાકો	સેવાકી	”	૧૭	વતાયા	વતાણ હે
૧૬૨	૨	ફનદે	ફદે	”	૧૭	મુરમુલધમ	મુલમુ ધમગતિ
”	૨	ઇદેવ	ઇદેવેમો	”	૧૮	એકઆલ	અલ
”	૮	અનકા	અનકો	”	”	કમ	કમુ
”	૧૨	મેપકા	મેપકી	”	૧૯	પૃથ્વીરાજપૃથ્વી	પૃથ્વીમુત

ઉમરગામનો આનંદ—પરમભગવદીય રોક દરિયાકાના ઉમરગામના દર્શન કરવાનો અવસર શ્રીયુત પ. ચમપાકાધીશ્વરની દુપાથી એક વાર ફરી અહીં રોક દરિયાકાના દર્શન ન થાય એટલે ખોટ તો નહાય, પણ રોક માકુસાઈ તથા રોક ત્રિભુવનદાસભાઈ તથા તેમનું કેળવાયું કુટુંબ હજી સદંતર રોકના રનેઈમય જીવનની જાળી કરાવે છે. નવસારીથી શ્રીયુત બાવાસાહ સરકાર તથા પારખ આદિ વૈષ્ણવ શુદ્ધરથો પણ આગ્યા હતા. સીમલીથી રોક ભગવાનદાસભાઈ તથા ભગવદીય હથેરલાલભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા. મુબાઈથી રોક માકુસાઈ સીમલાવાળા અને ભગવદીય હમનભાઈ આવવાથી ધણીજ રમ નરથો. ત્રણે દિન આનંદમા ગયા. ભગવાનનંદનો તે સમુદ્દ ઉમરગાં બોરડીવાળા ભગવદીય નેત્રીસનદાસભાઈ પણ પોતાને ત્યાં અન્ય વૈષ્ણવ ડગામ સાથે શ્રીમાનને પધરાવવા આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાન બોરડી પણ પધાર્યા હતા. ઉમરગામના રનેઈસ રમરજો કઠી કદમચાળી ખસે તેમ નથી.

विद्यना तारुણ्यદાર શ્રીમદામ્બુલના વિશ્વોદારક સિદ્ધાંતોના
પ્રચાર કરતું સચિત્ર મૌસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

પુસ્તક ૬ હું] માધ-કોલ્લુન, સં. ૧૯૮૮. [અંક ૧૧-૧૨

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

ધીમ ગામ પુલિમાગીય વિદ્યુતોના હૃદયમમારૂ અને આયે સમૃત્તિના
ક્ષાત તેજના આદર્શ નગર શ્રી મેવાડ મદારાજાના મુરુદેવ અને ભારતવર્તના
ધર્મોચ મેવા આદિતીય અનુપમ ગયાનો અપૂર્વ કરતા પત્ન્યાપાદ આચાર્યવર્ધ
શ્રીનૃસિંહપીઠાધીશ્વર સિદ્ધાંતિ સી શ્રીકાકરે, સિતરેશ ગોપરામી શ્રી ૧૦૮
શ્રીવ્રમજૂસગપાતડ મતાનજીએ પોતાના જન્મદિનના સુમગર પ્રમગે
પાટકુમા ગન માધ વદ ગજના રોજ તરિતે 'મહાદેવમૂર્તિ'ની પદવી તથા
અન્ન તેણાધિપત્ર અને સુવર્ણપદક અર્પણ કયા છે આ અન્માન તંત્રીનું
અન્ન નથી, પણ 'શુદ્ધાદ્વૈત' અને તેના નદપોષ, શુભેચ્છા, પ્રસાદો તથા
માદમને છે તંત્રીનો એ પદવીને યોરે પછે અંગે માળાવે અને એ પદવીની
જાળવની જુરે નહિ તેવા આવીરોંદો સર્વેએ આપવા ગયા

નો ૧૯૮૮, રામભોલની પેજ } — તંત્રી અને પ્રકાશક
અમનાવાદ, + } અને તંત્રીમ હરિકૃષ્ણ ગામ્બી.

વાર્ષિક લગભગ એ રૂપિયા. (પાત ખર્ચ લુહુ.)

જલદીથી મંગાવી લેવો—માત્ર ૩, ૧૨) માંજ તમારી લાયજેરી ભરપુર થઇ જશે.

સદ્ગત દેસાઈ છગનલાલ જેઠાભાઈના સ્મારકમાં.

નીચેનાં પુસ્તકો મૂળ કીંમતથી અરધી કીંમતે માત્ર ૧૦૦ નકલોજ આપવાની છે.

આ લાભ કોને મળશે!!!

૧. ન્યાં નિયમિત રીતે ભગવદ્વાર્તા ચતી હોય તેમને; ૨. શાળા પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને; ૩. બહેર લાયજેરીઓને; ૪. વિદ્યાર્થીઓને ધનામમાં આપવા છઠ્ઠા ધરાવતા હોય તેમને; ૫. સારા નરમા પ્રસંગે સ્લાણી કરતા હોય તેમને, તે સિવાય બીજાને આપવામાં નહિ આવે. પુસ્તકોના છ લોટ પાઠવામાં આવ્યા છે. દરેક લોટ પુરેપુરો મળશે. તેમાંના અમુક પુસ્તકો છુટક નહિ આપી શકાય. દરેક લોટની લેવાની કીંમત પોસ્ટેજ સાથે ખતાવી છે તે વાચી વાંચે યતું.

આહુકોને વિનંતિ:—દરેક પુસ્તકની માત્ર ૧૦૦ જ નકલો છે અને માગણી કરનાર વધુ નીકળે છે તેથી મોડી માગણી આવશે તો નકલો પુરી થયા પછી નહિ મળે અને પાછળથી પસ્તાવું પડશે માટે આ બહેરાત વાચનાજ તમારો ઝોડર લખી મોકલો નહિ તો રહી જશે.

કેટલાક આહુકા રૂઠા સુધી ઘટાડેલી કીંમતે માગણી કરે છે તે વ્યાજબી નથી.

લાટ નંબર ૧.

- ૨-૦-૦ રસેશશ્રીકૃષ્ણ ચાને શ્રીકૃષ્ણ ચરિત્ર ૧.
- ૦-૮-૦ શ્રીકાકાવલ્લભમહારાજનાં ૫૨ વચનામૃત ૧
- ૦-૮-૦ શ્રીગિરિરાજ શ્રુષ્ણ ૧.
- ૦-૪-૦ બ્રહ્મસંબંધ કાવ્ય ૧.
- ૦-૪-૦ નિલ નિયમના પાઠ તથા ધોળ ૧.
- ૦-૪-૦ શીશુસાંઈજી કૃત વિવશિષ્ટ ગુજરાતી ટીકા ૧.
- ૦-૪-૦ શીનાથજીનો ઇતિહાસ ૧.

૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૭.

લાટ નંબર ૨.

- ૨-૦-૦ ૨૫૨ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીદાસનાથજીનો પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીગોકુવનાથજીનાં ૨૪ વચનામૃત ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીમદ્દુષ્ટ મહારાજનાં વચનામૃત ૧.
- ૦-૮-૦ પંચામૃત ૧
- ૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૫

લાટ નંબર ૩.

- ૨-૦-૦ વસંતધમાર કીર્તન ૧.
- ૧-૦-૦ વિવિધ ધોળ તથા પદસંગ્રહ ભા. ૧, ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીકૃષ્ણચરિત્ર બાળવીણા ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીકૃષ્ણ કીર્તનમાળા ૧.
- ૦-૪-૦ પદનામદાસજીનાં ૫૬ ૧.
- ૦-૩-૦ સરદપૂનમ ૧.
- ૦-૧-૦ વલ્લભાખ્યાન ૧.
- ૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૭.

લાટ નંબર ૪.

- ૧-૪-૦ ૮૪ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીરત્નદાસજીનું જીવનચરિત્ર ૧.
- ૧-૦-૦ વિવિધ ધોળ તથા પદ સંગ્રહ ભા. ૨ જે
- ૦-૫-૦ શ્રીગોવિંદનાથજીનો પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧
- ૦-૨-૦ શ્રીસર્વોત્તમરત્નોત્તર ટીકા ૧.
- ૦-૨-૦ શ્રીયમુનાજીનાં ૪૦ પદ ૧.
- ૦-૨-૦ દીનતા આશ્રયનાં પદસંગ્રહ ૧.
- ૦-૩-૦ રાસપંચાધ્યાયી ૧.

૪-૧-૦ પુસ્તક નંબ ૮.

લાટ નંબર ૫.

- ૧-૦-૦ શ્રીપુરોષોત્તમસહસ્રનામરત્નોત્તરની ટીકા ગુજરાતીમાં ૧.
- ૧-૦-૦ પોદરા મન્યની ગુજરાતીમાં ટીકા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીગોકુલેશજીનાં ધોળપદ ૧.
- ૦-૮-૦ નિલનિયમના પાઠ મૂળમાત્ર ૨૮ મન્ય
- ૦-૨-૦ આટલુ વાંચનેજ ૧.
- ૦-૨-૦ કન્યાશિક્ષણ ૧
- ૦-૨-૦ પ્રહિપ્રવેશ ૧.
- ૦-૨-૦ ભક્તિપોષણ ૧.
- ૦-૨-૦ શ્રીદરિયાવચનામૃત ૧.
- ૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૬.

લાટ નંબર ૧.

૧-૦-૦ શ્રીહરિરાયજી કૃત શિક્ષાપત્ર ૧.

૧-૪-૦ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા મૂળ શ્લોક, અનુવાચ, શબ્દામ તથા વિસ્તૃત વિવેચન સાથે ૧.

૦-૧૦-૦ નિત્યનિયમોના ૩૪ પાઠ મૂળ શ્લોક માત્ર

મુચના:—વધારે પુસ્તકો મંગાવનારાઓએ રેખવે પારસપથી મંગાવવાં જેથી ખર્ચે ઓછું આવશે. દરેક લોટ ચાર રૂપીઆનો છે, છતાં બે રૂપીઆમાં ૫૦ ટકા ઘટાડામા મળશે ટપાલ ખર્ચે ૧૨ થી ૧૪ આના મુધી જુડું આવશે.

સખો:—લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેસાઈ.

રીચરિડ નં. ૧૧૦; પ્રેસ ઉપર—અમદાવાદ.

મુખ્યસંચારક કંપની મથુરા
મુખ્યસંચારક કંપની આર્યવર્તિક આશ્રમ
આનાવવાની દરખાસ્ત

શિક્ષાસ્થ	જ્યાં પ્રસિદ્ધ પૌષ્ટિક મધુક અને લહેજતદાર પીચ બોરાક પચાવનાર જુઓ લગાડનાર લોહી માંમ વધારી તાકાત તાજગી બક્ષનાર કિંમત ખાટલી નાનીનો રૂા. ૧) મોટીના રૂા. ૨)
અષ્ટવર્ગ	અષ્ટવર્ગ ઔષધિ મીઠિત જીવન વર્ધક બોરાક સર્દી, ખાંસી, સ્નેહ્ય અને છાતીના કોઈ પણ રોગોની પ્રસિદ્ધ દવા. કિ. તોલા ૨૦ નો રૂા. ૧૧
બાલસુધા	કુખળા પાતળા અશક્ત બાળકોને રુદ્ધ પુષ્ટ અને સ્વસ્થિમય તાકતવાળા બનાવનારી મીઠી દવા. કિંમત ૧૨ આના
દુધકેસરી	જલન અને તાણ તિવાય કોઈ પણ જાતની દાદર-ને રુદ્ધ કસાકમાં આરામ આપનારી દવા. કિંમત ખાટલી એકના ૪ આના
સુધાસિંધુ	ઠંડ, ખાંસી, દમ, શૂળ, કોલેરા, સંઘડણી, અતિ-શાર, વમત થિયું, ખાકા, વગેરે એવાજ રોગોની અનુપાત વગરની દવા. કિ. બા એકના ૮ આના

આનાવવાની દરખાસ્ત મુખ્યસંચારક કંપની નું નીમનજામી થી સુધિ પાસીદોને હી દવાઓ દરેકદવાવગરની રાખી સુધી મળશે

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધ્યાનપદસાગર-સાગ-૧. નિત્યપાઠના ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રંથો, શ્રીવક્ષભાષ્યાન, શ્રીયમુ-
નાજના ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદદાસજીવિત રાસપંચાધ્યાયી, બમરગીત, મુળપુરુષ, નિત્ય
પદ (જગ્યાવંચાથી પોદાડવાના) જન્માષ્ટમી વધાઈઓ, દીનના આશ્રયનાં પદો, શ્રીભાગવતનાં
૧૬ ધોળ, ભક્તિપોષણ, શ્રીનાથજીનાં ધોળ, શ્રીમદ્દામયુજી, શ્રીયુક્તિમયજી, સાતગાળક
શ્રીવક્ષભક્ષ આદિનાં ૪૦૦ ધોળ આવો સગતસો પાનાનો સરનામાં સરસો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં
પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર છપાઈ, આકર્ષક બંધાઈ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ.
૮. ખ. સાન આના.

૧. શ્રીસર્વોત્તમસ્ત્રોત્ર—અદીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક
એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળ અને શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીયુનાથજી તથા શ્રીગોપેશજીની
સંસ્કૃત ટીકાઓનો સવિસ્તર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અઢી આના, ૮. ખ. દોઢ આનો.

૨. શ્રીગોકુલેશજીનો માલાપ્રસંગ—શ્રીયુક્તિમયજીના ચોથા લાલજીએ જહાંગીરના
જુઓ સામે જે અદિસંક ધર્મયુદ્ધ વર્ષો સુધી ચલાવ્યું તેનું જલદલતી ભાષામાં વર્ણન
યુક્તિઓથી મગજવેળું તિલકનું રહસ્ય, સચિત્ર છતાં નોજાવર માત્ર દોઢ આનો.

૩. શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર—નવ લાખ શ્લોક લખનારા મહાન વિદ્વાન ગોસ્વામી
શ્રીપુરુષોત્તમજી અંતિદાસિક ચરિત્ર તથા શિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ વિશે કવિ શ્રીદયારામભાઈનો
મંથ છે. ત્રિપુદ્રોદ્ધીઓને તમાઓ મારનાર આ ગ્રંથની નોજાવર માત્ર ચાર આના.

૪. જયસંત મહાત્યાગ—પંચમખીલાધીશ્વર શ્રીગોવિન્દપ્રભુએ જયપુર નરેસના
જુઓસામે ચલાવેલી લાનનો ઇતિહાસ વાંચી રહ્યું આવશે, ખુશી થશે, હસશે, સચિત્ર
છતાં નોજાવર ચાર આના. ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૫. વૈષ્ણવ નરેશો—દિન્દમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રામમહારામજીનાં અદ્ભુત વૃત્તાંતો,
સચિત્ર મૂલ્ય ત્રણ આના. ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૬. આટલું તો કરતોજ—હુંકામા હુંકો નિત્ય નિયમ ૩૦ ત્રીસ લગત નકલો
વેચાઈ મળ છે. નોજાવર એક આનો. ૮. ખ. ૦૧

૭. પંચાયમૂર્તિનો ચુકદો—મુંબઈના ન્યાયમૂર્તિ રામજીકરે ભગવદીય શેક ગ્રામજી
મુરજીએ માટેલા કેસમાં આપેલો અજત્યનો ચુકદો વાંચીને સુધારકોની પોલ પારખી શકશે
અને પુષ્ટિમાર્ગની જહોજહાલી જોઈ શકશે. મૂલ્ય જે આના. ૮. ખ. એક આનો.

૮. પંચાયન પાઠનો ચુકદો—પૃષ્ઠ રૂપક—નિત્ય નિયમના પંચાયન પાઠોનો આ
ચુકદો (જે પહેલા ૪૨ પાઠનો હતો તે) મોટા અક્ષરમાં હમણાં ફરી છપાવ્યો છે. મૂલ્ય
માત્ર ત્રણ આના. ૮. ખ. એક આનો.

૯. શ્રીનંદવરલાલનાં ધોળ—રાગનગરનાજી ચિ. ગો. શ્રીરણજીડલાલ બાવા-
માલગનાનિત્યલીલારથ અ. સા. વડજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય જે આનો. ૮. ખ. અઢી આનો.

હીસ્ટરિયાઈ વાતરોગ દર્શન.

પ્રલોક, ૩૦ હીસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અગોચરનું છેલ્લું શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આધુનિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીંમત ૧-૪-૦ પૌ. જુહુ, દેશીનામું. નવા આવહાર પ્રભાણે રચના ૦૧. શાળા માટે નહું મંજુર કી. ૦૨ પૌ. ૦)૨.

હીસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણુ,

પેટ'ટ દવા વાંચુમુકાળ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં કાયદો મળે છે. સિસોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રંચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો હુદયી મંગાવે છે. દવા મદિનાની, કીમન ૩. ૫) પૌ. જુહુ.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંઘટ્ટણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા ખાઈ કંટાળેલા સંઘટ્ટણી (ગળતી), મુંબાઈના ઝાડા, અતિસાર અને આંતરડાના ક્ષયથી પીડાતા નિરાશાજનક દહનિ આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી ત્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણુ દવા માટે રજૂ મળેલા યા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર કે. બે. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમુ રપેસીઆલીસ્ટ-માણસાવાળા.

હોમિયોપે—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર ઢાંડીગરાની પોળમાં તંજુમરાની ખડકી ઘર નં. ૪૫૬.

અમારું બાલાનંદ બચ્ચાઓને હૃદય પુષ્ટ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુહુ.

અપ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ કેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ હાથ લાગશે. તરીરની પાપમાલી થવાનું મળ નજર પર આવશે અને તે પાપમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો મુઝશે.

કિંમત કે પોસ્ટ કાર્ડ પણ નહિ, માત્ર તમારું પુરું સરનામું ગોઠવી મંગાવો.

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔપધાલય—જમનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

॥ श्रीकृष्ण ॥

સત્યવ્રતં સત્યપરં ત્રિસત્યં સન્યસ્ય યોનિં નિહિતં ચ સત્યે ।
મત્યસ્ય સત્યં વ્રતસત્યનેત્રં સત્યાત્મકં ત્યાં શરણં પ્રપચે ॥

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર”

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને મુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળાવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અમદાવે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—ગ્રજ, મગડી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં હખાયેલાં (સુદ્રિત ચણેલા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતા સુન્દર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીયુક્તાષ્ઠ, શ્રીગોકુલેશ તથા ખિરાજમાન પૂ પા જો. બાલકોના રંગભેરંગી સુન્દર ફોટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગભેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેવેન્ડરો, બ્લોટીંગપેપરો તથા પોસ્ટકાર્ડો, ગીતાગવરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોહાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો હખીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફેસો મદાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી બાઈકીંગ (છત્તા) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—પુસ્તકાલય.”

(વાચન—વિભાગ)

ગુજરાત તથા આલુઆલુના પરાંઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરગેહાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ તદ્દનાં ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસર કોઈ પણ ધર્મજીવાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એકેસે લખો યા મળે:—

મળવાનો સમય—	ગિરિધરલાલ જ. શાહ, છુકનોલર. વ્યવસ્થાપક— ‘ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’ ટે. શ્રીલાલજીવાનું મન્દિર, ભુવેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.
સવારના ૭ થી ૧૨ (સ્ટા. ટા.)	
સાંજના ૪ થી ૮	

વા. કં:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓડર આપતી/વખતે પોતાનું નામ તથા એકરેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપિયાની અંદરની કિંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાંપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુત્તર માટે જવાબી કાર્ડ યા પોસ્ટસ્ટાંપ બીવડા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માનિકપત્રનું લેખાજમ પણ ઉપરના ફેમલે બરી ગણશે

મોંઘી લો !

ઉત્સાહી બનો

સાહિત્યાવલાસી વૈખણ્ણ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સુગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠ્યા જ પુસ્તકો મળતાં હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા ગ્રંથો પ્રકટ થઈ ગયા છે કે એક જીવનમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, વ્રજ, હીંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા ગ્રંથો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી મોઢાવર લઈને મોકલી આપે છે. નહિ મળતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી. સૂચીપત્ર મંગાવી લો.

ડૉ. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નડિયાદ, (જી. ગેડા),

અનેક રોગની એકજ દવા !!

જીવન ધારા !!

ઝાડા, ઉલ્ટી, ચુંક, શરદી, સુંઝ, અજીર્ણ હાથ-પગ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, દાંત-દાઢની પીડા, સંધીવા, તાવ, પાણીનીકાર, ઝેરી ડંખ, પ્રમેહ, પ્રદર, અશક્તી, ખાંસી, દમ, શ્વાસ, ગડગડાટ, ઘા, લોહી નીકળવું, હરસ, મોઢાની તથા ખાળકુવાની દુરગંધ, આચડ-માકડની પીડા ઇત્યાદિ અનેક રોગોની ખાત્રીપૂર્વક દવા.

કી. મોટી બા. રૂ. ૧૫ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૮.૫૦.

જેનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દૂર કરનાર અતુલવર્ગીય ઉપાય છે. રજસ્વલાની તકલીફ, સુવારોગનો ત્રાસ, શ્વેત થા રક્ત પ્રદર, કસ્ટવાચક, પેટ તથા પેદું-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણવ્યથા, બદન ફીકું, ઝેંમેની, દુખાવો, ઇત્યાદિ અનેક અગ્ન્યજ્ઞો દૂર કરી બદન તાકાદથી ભરપૂર અને ગર્ભ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂ. ૨ જે.

દરેક દવાનું ટપાલ ખર્ચ છુટું. રજીસ્ટર્ડ ડોક્ટર “જેનસ” નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરવો દરેક ડોકલે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી લરપુર

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

મુદ્રિકારિષ્ટ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

ઘટ તાકત તાકત-તાઝગી મેળવવા

મનની મટાડનાર

થાક ઉતારનાર

ઉંઘ લાવનાર

દરેન સાફ લાવનાર

ભુખ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝગી બક્ષનાર

ફળ, ખાંસી, મૂર્છા અને સાધારણ
નળગ્રાહમાં તાકત આરામ આપનાર

લઝઝતદાર દવા

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ નમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ લીમિટેડ-મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એન્ટ-બોગીલાલ ધંધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ અધીના તેર આના; રતલ એકતો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઈ ગયો !

અપૂર્વ ગુજરાતી સામ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશભીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યલીલાચર્ય ગોસ્વામી શ્રીક શ્રીછવનેશાચાર્યજી મહારાજે આ સરદારમાં સરલ મનનીય ગુજરાતી સામ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દરદિગંતવિન્યયી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના “ ઉપદેશવિપવકશંકનિરાસવાદ ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમાં છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમાં રજૂ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિશે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમાં છે. આ ગ્રંથ બ્રહ્મા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સામ્રદાયિક વિદ્વાન રા. રા. દરિદ્રપ્રજ્ઞ પીરછશાસ્ત્રીજી એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને દમણજી પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

આ ઉપરાંત વૈષ્ણવ દિવ્યે માટે (યજ્ઞોપવીત ધારણ કરનારા માટે) સત્તરથી સાંજ સુધીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા એ પુસ્તકો વૈષ્ણવ દિવ્યદિક દીક્ષામાં તથા ગુજરાતીમાં તૈયાર છે.

દ્વાદશ મૂલ્ય—એક રૂપીઆ.

ગુજરાતી મૂલ્ય—આઠ આના.

કેકાણું—શ્રીલાલભાવનું મંદિર.

બૂલેથર, મુંબઈ નં. ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.

સામ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જી. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, હીલકળા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સામ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આણું શાધર્મ સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી રચન પર્વતના સુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશનો આજ ગ્રંથમાં છે. પખાવજ શિળનાર માટે તાલના જોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજાવું પાડી છે. નોંધાવર જે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધૃષ્ટકા. (જી. અમદાવાદ.)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા, નો. ર. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કોમિત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સીલીકમા દશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા ૩. ૮-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાચોલયમાં.

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રંથ—‘શુદ્ધાદૈત’માં પ્રકટ થઇ ગયલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૨. ભાવભાવના—(ભા. ૧લો) શ્રીહારિકેશવરજીત આ ગ્રંથ એક અદ્વિતીય વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. યોગા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોંધાવર પછીથી જણાવાશે.

૩. પંદરમો અધ્યાય—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે મુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક રસોક પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. યોગા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૪. આટલું તો કર્યો જ—નિત્યનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માત્રણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧ આનો, ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૫. ‘ભાક્તપોષણ’—કવિશ્રી દયારામભાઈનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કો. ૧ આનો, ૮. ખ. ૦૧ આનો.

૬. ભક્તવાણી—ગોકેરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. ઇન્દુજીરામ બટજીએ અમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રગ્નો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ૮. ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવચનામૃત—શ્રીગોકુલનાયજીનાં વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર ૫ પ્રાંથી.

૮. ચોરાશી પ્રવચના પ્રત્યુત્તરો—છપાય છે. વાચવાલાયક ગ્રંથ. નોંધાવર પછીથી.

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આજ્ઞાતિ ખપી જવાથી બીજી આજ્ઞાતિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી થઈ હોવાથી આ સાદસ બેઠું છે. મૂલ ત્રણ આના, ૮પાલ ખર્ચ એક આનો.

કે. ૧૭૪૮, રાજમહેતા પોળ—અમદાવાદ.

उपाय છે

નામ નોંધાવો !!

શ્રીસુબોધિનીજીનો સંપૂર્ણઅનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રમકવર શ્રીકૃષ્ણની બાવાત્મક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમદ્ભાગવતનું મદત્ત્વ નાણું હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેજ નામ નોંધાવો. સંપૂર્ણ શ્રીસુબોધિનીજીનું સત્ત્વ બાપાન્તર અને વિષય પદાર્થોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ એકજ અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે. અલ્પજ્ઞ વિદ્વાન એ ઉભયને સમાન રીતે આ બાપાન્તર અને ઉપકારક છે.

ગ્રાહકોને નામ નોંધાવવાના રથળો:—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય—નડિયાદ ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ પીતાંબરદાસ વકવાકુવા—નડિયાદ. ૩ જોષી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—બામનગર. ૪. શુદ્ધાદૈત કાર્યાલય, રાજમહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

શ્રીગૃણાય નમઃ ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः)

विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषद्भુतिः)

વિજ્ઞાપનમ્ ।

લગભગ પ્રાચીન સંસ્કૃત સાહિત્ય, एवं राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं श्रीहरिसायजी—भाद्रिके ग्रन्थो का अनुवाद.

શ્રીપીઘૃપત્રિકા.

નામક્રમાંસિકપત્રિકા વિદ્યકેસરી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી, મહારાજ एवं विद्वज्जन गोस्वामी श्री ६ श्रीवजरत्नलालजी महाराजके संस्कृतत्वमे प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखावाइये ।

મિલનેકા પતા—હીરાલલ શાહી, સદાયતા સંસ્કૃત પાઠશાળા—નાડિયાદ; हरिशङ्कर शाही, बटामंदिर—नडियाद; शुद्धादित कार्यालय—अमदावाद.

हरिशङ्कर शाही.

મોમાંસાશાહી, વેદાન્ત વિદ્યારદ M. R. A. S. વ્યવસ્થાપક.

शुद्धद्वैत-सहितमार्तः.

पृष्ठ १०.]

भाष, श्रीवृत्ता० ४५३.

[अंक १३]

प्राचीन कीर्तन.

पतंग उडायवेको पद ॥ राग अडानो ॥ कान्ह अटा चढ चंग उडायत मैं र
आँगनहूतें हेयों ॥ लोचन चार भये नंदनंदन कामकटाच्छ क्रियो महु मेरो ॥१॥ क्रियों
समझाय सखीरी, अटक न मानत यह मन मेरो ॥ नंददास प्रभु कवधों मिलेगो खींचत
क्रियों मन मेरो ॥२॥

सीत विदाके पद—नईरी ऋतुको आगम भयो सजनी जबतें विदा भयो हेर.
विरहानिके भागिनतें सजनी आवत चल्थो हे वसंत ॥१॥ तन सीहाय त्रिय चले भर भाव र.
ताहीको कंथ ॥ चत्रभुज प्रभु पिय तारी बजावत या जाडेको आयो अंत ॥२॥ पद ॥ र
ससक रही अपने भवनमें चार मासको कीयो विहार ॥ नंद सुवन ब्रजराज सांवरो मोहो :
चतुर ब्रजन्मर ॥ कव आवेंगे भेरे घरमें विधनासों मांगुं अचरा पसार ॥ कुंभनदासप्रभु गो-
धर जाडो चन्थो दोउ कर झार ॥२॥ पद ॥ मदन मतवारो नागर नवल प्रेमरस बस बहे र.
नंद दुखारो ॥१॥ गये हो तुम भवन पराये हमसों नित करत तुम टारो ॥ सोय रही गृह र.
अकेली सीत दहत तनवारो ॥२॥ आज कीयो कर जोर मीलन हित पायो हे प्रीतम प्यारो
परमानंदप्रभु या जाटेको दीजाये देशनिकारो ॥३॥ पद ॥ मदन मनकी तू री मतवारो ॥ र.
नींद निशंक करन सब भर जोवन अति भारो ॥१॥ तेसिय सीत परत सखी हमपर कांप-
तन सारो ॥ सोबा सेज दबकके साजसैं अलसत अंग उषारो ॥२॥ कव आवें भेरे गृह वह प्री-
प्रान हमारो ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको कीजे मुंह अब कारो ॥३॥ पद ॥ वसंत आगमं हुं
नदनंदन जो पाउं ॥ कुंवर कपट बनाय जतसों नीके गिरधराल लडाउं ॥१॥ अति प्रकुट
मन हरखत आनंद अपने पियसों उरज मिलाउं ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको देश निकास क
॥२॥ पद ॥ कान तीहारे राज बसत हो सब सुख चैन दीत्ताई दैत नहीं कर या छिन ॥ :
सर्षप मंगल भित अंत न होत जु जान बीतत बरज निसादिन ॥१॥ भूर भाग्य निज जन
ब्रजवासी कहावत नारीन धन्य ॥ परमानंद या सुखके कारन सदा वसंत रहत वृदावन ॥ पद
मोहो कहूं प्रानपिया भेरो प्यारो हों तलपतह उन विन सजनी आयो न नंदकुमारो ॥१॥ सिं
क्रियो तन सारो सखीरी मग जोवत भयो भवन उजारो ॥ रहे अनत जाय कहूं आजह सीत
रस सारो ॥२॥ हमको जोग विधाता दीयो उनको भोग दियो सारो ॥ सूरदासप्रभु या जाडे

દીજે દેસ નિકારો ॥૨॥ પદ ॥ મદન મન મતવારો હી કીનો ॥ મધુવ્રત હોય ગિરિધરન જવહી
જવ વદન કમલ રસ મીનો ॥૧॥ જાકે કારન સુનરી સજની જવ આરજ પથ છીનો ॥ મયા
કરી સોઈ તુમને કીની વ્યો કુંદનમેં મીનો ॥૨॥ વેસી પ્રીત હતી મેરે ઉનસોં પ્રાન પ્રકટકર દીનો ॥
વેર વેર હમને રસ જાન્યો ઉન સોતન રસ બીન્યો ॥ કહા બિરહિની સીત લયો અતિ મો મન જાત
ન દીનો ॥ દ્વારકેશપ્રમુ યા જાહેકો દેસનિકારો દીનો ॥૪॥ પદ ॥ નવલ કુંવર વ્રજરાજ લાહિયો
કહે જાહો મોહે અધિક સોહાય પહેરે કવાવ ઓઢ લઈ ફલગુલ તોહૂ સીત સતાવન આઈ ॥૧॥
અચરજ મયે સુનતહી લઝમનનંદન કનક અંગીઠી ધરી મગાઈ ॥ પુનિ જિય સોચ મંગાય ઓઢાઈ
મજ ગઈ સીત હૈસે જદુરાઈ ॥૨॥ એસે પરમ કૃપાલ દયાનિધિ વીસરત નાંહી સુધિ ફરત સદાઈ ॥
ત્રીપુરી ગિરિધારીકી વાતેં કહી જાને કોઝ દેહોં બતાઈ ॥૩॥

શ્રીદેવદીપોત્સવાઙ્ક.

શ્રીનન્દનન્દનકરુણાન્વિતેષુ વેદશાસ્ત્રસંપન્નશાસ્ત્રિમહોદયેષુ વસન્તરામશર્મસુ—સપ્રણામં
શ્રી.....સ્મરણાનિ, યમત્ર । પરશ્ચ સપ્રેમાર્થ્યમવલોક્ય શ્રીદેવદીપોત્સવાઙ્કં પ્રસન્નતરત્તેતસાવેષત
હૃદ મુત્કળપરવશેનેતિ તત્રમવતાં પ્રકૃતિપ્રવૃત્તીર્વિભાવ્યાલોચ્ય ચ વાર્ષિકાયવ્યયમાધાન્ત સહસૈવ
સ્ફુરતિ હૃદયે યદ્વાદ્ધિઃ કથંકાર પ્રકાસ્યન્તે પ્રતિવર્ષમેતાદશા વિશેષાઙ્કા इति । નિશ્ચયસ્તુ કાન્પિ-
તસ્તત્ર યદલૌકિકોય ભગવતો વૈશ્વાનરસ્યાનુપ્રહવિશેષ इति । અન્યચ વ્યેયમનુસંષાતવ્યં તાહિ નત્ર
પરિશ્રમાદિકં વિચારણીયમિતિ બ્રાહ્મણદેહમાજાં સહજસ્વભાવાબ્રાહ્મણજન્માલંકુર્વદ્વિસ્ત્રમવદ્ધિ-
રિદં સાહસમાર્વ્થં સ્યાદિતિ ભાસતે । કરુણાપારાવરસ્તત્ર પ્રયચ્છતિ કરુણાકટાક્ષમિત્યનુભાવ્યતે
વૈષ્ણવમહોદયાસ્તુ કુર્વન્તિ કરિપ્યન્ત્યપિ ચ શ્રીમતાં નિ.ત્વાર્થપરિશ્રમેરિન્સમસ્તવૈષ્ણવસમાજસ્યૈક एन
માસિકપત્રે સોત્સાહં સહાયમિતિ પ્રાર્થયતો પ્રમુપાદારવિન્દં ભવદીયનરોત્તમસ્ય સપ્રણામં શ્રીસ્મરણાનિ ॥

સરળ હૃદયની વાત.

(ટાળઃ—આસો! માસો! શરદ પુનમની રાત જો !)

સુણો શ્રદાના ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડી ધેલી બની છે તારા તાનમાં,
મીઠડા મીઠા મ્હારા આખો આપ જો ! વ્હાલબીની છેડા વેગે વાંસળી.

એ વાસળીએ જાડુ ક્યોં અહીં જો ! એ માટે સુણો સરળ હૃદયની વિનનિ,
સુણવા ઉભી પાસે પેલી ગાય જો ! આજે આગર આજો પેસો આંડવો.

દોડી આવી અહીંયા વેગે મજનાર જો ! કુમકુમ લાવી પૂજવા પ્રીતથી,
પ્રાણી જનનાં આગર સુણવા સરજો ! યાને રયામ ! કરે છે વિલંબ ? !

સુણો શ્રદાના ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડી ધેલી બની છે તારા તાનમાં.

શ્રુજીભાઈ ખીતાબપરદાસ શાહ.

પ્રશ્નોત્તર વિચારગ્રન્થ.

[ભક્ત કવિ શ્રીદયારામભાઈકૃત આ 'પ્રશ્નોત્તરવિચારગ્રન્થ' ગોલોકનાસી જોધી છાંટાલાલ ઉદ્દે નાથજીભાઈ ગિરિજરા'દેવના સંપ્રદુર્ભાંથી ઉતાયો છે.]

પ્રશ્ન:—આ કલિકાલને વિષે જે મનુષ્ય છે. તેમને સંસારરૂપ સમુદ્રના પૂરમાં તણાના વા કુળતા જનોને તરવારૂપ મુખ્ય શ્રેષ્ઠ સરલ ઉપાયનું સાધન શું છે ?

ઉત્તર:—વેદ, ગીતા, વ્યાસસૂત્રને શ્રીમદ્ભાગવતત્રિવિંશતીપુરાણ, ઇતિહાસ, મહાભારતનાદિ સર્વનો સત્ય નિર્ણય સિદ્ધાંત સર્વ સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તથા શ્રીકૃષ્ણાચાર્ય, શ્રીમદ્વેદવ્યાસાદિકે માની ભક્તરાજ મુનીન્દ્રોએ એજ નિર્ણય કરેલો છે કે—મુમુક્ષુ જનોએ સર્વંગ મૂલ્યાચાર્ય પરબ્રહ્મ પરાત્પર ત્રિગુણાતીત, અક્ષરાતીત, કાલાતીત, સર્વાતીત, પરથી પર એવા તો એક શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ, જે અત્રણિત પૂર્ણ પરમાર્નવ સદા સત્ય નિત્ય સ્વયં બ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માનેજ કહેલા છે, ને તેમની સદાસર્વદાની અક્ષયપ્રાપ્તિમાજ એક પરમાવધિ (અનિશ્ચય) સુખાનંદ છે, એમ જાણી તેમની પ્રિયતારૂપ પ્રસન્નતા મેળવવા માટે મુખ્ય સારરૂપ એકજ ઉપાય શ્રેષ્ઠ છે કે, શ્રોતસદ્ગુણરૂપે અનન્યભાવે યરણે જઈ સર્વોત્તમનિવેદન કરવું અને તેમનું ભજન (સેવન) સમરણાદિ ભક્તિએ પ્રાપ્તિવંત યજ્ઞને પ્રવર્તવું, એજ મુખ્ય ઉપાય છે. સર્વ સાધનોના ફળરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની સ્વધર્મસંહિત જ્ઞાનવૈરાગ્યયુક્ત ભક્તિ કરવી. એજ કલિમા સાગી રીતે જલદીથી તરી ચકાપ એવો ઉપાય કહેલો છે. ન્યાં સુધી અન્ય પદાર્થ ઉપર આબંધિત હોય છે, ત્યાં સુધી તેને પ્રમુ ઉપર પૂર્ણ પ્રેમ-રૂપરંગ લાગતો નથી અને સત્સંગ ક્યાં વિના અનિત્ય પદાર્થ ઉપરનો અગ્નિ કરીને થયેલો મોહ ટળતો નથી. માટે સત્સંગરૂપી પગથીયે ચઢવાથી મોક્ષની શ્રેણીએ સરળતાથી ચઢાય છે.

પ્રશ્ન:—સર્વ સાધનોમા અગ્રગણ્ય મુખ્ય સાધન કયાં છે જે દ્વારાએ સર્વફળની પ્રાપ્તિ યજ્ઞ શકે ?

ઉત્તર:—સર્વ સાધનોનું પ્રથમ પગથીયું મૂળ પાયારૂપ તો સત્સંગજ છે ને તે સત્પુરુષના સમાગમથી સત્સંપ્રદાનંદની પ્રાપ્તિના સર્વ ઉપાયો સદગતમા જાણવામાં આવે છે. વેદાદિકથી આરંભીને સર્વ કૃતિ ઉપનિષદ સંહિતા સ્મૃતિપુરાણ, ધર્મશાસ્ત્ર અને શિષ્ટપુરુષોએ રચાવેલ કરેલા સર્વ સિદ્ધાંતોના સારરૂપ મુખ્ય ૩ સાધનો છે—૧ કર્મ, ૨ જ્ઞાન, ૩ ભક્તિ. આ ત્રણે ઉપાયો અન્યોઅન્ય સદાયકારી છે, ને એથીજ વૈરાગ્યાદિ શુભ સર્વ લક્ષણો સાથે, બ્રહ્મને ઉદ્દેશીને નિષ્કામ શુદ્ધિથી શ્રીકૃષ્ણાર્પણ મતિએ પરાભક્તિ વિરહાત્મકભક્તિ સારી રીતે માદાત્મ્યજ્ઞાનપૂર્વક સર્વથી અધિક સ્નેહાત્મક પરબ્રહ્મને વિશે થાય છે, માટે સદાસર્વદા સત્સંગ કરવો ને દુઃખંજનો ત્યાગ કરવો. જેવી રીતે આગ્રહપૂર્વક સત્સંગ કરવાની આવશ્યકતા કહી તેટલાજ માપથી આગ્રહપૂર્વક દુઃખંજનો ત્યાગ કરવાની પણ ફરજ સમજવાની છે. જુએને ૬૦૦૦૦ સાંદગર વર્ષપૂર્વક શ્રીવમુનાજીમાં ગ્હીને તીવ્ર તપાચરણ સૌભરી ઋષિએ કર્યું હતું, તેમને એક સદગત્વાર મન્દરને રમણપ્રમંત્ર દષ્ટિએ પડવામાત્રથી તે સર્વ વટાવીને, સૂરપ ધારણ કરાને, માનવાતા રાજની ૫૦ કન્યાઓને પરણી, મહાદેવલક્ષ્મ્યયુક્ત તપનું પુરુષ અર્ચા નાખ્યું. દરિવંચપુણ્યમા કથા છે કે, વસિષ્ઠ વિશ્વામિત્રનો ત્યાં સંવાદ છે કે, અનેક વર્ષનું તપલ્લભી વિશ્વામિત્રે અર્પણ કરેલું ફળ તથા ધન સવસંપત્તિ જેટલું વિશ્વામિત્રને વસિષ્ઠજીએ આપેલું ફળ વધી પડવાનો ન્યાય શ્રીશંકરજીએ તુલા કરીને ભૂમિભાર-ન્યાયે જેટલા વખતમા ન લાગવાને કરી જનારો ત્યારે ગાથોઆપ અન્યો-અન્ય સત્સંજનો પ્રજાવ બદ્ધ જલ્દિ છે, એમ સમજ્યા.

પ્રશ્ન:—આપ કહો છો તેવા સત્સંગ કરવા લાયક ઉચ્ચ મન્ત પુરોનો કેમ એળખાવી નકાવ ? તે સમજવા માટે તે મહત્પુરુષોનાં લક્ષણ કહો.

ઉત્તર:—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની કથાને વિષે નિરંતર આસક્ત રહેતા હોય, ને વેદવેદાંગ શાસ્ત્રોક્ત સ્વધર્મને વિષે નિષ્ઠા હોય, ને પંચ વિધયને વિષે આસક્તિરહિત હોય, સંયરામર અદ્વાદશિ રાખી અદ્વાતી વ્યતિરિક્ત કોષ પદાર્થ ઉપર અદંતામમતા ન રાખે, ને કોષની નિંદા કે સ્તુતિ ન કરે, જેના દર્શન થતાં માનથી પ્રપંચનું જ્ઞાન ભૂધી જવાય, ને ભગવંતનું સ્મરણ થાય, સમગ્ર જગતનું ભર્યું ચાચ-હિત થાય એમ ઇચ્છી તેમ કરવાને પ્રવર્તે, અભિમાનથી રહિત હોય, ભગવદ્ગુણાનુવાદ કથન કરતાં રોમરોમ પુલકિત ગાત થઇ નેત્રે પ્રેમાશ્રુ વહે, ગદગદ-કંઠિત હૃદય ઈધાર્થ જમ, કોષનો દ્રોહ કે ઈર્ષ્યા ન કરતાં શક્તિ પ્રમાણે મદદ કરી બીજાનું દુઃખ ભાગે, મનઈંદ્રિયને ઝીતે, માધિક પદાર્થમા મોહ ન પામે, ભગવાનની લીલામાં મન અખંડ સંલગ્ન રહે, પરાપકાર કરવામા અતિઆતુરવંત થાય, અત્યંત કરુણાદષ્ટિ સર્વપર રાખે, સ્વભાવ શાંત હોય, સહેજે સમગ્ર જગતને વ્હાલા ભાગે, સતોષવૃત્તિ હોય, અનન્યભાવે શ્રીકૃષ્ણને ભજે, વિત્ત-ગૃહાદિ વિષે આનાસક્ત હોય, પ્રભુ ઉપર દૃઢ વિશ્વાસથી પ્રીતિ રાખી કપટરહિત સેવા સ્મરણ સતંસગ કરે, એ ઇલાદિક લક્ષણોથી યુક્ત હોય, જેનો સમાગમ, દર્શન, સ્પર્શ, ભાષણ આદિ યવાથી પ્રપંચની વિરમૃતિ થઈ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન ઉપર પ્રીતિમાં વધારો કરે ને તે શ્રીકૃષ્ણનું કીર્તન પોતે કરતા હોય, ને બીજાને કરાવતા હોય, તેવા હરિભક્તોનો સત્સંગ નિત્યમેવ કરતા રહેવા. એ પ્રમાણે સત્પુરુષને એળખીને સમાગમ કરવો, સત્પુરુષોનો સમાગમ કરવો એ મોક્ષનું દાર છે. એમ કહી “ તાદશી જન તેને જાણીયે જેદમા એદવા યજુ હોય ” એ પદ ગાઈ બતાવ્યું હતું.

પ્રશ્ન:—અસત્ પુરુષને એળખવાનાં ચિન્હ શાં છે ?

ઉત્તર:—દુષ્ટ સંગત એળખવાને તો અનેક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ હોય છે. તથાપિ વધારે સમજવું હોય તો જેનો સમાગમ કરવાથી શ્રીભગવાનને વિરમૃત કરાય, ને પ્રપંચાસક્તિ કમતી ન થાય તો તે જરૂર જાણવો કે આ સત્પુરુષનો સમાગમ નથી. બગલાની માફક ઉપરથી ઉજળા, પશુ અંતરમા કાળાશ, ધર, સ્ત્રી ધન, પુત્રાદિકની આસક્તિવાળા હોય ને કામ-ક્રોધાદિક અધર્મનો જે સર્ગ તેણે વ્યાપ્ત એવા જે હોય તે અસત્પુરુષ (અસંત) જાણવા, ને તેમના પ્રસંગથી અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને પ્રાપ્ત થવાય છે.

પ્રશ્ન:—અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને ભેદે એવા કાર્ષ ઉપાય છે ?

ઉત્તર:—અવિદ્યા (માયા) તે પશુ એક અજ્ઞાની શક્તિ છે ને તે દુર્જન્ય જીતી ન શકાય, એવી છે. તથાપિ તે માયાના કર્તા સર્વ અનંતશક્તિવાળા એવા પરબ્રહ્મ છે. તેને તે નિરંતર આધીન (વશ) રહે છે, માટે તે પરાત્પર પુરુષોત્તમને શરણે અનન્યપણે રહેતારને માયાનું બંધન રહેતું નથી. મગવદ્ગીતાયાં મમ માયા દુરત્યા મામેવ ચે પ્રપચંતે માયામેતા તરંતિ તે ॥ વળી માયાથી રહિત એવા ભગવન્નિષ્ઠ સત્પુરુષજનો તેમનો જે પ્રસંગ તે પશુ અવિદ્યાના બંધનને ભેદી નાખે એવી શક્તિવાળા હોય છે.

પ્રશ્ન:—બંધનનો હેતુ કાણ છે ?

ઉત્તર:—અસત્પુરુષનો જે પ્રસંગ તે બંધનનો હેતુ છે.

પ્રશ્ન:—કેવા કેવા પુરુષની સાથે સદજ સ્વાભાવિક પશુ સમાગમ ન ગળવે ?

(સંપ્રદર્શનો:—મહીયાવાળા આશ્ચર્યજાલ જમનાદામ શાહ.

રાસરમણ.

[શ્રીકૃષ્ણવ યુવક મંડળના નવમા વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે ગો. શ્રીઃ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજશ્રીના વિદ્વાતભર્યા પ્રવચનનો સાર છે. આ શુભ પ્રસંગે પોતાનું 'આત્મનિવેદન' નું પ્રવચન નિર્ણીત થયેલું હતું, પરંતુ "વિચિત્ર બ્રહ્મ" નામના સંવાદમાં "રાસરમણ" વિષયપર વડુ પ્રકાશની આવશ્યકતા જણાયાથી "રાસરમણ" પર પ્રવચન કર્યું હતું.]

શરૂઆતમાં તેઓ શ્રીમાને આત્મનિવેદનનું પ્રવચન પ્રથમ પછુ થયેલું અને ફરીથી તેજ રાખવામાં આવેલું તેનું રહસ્ય સમજાવતા જણાવેલું કે જે પ્રિય બાળન હોય તેનું વારંવાર પાન થવા છતાં તે રસવર્ધનજ છે. ત્યારબાદ "રાસરમણ" પ્રવચન શરૂ કરતાં જણાવ્યું હતું કે શ્રદ્ધાળુ જનતા તેમજ કલિકાલના દુષ્ટ વાતાવરણથી કલુષિત જનતાને-અને સતોષ યાચ તે માટે શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની આ લીલા લૌકિક અને અલૌકિક બન્ને રીતે સર્વથા નિર્દોષ છે તે પ્રતિપાદન કર્યું હતું. જો કે પોતે સ્વીકાર્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણને ઘડીભર પછુ લૌકિક મનુષ્ય-માનવા તે એક જાતનો મહાન અપરાધ છે. પરંતુ ઉપરિચિત પ્રશ્નને શંકા, કુશંકાથી તદ્દન નિર્મૂલ કરવા પોતે લૌકિક રીતે-આ લીલા નિર્દોષ છે, એમ સિદ્ધ કર્યું હતું. તેમા પ્રથમ પ્રમાણુ તો શ્રીકૃષ્ણની એકાદશ વર્ષની વય કે જે હાલના કલિકાલમા પછુ કામવિકારની કલુષિતતાથી સર્વથા મુક્ત હોય છે. તો તે સમયમાં તો હોય તેમાં નસર્જન નથી. વળી કામ પછુ સમાન વયમા સંભવે છે. સમાજસીલ-વ્યસનેષુ મેલી ॥ બ્યારે આ પ્રસંગમાં તો પ્રશ્ન એકાદશ વર્ષના હતા અને ભગવદ્દરસનુબધા અપરિમિત શ્રીગોપીજનો પેટી કેટલાક વયોવૃદ્ધ પછુ હતા. આ બન્ને રીતે 'રાસરમણ' તે કામક્રીડા નથી તેમ લૌકિકરીત્યા પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું હતું.

ત્યારબાદ અલૌકિક રીતથી પ્રતિપાદન કરતાં પ્રથમ તો જણાવ્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણ કેવલ શ્રીગોપીજનના પ્રિય નથી પરંતુ તે તો અખંડ વિશ્વના નાયક છે. અને પોતે શક્તિમાન છે બ્યારે શ્રીગોપીજનો પોતાની શક્તિ છે. એટલે શક્તિ શક્તિમાનથી જુદી હોય નહિ. તેમ પોતાના સ્વરૂપમાં વિદ્યારી રહેલું આ બ્રહ્મા સર્વથા પોતારૂપ (સ્વરૂપ) હોવાથી રાસરમણ એ બ્રહ્મનું બ્રહ્મ સાથેજ રમણ છે. અર્થાત્ અંશીનું અંશ સાથેનું રમણ છે.

વળી બ્યારે શ્રીગોપીજનોને ભગવાને વેલુનાદ કરી પોતાની પાસે તેડ્યાં ત્યારે શરૂઆતમાંજ ભગવાન તેમને પાછા ફરવાનું કહેતા શ્રીગોપીજનો પ્રત્યુત્તરમાં જણાવે છે કે હે ભગવાન ઇન્દ્રિય-જન્ય કામ અને તેની વાસનાઓ પર તો અમે પૂલો મુકીને આવ્યા છીએ. સર્વોપદાન્તેત્યજ્ય ॥ સમ્યક પ્રકારે દંબ કરીને આવ્યાં છીએ. એટલે અમે તદ્દન નિષ્કામ બનીનેજ આવ્યાં છીએ. મદિ વસ્તુતઃ કામજ પ્રાધાન્યે હોત તો આવાં પાછાં ફરવાના તેમજ શ્રીગોપીજનનાં પ્રત્યુત્તરનાં વચનો સંભવજ નહિ. અર્થાત્જ લૌકિક કામને તો અમે બરાબર શુદ્ધ નાખીને આવેલા છીએ એટલે તે ફરીથી પછુ ઉત્પન્ન થવાનો નથી. એટલે કે અમે ભગવદ્દરસ પ્રાપ્તિને માટે અત્રે ઉપરિચિત થયાં છીએ.

વળી જો એમ કહેવામાં આવે કે ભગવદ્દરસના અધિકારી તો ફક્ત શ્રીકૃષ્ણજીજ છે. તો પ્રથમથીજ દરેક ગોપીજનમાં લક્ષ્મીત્વ સ્થાપન કર્યો બાદ એટલે કે ભગવદ્દરસનો અત્વનાં અધિકારી બનાવ્યા પછીજ ભગવદ્દરસનું દાન કરેલું છે. આ વેલુનાદે માત્ર સજ્જનીય અર્થાત્ માનવ જાતિનેજ મુખ્ય કરેલી નથી પરંતુ ઇતરજાતિનાદિક વૃક્ષો, નદીઓ પદાર્થો, ગાયો, ઇલાદિની નૈસર્ગિક પ્રકૃતિઓનો સ્વભાવ ભૂલાવી દેતા અંતર્ગત આનંદને પ્રકટ કર્યો છે.

અત્રે આપશ્રીએ ગોપાલોત્તરતાપિની ઉપનિષદમાં આવેલી આખ્યાયિકાનો ઉલ્લેખ કરતા જણાવેલું કે, જ્યારે ગોપીજનોએ ગૃહસ્થના ધર્મ પ્રમાણે અતિથિ સત્કાર માટે શ્રીકૃષ્ણને પૂછ્યું ત્યારે દુર્વાસા મુનિનું નામ આપ્યું હતું. તેમના આશ્રમે જતાં વયમાં શ્રીયમુનાજીને સામેવાર જવાનું હતું તેમ કરવામા પોતાની અશક્તિ જણાવતાં શ્રીકૃષ્ણચંદ્રે આજ્ઞા કરી કે તમે શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે, તેમ કહી શ્રીયમુનાજીને વિનંતિ કરશે તો માર્ગ મળશે તે પ્રમાણે કરવાથી ગોપીજનો દુર્વાસા મુનિના આશ્રમે જઈ ભોજનાદિક કરાવી પાછા ફરવા માટે પૂછતાં મુનિએ જણાવ્યું કે “દુર્વાસા સદા ઉપવાસી છે.” તેમ કહેતાં શ્રીયમુનાજી માર્ગ આપશે. આ ઉપરથી એક ગાન્ધર્વા નામની ગોપી આગળ આવી પ્રશ્ન કરે છે કે અમેએ આપને હમણાં જ ભોજન કરાવ્યું છે માટે આનું રહસ્ય અમે સમજી શકતાં નથી. ત્યારે મુનિએ જણાવ્યું કે જેમ શ્રીકૃષ્ણનું રમણસ્વીય રમણ છે. અર્થાત્ બ્રહ્મનો બ્રહ્મસાથેનો વિલાસજ છે, એટલે શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે. તેમજ આ ભોજન પાચણોત્તિક શરીરે કર્યું છે તદન્તર્ગત આત્માએ કર્યું નથી. આત્મા તો સદા ઉપવાસી છે. એટલે ભોજન કર્યા છતાં હું સદા ઉપવાસી છું. આ પ્રસંગથી શ્રીકૃષ્ણે પોતાનું નામ મદાત્મ્ય તથા ભક્તમાદાત્મ્ય દર્શાવ્યું અને સાથે સાથે રાસક્રીડા એ કામક્રીડા નથી એનું પણ સૂચન કર્યું આવી રીતે ખાત્રી થતાં શ્રીગોપીજનો સ્વસ્થાને આવી પહોંચ્યાં. આ ઉપરથી પણ આ રાસરમણ લૌકિક કામોપભોગ નથી પરંતુ ભગવદ્ભક્તોમા આધાન છે.

છેવટમા આપશ્રીએ સમયના અભાવે ટુંકાવતાં જણાવ્યું કે લૌકિક કામનું ફળ તો સંસારોત્પત્તિજ હોઈ શકે. પરંતુ બ્રહ્મિઆં તેનું કાષ્ટ છેજ નહિ. પ્રત્યુત્ત લૌકિક કામનાઓ તો વેણનાદ્વારા આદ્વાન પૂર્વજ સમ્યકે પ્રકારે દબાયેલી હતી. જ્યારે રાસરમણમા તો કેવળ ભગવદ્દસનીજ સ્લાહી થઈ રહી હતી.

શ્રીમત્પ્રમુચરણ.

(શ્રીખાલકૃષ્ણ શુદ્ધાદૈત મહાસભાના વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે આયુષ્માન ગોસ્વામી શ્રીઃ શ્રીગોવિન્દરાયજી મહોદયે કરેલું રસપૂર્ણ વ્યાખ્યાન.]

શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય તથા પિતૃચરણ તેમજ શ્રીમદ્વલ્લભચરણસરોરુદાશ્રિત ઉપસ્થિત વૈષ્ણવ વૃંદ.

આજે આપણા સર્વના ભાગ્યના ઉદયરૂપ શ્રીમદ્ભક્ષાધીશના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિકૃલેશ પ્રભુના પ્રાકટ્ય મહોત્સવનો દ્વિતીય દિવસ છે. આપણા સંપ્રદાયમાં આ દ્વિતીય દિવસ પણ ઉત્સવ દિન ગણાય છે. એ ઉત્સવપ્રસંગે આપ સર્વને એકત્ર થએલા બેઠાને મને ધણો આનંદ થાય છે, એટલુંજ નહિ, પણ એ આપણા સૌભાગ્યના હેતુભૂત શ્રીમદ્વિક્ષાધીશના કંઈક ગુણાનુવાદ આપ સર્વની સમક્ષ કરવા માટે પૈરાઈ છું.

ભાગ્યવાન્ વૈષ્ણવો, શ્રીમદ્વિક્ષનાથ એ નામજ્ઞ આપણા ભાગ્યોદયનું સૂચન કરે છે. આપ સર્વને એ સુવિદિત છે કે આપણે સર્વ કલિકાલમાં જન્મ્યા છીએ, કાલનો પ્રભાવ એવો છે કે તેણે વેદાકત સર્વ સાધનોના આધારભૂત પદ સાધન સંપત્તિને કુટ બનાવી દીધી છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિમાર્ગ એ ત્રણે શ્રેયસના સાધનભૂત માર્ગોમાંથી એકેય માર્ગનું અવલંબન અશક્ય પ્રાય થઈ પડ્યું છે. “કલૌ ભક્ત્યાદિમાર્ગો દિ દુઃસાધ્યા इति मे मतिः” એ શ્રીમહાચાર્ય-ચરણની ઉક્તિ અત્ર પ્રમાણ છે. આવી પરિસ્થિતિમાં આધુનિક જીવોપર અત્યંત દૃષા વિચારી

રિય પુત્રને વિષે નિરંતર મનનું સ્થાપન કરવું, અને એમની સમાન બીજા છે એવી મતિ કાઢવું દિવસ કરવી નહીં.

વૈષ્ણવ સમજનો ! શ્રીમદ્દા પ્રભુજીના લાલજી બે છે, શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલાચજી; પરંતુ જેમ શ્રીવૈષ્ણુગીતના પ્રસંગમાં કૃષ્ણ-બલદેવ શ્રીચરણના બે સુત હોવા છતાં એકજ મુખનું દિગ્દર્શન કરેલું છે. તેમ અહીં પણ પ્રિય પુત્ર એ શબ્દથી શ્રીવિઠ્ઠલાચજીમાં શ્રીગોપીનાથજીનો સ્થાવેશ આપણે કરી શકીએ છીએ. આમ કરવાનું કારણ બીજું એકે નથી, પરંતુ એટલુંજ છે કે શ્રીમદ્દા પ્રભુજીએ પુષ્ટિમાર્ગનું પ્રાકટ્ય કર્યો પછી તે માર્ગનો પ્રકાશ ખાસ કરીને શ્રીવિઠ્ઠલાચજીએ કરેલો છે. અને અહીં જે મનના સ્થાપનનો પ્રકાર શ્રીહરિરાયજીએ ઉપદેશેલો છે, તે સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતપરત્વેજ છે એમ સ્પષ્ટ માલમ પડે છે. શ્રીવલ્લભાધીશ તથા શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ સમાન કાઢ બીજો નથી એવો મનમાં નિશ્ચય કરવાની જે આગા આ શ્લોકમાં છે તે એટલા માટેજ કે જ્યાં સુધી સિદ્ધાંતનો નિશ્ચય થાય નહિ, ત્યાં સુધી માર્ગ સૂઝતો નથી અને વ્યવસ્થિત આચરણ શક્ય રહેતું નથી, માટે સૌથી પહેલી આગા બાબત બક્ષત પ્રત્યે શ્રીહરિરાયજી તરફથી એજ મલે છે કે પહેલો નિર્ધાર એજ કરવો ઘટે છે કે શ્રીમદ્દા પ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજી જે સિદ્ધાંત સાર પ્રતિપાદન કરે છે તેજ એક સુનિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે, જીજ્ઞા આચાર્યોમાં ભલે પાંડિત્ય હોય, નિગમને વિષે મતિ હોય, નિગમોક્તક્રિયાનું પાલન હોય, હરિમાર્ગનો પરિચય હોય, તેમજ એ વગેરે બીજા શુભો ભલે હોય, તો પણ શ્રીવલ્લભાધીશની સાથે કાઢની તુલના કરી શકાય એમ નથી. શ્રીવલ્લભાધીશ અને શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ વસ્તુતઃ એકજ છે, અને એકજ કાર્ય કરવા માટે બે સ્વરૂપે પ્રાકટ્ય છે. તેથીજ બ્રહ્મસૂત્રના છેલ્લા દોઢ અધ્યાયનું બાબ્બ પણ શ્રીગુણાંકજીએ સ્વેચ્છું હોવાથી આચાર્યત્વ પણ શ્રીમદ્દા પ્રભુજી સાથે સમાનપણાથી છે.

હવે આ પ્રમાણે શ્રીમદ્દા પ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજી વિષે મનના સ્થાપનની આગા પર આટલો ભાર દેવાની જરૂર શ્રીહરિરાયજીએ શા કારણથી જોઈ દર્શો તે સમજવા જરા પ્રયાસ કરીએ. આપ સર્વ જાણો છો કે ધર્મની ગતિ અતિસૂક્ષ્મ છે. ધર્મના સિદ્ધાંતો સામાન્ય બુદ્ધિથી અગ્રાહ્ય છે. અને તેનો પ્રકાશ હૃદયમાં ત્યારેજ થાય છે કે જ્યારે શુરભક્તિ પ્રેમપૂર્વક કરવામાં આવે છે. શુર વિના જ્ઞાન નહિ, એ સામાન્ય કહેવત સાર્વજનિક છે. શ્રુતિ પણ એ આગા કરે છે કે:-

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

વેદાદિશાસ્ત્રપ્રતિપાદિત સિદ્ધાંતનો પ્રકાશ તો તેનાજ હૃદયમાં થાય કે જેને જેવી દેવને વિષે પરાભક્તિ છે તેવીજ શુરને વિષે પણ છે. આ કારણથી શુરનો નિશ્ચય થવા વિના ધર્મમાં કાંઈ પણ પ્રકારની પ્રગતિ થતી મુશ્કેલ છે. વેદાદિ શાસ્ત્રના અર્થનો પ્રકાશ જે પોતાના હૃદયમાં થયેલો નેવા ધ્વજીતો હોય, તેણે તો યોગ્ય શુરનું શરણ સ્વીકારી તેની પ્રેમપૂર્વક સેવા કરવી જોઈએ. આટલું થયા પછી તો તેને ફક્ત શુરની આગાનું પાલન કરવાનુંજ બાકી રહે છે, અને જેમ જેમ આગાનું પાલન થતું જાય છે તેમ તેમ તે પુરુષ આગળ ને આગળ વધતો જાય છે. પ્રથમ સૌથી અધરામાં અધરી બાબત છે તે એજ કે યોગ્ય શુરની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે કરવી ? મતલબ કે તેમને કેવી રીતે શોધી કાઢવા ? આ અધરામાં અઘરું કાર્ય હોવાથી શ્રીહરિરાયજી પોતેજ એ બાબતમાં જે નિશ્ચય કરી શક્યા છે તે જણાવે છે અને આગા કરે છે કે જો તમે તેમાં ફાંસી બંધુ ધ્વજીતા હોત તો શ્રીમદ્દા પ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજીને વિષે પ્રથમ ભાવ સ્થાપન કરવો કે એજ અમારા શુર છે, અને એમનીજ આગા અમને શિરસાવંઘ છે. બીજા કાંઈ ગમે તે પ્રકારે કહેતા

હોય તેની સાથે અગારે નીસજત નથી. આ બાબતમાં ઘણું કહી શકાય એવું છે, પણ એ બધું કહેવા જેટલો સમય પણ નથી. તેમ છતાં આપ તો પુષ્ટિમાર્ગનુયાયી છો, એટલે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુસાંધજીની શક્તિ, પાકિલ વગેરે બાબતમાં કંઈને કંઈ આપના સાંભળવામાં, વાંચવામાં, તેમજ જાણવામાં આવ્યું હશેજ એમ હું આશા રાખું છું. હું તો આજે એટલુંજ કહી વિરમીશ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુસાંધજીના પ્રાકટયોત્સવ પ્રસંગે જે થોડી ઘણી બાબતો 'મેં' વિવેચન કર્યું તેટલું પણ આપના દીક્ષમાં કર્યું હશે તો શ્રીકરિશયજીના આ વચનામૃત આપને જો તરનજ ઉતરી જશે અને આપની ખાત્રી થયા વિના રહેશે નહિ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુસાંધજીએ જે સંપ્રદાય ચલાવ્યો છે તે એક વાજ જેવો નથી, પરંતુ એક સરસ રાગમાર્ગ છે. વિચાર કરશો તો એટલું પણ માણુમ પડશે કે દેશકાલની પરિસ્થિતિ પણ એ બંને આચાર્યશ્રીઓએ સંપૂર્ણ ખ્યાલ કરેલો છે, અને ત્યાર પછીજ ગૃહસ્થાશ્રમને પણ અનુકૂળ થાય એવો દુંકામાં દુંકા, સરળમાં સરળ અને ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસ્તો શોધી કાઢી તેનો જનકલ્યાણને અર્થે ઉપદેશ કરેલો છે. માટે શ્રીમદ્દહરિરાયચરણની આરા દરદરે મેશ યાદ રાખશો અને એ બંનેની આરાઓનું યથાશક્તિ પાલન કરવા દૃઢ નિશ્ચય કરશો એવી હું આશા રાખું છું 'શ્રીમદ્વલ્લભનામધેયસદશો ભાવી ન ભૂતોસ્ત્વપિ' એ ધ્યન આપને પરિચિતજ હોવું હોવું જોઈએ. "ન કાષ્ઠ લુઓ ન હોય એ રૂપ સમ તેના સકલ નિજનિગમ સાખી" એ ભગવદીય ગોપાલદાસજીના કથનમાં ઉપરના વચનનોજ અનુવાદ છે. વિશેષતા એટલીજ છે કે ઉપલી પંક્તિમાં શ્રીમહાપ્રભુજીનું અદ્વિતીયત્વ પ્રતિપાદન કરેલું છે, અને ભગવદીય ગોપાલદાસજીએ તેવીજ રીતે શ્રીયુસાંધજીનું પણ અદ્વિતીયત્વ અનુભવસિદ્ધ તરીકે બહાર પાડ્યું છે. માટે આવા સર્વ અઘૌઘિક સામર્થ્ય ધારણ કરનાર શ્રીમદ્દિગ્વેશ્વરનું શરણ સ્વીકારી બંને તેટલું તેમની આરાનું પાલન કરવામાજ આપણું કર્તવ્ય સમાપ્ત થાય છે એમ હું ધારું છું.

શ્રીગોકુલનાથજી.

મારું સર્વસ્વ ધન થી ગોકુલનાથજી અન્ય સાધન તણું નહિ કામજી મારું.
 બિન રખવાળે રહે સલામત, ચોર ચોરે નહિ લગારજી;
 પ્રેમભક્તિથી ચોરવા ધારે, ચોરે તે તત્કાળજી. મારું.
 અશ્વસિદ્ધિ નવનિધિ ચરણમાં, દેવદેવી તણો વાસજી;
 અનન્ય પ્રેમથી પ્રભુજીને ભજતાં, ન રહે કાંઈ કચાસજી. મારું.
 સમય સમયે ભક્તોની રક્ષા, કરો શ્રીધનરાયભજી;
 ભક્તો તમારા તમે ભક્તોના, પ્રિય હો રાધે સ્વામજી મારું.
 નવધા ભક્તિ સિદ્ધ કરી પ્રભુ, દશમી ભક્તિથી દાન કરજોજી;
 હું ભાવ પુંભાવ દૂર કરીને, પ્રેમ લક્ષણા ઉર ભરજોજી. મારું.
 જીવ અતિ દોષોનો ભરેલો, સાધન નથી ગિરિધારીજી;
 દિન ચંદ દાસીની આકાંક્ષા પૂર્ણ કરો શ્રીમુરારિજી. મારું.

(લેખક રા. રા. કૃતચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, પાઠરા)

વેદાન્તતાત્પર્યનિરૂપણ.

(અનુવાદક—શ્રીયુત હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી મીમાંસક વેદાન્ત વિશારદ M. R. A. S.)

અમવદતિરસાલં જિહ્વાવિદ્યુજ્જટાલં પ્રલયજલદજાલં ચક્રપાલહ્લુતેપુ ।

શિશિરમુખમયૂલૈર્મક્તસન્તાપહાલં સવિમુરિલલકાલં મદદશાં ગોચરોઽસ્તુ ॥

શ્રુતિશિરસિ યસ્ય મહિમા નિરૂપધિરીશોઽપિ યસ્ય સ્વલુ મહિમા ।

તં કૃષ્ણમાદિમૂર્તિં નમામિ નિરવચસદગુણં બ્રહ્મ ॥

ઉપકેમ—શ્રીમદ્ભગવદ્દેવૈશ્વાનરાવતાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્ભક્તભાગ્યાયૃષ્ણપાદપ્રણીત તત્ત્વાર્થ-દીપનિબંધમા સમ્યક્દાનંદ પરબ્રહ્મ આદિમૂર્તિત્વે ૧ શ્રીકૃષ્ણને ઓળખાવ્યા છે. વ્યાસ ભગવાને બ્રહ્મસૂત્રોમા અને શ્રીમદ્ભાગવતમા પણ આજ સ્વરૂપને મૂલ પુરુષત્વે સ્વીકાર્યું છે. કેટલાક લોકો “ ૨ શ્રીકૃષ્ણથી પર (શ્રેષ્ઠ) કેાઈ પણ વસ્તુ હું બાંધુતો નથી ” કહે છે; છતાં પણ દુરાગ્રહાવિષ્ણુત્ત્વે, “ તે, યશ્ચ રીતે અવિદ્યાત્મક ઉપાધિ પરિવેદાપેક્ષજ ઇશ્વરનું ઇશ્વરત્વ, સર્વજ્ઞત્વ અને સર્વશક્તિત્વ છે; પણ પરમાર્થતઃ નથી. ” એમ પણ કહેવાની મૂંઝેલીતા કરે છે. વિદ્વાન અને વિચારશીલ વૈષ્ણવો સમજી શકે છે, કે આ આસ્તિકતા છે, કે બૌદ્ધમતપ્રવેશ ? ઇશ્વરવાદ છે કે અનીશ્વરવાદ ? અરે સત્યવાદિતા છે, કે અસત્યવાદિતા ? વળી કેટલાક તુરગાસ્થો-પાસકો પણ વર્ગાવિહીન થઈને “ તુરગતું ” કે પા કરીને શ્રીકૃષ્ણની સાથે સંબંધ બાંધવાને ૧૧૧૧ સંબંધ સિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરે છે. પશ્ચિમતુરગર શ્રીમત્પુરુષોત્તમપ્રભુચરણ આગ્રા કરે છે કે શ્રીકૃષ્ણ નિરૂપધિ છે. શ્રીકૃષ્ણ સાથેનો જીવનો સંબંધ ગૌણ નથી, પ્રધાન છે. ઇશ્વરને અવિદ્યાની ઉપાધિથી યુક્ત કહેવા જેમ શ્રુતિસૂત્રથી વિરુદ્ધ છે; તેમજ જીવનો ઇશ્વર (શ્રીકૃષ્ણ) સાથે થતો સંબંધ ગૌણ માનવો એ પણ પૂર્વતન્ત્રના તૂટીયાધ્યાયરથ ચુલ્કપ્રધાનના વિવેકનું અજ્ઞાનજ દાખવે છે.

ઇશ્વર કારણરૂપ, આન્તર, ભોક્તા અને અન્તર્યામી પણ છે; અને તેથી જ તે અનેક-વિધમહિમાયુક્ત પણ છે. “ બ્રહ્મ એક જ રૂપે યાય છે, તે અનેક રૂપે શી રીતે યાય છે, તે પણ તત્ત્વરથક્ષેમા પ્રતિપાદન કર્યું છે જ. યાવદ્ વેદાન્તવાંક્યો અન્તરરૂપ બ્રહ્મની મહિમાનું નિરૂપણ છે. અને તેથીજ સર્વ વાંક્યો બ્રહ્મપર છે; આ વાર્તા તો નિર્વિવાદ છે જ. ”

શ્રીકૃષ્ણ જગતનું કારણ છે—હવે સૌથી પ્રથમ એ વિચારવાનું છે, કે ભગવાન જગતનું કારણ કારણ યદ્ય શકે કે નહિ ? વ્યાસભગવાન વેદાન્તસૂત્રોમા બ્રહ્મવિચારનો પ્રારંભ કરી સૌથી પ્રથમ જગતનું કારણ નિરૂપધિ શ્રીકૃષ્ણ-પરબ્રહ્મ-છે એમ કહે છે. “ જેથી જન્મ આદિ યાય છે, તે બ્રહ્મ છે; કારણ કે તેને શાસ્ત્રમા કારણ કહ્યું છે. ” અત્ર “ જેથી વ્યાસ જૂતો ઉત્પન્ન યાય છે, ” ઇત્યાદિ તૈત્તિરીય શ્રુતિ ઉપર વિચાર પ્રસ્તુત થયો છે, પ્રશ્ન યાય છે કે, બ્રહ્મમાં કર્તૃત્વ છે કે અકર્તૃત્વ ? કેમ “ સત્ય ” જ્ઞાનરૂપ અને અનન્ત બ્રહ્મ છે. ” આ બ્રહ્મસ્વરૂપપ્રતિપાદક વાંક્યમા બ્રહ્મને જગતનું કારણ કહેવામા આવ્યું નથી અને બ્યા

૧ આદિમૂર્તિઃ કૃષ્ણ એવ સેવ્યઃ સામુદયકામ્યયા । ૨ કૃષ્ણાત્પર કિમપિ તત્ત્વમદં ન જાને । ૩ તદેવમાવિષ્યાત્મકોપાધિપારિત્ત્યેદોષેશ્વરમેવેશ્વરસ્થેશ્વરત્વં સર્વજ્ઞત્વં સર્વશક્તિત્વં ચ, ન પરમાર્થતઃ । જુઓ ૨।૧।૧૪ નું શાકર ભાષ્ય. ૪ દેવો મૃત્વા દેવં અજેત એ ન્યાયે. ૫ જુઓ સિ. ૨. વિ. નું ભાષાન્તર ૫૪ ૪૭. ૬ એકોઽહં બહુ સ્યામ્ હતિશ્રુતેઃ ૭. જન્માયસ્ય યતઃ શાસ્ત્રયોગિત્વાદ્ । ૮ યતો વા હમાનિ મૃત્વાને જાયન્તે । ૯ સત્યં જ્ઞાનમનન્તં મહા ।

આગળ શ્રુતિમાં કર્તૃત્વ કહેવામાં આવ્યું છે, ત્યાં અન્યગત કર્તૃત્વનો આરોપ કરાયો છે, એમ માનવાથી પૂર્વ પર વાક્યોની સંગતિ લાગી જાય છે, તેથી સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યના ઉપશ્લેષક કાર્યપ્રતિપાદક વાક્યમાં પણ આરોપજ માનવો ઉચિત છે, માટે બ્રહ્મ કારણ નથી એમજ કેમ ન માનવું જોઈએ !

ઉપર જણાવેલી કારણત્વપ્રતિપાદક તૈત્તિરીય શ્રુતિમાં ‘આ’ એ દર્શક સર્વનામ વડે જગત્તે બતાવીને તેનું જન્માદિ કહ્યું છે. વળી આ શ્રુતિનું વિવરણ કરતી કે કમસૂચિનું પ્રતિ-પાદન કરતી “તે પરમાત્માથી આકાશથી ઉત્પન્ન થયું” શ્રુતિમાં આઘ આકાશની ઉત્પત્તિ જણાવી છે, આ ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે શાસ્ત્રમાં-પૂર્વકાંડ તથા ઉત્તરકાંડ-સૂત્રિપ્રતિપાદક વાક્યો કારણત્વે પરબ્રહ્મનેજ સ્વીકારે છે. કાર્યપ્રતિપાદ વાક્યો સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યોના આધારે હોવાથી સ્વરૂપપ્રતિપાદકવાક્યરોષમાં “બ્રહ્મ કારણ નથી” એમ નિષેધ વાક્ય બેવામાં આવતું નથી, પ્રત્યુત્તર કઠંગુ છે એમજ કહ્યું છે. તેથી “તે રચરચૂદ અનણુ” ઇત્યાદિ ધર્મનિષેધક વાક્યમાં ધર્મનો નિષેધ હોવા છતાં પણ બ્રહ્મ અલૌકિક હોવાથી અને નિષેધમાં લૌકિક ધર્મોનો સમાવેશ થયેલો હોવાથી લૌકિકરીતિકર્તૃત્વનો નિષેધ પ્રાપ્ત થતાં અલૌકિકે કર્તૃત્વ તો સિદ્ધજ છે. અન્યથા કર્તૃત્વપ્રતિપાદક શ્રુતિ અને ધર્મનિષેધક શ્રુતિમાં વિરોધ ઉપરિચિત થતાં અમુક શ્રુતિ બ્રહ્મવતી અને અમુક નિર્જળ એમ કરીને પરસ્પર વિરોધ બાધ પ્રસક્ત થાય પણ અત્ર તેનો બાધ લાગુ પડી શકે તેમ નથી, બાધ કે બદ્ધાબન્ધનું આ પ્રકરણ ન હોવાથી કોઈ પણ આસ્તિક તેવી કલ્પના ન રી શકે. વળી માયાવાદની પદ્ધતિને અનુસરીને લક્ષણા કરીને બ્રહ્મપર કર્તૃત્વનો આરોપ કરવો જન્ય હોવાથી શ્રુતિસિદ્ધ કર્તૃત્વનો ત્યાગ કરવો અનુચિત છે. આથી સિદ્ધ થાય છે કે સર્વનું આદિ કારણ પરબ્રહ્મ સમિચ્છદાનંદ સ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ જ છે. ૧ મન્વય ધિકરણમાં નિરુપધિક બ્રહ્મનું ઉપાદાનકારણત્વ જણાવ્યું છે અને ૨ ઇક્ષત્વધિકરણમાં સમિચ્છદ્રૂપે કારણત્વ વિચાર્યું છે તેમજ ડેઆનંદમયા-ધિકરણમાં આનંદરૂપે કારણ કહ્યું છે. અને ત્યાંજ અ મયાદિની અપેક્ષાએ આન્તરત્વ પણ જણાવ્યું છે. અન્નમય, પ્રાણમય, મનોમય અને વિજ્ઞાનમય કહીને “૪આનંદમય આત્મા આથી અન્મ અને આન્તર છે” ઇત્યાદિવાક્યોમાં આન્તરત્વ કહ્યું છે.

ધોળ.

પોષ મદાખડ લાગી રે આજે સોહેલો, તેમાં સુડી પંચમી સુદાગી આજે સોહેલો. વાર ભલો સ્વિવાર રે આજે સોહેલો, નિસ ઘટિકા છપન પલ અનુરાગી રે આજે સોહેલો. મંબત ઝોગણીસે પીસતાલીસ રે આજે સોહેલો, પ્રાદુર્ભાવ ભયો પુષ્ટ પુષ્ટ રે આજે સોહેલો. દેવી શ્રવ લખે પ્રયુ સ્પષ્ટ રે આજે સોહેલો, મીટયો વિરહાનયકો કષ્ટ રે આજે સોહેલો. ધન્ય શ્રીગોવિંદરામ રે આજે સોહેલો, સુત પાયે શ્રીગોપેશ્વરલાલ રે આજે સોહેલો. શ્રીગોવિંદરામજીના લાલ કહીએ રે આજે સોહેલો, સેવ્યા વિટલેશાય રે આજે સોહેલો. મુંદર અનુપમ સોદાએ રે આજે સોહેલો, વ્રજજન નીરખી દરખ મનમોહીએ રે આજે સોહેલો. નાયત ઉમંગ ભરી સુકુમારી રે આજે સોહેલો, સંગ ઝાંઝ પખાવજ થાલી રે આજે સોહેલો. દેત આશિષ વ્રજબાલ રે આજે સોહેલો, શ્રીગોવિંદરામજી તિહારે લાલ રે આજે સોહેલો. ઉત્સવ ધરધર પ્રતિ દરહી રે આજે સોહેલો, શ્રીગોપેશ્વર પતિપદ અનુસરહી રે આજે સોહેલો.

KRISHNA AND HIS FLUTE.

Be still, my heart, and listen,
For sweet and yet accute;
I hear the wistful music,
Of Krishna and his flute.
Across the cool, blue evenings,
Throughout the burning days.
Persuasive and beguiling,
He plays and plays and plays.
Ah, none may hear such music,
Resistant to its charms,
The household work grows weary,
And cold the husband's arms.
I must arise and follow,
To seek in vain pursuit,
The blueness and the distance,
The sweetness of that flute.

In linked and liquid sequence,
The plaintive notes dissolve;
Divinely tender secrets,
That none but he can solve.
Oh, Krishna, I am coming,
I can no more delay;
My heart has flown to join thee,
How shall my footsteps stay ?
Beloved, such thoughts have peril,
The wish is in my mind;
That I had fired the jungle,
And left no leaf behind,
Burnt all bamboos to ashes,
And made their music mute;
To save thee from the magic
Of Krishna and his flute.

(By *Lavance Hope.*)

શ્રીગોકુલનાથજી.

૧

રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના;
જહાગીરી આદેશ ન માન્યો, પરાસ્ત વળી ચિદ્રૂપને કીધો;
ઉડવી વિશ્વે વિજયપતાકા, કીધી માલા તિલકની ગ્લા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

૨

સંસ્કૃત ગ્રન્થો પ્રચુર વિલેખ્યા, ભાવાત્મક ગંભીર અનેરા;
એ બુદ્ધિ પંડિત મંડલના, ગોસ્વામિ-કુલ-દીપક-વંદાવા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

૩

ધીમદ્ ગોકુલનાથ તણો છે, હિતસ આગે ઉજવો પ્રેમે;
કામ-ક્રોધ ત્યાગી સધળા, દેવ હઠાગ્રહ છોટી વંદાવા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

“ સિદ્ધાન્તમુક્તાવલી. ”

(લેખક:—વિદ્યાર્થી લગવતીદાસ ગોવિંદદાસ દેસાઇ)

નત્વા હરિં પ્રવક્ષ્યામિ સ્વસિદ્ધાંતવિનિશ્ચયમ્ । કૃણ્ણસેવા સદા કાર્યા માનસી સા પરા મતા ॥

અર્થ:—હરિભગવાનને નમીને પોતાના સિદ્ધાંતનો મારી રીતે નિશ્ચય કહીશ. હંમેશાં કૃષ્ણની સેવા કરવી. માનસી સેવા તે ઉત્તમ મનાએલી છે.

પ્રથમ તો આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગ્રંથમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ દરેક યાજ્ઞોતું તરન થું છે ? તે પોતાના નિર્ણય લકતો માટે જતાવેલ છે. એ પોડશ ગ્રંથમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સ્વમન દર્શાવ્યું છે અને તેજ નિર્ણય અને મુખ્ય છે પૂર્ણવિતા શ્રીગોપેશ્વરજી કહે છે કે જ્ઞાનસત્ત્વ લાભમાં આચાર્યશ્રીએ આધિભૌતિક મતનું નિરૂપણ કર્યું છે. નિયમમાં આધ્યાત્મિક મતનું અને મુખ્યોચિત્તમાં આધિદૈવિક મતનું, બ્યારે પોડશ ગ્રંથોમાં નિર્ણય મતનું પ્રતિપાદન કર્યું છે. તેમજ આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગોપ્ય છે. આ ગ્રંથનું રક્ષણ બંને તેમા કહેલા ઉપદેશો પ્રમાણે વર્તે તો જ યથ શકે.

આ ગ્રંથમાં પણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી હરિને જ નમન કરે છે. એટલે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી જેવા પણ દીનતા રાખી પ્રથમ દરેક કાર્યની અંદર લકતોનાં દુઃખને હરણ કરનાર એવા શ્રીહરિભગવાનને નમન કરે છે. તેવી રીતે આપણે પણ પ્રભુને આગલ રાખી કાર્ય કરીશુ તોજ તેમાં કુતેહમંદ થઇશું. આમાં કહ્યું છે કે “ કૃણ્ણસેવા સદા કાર્યા ” કૃષ્ણની સેવા હંમેશા કરવી. આમાં શંકા થાય કે શ્રીકૃષ્ણનીજ સેવા શા માટે ? બીજા બીજાની કેમ નહી ? તેને માટે કહે છે કે શ્રીકૃષ્ણ શ્રીપુરુષોત્તમ પૂર્ણાવનાર છે. ક્ષર અને અક્ષરથી જે ઉત્તમ પુરુષોત્તમ તેજ શ્રીકૃષ્ણ એમ ગીતા પણ સાક્ષી પૂરે છે. જેમ ગંગાજના ત્રણ સ્વરૂપો, આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદૈવિક એ ત્રણ છે. તેમ પ્રભુના પણ ત્રણ સ્વરૂપો છે. ગંગાજનું જે જલ તે આધિભૌતિક સ્વરૂપ, માણસ જે તીર્થરૂપે પૂજે છે તે આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અને જે ગંગાજનું દેવતારૂપી સ્વરૂપ તે આધિદૈવિક, સ્વયંગંગાજી. તેજ પ્રમાણે લગવાનું આધિભૌતિક સ્વરૂપ આ જગત, આધ્યાત્મિક અક્ષર બ્રહ્મ અને આધિદૈવિક સ્વરૂપ તે પોતેજ પુરુષોત્તમશ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર છે. સેવા અને તેમાં વળી માનસી સેવા છે તે પર છે, એટલે તે માનસી સેવા સ્વરૂપ છે એમ બીજા શ્લોકથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાય છે કે ચૈત્ત્યતત્ત્વપ્રગળ્ભેવા તત્ત્વિદ્યૈઃ તત્ત્વવિત્તજા । તતઃ સંચારદુઃખસ્ય નિશ્ચિત્તિન્નદાવોષનમ્ ॥૨॥ માનસી સેવાનું લક્ષણ એ કે પ્રભુની અંદર મનને પરાવતું અને તે માનસી સેવાની સિદ્ધિ માટે તત્ત્વવિત્તમ સેવા કરવી. તત્ત્વવિત્તમ એટલે તનથી અને વિત્તથી બન્ને સેવા કરવી કે જેથી માનસી સેવા સિદ્ધ થાય. એકથી તનુજ એટલે શરીરને કષ્ટ આપીને સેવા કરવાથી કે એકથી વિત્તમ એટલે પૈસાની સેવા એમ એક એક ભુદી ભુદી કરવાથી માનસી સેવા સિદ્ધ થાય નહિ પણ બન્ને એકી સાથે કરવાથી ગોપીજનોના પેઠે માનસી સિદ્ધ થશે અને સંસારનું દુઃખ નિવૃત્ત થશે. સંસારનું દુઃખ એ શું ? સંસારનું દુઃખ એક અહંતા અને બીજું મમતા. અહંતાની રિયતિ દેહ સાથે ને અને મમતાની વિત્તાદિમાં છે એટલે શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાથી દેહાધ્યાસ છૂટી જશે અને બધી છંદ્રિયો પ્રભુમાં જોડાઈ જશે. નહિતર ઇન્દ્રિયો આડે માર્ગે જશે અને આપણું પનન કરી નાખશે. કારણકે ઇન્દ્રિયો એ તોફાની યોડા છે. ધણા કરે તે કે ઇન્દ્રિયોને દમનમાં ઇન્દ્રિયો આડે માર્ગે નહિ લઈ પણ પ્રભુ શ્રીગદગામજી કહે છે કે

શ્રીગોકુલનાથજી અને ધાર્મિક સત્યાગ્રહ.

(ગુજરાતી સાહિત્યના હાસ્યરસના સુપ્રસિદ્ધ લેખક રા. રા. છોટાલાલ ડાહ્યાલાલ બગીરદારે) ઉત્સવાગે મળેલી સભામાં કર્યું વિવેચન.)

આજથી લગભગ ત્રણ સૈકા પૂર્વે એટલે આજના મહોત્સવના નાયક શ્રીમદ્ગોકુલનાથજીના સમયમાં ખેલાયેલો સત્યાગ્રહનો અને સવિનય ભંગનો સંગ્રામ વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા ચિત્તમરણીય છે અને રહેશે. આજના અને તે સમયના સત્યાગ્રહનાં સાધ્યમાં ઘણો ભેદ માલમ પડશે. પણ ઉભય સત્યાગ્રહમા વપરાયલાં સાધનો અને બનેલા પ્રસંગોમાં એકંદરે ઘણું સામ્ય છે. આ વખતનો સત્યાગ્રહ જેમ અહિંસા અને સત્ય પર રચાયેલો છે તેમ તે સમયના સંગ્રામની ધમારત પણ એ જે અમોઘ સાધનોથી ચણાયેલી હતી. એનું વિસ્તૃત વિવરણ કરવું રહેવા દઈ હવે હું આપની સમક્ષ તે સમયના સત્યાગ્રહ માટે ઉપસ્થિત થયેલાં કારણોની ચર્ચા કરીશ.

શ્રીગોકુલનાથજી ભૂતલ ઉપર બિરાજતા હતા ત્યારે મોગલ બાદશાહ જહાંગીર સમ્રાટ્પદે હતા. હવે આ તો સર્વસ્વીકૃત બીના છે કે સમસ્ત આર્યોવર્તમાં મુસ્લીમ સંસ્કૃતિ અને ધર્મના ધસી આવતા પ્રચંડ પૂરને ખાળી તેમા તણાઇ જતાં હિન્દુ સંસ્કૃતિ અને ધર્મને બચાવવાનો ભગીરથ પ્રયત્ન કરનાર વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના આચાર્યોજ હતા. એટલે હાલમાં જેમ ખ્રીસ્તી પાદરીઓને, તેમ તે સમયમાં મુસ્લીમ ધર્મના ઉપદેશકોને એ સમ્પ્રદાય આખમા કણાની માફક માફક ખૂંચે એમા નવાઈ નહિ. ખ્રીસ્તી પાદરીઓને પોતાના ધર્મપ્રચારના કાર્યમાં જેમ કુદાડમાં હાથા રૂપ આપણાજ બાઇઓ મળી જાય છે, તેમ તે સમયમા ચિદ્રૂપ નામનો એક સંન્યાસી જહાંગીર બાદશાહને મળી ગયો. આ ચિદ્રૂપ વાચાળ અને ધારી અસર પહોચાડી શકે એવો કાવત્રાખોર હતો. વૈષ્ણવ સમ્પ્રદાયની વિરુદ્ધ અનેક એર બાદશાહના કાનમા રેડી તેણે વૈષ્ણવોના પ્રિયમા પ્રિય તિલક અને તુલસીની માળા પર કુહાંગઘાત કરે એવો હુકમ બાદશાહ પાસે બહાર પડાવ્યો. આ હુકમની રૂઝમે કોઈથી તુલસીની માળા અને તિલક ધારણ કરી શકાય નહિ એમ હતું. ગંતુરના મનસ્વી કલેંકદરે ખાદીની ગાંધી ટોપી વિરુદ્ધ જે સ્વચ્છંદી હુકમ બહાર પાડ્યો હતો. તે વખતે મચી રહેલો ખળમળાટ જેના રમરણમાં હશે તેને માળા તિલક વિરુદ્ધ બહાર પાડેલા જહાંગીરી હુકમથી તે સમયમા વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા કેવો જબરદસ્ત કાલાહલ મચી રહ્યો હશે તેની કલ્પના આવી રહેશે. તે સમયમા વૈષ્ણવોમાં પુષ્ટિસમ્પ્રદાય અને રાધાવલ્લભી સમ્પ્રદાયનો ફેલાવો મહાન હતો. તેમાં શ્રીરાધાવલ્લભી સમ્પ્રદાયના ઘણા અનુયાયી. એએ આ હુકમને માન આપી તુલસીમાળા અને તિલકનો ત્યાગ કર્યો. પણ પુષ્ટિસમ્પ્રદાય બ્રૂષણ શ્રીગુસાંધજીના ચતુર્થ કુમાર શ્રીમદ્ગોકુલનાથજી પ્રભુચરણે આ જહાંગીરી હુકમનો સવિનય અનાદર કર્યો. પેશે ચિદ્રૂપ સંન્યાસી બાદશાહ જહાંગીર તરફથી આ હુકમની અમલ બજાવણી બરાબર ચાલ છે કે નહિ તે જોવાના કામ ઉપર સર્વ સત્તા સાથે નીમાયો હતો. તેણે આજની વાઈસરોયની ધમકીઓ માફક પોતાના નિશ્ચયમાં અડમ અને અબેદ એવા શ્રીગોકુલનાથજીને દમદાડી અને બની શક્યું ત્યાં લાલચોથી ચલાવમાન કરવાના અનેક પ્રયત્નો કર્યા પણ જેને એક શ્રીકૃષ્ણનારાયણ સિવાય બીજા કોઈની જરા પણ પરવાહ નહિ હતી તેને એ ફૂટેલ સંન્યાસી પોતાના નિશ્ચયથી ડગવી શક્યો નહિ. એટલે એ બાબતની વાટાઘાટ કરવા જહાંગીર બાદશાહે પોતે આજના ગીમવા જેવા સોંતસોમે મજાએ આવેલા કારમીરમા રહેતો હતો ત્યાં શ્રીગોકુલનાથજીને બોલાવ્યા. 'તુલાવસ્થા અને વાટની વિકમ સ્થિતિ છતાં' આપત્રી



(ગિ). શ્રીમદ્દલયાલકાશ્યપદ્ધારાજ નિજ આત્મજ ગિ. શ્રીગિવિન્દરાયજી તથા

દિ મતનેગ ત્યા પવાયો નાં બાદલાહ પોતાના વગ્નકમના અના ગના મનધમા આપનોન વધરે
પ્રશ્ન થો ત્યારે આપશ્રીએ માફ માફ સુણાની હીધુ કે ' માફશાદ ' એ તિન ને માગા તો રિગ
સાગ છે ચાહે તે કરી લો, પણ એ ઉતરશે ત્યારે પૂર્વના સુર્ય પશ્ચિમમા ઉગશે તજે '

હિન્દી ભાષાના પ્રલાક કરિઓએ આ પ્રસંગ સખધી અને પદો ગ્યા છે તેમા શ્રીરિકા
રીવલ્લમ અને શ્રીપતિના કાવ્યો આપની આગળ હું ઉદ્ધૃત કરીશ

શ્રીરિકારીવલ્લમ કહે છે

ટેકકી, ટેકકી, ટેકકી રે, ગિરિ ટેક ટરે તો, ટરે ધ્રુવ તારો ॥

શ્રીગોકુલનાથજી માલ તજે તો શેષ સીસ ન ધરે મૂમારો ॥

પોન થકે તો થકે તો થકે, વ્રજકો પન કૌન કરે મહિમે રતન્યારો ?

શ્રીવલ્લભવશ ' વિહારી ' વહે કવિ ગાવત હૈ જગમેં જશ થારો ॥

શ્રીપતિ ગાય છે —

૦ શાહ કહી સો ન કરી, કરી સો વેદ પુરાનન માણી ।

માલ તિલક જનેઝકે કારન, અઢેન પેઢન નાણી ॥

શ્રીપત કહે જહાગીરકે खान, જે ડમરાવ તે સવ સાણી ।

શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને શ્રીગોકુલનાથજી સન હિંદનકી પત રાણી ॥

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સુરતમાં આનંદ—પૂન્યપાદ વિદ્વદ્ગત આચાર્યવર્ય ગોસ્વામી શ્રી શ્રીમન્નરતનાથજી મહારાજશ્રીના ન્યેજ કુમાર આશુકમાન, ગો શ્રી શ્રીનાવિન્દગયજી બાવાસાહબનાં અખંડોત્સાહન્યવંતા શ્રીમતી વહનનાં સીમંતોત્સવન પ્રસંગે સુરતમાં આનંદનો આપ પ્રસરી રળો હતો. બહારગામથી શ્રીવૃત્તીયપીઠાધીશ્વર અને જેએશ્રીના સાર્થજી અનુજ તથા શ્રીચતુર્થપંથમપીઠાધીશ્વર અને મુખાધી ગો. શ્રીદક્ષિત ભગવાન તથા ચિ શ્રીગોપીનાથજી પદ્યાયાં હતા. આ પ્રસંગે શ્રીવિકૃલેશ્વર પ્રભુચરણનો મહામહોત્સવ પણ પ્રાપ્ત થતાં મુવર્ણસુગંધનો મહાન સુખદ સંયોગ થયો હતો. માર્ગશીર્ષ વદ ૮-૬-૧૦ એ ત્રણ દિન સભા સમવામાં આવી હતી. આ સભાએ એક ‘પરિષદ’ ના મહાધિવેરાનની ઝાંખી કરાવી હતી. ઘણું દિવસના સંનિતા ત્રણ-ચાર કલાકે આકર્ષક, હૃદ્યોદયક અને નેતનાપ્રસારક તરીકે ચાદગાર બન્યા હતા. આજ શુભ પ્રસંગે મહારાજશ્રીએ રથાપેક્ષી મહાસભાનો વાર્ષિક મહોત્સવ પણ ઉન્નવાયો હતો. સંપ્રદાયમાં ૭ વર્ષ જેટલા ટૂંક સમયમાં આ મહાસંસ્થાએ સંગીત માર્ગદર્શક પ્રગતિ કરી છે. વૈષ્ણવપરિષદ ન્યાયે એકદેશી કાર્ય જેવર્માજ હૃતાચંતા માનવી ભારે આ મેં આએ વિશાળતમ કાર્યક્ષેત્રમાં ઝંપલાવીને સફલતા પ્રાપ્ત કરી છે. પુરાતત્ત્વશોધનનું કાર્ય, પ્રાચીન સાહિત્યનું સુદ્રણ, ભાષાંતરો, પાઠશાસ્ત્રરચનાદિ, માસિકાદિકા પ્રચારકાર્ય અને ખાસ કરીને તે બાલકો-બાલ્યાવસ્થાથીજ સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના અભ્યાસી બને તેને માટે જે પરીક્ષ તથા ઈનામોની જે ચોખ્ખા કરી તેને માટે તે આ મહાસંસ્થા ચિરંમરણીય બની છે. માર્ગશીર્ષ વદ ૮ ના રોજ પ્રથમ અધિવેસન થયું શ્રીવૃત્તીયપીઠાધીશ્વર પૂન્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી શ્રીમન્ બ્રહ્મજીવાજી મહારાજશ્રીને પ્રમુખસ્થાન અર્પવાની દરખાસ્ત શ્રીચતુર્થપંથમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ મૂખી અને પોતે શ્રીદ્વારકાધીશ્વરના તિલકાયિત હોવાથી, દ્વારકાલીલાનાં મર્મદાનુ પાલન હોવાથી આ સભામાં મુખ્યવર્યાનું પાલન જેએશ્રી કરશે, જેથી મતબબનું હુંકું પણ માર્મિક વિવેચન કરું તે પછી સુરતના સુપ્રસિદ્ધ વૈષ્ણવ ઝોનરરી મેજસ્ટ્રેટ સરદાર ધીરજીલાલ ઇપીલદાસ ઝોન બીએ એ સંસ્થાનો હેવાવ વાંચ્યો. આ સમયનું સભાનું ચિત્ત આજ અંકમાં છે. હેવાલમાં વર્ષ દરમ્યાન ય્થાનિક (સુગત) ની મહાસભાએ સુરતમાં શી શી પ્રવૃત્તિ કરી તેનું સૂચન હતું. તેમાં મહારાજશ્રીએ પોતે પોદરા ગ્રંથો ઉપર સવિસ્તૃત પ્રવચન કરી સુરતના વૈષ્ણવોને અલબ્ધ લાભ આપ્યો હતો. વર્ષો પછી આનું હૃદયાકર્ષક પ્રવચન સાંભળવાનો લાભ સુરતના વૈષ્ણવોને પ્રાપ્ત થયો હતો. આ ઉપરાંત મહાસભાએ પ્રગતિમાં આગળ પગનાં માર્ગચાં હતાં. મહારાજશ્રી ૧૬ વર્ષથી ‘શ્રીબાલકૃષ્ણગીર્ણીવિદ્યાલય’ નામની સંસ્થા ચલાવતા હતા અને અનેક દિનબાલકો સંસ્કૃત ભાષા સાહિત્યનું અધ્યયન તેમાં કરતા હતા. તેમજ સંસ્થાને અગ્રે એક છાત્રાલય (બોર્ડિંગ) પણ હતું આ સંસ્થાએનો વિનામૂલ્ય લાભ વિદ્યાર્થીઓને અપાતો હતો. ઉપરાંત આ પાઠશાળાનો લાભ રકુવ તથા કોલેજના વિદ્યાર્થીઓ પણ લેતા હતા. આ જમ્મેથી સંસ્થાનો વહીવટ મહાસભાએ પોતાના હાથમાં ગયા આપાદ માસમાં લીધો. આ સંસ્થાને સરકારી કેળવણી ખાતાએ મંદૂર કરીને ઝાંટ પણ આપવા માંડી અને સંસ્થાના પ્રેક્ષકો તથા પરીક્ષકોએ ઉત્તમ અભિપ્રાયો આપ્યા પાઠશાળાનો લાભ ૩૬ વિદ્યાર્થીઓ લે છે અને ૧૩ વિદ્યાર્થીઓ છાત્રાલયમાંજ રહે છે રકુવ તથા કોલેજના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા જીદી છે. આ ખરવાજ સંસ્થા ચલાવવા માટે ફોકડ, આનાજ, વજ, મહાન આદિ સર્વની આવશ્યકતા છે. આસા છે કે વૈષ્ણવો જેમ નન્ય જાતેર સંસ્થાઓ નમાવવા માટે હજારો રૂપીઆનો વ્યય કરે છે, તેમ આ પોતાની ધાર્મિક સંસ્થાને પોષવા માટે પાણી પાની નદિજ કરે. આ પ્રમાણે હેવાલ વચ્ચાયા પછી ગો શ્રીદક્ષિત ભગવાને પ્રવચન કર્યું. આપનું પ્રવચન કવિબાબરતનાકરની રીતીને અપનાવવું હતું, સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના નિગોદકષ આ અસરકારક વ્યાખ્યાને વૈષ્ણવોનાં હૃદયમાં અનેરો પ્રકાશ આપ્યો. એક લાભ આ પ્રવચનથી ન મળ્યો આ પ્રવચન આપશ્રીએ પેતેજ લખેડુ હતું અને સભામાં પોનેજ વાંચતા હતા. જે પોતે સ્વતઃ વાંચ્યા વિનાજ વ્યાખ્યાન કરત, (જેમ અન્ય રાજે કરે છે) તેા કૃપાદર્શિદ્વારા વૈષ્ણવોના નેત્રોમાં જોરજ આનંદ છવાઈ રહેત. વજા અને એતાની દષ્ટિ એક થયા વિના આનંદમાં જીલુપ રહે છે અન્ય વિવેચનો થયાં. અને પણ થોડું જોલવાની ન હા થતાં શીશુસાંઈ અને પુતિતોનો ઉદ્ધાર એ વિશે થોડું વિવેચન કર્યું હાથમાં સળગી રહેલા

શ્રીકૃષ્ણાય નમઃ :

શ્રીકૃષ્ણ પંચાંગ. “ કાયમી ”

Perpetual Calender.

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ, એ છે ગોવિંદના અંતઃકરણની ધુન ભકતાધીન, શ્રીકૃષ્ણ શરણથી અમને શ્રીકૃષ્ણ પ્રાપ્તિ છે. અચુક.

સમજ.

૧. ઉપરના બાર શબ્દો એટલે અનુક્રમે બાર અંગ્રેજી મહીનાના નામ છે.

૨. આ કેલેન્ડરમાં સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં જાનવારી તથા ફેબ્રુઆરીમાં પ્રથમવાર સોમવાર લેવા અને બાકીના માસમાં એટલે માર્ચથી ડીસેમ્બર સુધીમાં પ્રથમ વાર મંગળવાર લેવા. કારણ કે ૧૯૩૨ નું “ Leap Year ” લીધ વર્ષ છે.

૩. આ શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી ગણનાં છેલ્લે અક્ષરે, જે વાર આવે તે વારે પહેલી તારીખ આવે. જેમકે પ્રથમ જાનવારી માસ લો, તેમાં પ્રથમ શબ્દ “ શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ ” છે. તેમાં પાંચ અક્ષર છે, એટલે પેરા બીજામાં જણાવ્યા મુજબ પ્રથમવાર સોમવારથી ગણનાં પાંચમા અક્ષરે પાંચમો વાર શુક્રવાર આવે છે. એટલે જાનવારી માસની પહેલી તારીખે શુક્રવાર આવે. બીજે દાખલો ત્રીજા માર્ચ માસ લ્યો, તેમાં “ છે ” એક અક્ષર છે. માટે બીજા પેરામાં જણાવ્યા મુજબ પ્રથમ વાર મંગળવાર છે. એટલે માર્ચ માસમાં પહેલી તારીખે મંગળવાર આવે. ત્રીજે દાખલો આદમો ઝોગસ્ટ માસ લ્યો, તેમાં “ શ્રીકૃષ્ણશરણથી ” સાત અક્ષર છે. એટલે મંગળવારથી ગણનાં સાતમાં અક્ષરે સાતમો સોમવાર આવે છે, માટે ઝોગસ્ટ માસમાં પહેલી તારીખે સોમવાર આવે.

૪. સમજ:—ઉપરના બાર શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે. તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી તે માસની પહેલી તારીખ આવે.

૫. સને ૧૯૩૨ ની સાલ પછીથી દરેક સાલ માટે પ્રથમ વાર તરીકે અનુક્રમે વાર લેવા અને Leap Year માં લીધ વર્ષમાં પાંચ મહીનાથી તે પછીનો વાર પ્રથમવાર તરીકે ગણવો. જેમકે સને ૧૯૩૩ ની સાલમાં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૪ માં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૫ માં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૬ માં જાનવારી તથા ફેબ્રુઆરી માટે પ્રથમવાર શનિવાર અને માર્ચથી સેપ્ટેમ્બર સને ૧૯૩૭ માં પ્રથમવાર સોમવાર અને તે મુજબ ગણવું.

લી. શ્રીકૃષ્ણદાસ ગોવિંદલાલ કેશવલાલ.

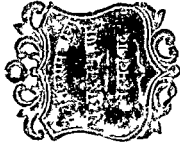
૬. માંડવીની પોળમાં શેઠનીપોળ શ્રીકૃષ્ણદાસ—અમદાવાદ.



વાયોલીઆ પ્રકરણ—નુપ્રસિદ્ધ આનેવાન શ્રીયુત મણિલાલ કાશીવાળા વિશે અતીકામાં જે ઉપસાદો કર્યા હતા, તે પરથી તેમનો પત્ર ચામને મળ્યો છે. એ વાંચતાં તેમને વિશે જે ખબર મળી હતી તે જોડી હતી છે અને સાથે અલગ લીધાગયાં ધર્મનું ઉદ્ધેષન થાય તેવું કોઈ પણ દૈવત ન તેમના તરફથી થયું હતી જાણી અનંદ થયો છે. તેમને મુનેશ અન્નાય માટે અને દીવગીર છોજે. વળી વાયોલીઆમાં સગા-જાન શ્રદ્ધ થયું છે. આનંદી શાળા બંધ થઈ છે અને અલગ બાળકોને છગા બેસાડવાની કારતે મદદગારી આગમો લાભ બધા પહેલાંની માફક લેવા જાણ્યા છે.

जयति ॥

महर्ष्या ३

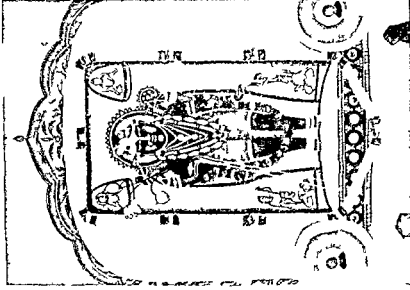
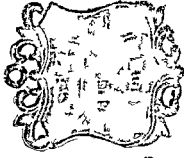


“श्रीविद्याविभाग कांकरोली.”

सन्मानोपाधिपत्रम्

श्रीमन्निखिलभूमण्डलाचार्यचय-जगद्गुरु-श्रीभागवतपीथूपसमुद्रमयनश्रम-भक्तिमार्गाजमार्तण्ड-भगवद्भजनलवावतार-
श्रीमद्वल्लभाधीश्वर-देशिकेन्द्र-प्रादुर्भाषित-शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय-श्रीतृतीयपोठाधीश्वरा गोस्वामिकुलकर्मलदियाकर्ण,
श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजीमहाराजा, कांकरोलीनरेशा, श्रीविद्याविभागाध्यक्षा, साम्प्रदायिकप्रचारविपयक
वैदुष्यसन्तुष्टस्यागता अहमदाबादनगरवास्तव्य शास्त्रियसतरामशर्मण, “शुद्धाद्वैतभूषण” इतिसन्मानोपाधिना
सोत्साह समसाद समलंकुवन्ति। कांकरोली, फाल्गुन कृ २ सम्भत् १९८८।

(विजयाऽमृतमञ्जुते)



शुद्धिद्वैत-सुक्तिमार्तः.

पृष्ठ ६.]

अष्ट्युन, श्रीवृत्ताष्ट ४५३.

[अ' १२]

श्रीमद्ब्रह्मवैवर्तपुराणश्रीव्रजभूषणमहोदयानां यशोपवीतोत्सवसमुचितं

शुभाशंसनम्.

१.

सद्भक्तैकशिरोमणेः कविगुणेः सूरस्य सर्वस्वता मिश्रद्, बलभदेशिकेन्द्रदयितो, गोपाङ्गनाजीवनम् ॥
देवः श्याममनोहरो निजजनप्रेमानुविजः सदा यस्यां राजति सा विभाति सुभगा चापासनी पावनी ॥

२.

श्रीमद्ब्रह्मवैवर्तपुराणश्रीव्रजभूषणमहोदयानां यशोपवीतोत्सवसमुचितं
येषां प्रोदतमैः प्रभावविभोर्विधैश्च विस्तारिभिर्व्यावृष्टा गृहसेवकचमदधुस्ते ते धरित्रांभुजः ॥

३.

स्थाने तत्र कुले च तां विटसन्, मर्वात्मना पूर्णैः क्षुण्णे वर्त्मनि संचलन्ननुपमं तेजोविशेषं वहन् ॥
बुद्ध्या सद्बुधेन्द्रविन्मयहृता माहात्म्यमुद्गावयन् गोस्वामी व्रजभूषणो विजयते बालो प्पवालोदयः ॥

४.

प्रोद्यद्द्वैदिकमन्त्रमद्गुणरत्नं, साहाय्यवैतालिकप्रोद्रीताभ्युदयः, कवीन्द्ररचना प्रागन्म्यजागर्तिवृत् ॥
अस्मात्कृतवर्गविविधप्रतिवहाशीर्दादसंभाविता गायत्रीप्रहणोऽसवः प्रतिनवस्तस्याच विद्योतते ॥

५.

चञ्चचारशिक्षस्य, कामविरुचिं संविभ्रत पावनी, लोकैर्बद्धकैः स्तुतस्य, महसां वीतावधीनां निधेः ॥
साधुस्नेहपुरस्कृतस्य निभृतं, मावित्रदीक्षाजुषो बालस्यास्य विभाजसोश्च फलन्तिस्तुन्यः प्रभावो जैनैः ॥

६.

सौजन्यं समुदेतु मायु भवतो विद्याप्रकर्षाश्रितं, नित्यं मन्दिरमिन्दिराविलसन्निर्विभ्राजतां विस्तृतैः ॥
दिश्याच्चानिशमेत्तानामनसा म्सेव्यमानः प्रभुर्देवः श्याममनोहरो नवनाराः श्रेयोमयीः सम्पदः ॥

७.

इति चापासनीसमाश्रितमद्गुणवातसमनः प्रणयी । 'कपिकिङ्करः' इति स्वामुपहरते गिरिधरो मुदितः ।
विनीतः, भावत्कः, निराश्रितः भट्टगिरिधरदर्मा, वागरोदी कधिकिङ्करः अलवरस्यः
गोकुलमृगनयनीनानातिशयगन्धर्वापङ्गसंकेतैः नृत्यन्मधुरवपुर्वरमुपनिषदां वन्दते हृदयम् ॥१॥
आक्रान्ताया यज्ञैरन्वयेन प्रतीतिविभवस्य । विद्यानगरीवृत्तेः सद्गमि जयी देशिके जयति ॥२॥

तस्यान्वये भुवनविद्युतकीर्तिराशावासीसुधोदधिसमे सदृशः सुधांशोः ।

गाम्भीर्यैर्यदिनयादिगुणैकसिन्धुर्वन्धुः-स सदगुणवतां रघुनाथलालः ॥३॥

तस्यात्मजन्मनः श्रीमद्भजभूषणशर्मणः । उपनायनवेलायामिदमस्त्वभिनन्दनम् ॥४॥

आत्तस्वभक्तबलिाराधितकामपूरः पद्माग्रयप्रणयपूजितपादपद्मः ।

तन्वा लघुगुणगणैर्गुरुार्यहृद्यो राजत्युपेन्द्रसदृशो ब्रजभूषणोऽसौ ॥५॥

चित्रं यदुदण्टकरोऽप्यदण्टकरो जनेनैव वटुर्विमृष्टः ॥

विनीतचर्यो-यदयं च सत्यं न मे खलो भाति समेखलोऽपि ॥६॥

स्याममनोहरदययाऽऽचार्यकृतिं सफल्यन् भ्यात् । भारतभूतलभूषणमाचार्यध्वर्या चारुः ॥७॥

इति किञ्चिदकिञ्चिज्ज्ञोऽप्यार्यः प्रेम्णा पुरस्कृतः । पुरुषोत्तमशर्माख्यधनुर्वेदः समभ्यधात् ॥८॥

पण्डित पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदः “साहित्याचार्यः”

गोत्वाभिवंशाम्बुजभास्वरस्य महोदयश्रीरघुनाथमूर्तेः ॥

सुतस्य दृष्ट्वा मुदमाप लोको “यज्ञोपवीत परमं पवित्रम्” ॥१॥

वेदाननः किञ्च कमण्डलुमण्डितोऽपि वेदाननो न, वटुकोऽयमहो व्रतस्थः ॥

आपाढभूषिततनुर्न च वत्सरोऽसौ नो वा मनो हरति वामनतामुपेतः ॥२॥

यः श्रीवल्लभमल्लभस्य वदनश्रीवल्लभार्य-प्रभोः वगे विश्वाविशुद्धवादविदिते, विद्याविशेषप्रभः ॥

सोऽयं श्रीब्रजभूषणो विजयते, नूतने वटुत्वे वृत्तो वेदार्थत्रतचन्वबन्वनविधौ भिक्षाप्रतीक्षापरः ॥३॥

यरवान्ते पुरवासिनामभिनयं कौतूहलं जायते । येन स्वीयनरेपु भक्तिसहितो मोदः समुद्रासते ॥४॥

यद्यात्मीयजनेपु मङ्गग्रमयः प्रोज्जृम्भते चोद्धवः । तन्मूर्तं ब्रजभूषणस्य परमो यज्ञोपवीतोत्सवः ॥५॥

पो. कण्ठमणिशारङ्गी विशारदः, फांकरेलो.

नानादेशनिवासिसन्नचयैः संसेवितोऽहर्निशं शुद्धाद्वैतमतप्रचारकरणालोकोपकारी महान् ।

मायावादनिरासकारणमसौ सद्धर्मसंस्थापको जीयाल्लक्ष्मणभट्टसुनुरमलः श्रीवल्लभार्यः प्रभुः ॥१॥

अखण्डभूमण्डलयर्मदेष्टा, द्रष्टा श्रुतिप्रोक्तसुधर्मकस्य ।

अष्टा च सद्धर्मपथस्य साक्षात्, ऋष्टा च पाखण्डमतस्य नित्यम् ॥२॥

तदन्वयेऽभूकिञ्च कृष्णजीवनः श्रीस्यामनाथाङ्गप्रसरोजसेवकः ।

श्रीतत्त्वसिंहार्चितपादपीठकस्तदात्मजोऽभून्मुख्यधराभिधः ॥३॥

सदङ्गजः श्रीरघुनाथनामा, गोत्वाभिवर्यो मतिमत्सु मुख्यः ।

तदात्मजः श्रीपुरुषोत्तमाख्यो, यो जौर्णदुर्गै समलंकरोति ॥४॥

तस्यानुजः श्रीब्रजभूषणाख्यधौपासनापीठपद्माधिकारी ।

द्विजवमाभ्याऽप्य महानयं सन्मार्गोपदेष्टा भवितेति मन्ये ॥५॥

यज्ञोपवीतोऽसवके महान्तः समागता धर्मधुराधरा ये ।

दिशन्तु ते षाशिपमीड्य एष धर्मोपदेष्टा भवताञ्ज आरात ॥६॥

दार्ढीचो रामकर्णार्थ्य आतोपाकुलसंभवः । आरागते द्ययमाचार्यः स्यासुधर्मधुरावहः ॥७॥

पंडित धीरामकर्णजी आम्होपा, जोधपुर.

सुकृतं फलितं हि मादृशानामधुना मेऽपचिताः सुराध तुष्टाः ।

व्रजभूषणमय लोक्यामि यदुत प्रोक्तविधेः पथोपनीतम् ॥१॥

दयदेप गोकुलपदे निजां रति दयितोद्भवः सकलमोदकारणम् ।

प्रियधेनुवत्स—मुखदायि—सेवनो व्रजभूषणो जयतु कीर्तिनांधिरम् ॥२॥

श्रीकृष्ण—पादयुग—सेवनदत्तचित्तः संपूज्यमातृपदपूजनकर्मलभः ।

सद्वत्ससूत्रमुपसेष्य समाहितोऽथ वेदार्थसत्पथचरिण्युरितः परं स्तात् ॥३॥

चिद्याभूषणः श्रीभगवत्तीलालशर्मा.

श्रीमदयोधपुरेन्द्रमानितमहागोस्वामिवंशोद्भवः पूज्यस्याममनोहराङ्घ्रिकमलस्पर्शवती सन्मतिः ।

श्रीमदगोकुलनाथवैष्णवगुरोर्वीरसज्जपत्रं चिरं जीव्याच्छ्रीव्रजभूषणोऽयमधुनाऽऽदर्शोपनीतिं श्रितः ॥

श्रीयुत योवपुरेश्वर का बहुमान्य कुलोद्भव बुद्धि—अनुना,

श्रीयुत श्याममनोहरके पद का जिसको प्रिय है नित धूना ।

श्रीयुत गोकुलनाथ महोदय का अति—प्रेम—कृपाश्रय दना,

सो व्रजभूषण हो मुचिरायु, धरा जिसने उपनीति—नमूना ॥

यावदयज्ञोपवीतप्रतिनियतदिनज्ञमिरासीत् पुरेऽत्र तावदगोविन्दचन्द्राधिकृतजनतया कर्म कर्तुं प्रयेते ।

नृप्याणामुच्चभूषा विहृतविमलनं चित्रणं मण्डपश्रीर्मन्ये रामस्य चैयं ह्युपनयनवसन्तोऽसवैर्नव्यशोभम् ॥

जब से यज्ञोपवीत—उत्सव को बात चीत पुरमें हुई प्रतीत, तब से तैयारी है ।

प्रसन्न—मुखचन्द्र औ उज्ज्वल—सुकीर्तिचन्द्र वैद्य गोविन्दचन्द्र प्रबन्ध—अधिकारी है ॥

दूषित का उत्तारना, भूषित का उजारना, मण्डप का सँवारना चारु चित्रकार है ।

क्या वसन्त—उत्सवको, मङ्गल—उत्सव को देव दाउ—मन्दिर ने नई छवि धारी है ॥

पूज्यश्रीव्रजभूषणस्य विततं सद्वत्ससूत्रोऽसवपाधोधि तरितुं रविर्नम इवामुवं कथंचित् भ्रमः ।

आपे तत् सुषमा-प्रवर्तकमिदं गोस्वामिनां किंकुलं तं वा गोकुलमाकुलं हृदितकुलं वा सङ्कुलं धोकुलम् ॥

हीन—सर्व—दूषण के ज्ञान—रस—चूषण के पूज्य व्रजभूषण के वत्ससूत्र—बल को ।

देख देख नित्य कवि सोच सोच चैय छवि पार पावे, ज्यों कि रवि ज्योम के वैपुल को ॥

उत्सव अपार देख उसमें संचार देख सागर में नागर ज्यों पाय कौन पुल को ।

स्वामि—कुलको सराहे, सराहे वा गोकुल को कर्मकुलको सराहे, वा वैद्य धोकुल को ॥

पंडितः श्रीनित्यानन्दशास्त्री आशुकायिः राजपूत स्कूल.

સજ્ઞાનગમ્भीરતાં સુમૂર્તિ દ્વદ્વા ન ફે વોધવળા ભવન્તિ ।

સ્મૃત્વાઽનિશ્ચેતસિ ચિત્સ્વરૂપમ્, ભક્તો ભવત્પાદયુગે લુઠન્તિ ॥૧॥

સેવાપ્રદત્તાસ્તિલપ્તભાવો, દેયાત્ પ્રભુઃ ડયામમનોહરસ્તે ।

સૂક્ષ્માણિ તત્ત્વાણિ નિરીક્ષતું જ્ઞામ્, યતઃશિલોક્ત્યાં વિજયં લભત્વ ॥૨॥

શ્રીવલ્લભે વલ્લભતાં લભન્તામ્, નિર્ઘરીપરત્તાન્ધરન્તામ્ ।

સદાતિદીને દયતોન્દયન્તામ્, પીઠાં હરન્તો ભવતામ્ભવન્તામ્ ॥૩॥

ગોપાલપાદપાથોજ-પરાગે ભ્રમરાયતામ્ । તદ્ભક્તિમયુપેન્ધ્યોઽપિ તનુતાત્સુમનો મધુ ॥૪॥

ચિરાયુપત્સન્તુ સદોપનીતા વ્રજભૂષણાઃ । વિષ્ણુપ્રસાદાદ્ ભવતો લક્ષ્મીનિત્યમિહાવતુ ॥૫॥

પણ્ડિત ચહુરા શ્રીવિષ્ણુશર્મા, જોધપુરીયદરવાર-સંસ્કૃત પાઠશાલા-પ્રધાનાધ્યાપકઃ-

ઉપનયનમુપાગતો યશસ્વી હરિચરણાન્જરતઃ કૃતી મનસ્વી ॥

વ્રજભૂષણલાલ એપ ચાલો મુવિ શરદામિહ જીવતાચ્છતાણિ ॥

શ્રૌતસ્માર્તમતાનુસારધૃતસદયજ્ઞોપવીતવ્રતઃ શ્રીમદ્ગોકુલનાથનામમુમહાગોસ્વામિભિર્ભાલિતઃ ॥

શ્રીમચ્છ્યામમનોહરાદ્ધ્રિકમલપ્રેમદિરેફાયિતસ્વાન્તઃ શ્રીવ્રજભૂષણો વિજયતે ગોસ્વામ્યસૌ સંતતમ્ ॥૨॥

ઉપનીતિસંસ્કૃતિમુપાગતો દિગ્ગો નિજનીતિસંગતમનોરોચિર્દશમ્ ।

ચિરમેષ જીવતુ સતાં મુલાવહો વ્રજભૂષણઃ શમિતસર્વદૂષણઃ ॥૩॥

પંડિતશ્રીદેવોદત્તશર્મા, હેડ પળ્ડિત દરવાર હાઈ સ્કૂલ.

શ્રીસુવોધિનીજી.

(લેખકઃ—શ્રીયુત હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી.)

(ગત્રાંકથી આજી.)

શ્રીમદ્ભાગવતનું શ્રીકૃષ્ણરૂપત્વ.

શ્રીમદ્ભાગવત ગ્રંથરૂપાત્મક છે, એમ તો-પુષ્ટિમાર્ગીય પ્રત્યેક વૈષ્ણવ સમજે છે જ. અને તદનુસાર મોટા મોટા મંદિરોમાં પ્રભુની સાથે નિજમન્દિરમાં શ્રીસુવોધિનીજી કે શ્રીમદ્ભાગવત શ્રીમદ્દાપ્રભુજી આદિના હસ્તાક્ષરે લખાવડાં હોવાથી નિયમિત સેવા પણ થાય છે. કેટલાક વૈષ્ણવો તો સ્વરૂપના અભાવે શ્રીમદ્ભાગવતની સેવા કરી બોગ ધરી પ્રસાદ લે છે. અર્થાત્ જ શ્રીમદ્ભાગવત અને ભગવત્સ્વરૂપ અભિન્ન છે એવી ભાવના સેંકડો વર્ષથી પોપાયલી છે. આ પ્રકારની ભાવનાનું મૂલ શ્રીમદ્દાપ્રભુના વાક્યોમાં મળી આવે છે.

શ્રીભાગવતાર્થપ્રકરણના પ્રારંભમાં જ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી મંગલાચરણ કરીને શ્રીમદ્ભાગવતને ભગવત્સ્વરૂપથી અભિન્ન બતાવે છે—પ્રીકૃષ્ણં યત્ત્વિદાનન્દં દશલીલાયુતં સદા । સર્વમજ્જસુદ્ધારે વિસ્ફુલ્લં પરં નમઃ ॥ આ રથસે શ્રીકૃષ્ણને દશલીલાયુક્ત કહે છે. શ્રીકૃષ્ણની દશવિધલીલાને ઉદ્દેશ્ય કરવાનું કારણ કૃત્તરૂપ પરમાનન્દનું સાધન શ્રીભાગવતશ્રવણ જ છે, તેથી દશલીલાયુક્તત્વે શ્રીભાગવતશ્રવણરૂપતા પણ છે જ. પ્રભુ દશવિધલીલાયુક્ત છે અને ભાગવત પણ દશવિધલીલાનું પ્રતિપાદન કરે છે; તેથી પણ દશવિધલીલાયુક્ત જ છે. શ્રીમદ્દાપ્રભુજી કહે છે કે દશવિધલીલારૂપવ્યાપાર કરતું દશરૂપ જ

અન્ય વિષયને ગ્રાહ્ય છે. ભગવદગત અને શ્રીમદ્ભાગવત એ ઉભયનું પ્રયોગન સર્વલક્ષ-
અનુદ્ધાર છે. સર્વલક્ષ એટલે હીન-મધ્યમ અને ઉત્તમ અધિકાર વિગિષ્ટ ભક્તો. જેમ આત્મા
દશમાં સાક્ષાત્ ઉદ્ધાર કર્યો, તેમ આત્મારક્ષામા શ્રીભાગવતના ઉદ્ધારક છે, તેનું દેહીયમાન પ્રમાણ
પરીક્ષિતનો જ ઉદ્ધાર છે. પાણ્ડવોનો ઉદ્ધાર અવ્યવસ્થિત વડે થયો, ત્યારે પરીક્ષિતનાદિનો ઉદ્ધાર
શ્રીમદ્ભાગવત વડે થયો. આથી વિશેષ ભાગવતની ભગવત્વસ્વરૂપતાના વિષયમા કશું કહેતા જેવું
અવશિષ્ટ જ રહેતું નથી તથાપિ, જે પ્રમાણોનો જ મગ્ન કવો હોય તો ઘણાંયે પ્રમાણો
મળી શકે છે. શ્રીમદ્ભાગવતની વાસ્તવિક મહત્તા તો તેમા પ્રતિપાદન કરેના તત્ત્વો ઉપરથી જ
ભળી શકાય તેમ છે. ઇતર પ્રમાણો માહાત્મ્યનું જ ખ્યાપન કરે છે.

ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય.

શ્રીમદ્ભાગવતનું ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય સ્થાપન કર્યું છે. 'દ્વિતાદ્ દ્વદશસ્કન્ધ પુરાણ દરિરેવ સ
દત્ત્યાદિ વામ્યો દ્વાદશસ્કન્ધયુક્ત પુરાણ એટલે શ્રીમદ્ભાગવતને શબ્દત અને અર્થત આમાત
ભગવદ્સ્વરૂપ જ અવ્યવસ્થિત બેદ હોના છતાં પણ-પર-પગકાષ્ઠાથી નિર્મિત હોના છતાં પણ-ભગવદ્સ્વરૂપ
દેવાથી ઉભય (પ્રભુનું નિઃસ્વરૂપ અને શ્રીમદ્ભાગવત) એક જ છે. શ્રીમદ્ભાગવતના આ
સ્કન્ધ પ્રભુના દ્વાદશ અંગ જ છે તે નીચેના ગ્રંથક Table ઉપરથી સમજી શકાશે.

અંગનામ.	સ્કન્ધ.	લીના	મર્ગો લીનાની વ્યાખ્યા.
૧ દક્ષિણચરણારવિન્દ	પ્રથમ સ્કન્ધ	આધકાર	૦
૨ વામચરણારવિન્દ	દ્વિતીય સ્કન્ધ	જ્ઞાન	૦
૩ દક્ષિણ બાહુ	તૃતીય સ્કન્ધ	મર્ગ ૧	અહલી પામથી સત્ત્વાદિ ગુણના વાંચ્ય વડે પચમદાશ્રુત, તન્માના, દન્દિયો અને અન્ત કમ્બુની ઉત્પત્તિનો પ્રકાર મર્ગ શાન્તાન્ય છે
૪ વામ બાહુ	ચતુર્થ સ્કન્ધ	વિમર્ગ ૨	અહલી પામથી અગવગની ઉત્પત્તિ વિમર્ગ છે
૫ દક્ષિણ મધ્ય	પચમ સ્કન્ધ	ધ્યાન ૩	ભગવાનનો વિગ્ધ-મર્ગેના પદાર્થોનું મર્ગદર્શક પાલનનું ઉદ્દાર છે આ ધ્યાનનીના છે
૬ વામ મધ્ય	ષટ્ સ્કન્ધ	પોરત ૪	નિજ ભક્તો ઉપર પ્રભુનો અનુગ્રહ પોરત ૪ પુષ્ટિમદ્વાન્ય છે
૭ દક્ષિણ ત્રીકા	સપ્તમ સ્કન્ધ	ગિનિ ૫	૩મ વડે ગદ્દિ પામે તે ગિનિ-મર્ગ વામના ગિનિનીના છે.
૮ દક્ષિણ ગતન	અષ્ટમ સ્કન્ધ	મનુષ્ય ૬	ભગવત્પ્રભુની મનુષ્યગધિપતિઓનો ધર્મ તે મનુષ્યનીના

૯ વામ સ્તન	નવમ સ્કન્ધ	ઇશાનુકથા ૭	અવનાશનું ચરિત્ર અને ભગવાનને અનુમરનારા રાગઓનું ચરિત્ર ઇશાનુકથા કહેવાય.
૧૦ હૃદય	દશમ સ્કન્ધ	નિર્ગમ ૮	પ્રપંચવિસ્મૃતિપૂર્વક ભગવદ્ભક્તિ નિર્ગમ છે.
૧૧ શ્રીમસ્તક	એકાદશ સ્કન્ધ	મુક્તિ ૯	અન્યથા ઉપનો ત્યાગ કરી સ્વરૂપમાં અવસ્થિતિ એ મુક્તિ.
૧૨ વામ શ્રીધ્વજ	દ્વાદશ સ્કન્ધ	આશ્રય ૧૦	જગત્તો આવિર્ભાવ, નિર્ગમ અને પ્રલય જેનાથી બળી શકાય તે આશ્રય.

આ રીતે શ્રીનાથજીના દ્વાદશ અંગો સાથે શ્રીમદ્ભાગવતની મરખામણી થાય છે. અને તેથી જ ર્તાદ દ્વાદશસ્કન્ધ પુરાણ હરિશે સઃ દત્વાદિ વાક્યો સંગત થાય છે.

શ્રીમદ્ભાગવતની મહત્તા શાથી છે ?

પુરાણ પંચસ્રણ છે, એ ઉપર કહેવામાં આવ્યું છે. શ્રીમદ્ભાગવત દશસ્રણયુક્ત છે. તત્માદ ભાગવત પુરાણ દસલક્ષણમ્ । પ્રોક્ત મગવતા પ્રાદ પ્રીતઃ પુત્રાય મૂતકૃત (૨-૧-૪૩) તે (પૃષ્ઠનાર) પુત્ર નારદને પ્રમત્ર થયલા બ્રહ્માજીએ દશસ્રણયુક્ત ભાગવત કે જે (તેમણે પણ) ભગવાનની પામેથી સાંભળ્યું હતું-કેવું. એ દશસ્રણ ઉપર જણાવેલી દશ પ્રકારની લીલા એજ છે. અન્ય પુરાણો પંચસ્રણ છે અને ભાગવત દશવિધલીલાવિશિષ્ટ હોવાથી અન્યની અપેક્ષાએ વિશિષ્ટ છે, આજ તેની મહત્તો છે.

ટિપ્પણી ક્યાંથી લેશે ?

સાપ્રદાયિક ત્રનોત્સવની ટિપ્પણી તથા પંચાંગો મેળવવા માટે આ નયજે જાઓ, અથવા પત્રવ્યવહાર કરો. મૂલ્ય માત્ર ૧ આનો. ટેકાણું:—ગિરધરલાલ જ. શાહ, શ્રીરામગાવાનુ મંદિર, કમ્પનરખાનાં, ભૂલેશ્વર, મુંબઈ નં. ૨.

† શ્રીનાથજી વામશ્રીધ્વજ ઉઘો કરીને ભક્તોને બોલાવે છે. જુઓ શ્રીકૃષ્ણધીનીજીમાં અમારું વિવેચન અને ઉપોદ્ધાન.

~ નિર્ગમની વિગત વ્યાખ્યા દશમસ્કન્ધનો પરિચય કરાવતી વખતે આપીશું. અને તેથીયે વિન્તાર શ્રીકૃષ્ણધીનીજીના જન્મપ્રકરણના ભાવાન્તરમાં સ્વનન્ત્ર વિવેચન અને પ્રત્યેકમાં લખ્યો છે. ત્રિમાસુએ પણ રૂપીઆ એકલાવીને પ્રાદક થવું. લખો આ પત્રના કાર્યોત્સવમાં અથવા દરિ-શંકર સાસ્ત્રી મોટું મંદિર, નડિઆદ.

આ એક અને અદિતીય બ્રહ્મ 'સત્'જ હતું તેણે અનેક થવાની ઇચ્છા કરી, તેણે તેજ સર્જ્યું" હતાદિ શ્રુતિમાં 'સત્'શબ્દવાચ્ય નિમિત્ત અને ઉપાદાન કારણ છે એમ પ્રસિદ્ધ છે. આ શ્રુતિમાં સત્ને ઉપાદાન કહીને એક અને અદિતીય કહેવાથી તેનું ખીજું કોઈ અધિષ્ઠાન નથી એમ અધિષ્ઠાનાન્તરનો નિર્ણય કરી તેણે ઇચ્છા કરી એમ કહેવાથી તે એકજ છે એમ પ્રતિપાદન કર્યું છે; તેથી જગત્ના જન્મ રિચિતિ અને પ્રકરણોનું ઉપાદાન અને નિમિત્ત કારણ પોતે એક જ બ્રહ્મ છે એમ લક્ષિત થાય છે. અને તે ઉપરથીજ સર્વતત્ત્વ, સત્ત્વગુણતત્ત્વ, સર્વશક્તિભત્ત્વાદિ આકાર બૃહત્ત્વથી પ્રાપ્ત થઈ બ્રહ્મ છે એ સિદ્ધ થાય છે. તેથી આકારાન્તરની કલ્પના થઈ શકે નહિ. જગતનું જન્માદિ વિશેષણ હોવા છતાં પણ કોઈ જગતનો રોપ પ્રાપ્ત થતો નથી. તેમ વૈષમ્ય પણ નથી અને અન્યોન્યાશ્રય પણ નથી. એમ કહ્યું છે.

મધ્વભાષ્યમાં—^૧મૃષ્ટિ, રિચિતિ, મંદાર, નિયમન, જ્ઞાન, અજ્ઞાન, બંધ, મોક્ષ જેથી થાય છે તે બ્રહ્મ છે. તેમજ ઉપર જણાવેલી શ્રુતિમાયે બ્રહ્મને કારણ કહ્યું છે જ એમ કહે છે.

ભટ્ટ ભારકર ભાષ્યમાં—આ ઉપાદાન કારણ છે એમ કહે છે.

સિદ્ધુભાષ્યમાં—બ્રહ્મનું આ જન્માવાચિકરણમાં અધિષ્ઠાન કારણ સ્વીકાર્યું છે; અને તે (અધિષ્ઠાન કારણ) સમવાયી અસમવાયી નિમિત્ત આ ત્રણેથી જુદું સ્વતંત્ર કારણ છે. તે પ્રકૃતિ પુરુષાદિ અનેક શક્તિઓનો આધાર અને ચિન્માત્ર સ્વરૂપ છે એમ સ્વીકારે છે.

શંકરાચાર્યના—મતમાં સ્વીકારેલું નિર્વિશેષત્વનું ઉપર જણાવેલા બધાએ સ્વસ્વ પ્રદર્શનની રીતિથી ખણન કરે છે.

યથાપિ આ સ્થળે નીલકંઠ શિવાચાર્યના ભાષ્યનું મત લખ્યું નથી, તથાપિ તે વિશિષ્ટાદૈતમતાનુસારી હોવાથી તેની ગતાર્થતા થઈ જાય છે.

આ રીતે અહીં વ્યુત્પત્તિ માટે સ્ફેજ ઉદાહરણ રૂપે મનો દેખાડ્યા છે,

પ્રશ્નોત્તરવિચારગ્રન્થ.

(ગતંક પૃષ્ઠ ૩૭૨ થી ચાલુ.)

ઉત્તર ૭—સત્તાસ્રોક્ત એવો જે ધર્મ તે થકી અવશેષ એવો જે પાપર્મી ધર્મ તેના આચરણના કરનારા તથા છવર્દિસા આદિક જે પાપકર્મ તેના કરનારા, તથા શીદૃષ્ટ્ય ભગવાન અને ભગવાનના અવતાર, તેમના દ્રોહના કરનારા તથા સત્પુરુષોને તથા સદ્ધર્મને દૂષણ દેનારા તથા પીડનારા એવા જે બળ પુરુષ, તેમની સાથે તો સદજ શ્વાભાવિક પણ સમાગમ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૮—સદ્ગુરુ કેવા હોય તે કરેવા ?

ઉત્તર ૮—જેહને બ્રહ્મનો પ્રત્યક્ષ (સાક્ષાત્કાર) અનુભવરૂપ રંગ હોય, જે સદા સત્માર્ગે જ વર્તતા હોય, મદાચારસંપન્ન હોય, જે પરંપરાથી (કુલપરંપરાથી) ભગવદ્ધર્માચરણજન્યા આત્મા હોય, વૈષ્ણવદીક્ષાવાળા હોય, નિરંતર જેની બ્રહ્મનેજ વિશે અનન્ય નિશ્ઠા હોય, પ્રત્યક્ષ જન્મમરણાદિ (મંસારપ્રવાદ) તેના દર્શી, અને શિષ્યને સ્વધર્મનેજ વિશે મનિના દેનાર હોય, અસત્ ક્રમને વિશે ક્યારે પણ ન પ્રેરના હોય, ને મત્સરથી (જે દેષ એકનું માફ દેખીને તેનો ઉત્કર્ષ ખમી શકતા ન હોય એવા દુશ્મિથી) રહિત હોય, અને નિરંતર ધર્મનેજ

ઉત્તર—સોભ કામ રૂપાદ માન અને મોદ એ પાંચ બે સ્વાર્થ કામના હેતુરૂપ માનેલા હોય તેનો બે નાશ થાય તે કોષાનું કારણ છે.

પ્રશ્ન ૧૮—કોષાવેગમાં ચિહ્ન શાં છે ?

ઉત્તર—પોતાને અને પારકાને પીડાનો કરનારો ને કહેવા યોગ્ય અને ન કહેવા યોગ્ય એવાં બે વચન તેનો વિવેક ન રહે. એવો વિવેક નાશ કરનારો ને પોતાના સ્વરૂપને વિરૂપનો કરનારો તેને કોષી જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૯—સત્માર્ગ ને કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—ચાર વર્ણના અને માહાત્મ્યજ્ઞાન ધર્મ વંરાગ્યાદિ લક્ષણે યુક્ત એવી જે શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની ભક્તિ તે જે માર્ગને વિશે પ્રાધાન્યપણે થતી હોય તે જેમાં મુખ્યાબ્રહ્મવર્ધક ભગવદ્-ધર્મજ્ઞ પળાતો હોય તેજ સત્માર્ગ જાણવો. એટલે કયાણુકારી માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૦—અમત્ માર્ગ તે કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—વેદશાસ્ત્ર પુરાણ તંત્રાદિ અને મહાભારતાદિ ઇતિહાસમાં નિરૂપણ કરેલા વર્ણીત્રમના ધર્મે અલિત એવી જે ભક્તિ તેથી રહિત એવાં કર્મજ્ઞાનાદિ તથા ૩ પ્રકારની સુરા અને ૧૧ પ્રકારનું જે મદ્ય તેનું પાન જે વામમાર્ગી આદિકમાં થતું હોય એવો જે માર્ગ તે અમત્માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧—મનુષ્ય, તેમણે સર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરવા યોગ્ય એવી જે હિંસાવાળી કૃતિ તે મત્પુરુષોએ કરી કદી છે.

ઉત્તર—લિપ્ત જૂ આદિક જેવાં સૂક્ષ્મ ચૈતન્ય પ્રાણીઓથી આરંભીને તે મનુષ્યાદિ સર્વ પ્રાણી માત્ર કોષને પણ મને વગરને કે ક્રિયાએ કરીને પીડા થાય એવું જાણી છુટકને અધર્મને માર્ગે કરવું તે હિંસા બ્રહ્મચર પાપરૂપ ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૨૨—સયને (પતનને) પમાડે એવો મુખ્ય દોષ કીયો છે ?

ઉત્તર—દેવના, બ્રાહ્મણ, વિષ્ણુ, ગાય, સત્પુરુષ આચાર્યની ભક્તિ અને સત્પુરુષ તથા વિષ્ણુનું પ્રતિપાદન કરનાર એવું જે વેદાદિક સત્શાસ્ત્ર તેની જે નિંદા કરે છે તેથી તે જરૂર ક્ષય (પતન) ને પમાડે એવો મદાન દોષ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૩—પુષ્પનો નાશ કરનારો અને અપકીર્તિના કરનારો એવા તે ક્રિયા દોષ છે ?

ઉત્તર—૧ પરસ્ત્રીનું ગમન અને પગથન, પર સત્તાની વસ્તુમાત્રને છાનુંમાનું ચોરી લેવું, દરી લેવું. ૨ વિશ્વાસઘાત. ૩ કૃત્ત્યપણું. ૪ પૂજ્યા યોગ્ય પદાર્થ (દેવશરુ આચાર્ય વીરલ સત્પુરુષ આગળ માન કરવું.) ૫ કોઈના પર મિશ્રયાવાદ મકલે. આ દોષો પુષ્પનો નાશ કરનાર છે અને અપકીર્તિ કરાવે છે.

પ્રશ્ન ૨૪—અવળું કયા માત્રથી સમગ્ર પાપને દરી લે એવી કર્મ કયા વાતી છે ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ નારાયણની જે કથા અને વાર્તા તે સમગ્ર પાપ માત્રને દરી લે એવી છે.

પ્રશ્ન ૨૫—વિદ્યા (સુવિદ્યા તે કથી છે.)

ઉત્તર—પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને વિશે મનિની આપનારી એવી જે બ્રહ્મવિદ્યા તેનેજ વિદ્યા જાણી.

પ્રશ્ન ૨૬—અવિદ્યા તે કય જાણતી ?

ઉત્તર—અસયને વિશે જે સત્યપણાની યુદ્ધિ છે અને અનિત્યને વિશે જે નિત્યપણાની યુદ્ધિ છે તેજ અવિદ્યા (માયા) છે.

એવી રીતે છે કે—દેવાનાં (કા.) એ સ્થળે જે ભક્તિ સિદ્ધ કરવામાં આવી છે, તેવી ભક્તિ-વાળા જીવોનેજ કોઈ પણ જાનના આવરણ કે ઘિટ વિના તેવા આનન્દ રૂપનું દર્શન થાય છે. જુઓ—“પર્યન્તિ તે મે હચિરાવતંત્રપ્રવક્ષ્યપ્રારણલોચનાનિ (કા.) તેઓ જેમાં સુન્દર કણ્ઠી જુવણું, પ્રમત્ત મુખ અને લાલ લોચનો છે, તેવાં મારાં સ્વરૂપોનાં દર્શન કરે છે.” આ વાક્યમાં તે પદ્ધતિ પૂર્વોક્ત ભક્તોનું સૂચન છે. “મત્તયાદમેકયા પ્રાપ્તઃ હં એક ભક્તિથી અદ્ય જરાજી તેવો છું.” “મત્તયેવત્તુષ્ટિમમ્બોત વિષ્ણુઃ ભક્તિથીજ વિષ્ણુ ભગવાન સનોપ પામે છે.” એ વગેરે વાક્યોથી જાણી ગકાશે કે—પ્રમત્ત યોગેશ્વર પ્રભુ પોનારું ગુપ્તમા ગુપ્ત રૂપ પણ ભક્તોને જનાવે છે. આવા ભક્તો સિવાયના બીજાઓને તો આવરણવાળું દર્શન થાય છે. તેવાઓને તો મત્તગુણાત્મક શ્યામરૂપ, જે સ્વરૂપે રહેલા આનન્દરૂપમાં પ્રતિદક્ષિન થઈ હોય છે, તે જનાવે છે. આમ સત્ત્વમાં રહેલા રૂપનો પ્રતિદક્ષિન—અકાર સાર્થકજ છે, તેવું કોઈ પણ જાતના દોષ વિના રકુટ થાય છે.

આ પ્રમાણે બરોબર વિચાર કરવામાં આવે તો શ્રીમદાચાર્યચરણ તેમજ શ્રીપ્રભુચરણોના લેખમાં ક્યાંય પણ સિદ્ધાન્તવિરોધ કે વિરોધાદિરૂપ દોષ દેખતોજ નથી. એમ વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ (નિશ્ચિન્તાથી) જાણવું.

શ્રીકૃષ્ણની સેવા.

(લેખક:—વિદ્યાર્થી ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ દેસાઈ,).

ભક્તિમાર્ગમાં મેવા એ જ ખરો ધર્મ છે માટે દરેક વૈષ્ણવે શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનું સ્વરૂપ અથવા ચિત્ર પધરાવી મેવા કરવી જોઈએ કારણ કે શ્રીકૃષ્ણ એ જ પૂર્ણપુરુષોત્તમ છે તે ગીતાના પ્રમાણથી સિદ્ધ થાય છે. ગીતાના પંદરમા અધ્યાયમા દ્વાવિમો પુરુષો લોકે ॥ એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે શ્રીકૃષ્ણ પૂર્ણપુરુષોત્તમ છે. તેમજ સિદ્ધાંતમુકતાવલીમા પણ શ્રીમદાપ્રભુજીએ કહ્યું છે કે શ્રીકૃષ્ણ તો પરબ્રહ્મ છે. તેમજ શ્રીભાગવતના વાક્યથી પણ સિદ્ધ થાય છે. તેમજ શ્રીકૃષ્ણાશ્રયમાં પૂર્ણાનન્દો હરિઃ હરિ પૂર્ણાનન્દ છે. એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે, શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મ, પૂર્ણપુરુષોત્તમ, પૂર્ણાનન્દ છે. અર્જુનને ભગવાને કહ્યું છે કે “હે ધનંજય મારાથી પર કાંઈ પણ નથી.” તેમજ “અહ સર્વસ્ય પ્રમત્તઃ” એ શ્લોકથી તેમજ હૃષિકેશ્વરકઃ આ શ્રુતિથી પણ સદાનન્દરૂપ શ્રીકૃષ્ણ છે એમ ચોખ્ખું દેખાય છે માટે નાકાત્ શ્રીકૃષ્ણ જ મેવવા યોગ્ય છે. જુઓ! આપણે ત્યાં એક સામાન્ય પરાણો (મહેમાન) આવે છે ત્યારે આપણે તેની મેવા કરીને તેના મનને સતોપ પમાડીએ છીએ. તેમજ આપણા શેડ હોય કે જેને લા આપણે નોકરી કરતા હોઈએ એટલે જેના હાથ તજે હોઈએ તે શેડની આપણે ફેટલી મેવા કરીએ છીએ ? અર્થાત્ રાત્રે એ આપણને ગમે તે જગ્યાએ મોકલે, ત્યાં જઈએ છીએ અને તેનું મન હંમેશાં કેમ ખુશી રહે તે પ્રમાણે કરીએ છીએ. તથા તેની આજ્ઞામા જ રહીએ છીએ ? ત્યારે તે શેડ અથવા મહેમાનથી આપણા શ્રીકૃષ્ણચંદ્રને જેનાથી આ જગતની ઉત્પત્તિ. સ્થિતિ અને લય, એટલે સચ્ચિદાનન્દ પ્રભુમાંથી આ જગત ઉત્પન્ન થયું છે, સત્ માથી દરેક જડ વસ્તુ, ચિદ માથી જ્ઞ (ચેતન) અને આનન્દ માથી અંતર્યામી થયેલ છે અને જેનાથી આખા જગતનું ભરણપોષણ થઈ રહ્યું છે અને જે આપણું રક્ષણ રાત્રિ દિવસ કરી રહેલ છે, અને આપણે જેના યજ્ઞી જીએ છીએ, એવા મોટા ધણીને મૂળીને આપણે લોકિક ધણી (શિષ્ટ)ની સેવા કરીએ છીએ, તેના કરતાં શ્રીકૃષ્ણચંદ્રની જ સેવા ઉચિત છે. કારણ કે ગીતાજીમા કહ્યું છે કે; મમૈવાંશો, જીવત્તેકે । એ શ્લોકથી જ મારાં

અંશ છે એમ કહેવું છે. તેથી આપણે અંશ છીએ, પ્રભુ અંશી છે. તેથી અંશનો ધર્મ અંશીની મેવા કરવાનો જ છે. માટે બીજા બધા લૌકિક શેઠ વગેરે તથા દેવદેવીઓની સેવા મુદ્દા તેની મેવા કરવી કે તેથી આપણું શ્રેય થાય.

લક્ષ્મી દ્વારારામભાઈ પણ ભક્તપોષણમાં કહે છે કે—

જગત વૃક્ષ ત્હેનું મૂળ હરિ, મૂળ પોયે વૃક્ષ પોષાય;

પ્રતિ શાખા જગ સીંચીએ, તેથી નરુ તૃપ્તિ ના થાય.

તૃપ્તિ ના થાય વૃથા શ્રમ પહોંચે, સમજતુ આવે ત્યાર પહોંચે શોચે;

મુખદારા સદુ ઇન્દ્રિય સતોષે, બોજન અંજ લેખું કાઢને ન પોષે..

—સેવા શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ

નહોં કોઇ ત્હેના સમોવધી, કોઇ ઇસ નહોં ત્હેને સીસ;

સર્વ વસ્તુ જે યદી થઇ, જે કોઇ કહાવે સર્વના અધીય.

સર્વોધીય વદે સદુ ત્હેને, નિગમ નેતિ નેતિ કહે છે ત્હેને;

શોષ મરેશ વિધિ શ્રી અગમ્ય, તેને કહીએ પૂર્ણ પુરગોતમ.

—સેવા શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ

અર્થ:—આ જગતરૂપી વૃક્ષનું મૂળ હરિ (કૃષ્ણ) છે. એ જગતરૂપી વૃક્ષના મૂળને પાણી પાશું (કૃષ્ણની સેવા કરવું) એટલે મૂળને પાણી પાશું તો વૃક્ષ પોષાયો. પણ જે તેની શાખાઓ-માંથી પાણી રેડવું (એટલે બીજા લૌકિક ધણા દેવદેવીઓની સેવા કરવું) તેથી વૃક્ષ તૃપ્ત નહોં થાય, કૃષ્ણને તે મેવા નહોં પહોંચે. વૃક્ષને તૃપ્તિ નહોં થાય પણ ઉચ્ચ શ્રમ પહોંચશે. (બીજાની મેવા કરવાથી કોઈ નહોં વળે નહેનન કરવી એટલું જ) પણ ત્યારે માણસને મનજતુ આવે છે ત્યારે બિચારો પડતાય છે. (હવ ત્યારે જાણે છે શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મની સેવા મુદ્દા આપણે આ લોકની નકામી મેવા કરી ત્યારે પડતાય છે.) જે આપણે આપણા મુખમાં અન્નને મૂકવું અને ખાવું તો બધી ઇન્દ્રિયો સતોષ પામશે. પણ હાથ, પગ, મોંડું વગેરે અંગો ઉપર બોજનનો શ્રેષ્ઠ કરવાથી ઇન્દ્રિયો સતોષ પામતી નથી, (કૃષ્ણની મેવા કરીએ તો જ ઇન્દ્રિયરૂપી બીજા દેવ-દેવીઓને સતોષ થાય છે, પણ તેઓની સેવા કરવાથી કૃષ્ણને સતોષ થતો નથી) માટે શ્રીકૃષ્ણને જ મેવો. તેમજ બીજી કદી પણ સમગ્રજ એમ છે તેથી તેનો અર્થ ક્યોં નથી, તે કદીમાં પણ પૂર્ણ પુરગોતમને જ સેવવાનું શ્રીદ્વારારામભાઈ કહે છે.

દવે કોઈ પ્રશ્ન કરે કે શ્રીકૃષ્ણની સેવા ક્યારે કરવી? તેને માટે શ્રીમહાપ્રભુજીએ શ્રીકૃષ્ણની દમૈશ્ય સેવા કરવી એમ સિદ્ધાંતમુક્તાવલીમાં આજ્ઞા કરી છે. આમાં એક શંકા ઉપરિચિત થયા વિના નહોં રહે, કે સંસારની અંદર રહીને આખો દિવસ દમૈશ્ય કેમ સેવા થઈ શકે? તેનો જવાબ એટલેજ છે કે “સદા” નો કહેવાનો ભાવાર્થ એ છે કે મેવાના વખતે પ્રભુના સ્વરૂપની સેવા કરવી અને અનોસરમાં પ્રભુ માટે સામગ્રી તૈયાર કરવી. મંદિરમાંથી વાસોઈ વાળવાં વગેરે જે કાર્ય કરીએ છીએ તે પણ પ્રભુની સેવા છે. તે ઉપરાંત કહેવાનો ભાવાર્થ એટલો જ છે કે દમૈશ્ય ત્યારે કોઈ પણ કાર્ય કરતાં હોઈએ ત્યારે અને વાનગીન કરતાં હોઈએ ત્યારે પણ આપણા મનને પ્રભુમાં જ રાખવું, તેનું સ્મરણ જ કરવું અને મન પ્રભુમાં અને બીજું કામ કરવું એ જ સાધનરૂપી માનસી મેવા છે. એ પ્રમાણે મન પ્રભુમાં દમૈશ્ય રાખવું તેનું નામ જ “સદા કાર્ય” નેમજ આપણા પુષ્ટિમાર્ગમાં સેવાના ત્રણ પ્રકાર કહેલા છે. (૧) તનુજ, (૨) ચિત્તજ અને (૩) માનસી. તેમાં તનુજ અને ચિત્તજ એ સાધનરૂપ છે અને તેનું કાર્ય માનસી છે. તનુજ

શ્રીહરિરાયજીને પ્રભુએ કહ્યું ફલાણા મળૂરને લ્યાં સવારના પધારને અને તેની, પાસેથી રૂ. ૨) જે બેટના લઈ લેજો. એ પ્રમાણે પ્રભુની આજ્ઞાને માથે ચઢાવી સવારે તેને ઘેરે પધાર્યા; તેથી તેને દર્પ તો ક્યાંય ન માય. ત્યારે તેઓ ત્યાંથી એટલે તે મળૂરના ઘેરથી વિદાય થયા ત્યારે રૂ. ૨) મંગાવી લીધા. આ જોઈ તે બહુજ આશ્ચર્ય પામ્યો. શ્રીહરિરાયજીએ આ જે રૂપિયાની સામગ્રી નોખી મંગાવી પ્રભુને તેનો નોખો ભોગ ધર્યો, અને પ્રસાદ રાત્રે ભગવદ્મંડળીમાં વાટયો. અને જે જે વાંછુવાએ તે પ્રસાદની કણિકા લીધી તેને રાત્રે પ્રભુએ સાક્ષાત્ દર્શન આપ્યાં. લુગ્યા ખરી વિત્તમનું ફલ ? હવે ત્રીજી સેવાનો પ્રકાર માનસી છે. આ માનસીના જે પ્રકાર છે. એક સાધનરૂપ બીજી ફલરૂપ “ચેતસ્તતપ્રવર્ણ સેવા” પ્રભુની અંદર મનને પરાયતુ તેનું નામ માનસી સેવા અને તેના સાધનરૂપ તનુવિત્તમ છે. જે કે તનુવિત્તમ પણ ફલરૂપ છે, છતાં તેને સાધન રૂપે કહેવ છે. આ સેવા પણ પ્રભુની કૃપા વિના થવી દુર્લભજ છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં સાધન અને ફલ એકજ છે. તનુવિત્તમ મેવા કરીએ છીએ તેમાં પણ આપણું મન કાષ્ટિક અંશે પ્રભુમા પરાવાએયુ હોય છે, અને તે આપણે પ્રભુ અર્થેજ કરીએ છીએ. તેથી તે સાધનરૂપ માનસી છે અને ફલરૂપ માનસી તો તેનું નામ કે ગોપીજનોની માફક પ્રભુ સાથે મન સનત ચોટી રહેવું. બહારની કાંઈપણ ઉપાધિ નહોતી. ગોપીજનો પ્રભુ સાથે દસનાં, રમના, ખેલનાં, ફરતાં, ચૂતાં, ભોજન કરતાં. એ અલૌકિક સામર્થ્ય રૂપી જે ફલ પ્રભુની લીલાનો અનુભવ કરવાનું તેનું નામજ માનસી, અને તે માનસી સિદ્ધ કરવા દરેક વેળેયુવા તનુવિત્તમ કરશે. પ્રભુમાં મનને જોડશે, એજ અભિગ્રાપા.

આજ કાલતો આપણી માનસી ચાહમાંજ લાગેલી હોય છે. બીકીએ ત્યારે ચાહ, બેસીએ કે ચાહ, સુષ્પએ ત્યારે પણ ચાહ, પણ તે ચાહની ખેડે પ્રભુની અંદર મન હોય તો જુનું સાદું ભજા.

વૈદક-વિજ્ઞાન.

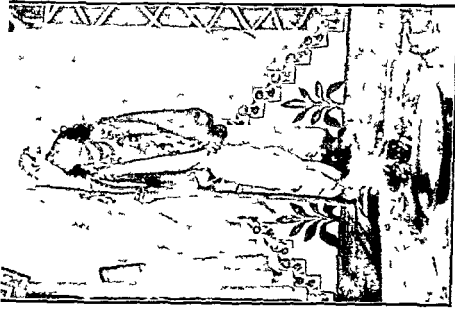
(લે. શ્રીયુત વૈદરાજ ભાતીલાલ મહાશંકર.)

વસંત ઋતુ—ફાગણ તથા ચૈત્ર વસંત ઋતુના ગણાય છે. શિયાળામાં ધણું કરીને પુષ્ટિકારક અને ચિકિત્સા ખોરાક ખાધો, જેથી બદનમા કરનો સંગ્રહ થાય અને દંડી કરનો સંગ્રહ કરે છે પણ વસંત એમના ફાગણના તાપથી કફ ઓગળવા મંડે છે. મગજ, છાતી અને સાંધાઓ કરના ચ્યાન છે. માથાનો કફ પીગળી ગળામાં ઉતરે જેથી સજોખમ, કફ અને ખાંસીના દર્દ થાય છે અને છાતીનો કફ પીગળી હોઠ્ઠીમાં ન્તય છે જેથી મંદ અગ્નિ થાય છે, અને મરડો થાય છે. માટે એ કફ દર્દ ઉત્પન્ન કરે તે પરોવાંજ કાં તો કરની. શાન્તિ કરાવવી અને કાં તો કઠારી નાખવો. આદાર વિદારના ફેરફારથી શાન્તિ થાય છે અને કાઠવા માટે ઉઘટી તથા લુલાખ છે. ખાસ કરીને બાળક તથા વૃધ્ધે અને અગરને ઉઘટી લુલાખ લેવા નહિ. જે શક્તિમાન હોય તેજેજ ઉઘટી લુલાખ લેવા.

કરની શાન્તિના નિયમો:—

૧. ભારે તથા ટાહું અનાજ, દિવસની ઉંઘ, ચીકણા ખાટા અને મીઠા પદાર્થો તથા નવું વાન્ય એટલી વસ્તુઓ ત્યાગ કરવો અથવા એકદમ ઘટાડી દેવી.

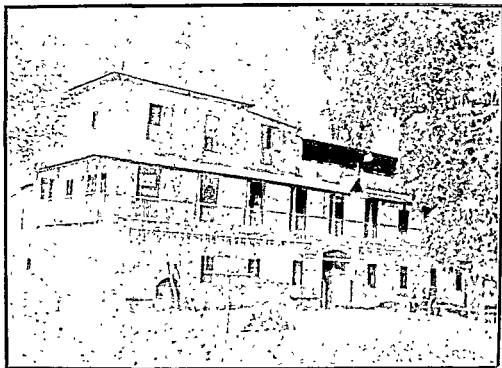
૨. લુના ધાન્ય, મધ, કસરત તૈલાભ્યં ચંપી વિગેરે ઉપાયો કરની શાન્તિ કરે છે. મધ કરને તોડે છે અને કસરત, તૈલમર્દન તથા ચંપી કરને છુટા પાડે છે.



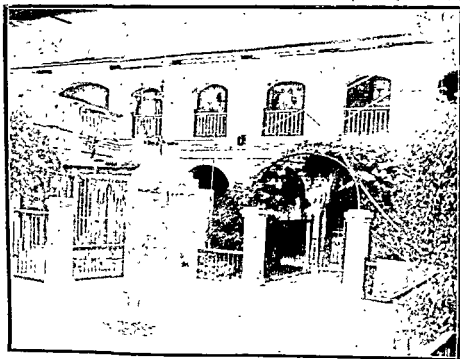
गोस्वामीश्री ६ श्रीमजभूषणकाजी महाराज, चोपासनी.
(सतोपवीतधारणसमय ब्रह्मवर्गोचित वेशभे)
प्राकट्य-पौषकृष्ण १२ सं. १९७६



निरपलीलास्य कृपापीठपारावार गोस्वामीश्री ६
श्रीरघुनाथलाकजी महाराज, जुनागढ.
प्राकट्योरसव-आम्बिनशुक्ल १३ सं. १९७१



बहारतुं सम्पूर्ण दृश्य.



अन्दरतुं एक दृश्य.

મહાનત મનુરી અને સુકો રોટલો ખાઈ ગુજરાન કરનાર ગરીબ વર્ગના લોકોને આ ઋતુમાં કંઈ ઉપદ્રવ થતો નથી. પ્રથુ બેઠાડોને કફ હેરાન કરે છે. માટે સાવચેત રહેવું. ફાગણ માસના પહેલા પંખવાડીયામાં હોળીના તહેવારની રમત ગમત ઘણી દાગીયા તથા તેનો સાથવો ફરી અને ઘેરઘેર અને પોતે પોતે ફરી તાપવું એ ઘણું જ અગત્યનું છે.

તાઝ ભરમની વિધિ—રાણી છાપના પૈસા લઈ તેને શુદ્ધ ફરી ગળજીની પાન વાડી તેની લુગડી બનાવી તેમાં પૈસો મુકી કપડ મરી ફરી ગળપુટનો અમ્મિ આપવો. સ્વાંગ શીનગ થયે કાઢી ઉપર જે પોપડી વગેરે હોય તેને સાચવી ઉભેલી લઈ, કચાચવાળા ભાગને ફરીથી ગળજીની લુગડામાં ગળપુટ દેવો. એ પ્રમાણે પોપડીથી ઉખાડી ઉખાડી ફરીથી લુગડીમાં મુકી પુટ આપે જવું એમ દસ વખત કરવાથી ભરમ થાય છે. છેવટે તૈયાર થયેલી બધી પોપડીઓને બેગી ઘુટી ગળપુટ આપવાથી સારી ભરમ તૈયાર થાય છે. આ ભરમ એક ચોખ્ખા પુર લઈ મધ તો. ૧ તથા આફનો રસ તો. ૧ ખાવાથી ગમે તેવો કફ તથા દમ મટે છે.

દમ-ઉધરસની દવા—કુખાંણ (કોળી) ની જડ કે જેના ઉપર ફળપુષ્પ આવી ગયા હોય તેની જડ લાવી વાડી વજાગા ફરી શીશીમાં રાખી મુકવી, તેમાંથી જે માસા (જેઆની ભાર) થોડા ગરમ પાણી સાથે સવાર સાંજ આપવું. જરૂર હોય તો ત્રણવાર આપવું એથી વધારે વાર આપવું નહિ. કફના વધારામાં ત્યારે શીત દેખાય ત્યારે મધ સાથે આપવું. અપથ્ય-તેજ, મરચું અને ખટાસ આપવા નહિ. ઘણો ગરમ તથા ઘણો ઠંડો પદાર્થ આપવો નહિ. ત્યારે ખીજ અગ્રેજી યુનાની દવાઓ શ્વાસ ઉપર નિષ્ફળ નીવડે છે ત્યારે આ દવા ફોલ્ડમંદ નીકળી શ્વાસને જેસારી સારો કરે છે. આ દવા ઘણા દરદીઓ ઉપર અજમાય કરેલ છે અને લોકહિતાયે જાહેરમાં મુકેલી છે.

દમ-ગોળ શેર ૦૧ તમાકુ શેર ૦૧ બેને વાડી સંપુટ કરવો તેની વચમાં ડોડીયા લોખાન શેર ૦૧ નો એક ટુકડો મુકવો પછી કપડમરી ફરી બશેર આડાયા છાણનો તાપ આપવો. ટાડું પડે ત્યારે લોખાન કાઢી લેવો. તેમાંથી એક રતિથી એક વાલ ધીમાં આપવું. ઉપર તરત સુરમાનો લાકુ ખરવાવો. જેથી દમ અમુંઝાય બેસી જાય છે.

૨-સાખરસાંગાની ભરમ, કુલાવેશો ટંકણ ખાર, મોરપીછની ભરમ, અથેડાનો ક્ષાર મોરંગીની એ સર્વને બારીક વાંટી દિવસમાં ત્રણવાર મધમાં આપવાથી કફ ઘુટી પડી દમ મટે છે.

શુભ પ્રસ્તાવનું મંગળ ગીત.

(રાગ:—સુભદ્રાજની કંઠોનીના.)

શ્રીખાલકૃષ્ણ પ્રભુજનાં મંદિરે-શ્રીશ્રીજગદગણધેર અજ્ઞ.	આન્થેરે રૂડો સોલીસો—ટેક.
સુરનામાં મંદિરે મોટા જાણીયે, વચ્ચનંદબુવન નીરખાય.	આન્થેરે. શ્રીશ્રીજગદગ.
જેમાં શ્રીવશુભવંશ ખીરાજતા, પવિત્ર સરવ પરિવાર.	આન્થેરે. શ્રીશ્રીજગદગ.
મંગલ રૂપે શ્રીશ્રીજગદગ નિરખીયે, શ્રીવહુક કૃષ્ણપ્રીયાપનોતા શોભાય.	આન્થેરે. શ્રીશ્રીજ.
શ્રી દંપતિ અતિ ભાવ્યવંત છે, શ્રીખાલકૃષ્ણ કૃપાના મુખધામ.	આન્થેરે. શ્રીશ્રીજ.
એમના મોટા કેવર (શ્રી) ગોવિંદલાલજી કુંજમીદારીલાલ કેવાય.	આન્થેરે. શ્રીશ્રીજ.

લાલના લમ હુવા મુંબા નગરીમાં, શ્રીરાણી વડુછ નામ શોભાય.
લાઠકોડે વળી નામ ધારીઆ, દિવ્યપ્રભા અધિક ગોખાવ્યા.

અષ્ટ માસો પ્રસ્તાવ કરવા તણી, આઠ્યા સમય મુરત જોવાડ્યા.
શ્રી માતતાન જાણી મન હરખીયા, પુત્રવધુને મુરત સુદીન.

સંવત શત ઓગણીસ અઢ્યાસીમાં, માગસર વદ સાતેમ ગુરવાર.
શુભ કારજ મોટા આરંભીયા, શ્રીમહારાજને હર્ષ અપાર.

કુંભકુમ પત્રિકા લખી રવકુંડામાં, લખ્યાં મુરત વ્રદુછને મહીએર.
લખી વૈષ્ણવેને ઘણા વ્દાલથી, માનસહીત સદુ ગામેગામ.

હરખે આવ્યા વેહેવાઈ બજલદ્રછ, પરીવારે મોસાળીયા શોભાયા.
સાથે દીક્ષિતજને ગોપીનાથછ, શ્રીગોકુળનાથછ મહારાજના લાલ.

શ્રીમહારાજના મુંબધી સદુ આવીયા, શ્રીલક્ષ્મી બેદી આવ્યા જિમંગે.
કાંકરાલીથી ગણુખા પધારીયા, બેઉ લાલછ છે વહૂછ સહીત

શ્રીત્રજ્યુપણુને વીરૂણનાથછ, સાથે વડુછને લાલ છોટાખાળ.
દીસનગદથી ચંચુખા આવીયા, શુભ અવસરે શોભ્યા મોસાળ.

શ્રીમધુસૂદનલાલ બડુ પ્રેમથી, રાજનગરથી વહીલ મહારાજ.
એમના લાલ શ્રીરણુછોડલાલ સાથ છે, જિમંગે ભર્ષા શોભાય.
શ્રી કામવનથી શ્રીવલ્લભલાલછ, શોભે રાજ રસાલા સાથ.

મદાસથી શ્રીવડુછના પીહેરીયા, આવ્યા કુંડુબ સહીત પરીવાર.
મહારાજશ્રીના મોસાળીયા, મામા મામી આવ્યા હરખાય.

સંબંધી લાલછઓ આવીયા, યોગ્ય પૂજ્ય રીતે રીધા માન.
સડુને સુખનીવામ સારા આપીયા, માનભર્ષા કર્યા વીવેક,

વૈષ્ણવજનનો સમાજ બડુ આવતો, આનંદ સડુને મન વાધે.
શહેરવાસી વૈષ્ણવ હરખે ભર્ષા, પ્રસ્તાવ આનંદમાં મહોતે.

સીમંતની શોભા ભારે દીશતી, મહેલ મેરીયે જોતી પ્રકાશ.
મોક રંગમંડપે શોભા ઘણી, શાંતિદવન વેદવીધી થાય.

લુગલ સ્વરૂપ ત્યા મોકે ખીરાજતા, મંગળ ગીત સોહાગજો ગાય.
વેદમંત ધોપ ઘણા ગર્જતા, દરસણુ કરતા વૈષ્ણવ અગળીત.

શ્રીવલ્લભ કુળ સવુ ખીરાજે શોભા ભર્ષા, દીશે અઘૌઘીક દરસન.
બીડ ભારે થાય દરસણુ સમે, રખે સેવકા સારી સંભાળ.

એવા આનંદ સદા મોટા મંદીરે, શ્રીવલ્લભવંશ સુરત શોભાવે.
પ્રસ્તાવ શોભા થોડે વરણવી, ગાય દાસ ત્રીકમ રચી ગીત.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીમેદીજના પ્રાગટ્યનું માંગલિક ગીત.

(ગગ-શ્રીકૃષ્ણ કમળ મુખ નિગ્ધવા આલો શ્રીનંદજીને ઘરે.)

- મખી આજ નામળી માલગી, વાધો છે હારી સંજે મ. ઘેરે
શ્રીનાનકૃષ્ણના મરિ, શ્રીકીર્તનનાનને ઘેરે ૧
- શ્રીગજદ સગી જલ્દા પ્રગીયા, શ્રીપ્રભાસ દિ મ પ્રકારે
િયપ્રભા જલો શ્રીનકુરે જનમ્યા કારી મુગ મુખગારે ૨
- એરે વધામ ની મુ ની મુળી, વૈષ્ણવ જન વેગ લા જાયરે
મંદિરદારે વધામણ, ધોળ મંગલ મની ગીતો ગાયરે ૩
- શ્રીગદ્યા ગવન નજ પ્રગીયા, આનંદ તેરા હરે હરખાવે
દોન આજ નામ વામના, જન તોરણારે શોભા છેરે ૪
- વૈષ્ણવ વનિના સોદાગણો, લાવે વધાવો મગજ સાજે
જીતરજને બીડ શ્રીનાડલીજને નીગમના કાજે ૫
- શ્રીમુખ કુવરીજના જોઈ જોઈ, લેતા ઓવાગણા કરી કરી વહારે
રૂદ પૂજ્ય આગીત દીરે, ચિરનજીવી રાજે ચિરદારે ૬
- શ્રીકીર્તનજ આનંદભર્યા, નીરખીરે પ્રમન વદનરે
જોતા વૈષ્ણવોને એકથી, સતોરે કુદુમ સહિત સ્વજનરે ૭
- છટ્ટી પૂજન દિન શોભીયો, ગગિયે અનૌકિક દમનરે
શ્રીમદાગજ બીરાજે માનમગ, જોભા જોતા હરખ્યા મનરે ૮
- ઝોકમા જોડે બીગદ્યા, ગમ્ગ આપશ્રી જોવિંનારે
ભુગન અરૂપ નીડાગીરે, દીગે છે શાભા સુદગ ગમાજરે ૯
- શ્રીકૃષ્ણદેવ પૂગ મનાનતા, વેં વિધિ સરવે શુભ રીતરે
વધાર્ધ પ્રગતન લ્યા ગવાય છે, એન્દાતી ગાય છે મગજ ગીતરે ૧૦
- મગા સરોદ શ્રીમદાગજના, માન સહિત પ્રેમ મ. આલ્યારે
વસા આભરણ હીંગ મોતીના શ્રીનાડકડી પહેગવા લા પરે ૧૧
- વિવિધ રાગુગાર ઝામો શોભની, જોઈ જોઈ નયણ શીનગ ધાયરે
નિકટ સમધાને મોમાળના, પ્રેમ અધિક આધાર પ્રાયરે ૧૨
- છટ્ટી પૂજન પ્રત્તાના, મગજ થયા છે સુરોભિતરે
જોભા એરી શ્રીરમજી, આદ સત નરા નરા નીતરે ૧૩
- મવત શન ઓગાણસ છે, ઉપર અવાસી મુખમગરે
પ્રાગટ મદા સુદ અટમી, વાગ છે સીનગ મોમવાગરે, ૧૪
- નિન્દામ મવિ ગતિ હરખથી, મુગ ધોળ રચી જોભા યુરે
શ્રીકીર્તન પ્રમન થવા વગ્ધુ ગીત ત્રીકમ મન ભા યુરે ૧૫

(ગયના-વૈષ્ણવકવિ, ત્રીકમદામ શિવદાસ નવાપુરવાળા, સુખનિવાસ, મોગા મંદિર-મુખત.)

સાહિત્ય સત્કાર.

દ્વિતીય સ્કંધ પ્રકાશ—સંશોધક: રા. રા. ચીમનલાલ શાસ્ત્રી શુદ્ધાદૈતરત્ન, ગોડા મંદિર, સુરત. મૂલ્ય દોઢ રૂપીઆ. શ્રીમુખોધિનીજ એ શ્રીમદ્ભાગવતની માત્ર ટીકા જ નથી, પણ સ્વાત્મક વાણીમાં ગુંથાયલું મહાભાષ્ય છે. દ્વિતીય સ્કંધ મૂળે કહિન, અને તેનાં શ્રીમુખોધિની સર્ગ ક્યાંથી હોય ? શ્રીમુખોધિનીજ સમજવા માટે દશદિગંતવિગ્રહી શ્રીપુરુષોત્તમજનો વિદ્વતાપૂર્ણ પ્રકાશ અત્યંત સહાયક છે, તેથી તેને પ્રકટ કરીને શાસ્ત્રીજ ચીમનલાલજીએ શ્રીમુખોધિનીજના અભ્યાસીઓ ઉપર મહાન ઉપકાર કર્યો છે. પ્રકાશની ચાર પ્રતો સંશોધકે મેળવી હતી અને ધણા જ પ્રવાસે શોધન કરીને આ ગ્રંથ પ્રકટ કર્યો છે. રા. ઇન્દિરલાલ શાહ, રા. પ્રમુદસલાહ, રા. રતિલાલજી એ વિદ્યાવિદ્યાસીઓએ પણ શાસ્ત્રીજના શોધન કામમાં નિરુપાર સહાયતા આપી છે. ગ્રંથ શુદ્ધ રીતે છપાયો છે. આ ગ્રંથમાં આર્થિક સાહાય્ય વિદ્વદ્રત ગોરવાળી શ્રીદ શ્રીવજ્રરત્નલાલજી, મહારાજશ્રીએ અર્પણ કર્યું છે અને તે પણ નિજ દ્વિતીયકુમાર શ્રીમધુસૂદનજી બાવાસાહેબના યત્નેપવીત પ્રસંગને યાદગાર બનાવીને. આ અનુકરણ અન્યથા થાય એવી ઇચ્છા સાથે મહારાજશ્રી તથા શાસ્ત્રીજનો ઉપકાર સ્મરીને વિરમીએ છીએ.

શ્રીપીયૂષ પત્રિકા—આ સચિત વિશેષાંક પ્રકટ કરીને, સંસ્કૃતવાક્યમયની સાર્વદેશિક સેવામાં સ્ત્રીજ હરિશંકરજીએ મહાન ફાજો આપ્યો છે. આ અંક પ્રાચીન સંગ્રહ કરવા યોગ્ય પ્રદાયિક તથા ઈતર સાહિત્યથી પરિપૂર્ણ છે. આવાં માસિકને ટકાવી રાખવાનો ભાર સંગ્રહાલયે યા સંસ્કૃતસાહિત્યવિદ્યાસીઓ ઉપર છે.

ભારત વીરોની સત્ય ઘટના—પ્રકાશક—શિવપ્રસાદ લીલાધર પંડિત, ડૉ. ગાંધીરાડ, વહેલાલ (ડી. અમદાવાદ) મૂલ્ય સવા આનો. દેશભક્તિની વેદીપર પ્રાણહુતિ અર્પનાર બે તરણુ ભક્તોની કરુણ કથા આ નાનારા પુસ્તકમાં છે. વાંચીને હૃદય રડે છે. દેશના ઉદ્ધાર માટે કેવાં સિદ્ધાંત આપવાં પડે છે તેનો અસરકારક ચિતાર હાલના જ સમયમાં પ્રત્યક્ષ બનેલા આવાં ટાલો જ આપી શકે છે. ભાષા સર્ગ અને સચોટ અસર ઉપજવનારી છે, નવ યુવકો માટે રણુત્મક છે.

સંસારગીતા—લેખક: પ્રકાશક—અંબાલાલ કૃષ્ણભાઈ પટેલ મુ. ઓડ (ડી. ગોડા) વાયા શણુંદ. મૂલ્ય અઢી આના. જગતમાં જન્મીને પ્રભુપ્રાપ્તિનું અતિમ ધ્યેય સિદ્ધ કરવા ઇચ્છનાર માટે આ નાનું પુસ્તક ઉત્તમ અનુભવાત્મક વિચારોની દિશા બતાવે છે. મોક્ષપથના પ્રવાસીઓ માટે ભિન્ન ભિન્ન અનેક ઉચિત વિચારોનો સર્ગ ભાષામાં સંગ્રહ કરીને લેખકે આ જમાનામાં સાર તાપથી તપી રહેલા માનવીઓ માટે સારો યત્ન કર્યો છે.

વીસમીસદી—(૬૬ અંક) મૂલ્ય ચાર આના. ડૉ. જ્ઞા. ટેમરીન્સેન દીવાળી અંક પછી નુસસ્તાન ભાષ્યોના તહેવાર ઉપર આ આકર્ષક અંક કાઢીને તંત્રીજીએ શુભરાતી સમાજને નવી દેશનું જ્ઞાન કરાવ્યું છે. હિન્દુ ધર્મ સંકુચિત નથી, તેમ અસહનશીલ પણ નથી. સમગ્ર દુનીયાની ઉત્તમ સંસ્કૃતિને સન્માનવામાં જ આદર્શ હિન્દુપણ છે. આ ઉત્તમ અને ઉદારતાપૂર્ણ આદર્શ સમાજને આપવા માટે વીસમીસદીનો આ ૬૬ અંક કુતોદમંદ થયો છે. અંકમાંના ચિત્રો અત્યાકર્ષક છે. મુદ્રણકળામાં તે વીસમીસદી હિન્દુસ્થાનમાં એક અજેડ સામાજિક તરીકે અનુપમ રથાનને શોભાવે છે. આ અંકનું સાહિત્ય પણ સર્વદેશી છે. શરીર બહેનનો હાસ્યરસનો લેખ વાંચતાં તે હાસ્યરસના કુવારા, અરે ધોધજ ઉડવા માંડે છે ! ઇતિહાસ, શિલ્પકલાસાહિત્ય, વાર્તાઓ વગેરે વાંચવા લાયક છે.

પ્રાસંગિક નોંધ.

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

‘શુદ્ધદેવ’ દ્વારા સંપ્રદાયની યત્નિચિન્ત્ન સેવા બદલ ‘શુદ્ધદેવ’ના તંત્રીને ત્રીજી વાર સુવર્ણપદક મળે છે. અમદાવાદની શ્રીપુષ્પિઆર્ચીય વૈષ્ણવ મહાસભાએ એક માનપત્ર તથા સુવર્ણપદક તંત્રીને અર્પી દર્તા. તે પછી અમદેલીના વૈષ્ણવોએ શ્રીપ્રથમપીઠાધીશ્વરના શ્રીહરતથા એક સુવર્ણપદક તંત્રીને મળ્યું હતું. આ બન્ને સન્માન કરતાં એ વિરોધ ગૌરવારપદ પદવી તથા સુવર્ણપદક માધ વડે ખીનના સુમંગલ દિને પાટણમાં મળ્યાં. શ્રીકાંકરોલીનરેશ શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર પૂન્યપાદ આચાર્યવર્ય વિદ્યાવિદ્યાસી ગૌરવામીશ્રી શ્રીમજ્જીપુષ્પલાલ મહારાજશ્રીએ પોતાના જન્મદિનના મહાન સુમંગલ અવસરના ઉપલક્ષ્યમાં તંત્રીને “શુદ્ધદેવપુષ્પ”ની ગૌરવાન્વિત પદવી, પ્રમાણપત્ર તથા સુવર્ણપદક પ્રદાન કર્યા હતાં. સંપ્રદાયમાં આવી પદવી પીઠાધીશ્વર તરફથી માત્ર એજ વિદ્વાનો ધરાવે છે. એક તો વિદ્વદય બદ શ્રીજગદ્ગદ રામ અને દેવણિ બદ શ્રીરમાનાથ શાસ્ત્રીજી. સૂર્યવંશના શુદ્ધ દ્વિત્રિય નરેશ અને આર્ય સંમૂર્તિના મહાન આદર્શરૂપ મહારાજા મેવાડનૃપતિ છે. એ મહારાજાન્યહું ગૌરવ ભારતવર્ષમાં આદિતીય છે. એ મહાન નરેશના ગુરુ તરીકે શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વરનું સ્થાન ભારતવર્ષના ધર્માચાર્યોમાં એક અને આદિતીય છે. એઓશ્રીના તરફથી મળેલી આ પદવી ખચિતજ અમૂલ્ય અને અધિક માનાઈ છે. એ પદવી મળેલી યોગ્યતા તંત્રીમાં નથી, પણ એ પદવીથી તંત્રીની જોખમદારી વધી છે. એ જોખમદારી સમજાને વર્તવાનું મનોબલ તો એ પદવીના પ્રદાતા આચાર્યશ્રીની કૃપાનેજ આધીન છે. તંત્રી ઉપરાંત અન્ય વિદ્વાનોને પણ ગૌરવાન્વિત પદવી એઓશ્રીએ અર્પણ કરેલી છે. એ ભાગ્યશાસી વિદ્વાનોમાં પ્રથમ સ્થાને મજ્જી બાપાના આદિતીય કવિરત્ન શ્રીનવનીતજી ચતુર્વેદી છે. તેમને ‘કવિતાકલાધર’ની પદવી આપીને એક યોગ્ય કવિની યોગ્ય કદર કરવામાં આવી છે. કવિ શ્રીનવનીતજી અત્યારે અતિરુદ્ધ છે. એમણે પોતાની કવિત્વ શક્તિનો વિકાસ નિલ્લક્ષીકાર્ય શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો. શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજશ્રીના આશ્રયમાં રહીને કર્યો હતો. આજે એઓશ્રીના જ આત્મજ એ મહાકવિની કદર કરે તે અત્યંત ઉચિતજ છે. તે ઉપરાંત પં. કંઠમણિ શાસ્ત્રીજીને કાવ્યાલંકારની પદવી મળી છે. શાસ્ત્રીજી કંઠમણિજી હાંદી બાપા તથા સંસ્કૃત બાપા ઉપર સાચો કાણુ ધરાવે છે. હાંદી બાપામાં એક ઉત્તમ ધાર્મિક વક્તા પણ છે. તેમણે થોડાંક વર્ષોમાં સંસ્કૃત તથા હાંદી બાપામાં સુન્દર કવિતાઓ રચી છે. તેમની હાંદી બાપાની કવિતાઓ તો મધુર અને હૃદયગ્રાહી હોય છે. બલિષ્ઠમાં તેજા એક અનુપમ સ્થાનને સોનાવરો એવી આશા રહે છે. તેમને ‘કાવ્યાલંકાર’ની પદવી અર્પવામાં અવચાર્યશ્રીએ ઉચિત કદર કરી છે. શાસ્ત્રીજી જરાશંકરજીના વ્યાખ્યાનોથી તો વૈષ્ણવો સુપરિચિતજ છે, તેથી તેમને ‘વ્યાખ્યાનાલંકાર’ પદવીથી તેમની કદર આપશ્રીએ કરી છે. તે ઉપરાંત અમરા પરિચિતોમાં પં. ગોપાલરાવ શાસ્ત્રીને ‘પુરાણવિશારદ’ પદવી, શ્રીયુત જ્યોત્ષારામ શાસ્ત્રીને ‘સત્સિદ્ધાંતવિશારદ’ ઉપાધિ ઉચિતજ ગણુરો. શાસ્ત્રીજી જ્યોત્ષાગમજી તો શં. માધવ તીર્થના પ્રેરણા ઝીલનારા એક મહાન સાંપ્રદાયિક બોદ્ધા છે અને તેમણે ઉત્તમ સંપ્રદાય સેવા કરી છે. શાસ્ત્રીજી ગોપાલરાવજી પણ સારા કથાકાર છે. વ્યાખ્યાનવિષયમાં પં. જ્યેન્દ્રનાથ શાસ્ત્રી તથા શાસ્ત્રી રમણલાલજીને વ્યાખ્યાનમુખ્ય તથા વ્યાખ્યાનવિશારદોના રત્નપદકો અર્પણ કરીને એ બન્ને વક્તાઓના ઉત્સાહમાં અભિરુદ્ધિ કરવામાં આવી છે. અને બન્નેનાં વ્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે અને બન્ને આશીએ વધુ છટાદાર વ્યાખ્યાનકર્તાઓ થવાની રહેકે આશા રાખી રાકાય છે. પં. ગોપાલજી ચતુર્વેદીને ‘ન્યાતિ-ભૂયણ’ની ઉપાધિપ્રદાન કરવામાં એ અત્કારિક ન્યાતિશીજીને ગૌરવ અર્પ્યુ છે. સહુથી વિરોધ તો પં. ઉપેન્દ્રનાથજી રોહીકરને ‘મંત્રવિશારદ’ની ઉપાધિ ઉચિત લાગે છે. મંત્રશાસ્ત્રમાં એમણે ખૂબ માણું માર્યું છે અને હાલની તેમની જે રિયતિ ટકી રહેલી છે તે તેને જ આધારે હોય તેમ લાગે છે. પં. નારાયણલાલ વર્મા તથા પં. ઇન્દુલાલ વર્મા એ બન્ને હાંદી સાહિત્યરસોને અનુકંમે કાવ્યકોવિદ તથા કલાકોવિદની પદવી ઉચિત સ્થાને છે. અન્ય વિદ્વાનોને અમને પરિચય નથી. આ ઉત્સાહપ્રેરક કાર્ય

તરફથી પ્રાપ્ત થાય તે બંનેને જાણ થાય છે અને એ સ્થાનના અધીશ્વર આવા યશસ્વિ અને પ્રાસાદક અનેક કાર્યો કરતા ગ્રહે અને દીર્ઘાયુ થાય એવી આતર અભિલાષા માથે વિગ્મીશુ

કલકત્તા અધિવેશન.

તેવીસ કોટી હીન્દુઓને નામે જમે તેવા છબરોડા વાળીને હીન્દુ ધર્મની ઘોડા ખોડનારા દેશનેતાઓ સામે બંધનિયત જગ મચાવના માટે વર્ણાશ્રમ સ્વચાલ્ય સઘની સ્થાપના થઈ છે એ સઘના જનજામના અધિવેશનનો સચિત્ત હેવાન અમાગ આહ્વાને વાચ્યા હતા તેથી કલકત્તા—અધિવેશનનો હેવાવ બલ વાની ગાદી બેઠા આહ્વાને થાયજ એ હેવાવ કેમ ન આવ્યા એક પ્રશ્નો પણ પત્રદ્વારા થયા છે થયા સમય પછી તે વિષય મોન તોળ્યે છાએ એક તો ‘શુદ્ધાદૈત’ નું ખામ લક્ષ્ય સાપ્રદાયિક હોઈને વિશાલતમ છે એવું વર્ણાશ્રમધર્મ જેવા એકદેશી પ્રશ્નોની જ ચર્ચા એ તેનું ધ્યેય નથી પણ જાણકારી વૈવલ્લભાવીશ્રુતા શુદ્ધાદૈત પ્રજાવાદ અને વિશ્વધર્મ પ્રદિમાર્ગ જેવા મહાન પ્રશ્નો એ લક્ષ્ય છે બીજું, મહોદ્યાગ્યગ્રિતિ ચિદ્વેદ ન ાસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમોહરસાવજી બાલાસાહબનુ યશસ્વિ ઔદ્યયપૂર્ણ ચારિત્ર્ય સમગ્ર જનતાને અદ્ભુત રીતે આકર્ષ છે તેથી એઓશ્રી ન્યા પદ્યો છે ત્યા કઈ આરજ અલોકિક રજ જમે છે જલજામમા શુ હવે ? આપશ્રીના ત્યા પદ્યારાથી મરુભુમિમા અમૃતમહાસાગર ઉતર્યો હતો અને તે યાદગાર અધિવેશન બન્યું હતું વળી મતભેદ સહન કરીને પણ કાર્યકર્તાઓને પોતાની શીતળ દાયામાથી દૂર ફેરી ન હતા ગ્રામ્ય આપવાની ઉારતા એઓશ્રી વિના અગમે તો કોઈ રથને હેમાઈ નથી તેથીજ એઓશ્રીના અગ્રેમરત્ન નીચે ચર્તા દરેક કાર્યમા એક મહાન નિશ્ચયરત્નના આદર્શો પ્રકાશે છે અને તેની નોંધ ‘શુદ્ધાદૈત’ ધણજા આનન્દથી લે છે ત્રીજું કાગળ કલકત્તા જવાનું બની રાક્યું ન હતું તે પણ છે નથી જાઈ અભ્યર્થશ્રીને આશ્રય કે જેમના પ્રતિનિધિ તરીકે ત્યા જઈ શકાય કે નથી કઈ સરથું અગ્રેસરતા કે તે સરથાને ખર્ચે આશ્રીઓ દોડાયાય તેમ કાંઈ ધરમા ટકરાળ નથી કે કલકત્તા જેટલે દૂર જતા માટે જો કપીઅના ખર્ચની જોઈવાઈ તત્કાળમા કરી લેવાય કલકત્તા—અધિવેશનના સમાપતિશ્રીએ ગમ વાતાના રેલસને પ્રથમ કાર્યો કે, કલકત્તામા કેમ ન આવ્યા ? તો જવાબ આપ્યું ? મોટાએ પાસે મોનજ રોવણ ગ્રહ મનમા તો ધરી ગમયન થઈ કે, આતર સ્થિતિનુ નમ્ર ચિત્ત રાખ્દદાગ આલેખ્યું, પણ ચુપકી સાધી ઠીરી ! ધરમા કાઠ રૂપીઆનુ આડ નથી કે આવા વળતે એકાદ થેરી રૂપીઆ ખર્ચેરી લેવાય ! તેમાને મહામુરુરીએ ઉકારો આવેલા કાર્યાવયને હબજ ઉપરતંત્રી ખોટી મરણતોર ફટકો લાગેતા ! એ મા તાજેજ કંતો આ ગિયતિ ગુનાથી રો લાભ છે ? સપ્રદાયમા હા સાબજો છે ? ‘કલ્યાણ’ જેવું માસિક કમ કાઢતા નથી ? અ સમાન બધા કરે છે ! પણ ‘કલ્યાણ’ પાસે લાગેનું નહ છે અને તેના આધાર તે પ્રગતિ કરી રહ્યું છે એ હ જોઈ નથી કલકત્તાના અધિવેશનના હેવાલો અમે વાચ્યા, પ્રમુખશ્રીનુ બાપજી વાન્યુ જામને એમાથી કોઈ નોંધવાવાચક સચીન કાર્ય હેજાયુ નહિ જલજામથી હજમ નહિ તો તેની સમન પણ કાય થયું હોત, તો તેની નોંધ લેવાત પણ આ તો ઉત્તરોત્તર આજ પધવાને બંદે બાકરીથી પાછા હટાની વાત થઈ ! આની નોંધ કેવી ? પ્રમુખશ્રીનાં બાપજીની મારી નકલ જામને મળી હતી તેનો કોઈ પ્રકાગક ન મળ્યો, તે શ્રીવલ્લભાધીશ્વર માટે મહાન ઘોર અપરાધ હાખનાર સપ્રદાયદ્રાહી સઘની મળી આવ્યા એક ગોસ્વામી આચાર્યશ્રીના બાપજીનો પ્રકાશક આવે સપ્રદાયદેવી હોય તેમા વળા અને સપ્રદાયનુ તોહીનજ ગણાય વળી બાપજીમાં ન છાએ તેવા રાખ પ્રોગો અને વિચારોથી અમાર લોટી હક્ષા આવ્યું ! પણ હજી સુધી ખામોશી પકગ છે રાસરીછ જાણ કરજાસ સાબજુ કે, પ્રમુખશ્રીએ કલકત્તામાં સઘનીને સમ કપકો આપ્યો કે મારાં બાપજીમાં આવતા ફેરાર કરી તમે તે મ છાપી મારું ? આથી કઈક શાંતિ થઈ નહિતર પ્રમુખશ્રીનાં એ કહેવાતાં હાપેરા બાપજીની સખત સમીમા કરી હતી પ્રમુખશ્રી ઉપર વેપાવેચિત શ્રદ્ધા તો હોયજ કલકત્તાના અધિવેશનમાં થતા ‘ભગવન્ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જય’ ના ગાન સપ્રદાયના બાલી વિદ્વાનોના જથ્થા ખનિથી પ્રમુખશ્રીની ગતી મજા ન હજી હતી, આનન્દ સમાનો ન હતો, એમ એઓશ્રીએ કહ્યું એટલે એટલા યુગની એ અધિવેશનની મહત્તા વાગી અને તે જાહેર કરીને સતોષ પામીશુ બાકી એ અધિવેશન ગત્તા ગદેરા પ્રાપ્તમાં નિષ્ફળમાં નિષ્ફળ નિરર્થક ગયિશાન ! તો તેથી ‘આસર’ ગઈ નવો મહા

મહુધાના વૈષ્ણવો પ્રત્યે જે બોલ.

નવેક વર્ષ પછી શ્રીચતુર્થપંચમખીઠાથીજર મહુધામાં પધાર્યા. મહુધા, નડીયાદ પાસેનું એક નાનું ગામ છે અને ત્યાંની વૈષ્ણવ સૃષ્ટિ શ્રીચંદ્રમાઝના ધરની સેવક છે. વૈષ્ણવો ભાવુક હોઈને સંપ્રદાય તરફ અડગ શ્રદ્ધા રાખનારા છે. શ્રીવલ્લભ કુલ અને વૈષ્ણવોની સેવામાં યથાશક્તિ ફાળો આપનારા છે, પણ ખેદની સાથે જે બોલ લખવા પડે છે. આવા નાના ગામની આ વાતો ભહેરમાં કરવાની પણ બરેર છે. કેમકે લગભગ ગામેગામમાં આવી રિયતિ અનુભવાય છે. એક દિવસે ભહેર પ્રવચન વખતે યુવકોએ એક વિનતિપત્ર શ્રીગુરુદેવને ચરોત્રે નિવેદન કર્યું. પત્રમાં આ વિનતિ હતી:—સં. ૧૯૮૪ ની સાલમાં અમે સુરતવાળા મો. શ્રી. ૧૦૮ શ્રીમદ્ભગવાદગીતા મહારાજશ્રી પધાર્યાં તે વખતે તેઓશ્રીના ઉપદેશથી એક પાઠશાળા સ્થાપન થયેલી હતી. આ પાઠશાળા નમાનવા માટે એક કાર્યવાહક સમિતિ પણ સ્થપાઈ હતી. પણ પાઠશાળાથી એ કાર્ય ફેલેઈ ગયું નહિ, માટે વિનંતિ છે કે અમારા ખાતર પાઠશાળા સ્થાપન થાય અને સાંપ્રદાયિક જ્ઞાન મેળવવા અમે ફેલેઈ ગયેલા તેની રૂપા કરીશો એવી સેવકોની આશા છે. માથ સુદ ૧૦ સં. ૧૯૮૮. આ પત્ર નીચે ૧૬ ઉત્સાહી યુવકોની સહી છે. આ પરથી ત્યાં જે બોલ કહેવાયા. ગામે ગામમાં મોટી હમ્મરના વૈષ્ણવો ફરીઆદ કરે છે કે અમારી ઉછળતી પ્રભુ ધર્મથી વિરુદ્ધ થાય છે, નાસ્તિક બને છે. યુવકો અમારી આજ્ઞામાં રહેતા નથી, તેમ ધર્મમર્યાદા માનતા નથી. આ ફરીઆદમાં વળી છે, તે બતાવતી નથી. પણ આ રિયતિના નવાબદાર કોણ? ધાર્મિક સંસ્કારોનું સ્થાન આપણા ધરો છે. સંસ્કારે નવાબુટકા વૈષ્ણવ ગ્રંથોમાંથી વૈષ્ણવ જીવન તિરોહિત થયું છે. બહેનોમાં અજ્ઞાનનું સામાન્ય છે. પુરુષો બ્યાપાર કે મોકરી આદિમાં પોતાનો સર્વ સમય હોમી દે છે. ઉછરતી પ્રભુ ધર્મ-શબ્દ કેળવણી લઈને, આપણી સંસ્કૃતિ, સમાજ અને ધર્મ તરફ સંદેહ કરતાં શીખે છે અને આખરે દુનીયાની કોઈ પણ સંસ્કૃતિ વિનાના થઈને કેવળ પશુજીવન તરફ ધસડાય છે. આપણા વૈષ્ણવ ધનાઢયોનીજ દશા જુઓને? ધરમાં બાલકોને બાળાવનાર શિક્ષક રાખે છે તો તે કેવો હોય છે? આયસમાળ, નેન, પારસી, મુસલમાન કે ધર્મના સંસ્કાર વિનાના ધર્મદ્રોહી કોઈ હીન્દુ શિક્ષક વૈષ્ણવ ધનાઢયોના ધરમાં આવે છે. એમને કોઈ મુયોગ્ય વૈષ્ણવ શિક્ષક કેળાવતા નથી. ભગવદ્ગીય પ્રે. જ્ઞાલાલ શાહ એમ એ; અને એક નેન સદ્ગુરુદેવને ત્યાં શિક્ષણ આપવા નતા હતા, પણ કોઈ વૈષ્ણવ શ્રીમંત તેમને પોતાના બાલકો માટે વેર જાલાવવા તૈયાર ન થયા. આ રિયતિમાં વૈષ્ણવતાના સંસ્કાર પડે તેવો કોઈ માળે રહ્યો નથી. મહુધાના ભાગ્ય છે કે આવો ઉત્સાહ (પાઠશાળા વિષેનો) યુવકોમાં ઉત્પન્ન થયો. આ ઉત્સાહને વધારી લઈને શ્રીગુરુદેવે વૈષ્ણવોને ઉપદેશ કર્યો. મેં ૬૦૬ શબ્દોમાં કેટલુંક કહ્યું. તેથી ધણુને ખેટું પણ લાગ્યું હશે તેની કમા માખી લઈશ; પણ એટલી પ્રાર્થના તો ભહેરમાં ફરી કરીશ કે, ને આપણી સંસ્કૃતિ, આપણી સમાજવ્યવસ્થા, આપણો ધર્મ વગેરે સુરક્ષિત રાખવાં હોય, નવી ઉછરતી પ્રભુનાં જીવનમાં ધર્મ અને નીતિનાં તત્ત્વો પ્રકાશમાં કરવાં હોય તો હવે ગ્રહજીવન ધર્મમય બનાવો અને તેને આદર્શ બનાવવા માટે આવી પાઠશાળાને નમાવો. આ એક વાત મઠી બીજી વાત પણ ખેદ સાથે લખવી પડે છે. મહુધા છાતરાં એક દુઃખદ બનાવ બન્યો. મહુધામાં જે મર્યાદી વૈષ્ણવ ભાઈઓ છે. જાપાં, તિલક, જાંડી, ટોપા વગેરે બેધક પહેરીને મર્યાદી વૈષ્ણવ તરીકે કોઈને સ્પર્શ પણ કરતા નથી. ગામમાં તેમની વેષ્ણવતા હિસાબ રીતે પંકાય છે. તેમનાં ગ્રહજીવનનો મને પરિચય નથી. મને ખ્યાનથી ખાતરી મળી કે, જે વૈષ્ણવને ત્યાં સાતે સ્વરૂપની બેઠો એકઠી થાય છે અને સાતે ધરની તેઓ સેવા બળવે છે. પણ હાલમાં તેમને ત્યાં શ્રીનાથજી તથા સાને સ્વરૂપોની બેઠો મોટી રકમમાં જમા થઈ છે અને તેઓ કાંઈ બ્યવસ્થા કરતા નથી. બીજા ધરની બેઠોનો હીસાબ નેવાનો અમને શો હક્ક હોય? પણ શ્રીગોકુલનાથજી તથા શ્રીચંદ્રમાઝના ધરની બેઠોનો હીસાબ નેવાનો હક્ક તો છે ન. આ પરથી તેમને ચોપડા લઈને સવારથી જોલાળ્યા. પણ ભાઈ તો આવે ન સ્થાના? સાંજના ચાર વાગ્યા છતાં ન આવ્યા. આખરે મારે એ મર્યાદી બંધુઓ માટે કરવા રાખે કહેવાં પડ્યા કે “ન્યાં તમે ન ગુસ્સા ધરનું દ્રવ્ય જોળવો અને બદ્ધારથી વૈષ્ણવોનો વેશ ભરવો, તો પછી ઉછરતા વગેરે ઉપર શી સારી અસર થાય? તમે કહો છો કે, ઉછરતા વગેરે જોધ આપો, પણ ન્યાં તમે ન ધર્મને નામે આમ પંડા જોળવો ત્યારે યુવકો કેમ નાસ્તિક ન બને?” મારા આ શબ્દોની બીજાણીક અસર થઈ અને ભાઈ ચોપડા લઈને આવ્યા. બે વર્ષની ખાતાવહી

છે. તે પછી દૈહિક કાર્યમાં બધા લાગી બસ છે. બ્રહ્મચર્યાશ્રમ આમથી દૂર પણ નથી, તેમ જામની અંદર પણ નથી. શ્રીગુરુપનીષ્ઠ નજીકમાં છે. કપિલ જેવું નિદ્રા કુલ-નીર્ધી, શ્રીમદ્ધાત્રેયુષની બૃહદ્ શ્રીદ્વારકાધીશનું મંદિર, સંતોષન આદિ તદ્દન સમીપ છે. સંસ્થામાં ઔશાળા પણ છે. વ્યાયામશાળા પણ છે. બ્રહ્મચારી બૃહદ્ દેવપાણીનું અન્નચયન કરવામાં મરણુલ બની બસ છે. અધ્યયનપદ્ધતિ ઉત્તમ છે. સંસ્કૃત વિદ્યા સાથે વ્યાવહારિક શિક્ષણ પણ આપાય છે. બ્રહ્મચારીઓ જ્યારે વેદ જ્ઞાનથી સંધ્યાહોમાદિ કરે છે ત્યારે તેા પ્રાચીન ઋષિકુલોનું દૃશ્ય આગિદ્વળ ખડું થાય છે. આશ્રમમાં પ્રભુનું મંદિર છે. ત્યાં શ્રીકૃષ્ણ ગિરાએ છે. આ રોવા પણ વિદ્યાર્થીઓનારા થાય છે. આપ' જીવન અને ભક્ત જીવનના સંરક્ષણોને અદ્વિત્ય સંયોગ તેા આ આશ્રમમાં જ જોયો. આવી ઉત્તમ વ્યવસ્થા માટે આશ્રમસ્થાપક સદ્ગત શર્માજીને ગુજરાત યાદ કરશે અને રાત્રીજના પરલોકવાસ પછી આશ્રમની કાર્યવાહી ઉત્તમોત્તમ સ્વરૂપમાં ચાલુ રાખવા માટે શાસ્ત્રીજી ઉભારાંકરજીને પણ ધન્યવાદ અર્પશે. શિક્ષણ આપનારા અન્ય શાસ્ત્રીજી પણ સ્નેહથી વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષણ આપે છે. આશ્રમવાસીઓનાં ચારિત્ર્ય અને નીતિ ઉપર ઘણું જ ધ્યાન આપાય છે. વિદ્યાર્થીઓ અને અધ્યાપક વચ્ચેનો સંબંધમાં આધુનિક નિરાણોત્તી મારતરશાહીની ગંધ નથી. વિદ્યાર્થીઓ વિનયશીલ છે, અતિચિસત્કારનો આદર્શ પણ આ આશ્રમમાં અપૂર્વ છે. દરેક વિભાગમાં સ્વચ્છતા છે. ચાવો એક આદર્શ આશ્રમ ગુજરાતનું ભૂપણ છે. તેને કાયમની આવક કાઢી નથી. તેના વ્યવસ્થાપકો નાટકી દબે જલસાએ કરીને, દેશ અને આદર્શથી જનસમૂહમાં આશ્રમમાં બાણ્ય ક્રૂરતાં નથી. તેા આવા એક સંગીન કાર્ય કરનાર, દિવ્ય જીવનવાળા બ્રહ્મચારીઓ દેશને અર્પનાર આશ્રમને ગુજરાતના ધનાઢય ધાર્મિકોએ કોઈપણ બોલે નમાવી રાખવો રહ્યો.

- (૩) કૃષ્ણ કટપરી વર્કસ. ગુજરાતવાસી
(૪) રાજા ઇન્ડસ્ટ્રીઅલ વર્કસ. વડોદરા
(૫) કે. એન. અમળી મુખ્ય નં. ૩
(૬) સ્વદેશી વસ્તુ કાર્યાલય-હાથિરસ

ટાંક

- (૧) નીબજ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની લીમીટેડ
ભાલિયણ

- (૨) ડી. આર. પુતી એન્ડ સન્સ
ગુજરાત (પંચમ)

- (૩) કુલકર્ણી બ્રધર્સ
પનાલાલ ટેરેસીઝ મુંબઈ-૭

- (૪) નંબર બ્રધર્સ લેરકર (ગાંધીઅર)

- (૫) એફ. એન. ગુપ્તા એન્ડ કંપની
૧૨, ખેતુર ધાટરોડ-કલકત્તા

- (૬) બામુ હરિદાસ મુકરજી
૩, કાશીગદી સ્ટ્રીટ જી. ટી. મદ્રાસ

- (૭) મોડર્ન ઇન્ડસ્ટ્રીઝ દયાળમાગ, આમ્રા

- (૮) હરશશીમ બી. એસ. સી.
રોમર્ટસ રોડ-લાહોર

- (૯) નીમ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની
ટેપીવાલા મેન્થન્સ, સેન્ડહર્ટ રોડ-મુંબઈ

તાળાં

- (૧) બી. એફ. યાત્રિક અને કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)

- (૨) સીંધલ એન્ડ કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)

- (૩) કે. એન. અમળી.
દાના બદર મુંબઈ-૩

- (૪) ધી મોડેલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ કંપની.
દયાળમાગ આમ્રા

- (૫) તબટ બ્રધર્સ. લેરકર (ગાંધીઅર)

- (૬) ડી. આર. પુતી એન્ડ સન્સ.

- ગુજરાત (પંચમ)

- (૭) કુલકર્ણી બ્રધર્સ પનાલાલ-ટેરેસીઝ
મુંબઈ-૭

દંતમંજન

- (૧) સરેશાષ્ટ બ્રધર્સ બીલીમોરા

- (૨) બંગાલ કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ.
કલકત્તા

- (૩) ભાગવત એન્ડ કંપની. કોલકાતા

- દાંતીઆ
(૧) જેસોર કાગમર્ગ એન્ડ સેલ્યુલોઝ ફેક્ટરી.
જેસોર

- (૨) બેગોલ સ્ટોર્સ, સુતાર આલ-મુંબઈ

- (૩) ડી. એન. બદાચાર્જ એન્ડ સન્સ.
૩૩, કેનીંગ સ્ટ્રીટ, મુંબઈ

- (૪) ગુપ્તા એન્ડ બ્રધર્સ. જુમા મસીદ પાસે
અમદાવાદ રહેમાન સ્ટ્રીટ દિલ્હી

- દાંતનું બ્રશ તથા હાલમતની પીંછી
(૧) આપર્ન બ્રશ કંપની દાદર, મુંબઈ

- (૨) ગોરીજીનલ બ્રશ વર્કસ.
૬૬, કાવસજી પટેલ સ્ટ્રીટ ફોર્ટ-મુંબઈ

- (૩) શાહ બ્રશ ફેક્ટરી અમદાવાદ

- (૪) કલાધર્મેક્સ બ્રશ વર્કસ
૯, મરાઠા ડીય લેન, કલકત્તા

- (૫) બ્રશ વેર્સ લીમીટેડ
૧૨૪-૧, હેલ્સી રોડ કાનપુર

- (૬) આમ્રા બ્રશ કંપની
નૈનીટ્રી મંડી બૈલાનગંજ, આમ્રા

- (૭) ગગા એન્ડ કંપની
કલોક ટાવર-મીરત રીડી

- (૮) ઇન્ડીઅન બ્રશ ફેક્ટરી બાસ મડ-કાનપુર

કયા છે તે બાંધે નહીં, તે તેમ ન કરી શકે તો મને હુકમ કરો તો માટે પોતાને ખર્ચે હાલોદ આપવો :
લકને આવુ અને આવની અરજો કવાકમાન ખતરી નરી આવુ કે એ ગરિફ (૧) બનવદીયે કાર્યાલયને

(११) आर. आर. पाउरो जेन्दा अधर्म
मु'अध-२

भीष्मपत्नी

(१) सारदेसाध अधर्म जीडीमोरा

(२) रोशन केन्दा हेमरी.

आपपत्ता मु'अध-८

(३) दाहिजाध अधर्मिनी

धी दाहट दाहिस केन्दा हेमरी मु'अध

(४) अनारस हिंदु मुनीवर्मिनी अनारस

(५) केसरी केन्दा वरस. गोमाध-सासेम

(६) नारायणदास जेन्दा कपनी मद्रास

(७) सोप केन्दा मेन्. कपनी

मजगाध, मु'अध. १०

शाही

(१) दावे धन्क मेन्. कपनी कुन्दा मु'अध

(२) छ. जेस. शनडे

धन्क मेन्. कुन्दाधर्म मु'अध

(३) दाहिजाध अधर्मिनी

धन्क जेन्दा रोशनरी मेन्. कुन्दाधर्म मु'अध

(४) जे. डी. नरीमान अधर्म

लुदाय थाप, धीगीतगाव, मु'अध

(५) डी. जेन्दा डी. अधर्म

६६७ जे, फादर मु'अध

(६) जिरधरसाध वी. संधवी

संधवी जिडींग सेन्दाधर्म रोड, मु'अध

(७) वगावगाध अधर्म

मेन्. रोडीक रीनीभा पासे मु'अध

(८) कादर धन्क

पट, रोमेरीन्दा वेन, फादर मु'अध

(९) रदार रोकोवेलाधर्म वरस

भातर (जसे जेस)

(१०) जगाध भीसवेनी धी.

१७४, माखुकोसा, मेन्. रोड कलकत्ता

(११) कागवत जेन्दा कपनी कोल्हापुर

स्थाय

(१) जेन्. रोड सोप कुं. मु'अध

(२) सोराष्ट्र जेन्दा सोप हेमरी

गावराडी मु'अध

(३) ताता जोधल भीम धीगीरीड

जोन्. दाहिस, फादर मु'अध

(४) विरोदरीया आधर्मिनी वरस

मु. कांदरी वेन, भादरी मु'अध

(५) दाहिजाध अधर्म सन्त,

जेशवन्तनगर (दाहिजाध)